आधा पुल

*

जगदीशचन्द्र

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लेफ्टिनेण्ट कर्नल गिल बटालियन के फॉरवर्ड-हेडक्वार्टर में एक वृक्ष के नीचे अकेला खड़ा दूर ऊँचे सरकण्डों के बीचोबीच बने बन्ध की ओर देख रहा था। उसका मन उदास और शरीर शिथिल था। वह गहरे सोच में डूबा हुआ बार-बार गरदन को थोड़ा-सा दायें झुकाता और साथ ही दोनों हाथ झटक देता।

"सर, पूरी बटालियन पाँच मिनट के नोटिस पर मार्च करने के लिए तैयार है।" बटालियन ऐडजूटेण्ट कैप्टन परमार ने सैल्यूट देते हुए कहा।

"क्या ?" कर्नल गिल ने अपनी विचार-शृंखला के अचानक टूटने पर चौंककर पूछा। कैप्टन परमार ने अपनी रिपोर्ट दोहरायी तो वह अनुमति में सिर हिलाता हुआ घड़ी देखकर बोला, "इस एरिया को खाली करने में अभी दो घण्टे बाक़ी हैं। कोई डेढ़ घण्टे के बाद पूरी बटालियन कैप्टन इलावत की यादगार के सामने जनरल सैल्यूट के लिए फ़ालिन होगी और फिर वहाँ से अपने इलाक़े की ओर मार्च शुरू होगा।"

कर्नल गिल बायें बाज़ू के नीचे छड़ी दबाये बन्ध की ओर देखता हुआ अपनी जीप की ओर बढ़ गया। ड्राइवर सुच्चाराम कर्नल गिल को आता देखकर सावधान हो गया और जीप के पास आ खड़ा हुआ। कर्नल गिल ने जीप में बैठते हुए उदास स्वर में कहा, "बन्ध और पुल की ओर ले चलो।"

सुच्चाराम ने जीप की रफ़्तार तेज़ कर दी तो कर्नल गिल बोला, "रफ़्तार कम रखो....पन्द्रह किलोमीटर।"

जीप की रफ़्तार धीमी हो गयी। कर्नल गिल उदास और तरसती आँखों अपने सामने, दायें और बायें झाड़-झंखाड़ और सरकण्डों से ढकी ज़मीन को देख रहा था जैसे उसे अपने अस्तित्व में समेट लेना चाहता हो। यह सोचकर उसकी उदासी और भी ज़्यादा गहरी होती जा रही थी कि दो घण्टे के बाद वह दुश्मन के इस इलाक़े को खाली कर देंगे जिसे अधिकार में लेने के लिए उसके अफ़सरों और जवानों ने इस धरती को अपने लहू से सींचा था।

जीप जब बन्ध के उस भाग में पहुँच गयी जहाँ से दुश्मन की बनायी हुई पक्की और फ़ौलादी मोर्चाबन्दियाँ शुरू होती थीं तो कर्नल गिल को क्रोध आने लगा। कंकरीट के बड़े-बड़े टुकड़ों और लोहे की टेढ़ी-मेढ़ी सलाखों को देखकर उसकी आँखों

में खून उतर आया। यह सोचकर उसका मन सिहर उठा कि दुश्मन ने उनके संहार के लिए कितनी पक्की व्यवस्था कर रखी थी और यह याद करके उसका मन खुशी से भर गया कि उसके जवानों ने इन फ़ौलादी मोर्चाबन्दियों को यों तोड़ दिया था जैसे वे मिट्टी के घरौंदे हों। और फिर उसका मन ग्लानि से भर गया कि अब ये इलाक़े दुश्मन को वे वापस दे रहे हैं जिन्हें जान की बाज़ी लगाकर जीता गया था।

कर्नल गिल ने एक टूटे हुए पिलबॉक्स के सामने जीप रुकवा दी और नीचे उतरकर कंकरीट और लोहे के ढेर के पास आ खड़ा हुआ। उसकी बायीं टाँग में टीस-सी महसूस हुई और हाथ अपनेआप उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ गोली का निशान बाक़ी था। कर्नल गिल को एकदम बहुत ज़ोर आ गया और वह मिट्टी उठा-कर हाथ में उछालता हुआ सोचने लगा कि इस मिट्टी में उसका भी खून गिरा है। इस पिलबॉक्स से दुश्मन ने उसपर मशीनगन से गोली चलायी थी। कर्नल गिल ने मलबे को ध्यान से देखा और मिट्टी को ढेर में फेंककर जीप में आ बैठा।

जीप धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। पुल से कोई पचास गज़ पीछे उसने एक बड़े पिलबॉक्स के निकट जीप रुकवा दी। वह पिलबॉक्स के सामने आ खड़ा हुआ और उसके ऊपर मिट्टी तराश कर बनाये गये चौतरे पर लिखी पंक्तियाँ पढ़ने लगा: "यहाँ डोगरा बटालियन के परमवीर कैप्टन इलावत ने अपने प्राणों की आहुति देकर पुल की विजय को साकार बनाया था। उन्हें अपार वीरता दिखाने के लिए महावीर चक्र (मरणोपरान्त) प्रदान किया गया।"

कर्नल गिल ने इन पंक्तियों को कई बार पढ़ा और टोपी उतारकर सिर झुका दिया। कुछ क्षणों तक वह यों ही खड़ा रहा, फिर टोपी सिर पर रख ली और सैल्यूट देकर पीछे मुड़ा तो दो बूँद आँसू आँखों से छलककर गालों पर लुढ़क आये। वह बन्ध के ऊपर चला गया और जेब से दो पत्र निकाले जिन पर कई जगह खून के निशान थे और गोलियों के बनाये हुए तीन सूराख़ थे। ये पत्र इलावत की जेब से मरणोपरान्त मिले थे। कर्नल गिल ने बड़ी सावधानी के साथ पत्रों की तहें खोलीं और पढ़ने लगा—

देवू डार्लिंग,

तुम शायद नाराज़ होगे कि मैंने इतने समय तक तुम्हें पत्र नहीं लिखा। वह भद्र पुरुष आज सुबह ही यहाँ से गया है। मुझपर क्या बीती, अगले पत्र में विस्तार से लिखूँगी। मैंने अपनी लड़ाई जीत ली है। तुम भी अपनी लड़ाई जल्दी-जल्दी जीत लो। तुम्हारे लिए पुल-ओवर बुन रही हूँ। दस दिन में बुन जायेगा। लिखना, पार्सल क्या इसी ऐड्रेस से पहुँच जायेगा।

लगता है, हमें बिछुड़े कई वर्ष हो गये। दीदी के पास जाने का प्रोग्राम बन रहा है। फ़ाइनल हो गया तो लिखूँगी। मैं तुम्हें बैटल ड्रेस में

देखना चाहती हूँ। मेरी यह इच्छा कब पूरी करोगे ? मुझे सर्विस लेटर की बजाय सिविल लेटर लिखना। डैडी ने अभी तक रिकॅन्साइल नहीं किया। लेकिन कर लेंगे।

डैडी के नाम अपने पत्रों में जीजा जी किसी न किसी बहाने तुम्हारा जिक्र जरूर करते हैं। उनके पत्रों से तुम्हारे कुशल-क्षेम का पता लगता रहा है। क्या लड़ाई टल नहीं सकती ? कभी-कभी मुझे बहुत डर महसूस होता है।

तुम्हारी अपनी
सेमी

इस पत्र को पढकर कर्नल गिल की आँखों में एक बार फिर आँसू छलक आये। वह दूसरा पत्र पढने लगा—

सेमी डार्लिंग,

तुम्हारा पत्र मिलने पर मुझे कैसा मया लगा, बाद में लिखूंगा। मेरी लड़ाई शुरू हो गयी है। हम आज शाम को अटैक कर रहे है। जबतक तुम्हें यह लेटर मिलेगा हम भी अपनी लड़ाई जीत चुके होंगे।

पुल-ओवर को पढ़कर मेरे अन्दर सर्दी का अहसास बढ गया है। अगर तुम मिसेज गिल के पास आ जाओ तो कम से कम टेलिफ़ोन पर बात हो सकती है। कर्नल गिल साहब हमारे साथ हैं, यद्यपि वह कहते नहीं। तुम डरती क्यों हो ? हम इसे अपनी अन्तिम लड़ाई बनाने की पूरी कोशिश करेंगे ताकि किसी भी कोमल हृदय को लड़ाई का भय कभी न सता सके। तुम्हें एक बात बताऊँ ? मेरी आयु अस्सी वर्ष की होगी और मैं कम से कम मेजर जनरल बनकर रिटायर हूँगा ! फिर डर किस बात का ?....

कर्नल गिल कैप्टन इलावत का लिखा हुआ अधूरा पत्र पढकर बेहद उदास हो गया। वह सोचने लगा कि दोनों ने अपनी-अपनी लड़ाई जीत ली थी लेकिन फिर भी....। कर्नल गिल का गला रुंध गया। अजब प्रेमी थे वे ! सेमी की याद आते ही उसकी आँखों में फिर आँसू आ गये। वह तो बिना लड़े ही जंग की भेंट हो गयी !

कर्नल गिल ने आँसू पोंछ डाले और पुल की ओर बढ़ गया और बीच में टूटे हुए पुल को देखने लगा। पुल पर क़ब्ज़ा करने के लिए लड़ी गयी लड़ाई उसकी आँखों के सामने घूम गयी। वह धीरे-धीरे क़दम उठाता हुआ जीप में आ बैठा।

"साब, अब कहाँ चलना है ?"

"कहाँ....चलना....है ?" कर्नल गिल ने सोच में डूबी हुई आवाज़ में दोहराया और फिर धीमे स्वर में बोला, "बटालियन-हेडक्वार्टर चलो।"

कर्नल गिल जीप से उतरकर हेडक्वार्टर की ओर बढ गया। सरकण्डों की

बाड़ के पीछे छोटे-से आँगन में कुछ अफ़सर खड़े थे और कुछ कुरसियों पर बैठे थे। सब लोग दुश्मन से जीता हुआ इलाक़ा वापस करने के बारे में बहस कर रहे थे।

कर्नल गिल सरकण्डों के पीछे ही रुक गया। कैप्टन मिश्रा बहुत जोश में बोल रहा था, "मैं कहता हूँ कि यह फ़ैसला ग़लत है। मुझे राजनीति का बहुत ज्ञान नहीं है लेकिन सैनिक दृष्टिकोण से कह सकता हूँ कि पुल को हमें हर हालत में अपने हाथ में रखना चाहिए। मगर एक हम हैं कि क़ब्ज़ा करने के बावजूद इसे दुश्मन को लौटा रहे हैं! इस फ़ैसले के पीछे राजनीतिक तर्क हो तो हो, लेकिन सामरिक बोध तो नहीं है।"

"सर, मैं आपसे एक क़दम आगे जाना चाहता हूँ।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने आवेश में कुरसी से उठते हुए कहा, "क्या हमने इतने जवानों और कैप्टन इलावत-जैसे बहादुर और लायक़ ऑफ़िसर की इसलिए क़ुरबानी दी थी कि आज यह इलाक़ा दुश्मन के हवाले कर दें। सर, आप बताते क्यों नहीं ?" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने मेजर यादव को सम्बोधित करते हुए पूछा।

"सिंह, मैं क्या बताऊँ! तुम नौजवान हो, जोशीले हो। लेकिन इस प्रश्न का एक और पहलू भी है जिसकी ओर तुम्हारा ध्यान इसलिए नहीं जाता कि तुम बहुत यंग हो, कुँवारे हो।" मेजर यादव कुँवारे अफ़सरों की ओर देखता हुआ कुछ ऊँचे स्वर में बोला, "आखिर हम कब तक यहाँ बैठे रहेंगे? दुनिया में कोई भी आर्मी बॉर्डर पर डेरा डालकर नहीं पड़ी रहती। आर्मी फ़्रण्ट पर सिर्फ़ लड़ने के लिए आती है। शान्ति हो जाने पर अपने ठिकानों पर वापस चली जाती है। आज यही तो हो रहा है।"

"सर, आप ठीक कहते हैं, लेकिन दुनिया में ऐसी भी कोई आर्मी नहीं होगी जो इलाक़ा जीतकर दुश्मन को इस तरह लौटा दे। आखिर दुश्मन से यह इलाक़ा छीनने में हमारा कोई लक्ष्य तो था। वह क्या पूरा हो गया है?" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने पूछा।

"यह फ़ैसला करना मेरा और आपका काम नहीं है। ऐसे फ़ैसले हायर कमाण्ड और पोलिटिकल लीडरशिप करती है।" मेजर यादव ने संयत स्वर में कहा।

"सर, मुझे अफ़सोस है मैं आपसे सहमत नहीं। यह इलाक़ा हम जब खाली करेंगे तो कैप्टन इलावत की आत्मा क्या कहेगी! हमारे उन बहादुर जवानों की आत्माएँ क्या कहेंगी जिन्होंने हमारी विजय को सम्भव बनाने के लिए अपनी जानें दी हैं?" कैप्टन मिश्रा ने पूछा।

"देखो मिश्रा, तुम आत्मा की बात करते हो, मैं जीवित इनसानों के बारे में सोचता हूँ।" मेजर यादव ने कैप्टन मिश्रा की आँखों में झाँकते हुए कहा।

"सर, माफ़ कीजिए, कैप्टन इलावत और हमारे कुछ जवान क्या केवल इसलिए आत्माएँ बन गये कि हम जो जीवित हैं, सुरक्षित रहें? हमारी गृहस्थियों को कोई

खतरा पैदा न हो ? और हमें ही आज कहा जा रहा है कि उस खतरे को हम अपने ही हाथों जिन्दा रखें !" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"सिंह, तुम बहुत भावुक हो। तुम दिल से दिमाग़ का काम ले रहे हो। जंग तो जंग है। जंग में सब कुछ होता है।" मेजर यादव ने दार्शनिक अन्दाज से कहा।

"सर, जंग अगर जंग है तो यह इलाक़ा खाली करने की क्या ज़रूरत ? दुश्मन ने हमें इस इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने के लिए निमन्त्रण नहीं भेजा था। हमने यह इलाक़ा लड़कर लिया है। खून देकर जीता है।" कैप्टन मिश्रा ने कहा।

"सर, मुझे तो बहुत गुस्सा आ रहा है। ऐसा महसूस हो रहा है कि हमारे साथ धोखा हो रहा है। हमारे साथ वही हो रहा है जो उस प्रेमी के साथ हो जिसने अपनी प्रेमिका को ताक़त के बल पर हासिल किया हो और फिर उसी के लोग मजबूर करते हों कि उसे त्याग दे। इससे बड़ा अन्याय और क्या होगा, सर !" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने कहा।

"तुम लोग बड़े संकीर्ण दायरे में सोचते हो।" मेजर यादव ने हताश भाव में कहा।

"सर ,क्षमा करें। अपने देश का हित देखना क्या संकीर्णता है ?" कैप्टन मिश्रा ने पूछा और फिर पीड़ा भरे स्वर में बोला, "हमसे तो शतरंज के मोहरे अच्छे जिन्हें एक बार आगे बढ़ाकर मरवाया तो जा सकता है, पीछे नहीं हटाया जा सकता। सर, माफ़ करें, मुझे बहुत निराशा हुई है।"

कुछ क्षणों के लिए बहस बन्द रही तो कर्नल गिल सरकण्डों की ओट से निकल आया। उसे देखकर सब अफ़सर अटेंशन में खड़े हो गये।

"हैलो फ़्रेण्ड्स, क्या हाल है ?" कर्नल गिल ने कुरसी पर बैठते हुए कहा। "बैठो-बैठो। खड़े क्यों हो ?"

वे लोग बैठ गये। सभी गम्भीर थे। कैप्टन मिश्रा ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह के कान में कहा, "लगता है ओल्डमैन ने हम लोगों की बातचीत सुन ली है।"

"फिर क्या हुआ ! मैं सब बातें दोबारा कहने के लिए तैयार हूँ। मुझे तो खुशी है कि उसे हमारी भावनाओं का पता लग गया।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने सशक्त स्वर में कहा।

"सिंह, क्या खुसर-फुसर हो रही है ?" कर्नल गिल ने प्रसन्न भाव से पूछा। "क्या किसी फ़िएन्सी का ज़िक्र हो रहा है ?"

"येसर....।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कुरसी से उठते हुए कहा।

"प्लीज़ कुछ हमें भी बताओ ना। अगर सीक्रेट नहीं है।" कर्नल गिल ने कहा।

"नथिंग सीक्रेट सर। हम अपनी उस प्रेमिका की बात कर रहे थे जिसे छोड़ देने का ऑर्डर हो गया है।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने पुल की ओर संकेत करते हुए कहा।

ओह, आई सी....तुम्हारा मतलब दुश्मन के जीते हुए एरिया से है।" कर्नल

गिल ने हैरानी भरे लहजे से कहा।

"सर!" लेफ्टिनेण्ट सिंह बोला।

कर्नल गिल कुछ क्षणों के लिए चुप रहकर बहुत गम्भीर स्वर में बोला, "मैंने आप लोगों की बहस सुनी है। मुझे खुशी है कि आपने खुले दिल से बातें कीं। लेकिन एक बात याद रखो,"—कर्नल गिल वहाँ पर मौजूद प्रत्येक ऑफ़िसर को ध्यान से देखता हुआ बोला, "आर्मी-ऑफ़िसर्स के नाते तुम लोग इस फ़ैसले पर नाराज़ हो सकते हो लेकिन नाराज़गी प्रकट नहीं कर सकते। हमारे लीडर ग़लत फ़ैसला नहीं कर सकते। हमें उनकी जजमेण्ट के अनुसार चलना है। मुझे आशा है, आप लोग मेरा मतलब समझ गये होंगे।"

कुछ समय के लिए वहाँ गहरी निस्तब्धता छा गयी। सब सिर झुकाये बैठे थे, जैसे अपने-अपने अन्तःकरण में झाँकने की कोशिश कर रहे हों। कर्नल गिल ने घड़ी में समय देखा और कारोबारी लहजे में बोला, "यादव!"

"येस्सर!" मेजर यादव एक ही झटके में उठ खड़ा हुआ।

"पचास मिनट रह गये हैं, बटालियन को फ़ॉलिन होने का ऑर्डर दे दो।"

"सर, दे दिया है।"

"गुड!" कर्नल गिल ने उठते हुए कहा, "हम भी चलते हैं।"

वे सब कर्नल गिल के पीछे-पीछे अपनी जीपों की ओर बढ़ गये।

कर्नल गिल, मेजर यादव और अन्य ऑफ़िसर्स कैप्टन इलावत की यादगार के पास पहुँचे तो बटालियन फ़ॉलिन हो चुकी थी। यादगार के दोनों ओर कुछ फ़ासले पर बिगुलर खड़े थे। सबसे आगे कैप्टन इलावत की कम्पनी थी जिसे अब कैप्टन मिश्रा कमाण्ड कर रहा था। कर्नल गिल मेजर यादव के साथ जवानों की पहली पंक्ति के सामने से गुज़रा और फिर वह चारों ओर देखता हुआ यादगार के सामने आ खड़ा हुआ।

बटालियन को विश्राम का आर्डर दिया गया। एक-दो क्षण के लिए सरसराहट सी हुई और फिर निस्तब्धता छा गयी। कर्नल गिल ने पंक्तियों में खड़े जवानों पर नज़र डाली। उनके होंठ भिंचे हुए थे, नज़रें सीधी थीं, और चेहरे भावशून्य-से थे।

"बहुत बढ़िया जवान हैं!" कर्नल गिल बुदबुदाया और फिर एकदम उसे यह सोचकर भय महसूस होने लगा कि उसके जवान पिन निकाले हुए हैण्डग्रिनेड की तरह हैं। लगता था कि गिरफ़्त ढीली हुई कि फट जायेंगे।

कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत की यादगार की ओर देखा और गला साफ़ करता हुआ बोला, "आपको मालूम है कि पचीस मिनट के अन्दर-अन्दर यह एरिया हम खाली कर रहे हैं। इस बारे में आप लोग क्या सोच रहे हैं, क्या महसूस कर रहे हैं, यह हमें मालूम है। आपका दुख उस समय और भी गहरा हो जायेगा जब यहाँ से जाते हुए आप देखेंगे कि कुछ ऑफ़िसर और जवान, जो इस लड़ाई में हमारे साथ थे,

अब वापस नहीं जा रहे हैं। वह इसी मिट्टी का हिस्सा बन गये हैं। उनके त्याग और बलिदान के कारण यह जगह हमारे लिए पवित्र भूमि बन गयी है। पहले ऑर्डर हुआ कि इस इलाक़े से दुश्मन को खदेड़ दो। हमने ऑर्डर पूरा किया। अब ऑर्डर आया है कि यह इलाका खाली करके दुश्मन को दे दो, हम इस ऑर्डर को भी पूरा कर रहे हैं। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि आपका बलिदान, आपकी बहादुरी और निष्ठा व्यर्थ नहीं जायेगी। जयहिन्द।"

कर्नल गिल बन्ध से नीचे उतरकर कैप्टन इलावत की यादगार के सामने आ खड़ा हुआ। मेजर यादव ने बटालियन को सावधान होने का आर्डर दिया। बिगुलों की आवाज़ वातावरण को चीरती हुई चारों ओर फैल गयी। जवानों ने अपने हथियार उलटे कर दिये। दो-मिनट के बाद बिगुलों की आवाज़ कम होते-होते खामोशी में खो गयी। सबने हथियार सीधे कर लिये।

तमाम जवान एक कतार में अपनी गाड़ियों की ओर बढ़ने लगे। थोड़ी ही देर में पूरी बटालियन गाड़ियों में सवार हो गयी और मार्च का ऑर्डर हो गया।

कानवॉय कच्चे रास्ते पर धूल उड़ाती हुई अपने इलाक़े की ओर बढ़ने लगी। गाड़ियों में बैठे हुए जवान गुमसुम थे और फटी-फटी निगाहों से ऊँचे सरकण्डों में घिरे इलाक़े को देख रहे थे।

अपने बन्ध पर पहुँचकर कर्नल गिल ने जीप रोक ली और सीट पर बैठे-बैठे ही गरदन घुमाकर पीछे की ओर देखा। सारे इलाक़े पर धूल छायी हुई थी। उसने एक लम्बी साँस छोड़ी और झटके के साथ जीप आगे बढ़ा दी।

पिछली सीट पर बैठा ड्राइवर सुच्चाराम अभी तक मुड़-मुड़कर पीछे दुश्मन के इलाके की ओर देख रहा था। कर्नल गिल ने जीप में लगे शीशे में सुच्चाराम को देखा और कड़कती हुई आवाज़ में बोला, "सुच्चाराम, क्या कर रहा है? तुम सिपाही हैं, और सिपाही हमेशा आगे देखता है।"

—

आधा पुल

गाड़ी की गड़गड़ाहट सुनकर मेजर इन्द्रसिंह, कैप्टन सूद और सूबेदार मेजर उदयचन्द स्टेशन-मास्टर के कमरे से बाहर आ गये। दो जवान उनके पीछे आ खड़े हुए।

गाड़ी के डिब्बे धीमी गति से उनके सामने से गुज़र गये और वह प्रत्येक खिड़की को ध्यान से देख रहे थे। गाड़ी रुकी तो फ़र्स्ट क्लास कम्पार्टमेण्ट की ओर बढ़ गये। कैप्टन इलावत खिड़की से बाहर झाँक रहा था। उन्हें अपनी ओर आता देखकर वह प्लैटफॉर्म पर आ गया। कैप्टन इलावत ने उनकी टोपियों के रंग और बैज से अनुमान लगा लिया कि उसी बटालियन के ऑफ़िसर और जवान हैं जिसमें उसकी पोस्टिंग हुई है।

मेजर इन्द्रसिंह उसके निकट आकर रुक गया और ध्यान से देखते हुए बोला, "आप कैप्टन इलावत हैं ?"

"येस्सर !" कैप्टन इलावत ने अटेंशन होते हुए कहा।

"मैं इन्द्रसिंह हूँ।" और फिर उसके साथ गरमजोशी से हाथ मिलाता हुआ बोला, "आप हैं कैप्टन सूद और आप हैं सूबेदार उदयचन्द साहब।"

मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत का हाथ थाम लिया और मुसकराता हुआ बोला, "वेलकम टू अवर बटालियन।"

"थैंक्यू सर।" कैप्टन इलावत ने बहुत नर्म स्वर में कहा।

"सफ़र में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई ?" मेजर इन्द्रसिंह ने पूछा।

"नहीं सर, मैंने इस सफ़र का पूरा लुत्फ़ उठाया है। लैण्डस्केप बहुत सुहावना और सुन्दर था।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए उत्तर दिया।

"चलें ?" मेजर इन्द्रसिंह ने पूछा।

"एक मिनट, सर।" कैप्टन इलावत उचककर डिब्बे के अन्दर चला गया और अपना ब्रीफ़केस उठा लाया।

"साब, आपका सामान कौन-सा है ?" सूबेदार मेजर उदयचन्द ने पूछा।

"ऊपर पड़ा है। मेरी मोटर साइकिल और एक बड़ा ट्रंक ब्रेक में है।" कैप्टन इलावत ने खिड़की से सामान दिखाते हुए कहा।

"साब, सामान का टिकट दे दें।"

कैप्टन इलावत ने सामान का टिकट देते हुए कहा, "साव, मोटर साइकिल ध्यान से उतारना।" और फिर कुछ सोचकर बोला, "मोटर साइकिल कैसे ले जाओगे ?"

"सर, थ्री टन गाड़ी है, उसमें लाद लेंगे। हमने सब बन्दोबस्त कर रखा है।"

"हमें पता था कि आपके पास मोटर साइकिल है।" सूबेदार मेजर उदयचन्द ने कहा।

कैप्टन इलावत मुसकरा दिया और मेजर इन्द्रसिंह के साथ स्टेशन से बाहर आ गया। बाहर एक जीप खड़ी थी। मेजर इन्द्रसिंह स्टीयरिंग लेता हुआ बोला, "आइए, कैप्टन इलावत।"

वह पिछली सीट की ओर बढ़ा क्योंकि उसे पता था कि रवायत के अनुसार बटालियन का सीनियरमोस्ट कैप्टन उसे लेने आया है। परन्तु कैप्टन सूद ने उसे रोकते हुए कहा, "सर, आप आगे बैठिए।"

"आप बैठिए न !" कैप्टन इलावत ने आग्रह किया।

"नो, नो सर," कैप्टन सूद उचककर पिछली सीट पर चला गया। ड्राइवर उसके साथ आ बैठा तो फिर कैप्टन इलावत ने अगली सीट ले ली।

बटालियन-हेडक्वार्टर शहर से कोई दो मील बाहर था लेकिन रास्ता शहर से होकर जाता था। कैप्टन इलावत चारों ओर ध्यान से देख रहा था। बाज़ार खत्म हो गया तो मेजर इन्द्रसिंह ने जीप की रफ़्तार तेज़ कर दी। सड़क के दोनों ओर धान के खेत लहलहा रहे थे तथा तलैयों से मेंढकों की आनेवाली आवाज़ वातावरण को सुहावना बना रही थी।

"सर, छोटा-सा ही क़स्बा है ?" कैप्टन इलावत ने कहा।

"हाँ, छोटा ही है। डिस्ट्रिक्ट-हेडक्वार्टर है, लेकिन आबादी एक लाख से कम ही है। दो सिनेमा हॉल हैं—पुराने ढंग के। दो डिग्री कॉलेज हैं, एक लड़कों का और दूसरा लड़कियों के लिए। शॉपिंग सेण्टर भी मामूली हैं। हाँ, चालीस मील दक्षिण-पश्चिम में एक बड़ा शहर है, वहाँ खूब रौनक़ है। एतवार को वहाँ अपनी ट्रांसपोर्ट जाती है।"

मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत की ओर देखे बिना बताया।

मेन रोड से कोई दो फ़र्लांग दायीं ओर से बटालियन-हेडक्वार्टर का एरिया शुरू हो गया। सड़क की दायीं ओर इमारतें थीं और कई बड़े-बड़े ग्राउण्ड थे।

"सर, बहुत खुली जगह है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"हाँ इलावत, अगर काँटेदार तार के साथ-साथ चक्कर लगाया जाये तो तीन मील पूरे हो जाते हैं। ले-आउट भी बहुत अच्छा है। हर कम्पनी के पास अपनी प्ले-ग्राउण्ड और परेड-ग्राउण्ड है। एकोमोडेशन भी बहुत अच्छी है।"

"वह सामने जो बिल्डिंग नज़र आ रही है, वह एडमिन (प्रशासनिक) ब्लॉक है।" मेजर इन्द्रसिंह ने दायीं ओर इशारा करते हुए कहा।

"ऑफ़िसर्स-मेस के पोर्च में जीप रुक गयी। तीनों लाऊंज में आकर बैठ गये। कैप्टन इलावत ने चारों ओर सरसरी नज़र डाली। दीवारों पर राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, रक्षामन्त्री, आर्मी-चीफ़, आर्मी-कमाण्डर, कोर-कमाण्डर; डिवीजनल-कमाण्डर और बटालियन-कमाण्डर की तसवीरें थीं तथा अन्य चित्र भी थे।

"इलावत, क्या लोगे? ठण्डा या गरम? गरम में चाय या कॉफ़ी?" मेजर इन्द्रसिंह ने पूछा।

"सर, चाय ठीक है।" कैप्टन इलावत बोला।

चाय पर मेजर इन्द्रसिंह कैप्टन इलावत से इधर-उधर की बातें पूछता रहा। चाय खत्म हुई तो वह उठता हुआ बोला, "सूद!"

"येस्सर।"

"इलावत को इसका कमरा दिखा दो।" और फिर मेजर इन्द्रसिंह कैप्टन इलावत को सम्बोधित करता हुआ बोला, "इलावत, सफर की थकान होगी, कुछ समय के लिए आराम कर लो। साढ़े सात बजे सब यहाँ होंगे। नौ बजे डिनर टाइम है।"

"येस्सर!" कैप्टन इलावत ने रास्ता छोड़ते हुए कहा।

"ओके इलावत, शाम को मेस में मुलाकात होगी।"

"बाई-बाई, सर।" कैप्टन इलावत ने कहा।

कैप्टन सूद के साथ कैप्टन इलावत अपने कमरे में आ गया। दो जवान सामान खोलकर टिका रहे थे।

"साहब का बेटमैन कौन है?"

"साब, आसाराम।" एक जवान ने सीधे सावधान खड़े होकर उत्तर दिया।

"कहाँ है वह?"

"साब, क्वार्टर-मास्टर हवलदार के साथ स्टोर से टब और दूसरा सामान लेने गया है।"

"ठीक है। देखो, जब वह आ जाये तो कैप्टन साहब के सामने पेश करना।" फिर कैप्टन सूद ने कैप्टन इलावत की ओर मुड़ते हुए कहा, "ओके सर, शाम को मेस में मुलाकात होगी। किसी चीज़ की जरूरत हो तो बता दें।"

"थैंक्यू सूद! आपको बहुत तकलीफ़ दे रहा हूँ।"

कैप्टन सूद को दरवाज़े तक छोड़कर कैप्टन इलावत वापस आ गया और एक जवान को चाबियाँ देकर समझाने लगा, "काले रंग के बड़े ट्रंक में यूनिफ़ॉर्म है। सफेद बड़े ट्रंक में सिविलियन कपड़े है, हरे ट्रंक में मैले कपड़े और जूते हैं। लकड़ी की पेटी में किताबें हैं और अटैची में तौलिये और शेव का सामान है।"

"जी साब।"

"पहले सफ़ेद ट्रंक खोलो और एक सूट निकालो। फिर काला ट्रंक खोलकर एक वर्दी निकालो। धोबी से प्रेस करा लाओ। हरे ट्रंक से मैले कपड़े निकालकर धुलाई के लिए ले जाओ।"

वह जवान चला गया तो कैप्टन इलावत ने दूसरे जवान को हरे ट्रंक से जूते निकालकर साफ़ करने के लिए कहा और स्वयं पलंग पर लेटकर सोचने लगा : "अच्छे लोग हैं।"

आसाराम आ गया तो दोनों जवान चले गये। कैप्टन इलावत भी उठ गया और सामान जोड़ने में उसका हाथ बटाते हुए बातें करने लगा। "आसाराम, कहाँ का रहनेवाला है?"

"साब, ज़िला कांगड़ा, तहसील हमीरपुर।"

"कितना सर्विस हो गया है?"

"साब, नौ साल।"

"नौ साल?" कैप्टन इलावत हैरानी से उसकी ओर देखता रह गया। "और ई तरक़्क़ी नहीं मिली?"

"जी साब।" आसाराम ने कारोबारी अन्दाज़ में कहा।

"नौ साल में तो लोग सिपाही से हवलदार बन जाते हैं और तू सिपाही का पाही बैठा है।"

"जी साब, क्लास नहीं है।"

"क्लास क्यों नहीं है? क्या यहाँ यूनिट स्कूल नहीं है?"

"साब, है, लेकिन मैं पढ़ नहीं सका।"

"कोई बात नहीं। अब पढ़ना शुरू कर दो।"

"अब क्या पढ़ेगा, साब। पन्द्रह साल सर्विस पूरा करके पेन्शन जायेगा।" ासाराम ने बेदिली से कहा।

"फ़ैमिली है?"

"जी साब, घरवाली चार साल हुए मर गयी थी। एक लड़का है। गाँव में मेरे भाई के पास रहता है।"

"दूसरा फ़ैमिली लाया?"

"नहीं साब।" आसाराम ने उदास आवाज़ में कहा।

"दूसरी पत्नी का लाना बहुत कठिन है। एक जगह बात हुई थी। मुझे छुट्टी जाने में देरी हो गयी। उसे सबर नहीं हुआ। उसने किसी और से शादी कर ली।"

कैप्टन इलावत कुछ क्षणों के लिए चुप हो गया और फिर बात पलटने के लिए बोला, "आसाराम, तुम लकड़ी की पेटी से किताबें निकालकर बुक-शेल्फ़ में टिका दो!"

"साब, मैं सब कुछ कर लूँगा। आप नहा लें, पानी तैयार है।"

"ठीक है।" कहकर कैप्टन इलावत बाथरूम में चला गया। वह नहा-धोकर कमरे में आया तो आसाराम ने किताबें टिका दी थी और पेटी को एक कोने में रखकर उसपर गुलदस्ता रख दिया था। कमरा पहले से काफ़ी साफ़-सुथरा नज़र आ रहा था। कैप्टन इलावत ने उसकी ओर प्रशंसा भरी नज़रों से देखकर पूछा, "आसाराम, पहले क्या करता था ?"

"साब, जीटन साब का बेटमैन था। यह कमरा उन्हीं का था। साब कल सवेरे गये हैं : मेजर साहब बनकर दूसरी बटालियन में।" फिर आसाराम साँस अन्दर खींचकर एकदम छोड़ता हुआ बोला, "साब, बहुत सख्त अफसर थे लेकिन वेलफ़ेयर का बहुत ध्यान रखते थे। मेरा भी लायँस नायक के लिए रिकमेण्डेशन किया था लेकिन...."

"फिर बना क्यों नहीं ?"

"साब, वेपन-ट्रेनिंग ठीक नहीं था।"

"वह ठीक कर लो।"

"साब, क्या करेगा। साब का बूट-पट्टी साफ करेगा या हथियार चलाना सीखेगा।"

"जब फ़ायरिंग प्रैक्टिस खुलेगी तो तुमको भी भेजेगा।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"मेहरबानी होगी, साब।"

आसाराम ने सब सामान ठीक ढंग से जोड़ दिया और एक ओर खड़ा होकर बोला, "साब, मैं यहीं रहूँ या यूनिट में जाऊँ ?"

"तुम यूनिट में जाओ लेकिन दस बजे एक बार फिर आना।"

"जी साब।"

आसाराम ने कमरे को ताला लगाकर चाबी कैप्टन इलावत के हवाले कर दी।

"राम, राम साब।"

"राम, राम।"

कैप्टन इलावत आसाराम को जाते देखता रहा और फिर मुँह ही मुँह में बुदबुदाया—"गुड चैप....लेकिन कुछ सनकी है।"

वह छोटे-छोटे कदम उठाता हुआ मेस की ओर बढ गया। लाऊंज के अन्दर से बहुत-सी आवाजें आ रही थीं और वेस्टर्न म्यूज़िक की हलकी-हलकी धुन बज रही थी। वह एक क्षण के लिए दरवाज़े में ही ठिठक गया और फिर कैप्टन सूद को देखकर अन्दर चला गया।

"हैलो सर !" कैप्टन सूद ने प्रसन्न भाव से कैप्टन इलावत का स्वागत किया। सबकी नज़रें कैप्टन इलावत पर केन्द्रित हो गयी और संगीत के अतिरिक्त सब शोर खत्म हो गया।

"जेण्टलमेन, कैप्टन इलावत से मिलिए।" कैप्टन सूद ने कहा।

"मेजर ढिल्लों—चारली कम्पनी के ऑफ़िसर कमाण्डिंग।"

कैप्टन इलावत ने थोड़ा झुककर बहुत गर्मजोशी से हाथ मिलाया और फिर मेजर ढिल्लों की ओर देखने लगा। उसके डीलडौल की मन ही मन प्रशंसा करता हुआ बोला, "सर, मेरे लिए बहुत गर्व की बात है कि मुझे आपके साथ रहने का अवसर मिला है।"

मेजर ढिल्लों ने उसे कन्धों से पकड़ते हुए उत्तर दिया, "इलावत, हम अपने छोटे-से परिवार में आपका स्वागत करते हैं।"

"थैंक्यू सर।" कैप्टन इलावत ने सिर झुकाते हुए कहा।

कैप्टन सूद ने कैप्टन इलावत का अन्य अफ़सरों से परिचय कराया।

कुछ देर सब लाऊंज के बीच कैप्टन इलावत के इर्द-गिर्द खड़े रहे। फिर मेजर ढिल्लों ने बारमैन को आवाज़ दी, "जोज़ेफ़, सबके लिए ड्रिंक लाओ, ह्विस्की और कोक दोनों। कैप्टन इलावत आये हैं, जशन होना चाहिए।

कुछ मिनटों के बाद ही तीन बैरे ट्रे में ह्विस्की के गिलास, सोडे और कोका-कोला ले आये। मेजर ढिल्लों ने पहले बैरे को कैप्टन इलावत के पास जाने का संकेत किया।

"नो थैंक्स, सर।" कैप्टन इलावत ने मेजर ढिल्लों की ओर देखते हुए कहा।

"ह्वॉट! तुम यह कहना चाहते हो कि तुम ड्रिंक नहीं लेते?" मेजर ढिल्लों बहुत हैरान था।

"येस्सर, मैंने कभी नहीं पी।" कैप्टन इलावत ने विनीत स्वर में कहा।

"मेरा ख़याल था कि जाट ऑफ़िसर्स बहुत शराब पीते हैं। लेकिन यहाँ तो मामला ही उलटा है।" मेजर ढिल्लों ने हैरानी भरी आवाज़ में कहा।

"सर, आप ठीक कहते हैं। जाट ऑफ़िसर्स या तो बहुत पीते हैं या फिर छूते तक नहीं। लेकिन मैं दोनों से अलग हूँ। मैं पीता नहीं लेकिन दूसरों को पीते देखकर खुश बहुत होता हूँ।" कैप्टन इलावत मुसकराता हुआ बोला।

"तो कोई सॉफ़्ट ड्रिंक ले लो।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"सर, मैं गॉड्स ड्रिंक लूँगा—सादा पानी।"

"कोक ले लो। यह भी तो पानी है।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"येस्सर, लेकिन यह गॉड्स ड्रिंक नहीं है। अगर यह सिर्फ़ पानी होता तो ईश्वर ने कोकाकोला और दूसरी सॉफ़्ट ड्रिंक्स की भी नदियाँ बनायी होतीं।"

कैप्टन इलावत की बात पर सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

"इलावत, क्षमा करना, आप बहुत चालाक प्रतीत होते हैं।"

"सर, यूँ ही हूँ।" कैप्टन इलावत ने हँसते हुए कहा।

इतनी देर में कैप्टन मिश्रा आ गया। कैप्टन इलावत को देखते ही वह उछल पड़ा।

"ओह बन्धु डालिंग, तुम यहाँ कैसे ?"

"मेरी पोस्टिंग हुई है यहाँ।" कैप्टन इलावत ने उससे बगलगीर होते हुए कहा।

"बन्धु, तुम कब से यहाँ हो ?"

"कोई एक साल हो गया।"

"कैप्टन इलावत और कैप्टन मिश्रा एक दूसरे में इतने खो गये कि उन्हें अपने गिर्दपेश का खयाल तक न रहा।

"पुराने दोस्त मालूम होते हैं।" मेजर ढिल्लों ने कैप्टन सूद की ओर झुकते हुए कहा।

"इलावत, तुमसे मिलकर इतनी खुशी हुई है कि नाचने को जी चाहता है।" कैप्टन मिश्रा ने कहा।

"तो फिर नाचो, हम भी देखेंगे।" कैप्टन इलावत ने पीछे हटते हुए कहा।

सब खिलखिलाकर हँस पड़े। कैप्टन मिश्रा मुसकराता हुआ बोला, "यू आर दि सेम ओल्ड क्रुक।"

"बन्धु, ये तुम्हारे आने से पहले ही मुझे पहचान गये हैं।" कैप्टन इलावत ने मेजर ढिल्लों की ओर देखकर मुसकराते हुए कहा।

"सर, हम माउण्टिनियरिंग इन्स्टीट्यूट में इकट्ठे थे।" कैप्टन मिश्रा ने मेजर ढिल्लों को सम्बोधित करते हुए कहा और फिर कैप्टन इलावत की ओर संकेत करता हुआ बोला, "बहुत भयंकर आदमी है। इसने वहाँ ऐसे कमाल दिखाये कि प्रिंसिपल ने इसे इन्स्ट्रक्टर की जॉब की ऑफ़र दी थी लेकिन इसने यह कहकर इनकार कर दिया कि इन्स्ट्रक्टर बनने के लिए अभी उम्र बहुत कम है। क्यों इलावत, ठीक कह रहा हूँ न ?"

"हाँ, बन्धु, लेकिन और कुछ न बताना।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

"ओह....।" कैप्टन मिश्रा उसकी ओर अर्थभरी नजरों से देखता हुआ खिलखिलाकर हँस पड़ा और मेजर ढिल्लों को सम्बोधित करता हुआ बोला, "सर, इलावत को यहाँ, मेरा मतलब लाऊंज में, आये कितना समय हुआ है ?"

"यही पन्द्रह-बीस मिनट।"

"और इसने कोई शर्त नहीं लगायी ?"

"नहीं।"

"अजब बात है ! माउण्टिनियरिंग इन्स्टीट्यूट में आने के बाद दस मिनट में ही मुझसे शर्त जीत ली थी। सर, इलावत शर्त लगाने का बहुत शौकीन है और कम

से कम मैंने इसे कभी हारते नहीं देखा।' और इसकी शर्त भी फ़िक्स्ड होती है—तीन किलो बरफ़ी।" कैप्टन मिश्रा ने एक साँस में ही सब कुछ कह दिया।

"बन्धु, अब रेट कम कर दिया है, चाहो तो ट्राई कर सकते हो।" कैप्टन इलावत मुसकराने लगा।

"ओह नो, मैं पहले ही तुम्हें बहुत बरफ़ी खिला चुका हूँ।" कैप्टन मिश्रा ने कहा और उसकी ओर झुककर गोपनीय स्वर में पूछा, "कभी बेबी का लेटर आया है ?"

"बन्धु, मैंने तो मामला वहीं खत्म कर दिया था क्योंकि मैं किसी बात को लटकाये नहीं रखता।" कैप्टन इलावत ने हाथ झटकते हुए कहा।

"इलावत, तू हृदयहीन है, मैं अवश्य कहूँगा।" कैप्टन मिश्रा ने अफ़सोस भरे लहजे में कहा।

"बन्धु, चाहो तो तुम हृदय दिखा सकते हो।" कैप्टन इलावत ने कहा, "मेरा खयाल है कि वह इस इन्तजार में अभी तक कुँवारी बैठी होगी कि कोई आर्मी-ऑफ़िसर आये और उसे ब्याह कर ले जाये। कोशिश क्यों नहीं करते ?"

"मिश्रा, हमें भी कुछ बताओ। मामला कुछ दिलचस्प मालूम होता है।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

कैप्टन मिश्रा खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"सर, यह बड़ा नटखट है।" कैप्टन मिश्रा ने कैप्टन इलावत की ओर देखते हुए कहा और फिर मेजर ढिल्लों की ओर मुड़ता हुआ बोला, "सर, माउण्टिनियरिंग इन्स्टीट्यूट के पास पहाड़ी की ढलान पर एक कॉटेज में एक रिटायर्ड मेजर की फ़ैमिली रहती थी। मेजर साहब रैंक्स से प्रोमोट हुए थे। उनकी एक बेटी थी जिस का नाम था बेबी। वह स्थानीय कॉन्वेण्ट स्कूल में पढ़ाती थी। इलावत का उनके घर में आना-जाना था।"

"बन्धु, रेकी तुमने की थी, असाल्ट मैंने किया था।" कैप्टन इलावत ने टोकते हुए कहा।

"बीच में न टोको, प्लीज़।" कैप्टन मिश्रा बात जारी रखता हुआ बोला।

"आना-जाना कैसे हुआ ? यह भी दिलचस्प कहानी है। इलावत डायरेक्ट ऐप्रोच में विश्वास रखता है। यह बिना किसी परिचय के उनकी कॉटेज में चला गया—इस बहाने कि खाना पकने की बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी। और दो घण्टे के बाद जब वहाँ से निकला तो इसके साथ मेजर साहब और बेबी थे और वे इसे इन्स्टीट्यूट के गेट तक छोड़कर गये।" कैप्टन मिश्रा कुछ क्षणों के लिए चुप रहकर फिर बोला—

"एक दिन यह मुझे भी अपने साथ ले गया था, पहाड़ी खाना खिलाने के लिए। मम्मी ने हमें बताया कि जब उसकी शादी हुई थी तो बेबी के डैडी हवलदार

थे लेकिन बेबी के जन्म के बाद उन्होंने बहुत तेज़ी से तरक़्क़ी की और दस साल में मेजर बन गये।"

इतनी देर में मेजर इन्द्रसिंह आ गया। कुछ क्षणों के लिए सबका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो गया।

"क्या हो रहा है ?" मेजर इन्द्रसिंह ने प्रसन्नता भरे स्वर में पूछा।

"सर, मिश्रा और इलावत पुराने दोस्त हैं। मिश्रा माउण्टिनियरिंग इन्स्टीट्यूट के उसके कारनामे बता रहा है।"

"दखल-अन्दाज़ी के लिए माफी चाहता हूँ। हाँ, मिश्रा, क्या कह रहे थे ?"

कैप्टन मिश्रा ने संक्षिप्त रूप में कहानी बताकर कहा, "सर, कैप्टन इलावत ने कहा कि इसका मतलब है कि बेबी बहुत लकी है। अगर इसका विवाह भी किसी आर्मी-ऑफ़िसर से हुआ तो वह कम से कम मेजर जनरल बनकर रिटायर होगा।" कैप्टन मिश्रा ने मुसकराकर कैप्टन इलावत की ओर देखा और बात जारी रखते हुए कहा, "सर, फिर क्या था, उन्होंने इसकी बात को यथावत् ले लिया। ओल्ड मैन और मम्मी एक दिन इन्स्टीट्यूट में आ गये। उन्होंने इलावत का बायोडेटा पूछा और मम्मी ने इलावत को बहुत प्यार किया और कहने लगी कि उसकी इच्छा है कि तुम मेजर जनरल बनो और इसलिए बेबी से विवाह करो।" कैप्टन मिश्रा कुछ सोच-कर खिलखिला कर हँस पड़ा और हँसी को रोकने की कोशिश करता हुआ बोला, "लेकिन इसने उन्हें यह कहकर बहुत सफाई से टाल दिया कि इसने स्थायी मेजर बनकर ही रिटायर होने का निर्णय कर रखा है।"

"बन्धु, मैंने फैसला बदल दिया है। अब तो मैं चीफ़ बनकर रिटायर होना चाहूँगा। मुझे विश्वास है कि तुमने यहाँ भी रेकी की होगी।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए पूछा।

"डिनर लग गया है।" मेजर इन्द्रसिंह ने मेज की ओर देखते हुए कहा। वे सब डाईनिंग-रूम में चले गये। डिनर पर भी छोटी-मोटी गुफ्तगू जारी रही।

पौने दस बजे मेजर इन्द्रसिंह उठ खड़ा हुआ और कैप्टन इलावत से बोला, "इलावत, कल तुम खाली हो। कैप्टन सूद आपका प्रोग्राम बना देंगे। आप आराम करें, सिनेमा देखें, शहर का चक्कर लगायें। कल शाम को डेली डरिल बता दी जायेगी। ओके ! गुड नाइट !" मेजर इन्द्रसिंह ने कहा। मेजर ढिल्लों और कुछ दूसरे अफसर एक साथ लाऊंज से निकलकर अपने-अपने कमरों की ओर बढ़ गये।

"बढ़िया आदमी है।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"मेरा भी यही ख़याल है। अच्छा ऑफिसर लगता है।" मेजर इन्द्रसिंह ने उत्तर दिया।

कैप्टन सूद कैप्टन इलावत को उसके कमरे तक छोड़ने आया।

"सर, किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बता दीजिए।"

"सब आपकी कृपा से ठीक है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"सर, मैं सुबह आठ बजे आऊँगा और फिर दिन-भर का प्रोग्राम बनायेंगे।"

"ओके, गुड नाइट!"

"गुड नाइट, सर।" कैप्टन सूद अपने कमरे की ओर चला गया।

दो

प्रातः पाँच बजे जब कैप्टन इलावत के बेटमैन आसाराम ने धीरे से दरवाज़ा खोला तो वह दीवार के पास सिरहाना रखकर सिर के बल खड़ा था। आसाराम द्वार में ही ठिठक गया। कैप्टन इलावत का हुलिया देखकर उसे हँसी आ गयी। वह तुरत बाहर चला गया और खाँसकर हँसी को दबाने की कोशिश करने लगा। कुछ समय तक वह बरामदे में खड़ा रहा और उसने फिर अन्दर झाँका तो कैप्टन इलावत टाँगें अकड़ाकर दोनों पाँव अँगूठों से पकड़े नाक से बार-बार घुटनों को छू रहा था। आसाराम को फिर हँसी आ गयी और वह मेस में चला गया।

"साब को चाय भेजा?" उसने मस्तराम बैरे से पूछा।

"भेजा था, लेकिन साब ने मना कर दिया है। वह बेड-टी नहीं लेते।"

"अच्छा! अजीब साब है जो बेड-टी नहीं लेता। हमने तो आज तक जितने साब देखे हैं चाय का कप पीकर ही बिस्तर से उठते थे।" और फिर वह मस्तराम के बहुत निकट जाकर उसके कान में फुसफुसाया, "मैं तो कुछ और ही देखकर आया हूँ!"

"क्या?"

"साब पहले दीवार के साथ सिर के बल खड़े थे और फिर दोनों पाँव के अँगूठे पकड़कर घुटनों को चूम रहे थे।"

"पागल! साब आसन करते होंगे। आसन का ज्ञान तो वेद भगवान् में मिलता है। किसी जमाने में मैं भी कुछ आसन कर लिया करता था, लेकिन जब से मेस में ड्यूटी लगी है सब कुछ भूल गया हूँ।" यह कहकर आसाराम की ओर झुकता हुआ मस्तराम गोपनीय स्वर में बोला, "साब, जीटन साब (एडजूटेण्ट) बन रहा है।"

"तुमसे किसने कहा? साब मेरे से तो बोला नहीं?"

"तू क्या सी. ओ. साब (कमाण्डिंग-ऑफ़िसर) है जो साब तेरे से बोलेंगे? मैं मेस में ड्यूटी करता हूँ इसलिए मुझे सब खबर रहती है। मुझे तो साब लोगों की

प्राइवेट बातें भी मालूम रहती हैं।" मस्तराम ने एक आँख दबाते हुए कहा।

"मस्तराम साब, मेरी भी मेस में ड्यूटी लगवा दो। मेस-हवलदार से सिफ़ारिश करना।" आसाराम ने मिन्नत करते हुए कहा।

"तेरा साब जीटन साब बन रहा है। वह चाहे तो तुम्हें मेस-हवलदार बना सकता है। साब से बोलना। लेकिन एक बात बता दूँ, मेस की ड्यूटी बाहर से अच्छी लगती है लेकिन है बहुत बुरी। रात को सब सो जायें तो सोने जाओ। सवेरे सबसे पहले उठो। न रात को आराम न दिन में चैन। बेटमैन को काम ही क्या है! साब का बूट-पट्टी पॉलिश किया और बस! मैला कपड़ा धोबी को दिया, धुला हुआ ले आया। बस छुट्टी!"

"मस्तराम साब, फ़टीक (फ़टीग) भी तो करनी पड़ती है। मेस की ड्यूटी में फ़टीक तो नहीं होती। आप मेस-हवलदार से बात तो करना।" आसाराम ने गिड़-गिड़ाते हुए कहा।

"ढंग तुम्हें बता दिया है। बात आप कर लेना," कहकर मस्तराम अपने काम में व्यस्त हो गया। आसाराम कैप्टन इलावत के कमरे के बाहर द्वार के पास आ खड़ा हुआ। उसने आहिस्ता से दरवाज़ा खोला और कैप्टन इलावत को कुरसी पर बैठे पाकर अन्दर आ गया।

"राम-राम साब।"

"राम-राम।" कैप्टन इलावत ने उसकी ओर घूमते हुए कहा, "आसाराम, मैं तुम्हें कल बताना भूल गया था कि सुबह तुम पी. टी. के बाद आया करो। इससे पहले तुम्हारी जरूरत नहीं है। इस टाइम में अपना बूट-बेल्ट चमकाओ—तुम्हारा टर्न आउट ए वन होना चाहिए।"

"जी साब, आप आज पी. टी. पर जायँगे?"

"नहीं, कल से पीटी पर जाऊँगा। पी. टी. ड्रेस शाम को ही तैयार होना चाहिए। बूट एकदम दूध के माफ़िक सफ़ेद हों। जो सामान चाहिए कैण्टीन से ले लेना।" कैप्टन इलावत ने उसे दस-दस रुपये के तीन नोट देकर कहा।

"बाज़ार जाओ तो हलवाई की अच्छी दुकान से दो किलो बरफी लेते आना।"

"जी साब, जाऊँगा साब।"

साढे सात बजे कैप्टन इलावत तैयार होकर लॉन में खड़ा हुआ। सड़क पर उसकी मोटर साइकिल खड़ी थी। कैप्टन सूद ने उसे सैल्यूट दिया और फिर प्रशंसा भरी नजरों से देखता हुआ बोला, "टच वुड सर, आप बहुत स्मार्ट लग रहे हैं।"

"थैंक्यू, सूद।—चलें?"

"सर, जीप आ रही है।"

"मेरे पास मोटर साइकिल है, उसी पर चलते हैं।"

कैप्टन सूद ने मेस के हवलदार को बुलाकर जीप हैडक्वार्टर भिजवाने को कहा और कैप्टन इलावत के साथ-साथ चल पड़ा। वह मोटर साइकिल को देखता हुआ बोला, "सर, नयी ली है ?"

"नहीं, दो साल पुरानी है।"

"एक्सलेण्ट मेण्टेनेंस। आपकी सँभाल बहुत अच्छी है।"

"हाँ, फ़िलहाल यही मेरी फ़ैमिली है और मैं इसका बहुत ध्यान रखता हूँ।" कैप्टन इलावत मुसकरा दिया।

"सर, मैं भी अपना स्कूटर ले आऊँ ? जीप तो आपके लिए मँगवायी थी।" कैप्टन सूद ने कहा।

इतनी देर में मेजर इन्द्रसिंह वहाँ आ गया। कैप्टन इलावत ने उसे बहुत स्मार्ट ढंग से सैल्यूट दिया। मेजर इन्द्रसिंह ने उसे सिर से पाँव तक देखते हुए कहा, "रेडी ?"

"येस्सर।" कैप्टन इलावत बहुत नर्म स्वर में बोला। "सर, जब से मैं गाड़ी से उतरा हूँ आप मुझे जिस ढंग से लुक-आफ़्टर कर रहे हैं मैं जिन्दगी-भर भूल नहीं सकता। आप, मेजर ढिल्लों, कैप्टन सूद, कैप्टन मिश्रा और दूसरे अफ़सरों ने मुझे एक क्षण के लिए भी महसूस नहीं होने दिया कि मैं नयी जगह आया हूँ।"

"मुझे पता नहीं आपकी तरफ़ क्या रिवाज है। लेकिन हमारे यहाँ जब नयी दुल्हन आती है तो तीन दिन तक उसे अपने हाथ से कुछ करने की इजाज़त नहीं होती। तीन दिन के बाद ही उसे गृहस्थी में डाला जाता है। हमारी बटालियन की भी यही प्रथा है।" मेजर इन्द्रसिंह ने मुसकराते हुए कहा।

कैप्टन सूद को आता देखकर मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत को गम्भीर स्वर में समझाते हुए कहा, "यों तो आप हर बात अपने तजुरबे से ही सीखेंगे। लेकिन, ओल्ड मैन* (कमाण्डिंग-ऑफ़िसर) के बारे में एक बात बता दूँ कि वह बहुत कल्चर्ड हैं और बहुत खुले स्वभाववाले। उनकी बातें सुनकर यह ग़लतफ़हमी हो सकती है कि वह बहुत नर्म ऑफ़िसर हैं। लेकिन ऐसा है नहीं। ड्यूटी के मामले में बहुत सख़्त हैं।"

"सर, इस टिप के लिए बहुत धन्यवाद। यहाँ पर तो आप ही मेरे फ़्रेण्ड और फ़िलॉसफ़र हैं।" कैप्टन इलावत ने झुकते हुए कहा।

कैप्टन सूद के आने पर मेजर इन्द्रसिंह चला गया।

"सर चलें ?"

"हाँ चलें। आप आगे रहें। मैं फ़ॉलो करूँगा।" कैप्टन इलावत ने कहा।

कोई आधे मील के बाद सड़क से एक और सड़क बायीं ओर घूम गयी। थोड़ी ही दूर जाने पर एक गेट आया। उसमें से गुजर कर कैप्टन सूद ने एक इकमंज़िला इमारत के सामने स्कूटर रोक दिया। कैप्टन इलावत भी रुक गया। एक जवान ने आगे बढ़कर उसकी मोटर साइकिल थाम ली और उसे घसीटकर पार्किंग प्लेस में ले गया।

दफ्तर के बाहर कैम्प-कमाण्डेण्ट लेफ्टिनेण्ट गौतम और सूबेदार मेजर उदय-चन्द कैप्टन इलावत के स्वागत के लिए खड़े थे। उसे देखकर वे आगे आ गये। उन्होंने बड़े तपाक से उसका स्वागत किया और सेकण्ड-इन-कमाण्ड मेजर यादव के कमरे में ले गये।

मेजर यादव ने कैप्टन इलावत का गर्मजोशी से स्वागत किया और हाथ मिला-कर सामने पड़ी कुरसी की ओर संकेत करता हुआ बोला, "तशरीफ़ रखिए।"

कैप्टन इलावत बैठ गया तो मेजर यादव उँगलियों में पेंसिल घुमाता हुआ बोला, "कहिए, नयी जगह में मन लग गया है?"

"येस्सर, अभी तो मैं मेस में रहनेवाले ऑफ़िसरों से ही मिला हूँ। बहुत बढ़िया आदमी हैं। मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं अपने भाई-बन्धुओं के ही पास आ गया हूँ।" कैप्टन इलावत ने स्निग्ध स्वर में कहा।

"आप पाँचवीं बटालियन से आये हैं?"

"येस्सर।"

"बहुत प्रशंसित बटालियन है और डेकोरेटेड भी।" मेजर यादव ने कहा। "ऐसा लगता है कि आप रोहतक के इलाक़े के रहनेवाले हैं।"

"एग्ज़ेक्टली सर, मेरा गाँव रोहतक से छह किलोमीटर दूर पूर्व में है।"

"मैंने आपके एक्सेण्ट से अन्दाज़ा लगाया था। पूर्व में थोड़ा और दूर चले जायें, मैं वहीं का रहनेवाला हूँ—भरतपुर के पास मेरा गाँव है।"

"सर, मैंने आठवीं क्लास भरतपुर से ही पास की थी। मेरे डैडी कुछ समय वहीं रहे थे।"

"वह क्या काम करते हैं?"

"सर, आर्मी में मेजर हैं।"

मेजर यादव कुछ क्षणों तक बिलकुल चुपचाप ज़ोर-ज़ोर से पेंसिल घुमाता रहा। फिर उसने पेंसिल रख दी और उठता हुआ बोला, "एक्सक्यूज़ मी, इलावत। मैं दो मिनट के लिए सी. ओ. साहब के पास हो आऊँ। उन्हें आपके आने के बारे में बता दूँ।"

कुछ ही मिनटों के बाद मेजर यादव वापस आ गया—"आइए कैप्टन इलावत, सी. ओ. साहब इस समय फ़्री हैं।"

बटालियन-कमाण्डर, लेफ्टिनेण्ट-कर्नल गिल का कमरा ऐडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक के बीच में था। दरवाज़े के ऊपर बड़ी लाल बत्ती जल रही थी और दीवार पर काली लकड़ी की तख्ती के ऊपर पीतल के चमकते हुए अक्षरोंवाली नेम-प्लेट भी। द्वार खुला था लेकिन दोनों पटों के बीच हलके रंग के मोटे परदे लटक रहे थे। अरदली ने सैल्यूट देकर परदा हटा दिया। मेजर यादव के पीछे कैप्टन इलावत भी अन्दर चला गया। उसका दिल धक-धक कर रहा था। माथे पर पसीने की महीन बूँदें उभर आयी थीं। मेजर यादव एक ओर खड़ा होकर बोला, "सर, कैप्टन इलावत,

जिन्हें पाँचवीं वटालियन से आना था।"

"ओह!" कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत को सिर से पाँव तक देखते हुए कहा, "वेलक़म इलावत!" कर्नल गिल उसके साथ वहुत गर्मजोशी से हाथ मिलाता हुआ वोला।

कैप्टन इलावत ने सिर से टोपी उतारकर कैप-स्टैण्ड पर रख दी।

"वैठिए।" कर्नल गिल ने सामने पड़ी कुरसी की ओर संकेत करते हुए कहा।

"सर, मैं इजाज़त चाहूँगा।" मेजर यादव ने कहा और एड़ियों से एड़ियाँ टकराकर वाहर चला गया। कैप्टन इलावत कर्नल गिल के सामने ऐलार्ट वैठा था।

"इलावत, मेस में सव इन्तज़ाम ठीक हो गया न?" कर्नल गिल ने नर्म लहजे में पूछा।

"येस्सर, मुझे तो वी. आई. पी. रिसेप्शन मिला है। आई एम सो ग्रेटफ़ुल।" कैप्टन इलावत ने वहुत भावुकता भरे स्वर में कहा।

"मुझे खुशी हुई कि तुम्हें इन्तज़ाम पसन्द आया। यह नयी वटालियन है। इसे स्थापित हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ। अभी वहुत-सी कमियाँ हैं। धीरे-धीरे दूर हो जायेंगी।" कर्नल गिल ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

"सर, व्हुत खुली जगह है।"

"येस, वड़ी केण्टोनमेण्ट में तो व्रिगेड को इतनी जगह नहीं मिलती। फ़िफ़्थ वटालियन के पास इससे आधी से भी कम जगह है।"

"येस, मैं वहाँ हो आया हूँ। यू नो....मेजर वोपाराय?"

"येस्सर....।"

"वह मेरा कज़न है।"

"सर,....मेरे तो वह पक्के दोस्त हैं। आजकल छुट्टी पर हैं। छुट्टी से वापस आने पर उनकी पोस्टिंग हो रही है—व्रिगेड-मेजर....इन्फ़ैन्ट्री व्रिगेड में।"

"अच्छा, वह वहुत अच्छा ऑफ़िसर है।" कर्नल गिल ने कहा और कुछ क्षण चुप रहकर वोला, "आप किस वैच से हैं?"

"सर, सिक्स्टी सेवन।"

"आई सी, मेरा छोटा भाई सुरेन्द्र गिल भी उसी वैच में था। वह आजकल थर्ड कैविलरी में है।"

"येस्सर, मैं सुरेन्द्र को वहुत अच्छी तरह जानता हूँ। हम अच्छे दोस्त हैं। वह हमारे वैच का वेस्ट हाई जम्पर था।" कैप्टन इलावत कुछ जोश में आ गया।

कर्नल गिल कुछ क्षणों के लिए फिर खामोश हो गया और विषय वदलता हुआ वोला, "इलावत, यह नयी वटालियन है। शायद इण्डियन आर्मी की यंगेस्ट वटालियन यही हो। लेकिन इसके जवान एक्सेलेण्ट ह्यूमन मैटिरीयल हैं। वहुत ज़्यादा डिसिप्लिण्ड, वेल ट्रेण्ड।"

"सर, इस बटालियन में पोस्टिंग मेरे लिए बहुत बड़ी प्रिविलेज है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"मैंने आपको एडजूटेण्ट बनाने का फ़ैसला किया है। मुझे बहुत खुशी है कि मेरी बटालियन में आप-जैसा काम्पीटेण्ट ऑफ़िसर पोस्ट हुआ है।"

"थैंक्यू सर! मैं आपके विश्वास का पात्र बनने की हर मुमकिन कोशिश करूँगा।"

"आपको दो बातों की ओर फौरन ध्यान देना है।"

"कर्नल गिल के ये शब्द सुनकर कैप्टन इलावत सतर्क हो गया।

"एक तो बटालियन को एक हफ़्ते की बहुत सख्त ट्रेनिंग देनी है। मैंने एक्सरसाइज़ की आउटलाइन तैयार की है। कल उसे डिसकस करेंगे।

"येस्सर।"

"दूसरे, दो हफ़्ते के बाद बटालियन का रेज़िंग-डे (स्थापना-दिवस) है। उसके लिए बन्दोबस्त करना है। मेजर यादव और लेफ़्टिनेण्ट गौतम ने कुछ बन्दोबस्त किया भी है। उसके बारे में उनसे पूछ लेना। दो-तीन दिन में मुझे पूरा प्रोग्राम बनाकर दो।"

"येस्सर।" कैप्टन इलावत ने उठते हुए कहा, "आई टेक योर लीव सर।" कहकर उसने सैल्यूट दिया और कमरे से बाहर आ गया। उसने लम्बी साँस ली और जेब से रूमाल निकालकर माथा और चेहरा पोंछता हुआ बुदबुदाया—"यह घड़ी बड़ी कठिन थी। आई होप आई हैव कम आउट वेल।" और वह तेज़-तेज़ क़दम उठाता हुआ लेफ़्टिनेण्ट गौतम के साथ बटालियन के अन्य अफ़सरों से मिलने चला गया।

तीन

लंच के बाद कॉफ़ी और आइसक्रीम का दौर चल रहा था। सब अफ़सर छोटे-छोटे ग्रुपों में बैठे शाम का प्रोग्राम बना रहे थे। मेजर ढिल्लों, कैप्टन इलावत और कैप्टन मिश्रा भी इसी बारे में सोच रहे थे।

"इलावत, इस शहर में कोई इण्टरटेनमेण्ट नहीं मिल सकती—सिवा इसके कि कहीं तुम बन्दर-बन्दरियों या भालू का नाच देख लो।" मेजर ढिल्लों ने कुण्ठित स्वर में कहा।

"यहाँ दो सिनेमा-हॉल हैं और उनमें चलनेवाली फ़िल्में कम से कम दो साल

पुरानी होती हैं। एक क्लब है जिसमें डिस्ट्रिक्ट ऑफ़िशियल्ज़, वकील और कुछ ठेकेदार ताश खेलते हैं। एक-दो रेस्तराँ हैं जहाँ गाय के दूध की चाय मिलती है।"

"सर, अपना लेफ़्टिनेण्ट जिल है न," लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने कहना शुरू किया, "वह मज़े करता है। वह हर सण्डे आउट-पास लेकर जाता है। यहाँ से बीस किलोमीटर दूर एक टाउन में। वहाँ एक कैथोलिक चर्च है। वह सण्डेसर्विस के लिए वहाँ जाता है। एक बार मुझे भी ले गया था। वह वहाँ कुछ फ़ैमिलीज़ का डार्लिंग बन गया है। बहुत अच्छा समय गुज़रा था।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने अतीत में डूबी हुई आवाज़ में कहा।

"दैट ब्लाईटर! बहुत स्मार्ट है।" मेजर ढिल्लों ने कहा और फिर कैप्टन इलावत से बोला, "इलावत, तुम एडजूटेण्ट हो। क्या बड़े टाउन तक ट्रांस्पोर्ट ले जाने के लिए कोई बहाना पैदा नहीं कर सकते?"

"सर, बस यही एक काम है जो मैं नहीं कर सकता।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

"तुम भी बहुत बड़े ब्लाईटर हो। हर सण्डे को अच्छी-भली ट्रांस्पोर्ट जाती थी। तुमने आते ही बन्द करवा दी।" मेजर ढिल्लों का लहजा सख्त था।

"सर, मेरी मोटर साइकिल हाज़िर है। ब्युलिट सचमुच ब्युलिट की तरह जाती है। और अगर पीछे गर्ल फ्रेण्ड बैठी हो तो हवा से बातें करने लगती है।"

"छोड़ो इलावत," मेजर ढिल्लों ने अपना दायाँ बाज़ू हवा में लहराते हुए कहा।

लाऊंज में हलका-हलका शोर उठ रहा था कि मेस-सेक्रेटरी कैप्टन सूद ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "जेन्टलमेन प्लीज़, बहुत इम्पारटेण्ट अनाउंसमेण्ट है!"

हॉल में एकदम खामोशी छा गयी और सब उत्सुक नजरों से उसकी ओर देखने लगे।

"कम आउट मैन, क्या अनाउंसमेण्ट है?" मेजर ढिल्लों ने ऊँची आवाज़ में पूछा।

"सर, सबर से काम लीजिए।" कैप्टन सूद ने हाथ के इशारे से सबको शान्त रहने के लिए कहा और फिर धीरे-धीरे सिर हिलाता हुआ बोला, "आज की शाम इतनी ग्रैण्ड होगी कि आप कभी सोच भी नहीं सकते।"

"मैन, कुछ बोलो भी!"

"सर, खुशखबरी इतनी बड़ी है कि एकदम बताने को जी नहीं चाहता।" कैप्टन सूद ने मुसकराते हुए कहा।

"क्या आज शाम को सब कुँवारे ऑफ़िसरों को जयमालाएँ पहनायी जायेंगी?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"सूद, कम आउट!" मेजर ढिल्लों ने सख्ती से कहा।

कैप्टन सूद ने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये—"आज तमाम ऑफ़िसर्स और उनकी

फ़ैमिलीज़ सी. ओ. साहब के बँगले में डिनर पर मेहमान होंगे। सात बजे उनके बँगले पर पहुँचना है। नौ बजे डिनर टाइम है और दस बजे रुख़सत।" कैप्टन सूद एक काग़ज़ से पढ़ता हुआ बोला, "जेण्टलमैन, डिनर इन्फॉरमल होगा। आप किसी ड्रेस में भी जा सकते हैं।"

"हियर, हियर!" एक साथ कई आवाज़ें आयीं।

"सर, शाम को एक बार फिर शेव करनी पड़ेगी!" कैप्टन इलावत ने चेहरे पर हाथ फेरते हुए कहा।

"सर, बटालियन ट्रांस्पोर्ट में जायेंगे या अपना-अपना इन्तज़ाम करना होगा?" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने पूछा।

"अपना-अपना। तुम्हें ट्रांस्पोर्ट की पोज़ीशन मालूम ही है। वैसे यह कोई समस्या भी नहीं है। सबके पास कोई न कोई कन्वेयेन्स है।" कैप्टन सूद बोला।

"अगर साइकिल कन्वेयेन्स में शामिल है तो फिर सबके पास इन्तज़ाम है। कैप्टन इलावत ने कैप्टन मिश्रा की ओर देखते हुए कहा और फिर मेजर ढिल्लों की ओर झुकता हुआ बोला, "सर, बन्धु अपनी साइकिल माउण्टिनियरिंग इन्स्टीट्यूट में भी ले गया था ताकि आने-जाने में आसानी रहे।"

"प्लीज़, क्या आप चुप रहने का कष्ट करेंगे?" कैप्टन मिश्रा ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"उस छोटी जगह में साइकिल भी स्टेटस-सिम्बल था। इसी कारण इन्स्टीट्यूट के माली, भंगी, नाई, धोबी, बैरे बन्धु को साइकिलवाला साहब कहते थे।" कैप्टन इलावत बहुत गम्भीर स्वर में बोला, "साइकिल की वजह से बन्धु सारे टाउन में बहुत मशहूर था। उस दिन जिस फ़ैमिली का ज़िक्र कर रहा था उस तक मेरी रसाई बन्धु के कारण ही हुई थी।"

"डैम इट इलावत! ईश्वर के लिए चुप रहो।" कैप्टन मिश्रा ने उठते हुए कहा, "मैं चला।"

"नहीं जाओगे।" कैप्टन इलावत उसे हाथ से पकड़कर सोफ़े पर बिठाता हुआ बोला, "उस दिन मेरे कारनामों का बहुत चहक-चहककर वर्णन कर रहे थे, आज मुझे भी कुछ बताने दो।" कैप्टन इलावत बन्द बक्सरों की ओर देखता हुआ बोला, "बन्धु ने बेबी को साइकिल सिखाने का वायदा किया था और इसी सिलसिले में हमारा उनके घर आना-जाना शुरू हो गया।"

"इलावत, यह बकवास बन्द करो और वायदा करो कि सी. ओ. साहब के डिनर पर ऐसी फ़िज़ूल बातें नहीं करोगे।"

"बन्धु, वायदा नहीं कर सकता क्योंकि इन्फॉर्मल पार्टी है और मैं [illegible] आया हूँ। मुझे तो इस मौक़े पर सिद्ध करना है कि मैं बहुत इन्फॉर्मल हूँ। [illegible] बात हो सकती है....।" कैप्टन इलावत ने [illegible] नज़रों से देखते हुए कहा [illegible]

मेरा मुँह बन्द कर दो। बरफ़ी से भर दो।"

"नो, नेवर।" कैप्टन मिश्रा ने ऊँचे स्वर में कहा, "तुम दोबारा वही पुराना सिलसिला शुरू करना चाहते हो।"

"देख लो। तुम्हारी मरजी है।"

"मिश्रा, ऑफ़र बुरी नहीं।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"सर, एक बार सिलसिला शुरू हो गया तो कभी खत्म नहीं होगा।" कैप्टन मिश्रा बोला।

"बन्धु, एक बार फिर सोच लो। मेरी ऑफ़र अभी क़ायम है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"इलावत, सिर्फ़ एक बार। नेवर आफ़्टर।" कैप्टन मिश्रा ने निर्णयात्मक लहजे में कहा।

"मंज़ूर है, बरफ़ी कमरे में है या......"

"मेरे कमरे में हलवाई की दुकान नहीं है। बाज़ार से मँगवानी पड़ेगी।"

"पैसे और साइकिल दे दो, आदमी मैं भेज देता हूँ। मैंने हलवाई की एक बहुत बढ़िया दुकान तलाश कर ली है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"कहाँ तलाश की है?" मेजर ढिल्लों ने पूछा।

"सर, मैं जब भी नये स्टेशन पर जाता हूँ तो सबसे पहले अच्छे हलवाइयों और सुन्दर लड़कियों के ठिकानों का पता करता हूँ।" कैप्टन इलावत ने बात जारी रखते हुए कहा।

"क्योंकि दोनों का ज़ायक़ा एक-जैसा होता है। अगर लड़की बरफ़ी की बनी हुई हो तो क्या ही बात है।"

"इलावत, तुम लड़कियों के बारे में इतने क्रेज़ी क्यों हो?" मेजर ढिल्लों ने पूछा।

"सर, क्या आप नहीं हैं?"

"बिलकुल नहीं। मैं लड़कियों के पीछे कभी नहीं भागता। हाँ, सेक्स में एकेडेमिक दिलचस्पी ज़रूर है।" मेजर ढिल्लों ने बहुत दृढ़ स्वर में कहा।

"माफ़ करें, सर! परसों जब मैं अच्छे हलवाइयों के तलाश में था तो आप युवतियों की टोह में थे।" कैप्टन इलावत ने भी उतने ही दृढ़ स्वर में कहा और मेजर ढिल्लों की ओर देखने लगा।

"नानसेन्स! तुम झूठ बोल रहे हो! कहाँ देखा था मुझे? मैं कोई भी शर्त लगाने के लिए तैयार हूँ।" मेजर ढिल्लों आवेश में था।

"सर! हीयर यू आर। मैं तैयार हूँ। दो किलो बरफ़ी की शर्त। मंज़ूर है?"

"हाँ, मंज़ूर है।"

"सर, एक बार फिर सोच लें, मैं मुँहफट आदमी हूँ। सब कुछ बता दूँगा।"

"कम आन, मैन ! मुझे पता है तुम मुझे चरका देने की कोशिश कर रहे हो।" मेजर ढिल्लों ने चुनौती देते हुए कहा।

"सर, गर्ल्ज़ कॉलिज में, आप कैण्टीन के सामने लॉन में बैठे थे और मैं कैण्टीन के अन्दर बैठा बरफ़ी चख रहा था।

मेजर ढिल्लों का रंग फक हो गया और वह झेंप कर कैप्टन इलावत की ओर देखता हुआ बोला, "गर्ल्ज़ कॉलिज में जाने की मनाही नही है, मैं एडमिशन रूल्ज़ का पता करने गया था।"

"सर, एडमिशन रूल्ज़ की इन्फ़ॉर्मेशन कैण्टीन के लॉन में नही, ऑफ़िस में मिलती है।"

"तुम वहाँ क्या करने गये थे ?" मेजर ढिल्लों ने खिसियाकर पूछा।

"सर, मैंने तो पहले ही कहा था कि अच्छे हलवाई की तलाश में गया था।"

"तुम मुझे वहाँ मिले क्यों नही ?"

"सर, मैंने आप को डिस्टर्ब करना मुनासिब नही समझा। टच वुड।" कैप्टन इलावत मेज़ को छूता हुआ बोला।

"सर, आप यूँ भी हीरो दिखाई देते हैं। लेकिन उस समय तो आप हिट जा रहे थे। आपके जाने के बाद मैं भी उनसे मिला था। इस ख़याल से कि शायद फ़ॉलो-अप एक्शन की ज़रूरत हो। लेकिन सच मानिए, आपका किया हुआ जादू सिर पर चढ़कर बोल रहा था। सर, अनाउंसमेण्ट कब होगी ?"

"तुमने कोई क़सर छोड़ी है ?" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"मुबारकबाद। कैप्टन इलावत ने मेजर ढिल्लों को हाथ से पकड़कर ऊपर उठा लिया और उसके साथ बग़लगीर होता हुआ बोला, "बन्धुजन, मेजर ढिल्लों को मुबारकबाद दीजिए !"

जब बहुत-से अफ़सर मेजर ढिल्लों को मुबारकबाद देने लगे तो वह उनसे पीछा छुडाने का यत्न करता हुआ बोला, "मुबारक किस बात की, अभी मामला फ़ाइनल नही हुआ। मुझे अपने पेरेन्ट्स से इजाज़त लेनी है।"

"यह तो कोई प्रॉबलम नही। इजाज़त लोकल पेरेन्ट्स से ले लेंगे।" कैप्टन इलावत ने सुझाव दिया।

"क्या मतलब ?"

"सर, मतलब साफ़ है। सी. ओ. साहब और उनकी मैडम हमारे लोकल पेरेन्ट्स हैं। आज शाम को ही बात कर लेंगे।"

"इलावत, यू आर ए क्रुक।"

"सर, ए परफ़ेक्ट क्रुक। अब सबका मुँह मीठा कराइए। आसाराम बाज़ार जा रहा है।" कैप्टन इलावत ने मेजर ढिल्लों की जेब में हाथ डालने की कोशिश करते हुए कहा।

"लो भई, तुम कहाँ छोड़ोगे। मैंने कुछ पैसे रखे थे कि उसे कोई उपहार दूँगा।" मेजर ढिल्लों ने रुपये देते हुए कहा।

"सर, उपहार तो अब बटालियन की ओर से जायेगा। आपकी प्रेयसी हमारी भी तो होनेवाली भाभी है।"

मेजर ढिल्लों से पैसे लेकर कैप्टन इलावत कैप्टन मिश्रा से बोला, "बन्धु, तू भी पैसे निकाल!"

"ले यार, तेरे से बचना मुश्किल है।" कैप्टन मिश्रा ने दस रुपये का एक नोट देते हुए कहा।

"बाक़ी पैसे एडवान्स रख लूँ।"

"नथिंग डुइंग। बाक़ी पैसे तुरन्त वापस होने चाहिए।"

"खैर, यह बाद में सोचेंगे। अभी तो तुम्हारे साइकिल एपिक का पहला काण्ड ही शुरू किया है।"

कैप्टन इलावत आसाराम को पैसे देने बाहर चला गया तो कैप्टन मिश्रा ने कहा, "सर, इलावत वण्डरफ़ुल आदमी है। दोस्तों पर तो जान देने के लिए तैयार हो जाता है।"

"बन्धु, खुशामद का मुझपर कोई असर नहीं होता। बाक़ी पैसे मैंने एडवान्स रख लिये हैं।" कैप्टन इलावत ने कहा।

मेजर ढिल्लों ने सोफ़े पर सिर टिकाकर अँगरेज़ी गीत की धुन गुनगुनानी शुरू की तो कैप्टन मिश्रा ने मेज़ अपनी ओर खींच लिया और थाप देने लगा।

चार

मेस में रहनेवाले अफ़सर एक साथ कर्नल गिल के बँगले पर पहुँचे। डिनर का इन्तज़ाम बाहर लॉन में किया गया था। महकते फूलों की क्यारियों के बीच लॉन में गोलाई में आर्म-कुरसियाँ रखी हुई थीं। लॉन की ओर जानेवाले रास्ते पर छोटे-से गेट के पास कर्नल गिल और मिसेज़ गिल मेहमानों का स्वागत कर रहे थे।

कैप्टन इलावत जब उनके पास पहुँचा तो कर्नल गिल अपनी पत्नी को सम्बोधित करता हुआ बोला, "पैमी, आप कैप्टन इलावत से शायद नहीं मिली हैं। कुछ दिन पहले ही इसकी पोस्टिंग यहाँ हुई है।"

कैप्टन इलावत ने मिसेज़ गिल की ओर झुककर कहा, "माता जी, नमस्कार!"

यह सुनकर मिसेज़ गिल झेंप गयीं और उसके चेहरे का रंग बदलने लगा तो

कैप्टन इलावत सफ़ाई पेश करता हुआ बोला, "सी. ओ. साहब की वाइफ़ होने के नाते आप हमारे लिए माता के समान हैं। यह अलग बात है कि उम्र में शायद आप कई अफ़सरों से छोटी हों!"

कैप्टन इलावत की सफ़ाई सुनकर मिसेज गिल हँस दीं।

"इलावत, आओ, तुम्हें बाक़ी ऑफ़िसरों की बीवियों से मिलायें। पैमी प्लीज, यह काम तो आपका है।" कर्नल गिल ने कहा।

"सॉरी, मैं तो भूल ही गयी। आइए कैप्टन इलावत।" मिसेज गिल कैप्टन इलावत को साथ लेकर वहाँ चली गयी जहाँ लेडीज थीं। वह मिसेज यादव की ओर संकेत करती हुई बोली, "आप हैं मिसेज यादव!" कैप्टन इलावत ने झुककर हाथ जोड़ दिये।

"और यह मेरा नया बेटा है—कैप्टन इलावत! कुछ दिन पहले ही बटालियन में आया है।" कहकर मिसेज गिल खिलखिलाकर हँस दीं।

"आप हैं मिसेज शर्मा।" और मिसेज गिल आगे बढ़ती हुई बोली, "आप हैं मिसेज करमरकर....और आप हैं मिसेज बासु।" कैप्टन इलावत ने बारी-बारी से सबको झुककर नमस्ते की।

'ज्यादा परिचय आप खुद ही कर लें।" मिसेज गिल ने हँसते हुए कहा।

"वह तो तभी होगा जब हमें दावतपर बुलाया जायेगा।" कैप्टन इलावत मुसकराता हुआ बोला।

कर्नल गिल निकट ही खड़ा था और वह विस्मित स्वर में बोला, "माई गुडनेस, मेरी बटालियन के केवल चार ही ऑफ़िसर मैरीड हैं!"

"सर, पाँच।"

"ओह, आई एम सॉरी।"

कर्नल गिल ने हँसते हुए कहा और फिर एकदम बात पलटता हुआ बोला, "ढिकरात, तुम्हारी क्या प्रोग्रेस है? तुम्हारी सगाई हुए तो छह महीने हो चुके हैं।"

"सर, डाक की एक्सचेंज से तो यही अनुमान होता है कि हमें जल्दी ही बारात में शामिल होने को इन्वीटेशन मिलनेवाली है।" मेजर ढिल्लों ने कैप्टन ढिकरात को बात करने का अवसर दिये बिना ही कहा।

कर्नल गिल फिर कैप्टन कुट्टी की ओर मुड़ गया, "कुट्टी, तुम्हारी क्या प्रोग्रेस है? तुम लड़की देखने के लिए चार बार छुट्टी ले चुके हो!"

"सर, लड़की तो पसन्द कर ली है, लेकिन अभी उसकी कनसैण्ट नहीं आयी।" कैप्टन सूद ने कहा।

"यू शट-अप, सूद!" कैप्टन कुट्टी ने सूद को प्यार से झिड़कते हुए कहा, "सर, मेरी सगाई हो चुकी है।"

"तो तुम इस खबर को छिपा क्यों रहे हो? क्या कोई दूसरा क्लेमैण्ट पैदा

होने का डर है ?" मेजर ढिल्लों ने पूछा।

इस बीच में बैरे ड्रिंक और सोडा लेकर आ गये। कर्नल गिल प्रत्येक अफ़सर से ड्रिंक के बारे में पूछ रहा था। उसने कैप्टन इलावत से भी कहा, "गिलास क्यों नहीं उठाते ?"

"थैंक यू सर, मैं सिर्फ़ गाड्स ड्रिंक (पानी) लेता हूँ।"

"कोई सॉफ़्ट ड्रिंक ले लो....कॉफ़ी या चाय ले लो।" कर्नल गिल ने आग्रह करते हुए कहा।

"थैंक यू सर, पानी ही ठीक रहेगा। चाय-कॉफ़ी पी ली तो भूख मर जायेगी।"

वेस्टर्न म्यूजिक की हलकी-हलकी धुनों पर महफ़िल गरम हो रही थी। कैप्टन इलावत पानी का गिलास थामे ज़्यादातर लेडीज़ के गिर्द घूम रहा था। वह मिसेज़ यादव और मिसेज़ करमरकर से खाने का निमन्त्रण वसूल कर चुका था। मिसेज़ गिल थोड़ी-थोड़ी देर के बाद कुछ समय के लिए किचन में यह देखने के लिए जाती कि खाना ठीक ढंग से पक रहा है या नहीं।

कुछ समय के बाद खाने की खुशबू किचन से बाहर फैलनी शुरू हो गयी। कैप्टन इलावत नथुने फुलाकर उसकी खुशबू को समेटता रहा और साथ ही उसकी भूख बढ़ती गयी। वह कर्नल गिल के पास जाकर हाथ मलता हुआ झेंपकर बोला, "एक्सक्यूज़ मी सर, मेरी एक कमज़ोरी है।"

"क्या ?" कर्नल गिल ने हैरानी से पूछा।

"सर, जब खाने की खुशबू फैलती है तो मेरे लिए किचन से बाहर रहना असम्भव हो जाता है।"

"ओह ! प्लीज़ डबल अप ! किचन उस तरफ़ है।" कर्नल गिल ने हँसते हुए संकेत किया।

"थैंक यू, सर" कहकर कैप्टन इलावत उस ओर चला गया जिधर कर्नल गिल ने इशारा किया था।

मिसेज़ गिल कैप्टन इलावत को किचन में देखकर हैरान हो गयी।

"इलावत, क्या आप खाना बनाना भी जानते हैं ?"

"जी नहीं, सिर्फ़ खाना जानता हूँ।" कैप्टन इलावत ने हँसते हुए आगे कहा, "मैडम, बुरा न मानें तो एक बात कहूँ।"

"कहो।"

"किचन से खुशबू इतनी बढ़िया आ रही थी कि मुझसे बाहर लॉन में रुका न गया। मुझे दो ही तो शौक़ हैं। अच्छे कपड़े पहनने का और अच्छा खाना खाने का। लाइए कुछ दीजिए। खाना कैसा बना है कुछ तो बता सकूँ।" इलावत ने प्लेट उठाते हुए कहा।

"क्या लेंगे, चिकन, मटन, सब्जी....?"

"थोड़ा-थोड़ा सब कुछ दे दें।"

मिसेज गिल ने थोड़ा आगे जाकर आवाज़ दी, "सेमी, प्लीज, सब चीजें थोड़ी-थोड़ी एक प्लेट में डाल दो। टेस्टर आया है।"

कुछ क्षणों के पश्चात् सेमी एक प्लेट उठाये कैप्टन इलावत के सामने आ खड़ी हुई। वह उसे देखता ही रह गया और फिर प्लेट उसके हाथ से लेकर झुकता हुआ बोला, "आपको जो कष्ट दिया है उसके लिए माफ़ी चाहता हूँ।"

"इसमें कष्ट कैसा, प्लीज, इट इज़ ए प्लेज़र," सेमी ने हलकी-सी मुसकान के साथ कहा और मिसेज गिल के पास आ गयी। कैप्टन इलावत सेमी की ओर देखते हुए सोचने लगा कि मिसेज गिल ने सेमी का उसे परिचय तो दिया ही नहीं। फिर उसने यह सोचकर सिर झटक दिया कि परिचय तो वह स्वयं ही प्राप्त कर लेगा।

कैप्टन इलावत चिकन का एक टुकड़ा चबाता हुआ लहककर बोला, "आहा, आहा, लुत्फ़ आ गया। खाना बहुत अच्छा बना है। मैंने बहुत दावतें खायी हैं लेकिन इतना लज़ीज़ खाना बहुत कम खाया है।"

और फिर वह सेमी की ओर देखता हुआ बोला, "लेकिन पता नहीं कि यह खाना बनानेवाले का कमाल है या परोसनेवाले का।"

मिसेज गिल और सेमी दोनों मुसकरा दीं तो कैप्टन इलावत ने बहुत अपमान दिखाते हुए सेमी से कहा, "आपका चेहरा बहुत जाना-पहचाना है, ऐसा लगता है कि आपसे पहले भी कहीं मुलाकात हुई है या देखा है!"

"कह नहीं सकती। हो सकता है।" सेमी ने धीमी आवाज़ में संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

कैप्टन इलावत माथा ठोंकता हुआ बोला, "आप चण्डीगढ़ में भी रही हैं?"

"मैं तो वहीं रहती हूँ।"

"तो फिर वहीं देखा होगा! मेरी छोटी बहन गवर्नमेण्ट कॉलेज फ़ॉर विमेन की स्टुडेण्ट थी। मैं उसे अकसर मिलने जाया करता था।" कैप्टन इलावत ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

"मैं तो कॉलेज ऑफ होम साइन्स में पढ़ी हूँ।"

"आई सी! वहाँ मेरी कज़न पढ़ती थी। उसे भी अकसर मिलने जाया करता था। वहीं आपको देखा होगा।"

उन्हें बातें करते देखकर मिसेज गिल भी उनके पास आ गयी, "आई एम सो सॉरी! मैं आप लोगों का परिचय कराना तो भूल ही गयी।" और फिर वह सेमी की ओर संकेत करती हुई बोली, "सतेन्द्र ग्रेवाल, मेरी छोटी बहन है। घर में लाड़ से सब सेमी कहते हैं। इस साल डिग्री के लिए एपियर हुई है।"

सेमी ने थोड़ा-सा सिर झुका दिया।

"आप हैं कैप्टन इलावत। कुछ दिन पहले ही बटालियन में आये हैं।"

कैप्टन इलावत ने भी उसकी नक़ल उतारते हुए मुसकराकर सिर झुका दिया और नर्म स्वर में बोला, "इट इज़ ए ग्रेट प्लेज़र टू हैव मेट यू।"

"प्लेज़र इज़ इक्युली माइन।" सेमी ने सद्भावना से कहा।

कैप्टन इलावत बात जारी रखता हुआ बोला, "मैंने भी डिग्री की परीक्षा दी है। नतीजे का इन्तज़ार है।"

मिसेज़ गिल और सेमी हैरानी से उसकी ओर देखने लगीं तो वह बोला, "मैं प्राइवेट कैण्डीडेट हूँ। हम प्राइवेट तौर पर परीक्षा में बैठ सकते हैं। मैंने इकानोमिक्स और पोलिटिकल साइन्स ले रखे हैं। मेरा रोल नम्बर आठ हज़ार नौ सौ छियानवे है। आपका रोल नम्बर क्या है?"

"क्या करेंगे मेरा रोल नम्बर पूछकर। मेरे पेपर अच्छे नहीं हुए।" सेमी ने उदास स्वर में कहा।

"जब नतीजा निकलेगा तो पता करूँगा।"

"मेरा रोल नम्बर...." सेमी ने कहना शुरू किया लेकिन फिर रुक गयी, "क्या करेंगे रोल नम्बर पूछकर? पास हुई या फ़ेल, आपको दीदी से पता लग जायेगा।"

"मैं सेकण्डहैण्ड इन्फ़ॉर्मेशन में यक़ीन नहीं रखता। यह भी तो हो सकता है कि इन्हें आपका रिज़ल्ट मेरी मार्फ़त ही पता लगे।" कैप्टन इलावत ने मिसेज़ गिल की ओर संकेत करते हुए कहा।

"सेमी, बताती क्यों नहीं? इसमें छिपाने की क्या बात है?" मिसेज़ गिल ने कुछ तल्ख लहजे में कहा।

सेमी फिर भी चुप रही तो कैप्टन इलावत मिसेज़ गिल को सम्बोधित करते हुए बोला, "यह तो रोल नम्बर बताने की बेहद मामूली समस्या है। अपने बारे में आपको बड़े-बड़े फ़ैसले लेने पड़ेंगे, वे कैसे करेंगी?" कैप्टन इलावत ने सेमी को चिढ़ाने के लिए कहा।

"मेरा रोल नम्बर दो हज़ार आठ सौ बत्तीस है।" सेमी ने जल्दी-जल्दी कह डाला।

"दो हजार आठ सौ बत्तीस।" कैप्टन इलावत ने आहिस्ता-आहिस्ता दोहराया और दायाँ हाथ ऊपर उठाता हुआ बोला, "याद हो गया, हमेशा के लिए।"

"क्या करेंगे याद करके?" सेमी ने निराशा भरे स्वर में कहा, "मेरे पेपर अच्छे नहीं हुए।"

"रिज़ल्ट तो फिर भी निकलेगा।" कैप्टन इलावत ने कहा।

मिसेज गिल को किचन में आये हुए कोई पन्द्रह मिनट हो गये थे। उसकी तलाश में अन्य लेडीज़ भी किचन में आ गयीं। मिसेज़ गिल उन्हें देखकर लज्जित-सी

हो गयी। उसने उनकी ओर देखते हुए कहा, "आई एम सो सॉरी। मैं तो खाना पकने की प्रोग्रेस देखने आयी थी लेकिन दिस स्मार्ट यंगमैन...।" मिसेज गिल ने मुस-कराते हुए कैप्टन इलावत की ओर देखा। कैप्टन इलावत ने अपने कोट के कॉलरों को छुआ और अकड़कर खड़ा हो गया। वे सब खिलखिलाकर हँसने लगीं तो मिसेज गिल बोली, "इसने वातों में ऐसा उलझाया कि मैं सब कुछ भूल गयी। आइए, अन्दर चलते हैं। सेमी कपड़े तबदील कर लेगी। सारा खाना इसकी सुपरवीजन में बना है। और आप अपना पिन-अप देख लें।"

मिसेज गिल सबसे पहले किचन से निकली।

कैप्टन इलावत रास्ता छोड़कर एक ओर खड़ा हो गया। जब सेमी उसके सामने से गुज़री तो उसने मुसकराते हुए धीमी आवाज़ में कहा, "टू....एट.... थ्री....टू!"

सेमी ने भरपूर नज़रों से एक क्षण के लिए उसकी ओर देखा और गरदन झुकाकर मुसकराती हुई तेज़ क़दमों से बाहर चली गयी।

लेडीज़ के जाने के बाद कैप्टन इलावत भी किचन से लॉन में आ गया। कर्नल गिल अन्य अफ़सरों से रेजिंग-डे के बारे में बातें कर रहा था। कैप्टन इलावत को लॉन की ओर आता देखकर वह अपनी बात बीच में ही छोड़कर बोला, "हैलो इलावत, खाना कैसा बना है?"

"सर, बहुत बढ़िया है।" खुशबू से अधिक अच्छा है। कैप्टन इलावत ने होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा।

"लेडीज़ क्या अभी किचन में ही हैं?"

"नो सर, अपना पिन-अप दुरस्त करने अन्दर गयी हैं।" कैप्टन इलावत ने सिर के गिर्द हाथ फेरकर जूड़ा ठीक करने की मुद्रा बनाते हुए मटककर कहा।

"ओह!" कर्नल गिल मुसकरा दिया।

"इलावत, क्या इन्वीटेशन-कार्ड छपने के लिए दे दिये हैं?" कर्नल गिल ने गम्भीर होते हुए कहा।

"येस्सर। कम्पोज़िंग हो गयी है लेकिन अभी प्रिण्टआर्डर देना है। सर, मेरी एक सजेशन है।"

"बोलो।"

"सर, सब ऑफ़िसर्स के पेरेण्ट्स को भी रेजिंग-समारोह में शामिल होने की दावत देनी चाहिए ताकि वह देख सकें कि उनके बच्चे किस तरह रहते हैं।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"गुड आइडिया। क्यों यादव?" कर्नल गिल ने अपने विचार की अनुमति पाने के लिए पूछा।

"येस्सर, वेरी गुड आइडिया।"

"सर, जो ऑफ़िसर्स शादी-शुदा हैं उनके ससुराल को भी कार्ड जाने चाहिए।" कैप्टन इलावत ने शरारत से विवाहित अफ़सरों की ओर देखते हुए कहा, "ताकि वह देख सकें कि उनकी वेटियाँ किस हालत में रहती हैं।"

"नौट ए वैड आइडिया, क्यों यादव ?"

"येस्सर, आइडिया अच्छा है। लेकिन इतने मेहमानों को ठहरायेंगे कहाँ ?"

"सर, माफ़ कीजिए, यह कोई वहुत वड़ी समस्या नहीं है। जो मेल गेस्ट अकेले आयेंगे, उन्हें मेस में ठहराया जा सकता है। जो फ़ैमिलीज़ के साथ आयेंगे उन्हें मैरीड ऑफ़िसर्स के साथ या सिविल रेस्ट हाउस में ठहराया जा सकता है। एक-दो दिन की तो वात है।" कैप्टन इलावत ने वताया।

"हो तो सकता है, क्यों यादव ?"

"येस्सर।"

"इलावत, ठीक है। तुम सव वन्दोवस्त टाई-अप कर लेना।"

"येस्सर।"

लेडीज़ को आते देखकर सव लोग चुप हो गये और एक ओर हटकर राह वनाते हुए उनकी ओर देखने लगे। मिसेज़ गिल सव से आगे थी। उसने निकट पहुँचकर पूछा, "क्या आप लोगों की अभी ड्रिंक ही चल रही है ?"

"आखिरी राउण्ड है, इसके वाद खाना होगा।" कर्नल गिल ने उनपर उचटती-सी नज़र डालते हुए कहा। फिर पूछा, "सेमी कहाँ है ?"

"अभी आ रही है। किचन में स्वीट-डिश देखने गयी है।" मिसेज़ गिल ने कहा।

कैप्टन इलावत अचेतन में पेट पर हाथ फेरने लगा और उसके मुँह में पानी भर आया। कर्नल गिल ने सवके हाथों में पकड़े गिलासों पर नज़र डाली और अपनी पत्नी की ओर मुड़ता हुआ वोला, "पैमी, इलावत ने सुझाव दिया है कि रेज़िंग-डे पर सव ऑफ़िसरों के पेरेण्ट्स और मैरीड ऑफ़िसरों के इन-लाज़ को भी इन्वाइट किया जाये। इलावत, प्रोग्राम वताओ।"

कैप्टन इलावत मिसेज़ गिल को प्रोग्राम का विस्तार वताने लगा। वह उत्सुकता से अपनी वात कह रहा था कि उसे पता ही नहीं चला कि सेमी कव वहाँ आयी। सव लोग उसकी ओर कनखियों से देख रहे थे। कैप्टन इलावत की नज़र उसपर पड़ी तो वह भौंचक्का-सा रह गया और वात करता-करता रुक गया। सेमी नीले रंग की साड़ी में वहुत सुन्दर लग रही थी। कैप्टन इलावत का मुँह खुला का खुला रह गया। वह मन्त्र-मुग्ध सा कुछ क्षणों तक सेमी को इस तरह देखता रहा जैसे उसके पूरे अस्तित्व को दिल में उतार लेना चाहता हो।

कैप्टन इलावत को अपनी ओर घूरता पाकर सेमी कुछ झेंप गयी और मुँह दूसरी ओर फेरकर झुकती हुई अपनी साड़ी के फ़ॉल को ठीक करने लगी। कैप्टन

इलावत एकदम चौंक उठा और आँखें झपकाता हुआ बोला, "मैं भी कैसा बेवकूफ़ हूँ, मिस ग्रेवाल को पहचानने में मुझे कई सेकेण्ड लग गये हालाँकि अभी दस पन्द्रह मिनट पहले इनसे किचन में मिला था।" और फिर वह सफ़ाई पेश करता हुआ बोला, "कसूर मेरा भी नहीं है। उस समय इन्होंने सलवार-क़मीज़ पहन रखी थी और अब साड़ी में है।"

कैप्टन इलावत ने खिलखिलाकर हँसते हुए सिर झटक दिया और सेमी की ओर दिलचस्पी से देखने लगा।

कर्नल गिल सेमी की ओर देखते हुए बोला, "आई एम सॉरी.. मैंने आप लोगों को सेमी का परिचय तो दिया ही नहीं। मिस सतेन्द्र ग्रेवाल—मैडम की छोटी बहन और मेरी इकलौती साली। क्यों सेमी?" सेमी झेंप गयी तो कर्नल गिल हँसता हुआ बोला।

"सेमी बहुत डेकोरेटेड आर्मी-ऑफ़िसर की बेटी है। आपने उनका नाम ज़रूर सुना होगा—ब्रिगेडियर एच. एस. ग्रेवाल पी. वी. एस. एम. एम., एम. वी. सी.। लुत्फ़ की बात यह है कि उन्हें यह डेकोरेशन सेमी के वर्थ के बाद ही मिली है। काश्मीर ऑपरेशन में उन्हें महावीर चक्र मिला, जब वे नौशहरा एरिया में एक बटालियन कमाण्ड कर रहे थे।"

"लकी गर्ल!" मेजर ढिल्लों ने सेमी की ओर प्रशंसा भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"वैरी लकी! कम से कम अपने डैडी के लिए।" कर्नल गिल ने कहा।

"यस, लेकिन सबसे ज्यादा भाग्यशाली तो वह युवक होगा जिससे यह शादी करेगी।" कैप्टन इलावत ने भावुक नज़रों से सेमी की ओर देखते हुए कहा।

सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े और उनके ठहाकों से वातावरण गूँज उठा। सेमी पहले ही झेंप रही थी। कैप्टन इलावत की टिप्पणी सुनकर उसका चेहरा पहले एकदम लाल और फिर पीला हो गया। उसके चेहरे पर एक रंग आ रहा था और एक जा रहा था। वह वहाँ से बंगले की ओर जाने लगी तो कर्नल गिल ने उसे लपक-कर पकड़ लिया और पुचकारता हुआ बोला, "सेमी, कहाँ जा रही हो! हम सब बहुत देर से तुम्हारी राह देख रहे थे।"

कैप्टन इलावत को महसूस हुआ कि सेमी को उसकी बात बुरी लगी है। वह भी परेशान सा हो गया और हाथ मलता हुआ सेमी के निकट जाकर बहुत नर्म आवाज़ में बोला, "मिस ग्रेवाल, मुझे अफ़सोस है कि मैंने वह बात कह दी शायद जो मुझे नहीं कहनी चाहिए थी।"

"टेक इट इज़ी, मैन!" कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत को प्यार से समझाते हुए कहा, "तुमने तो गप की है। ज्यादा से ज्यादा तारीफ़ की है।"

कर्नल गिल ने बात पलटने के लिए अपना गिलास खाली कर दिया। अन्य

अफ़सरों ने भी गिलास खाली कर दिये। कर्नल गिल ने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए कहा, "मैडम, हम डिनर के लिए तैयार हैं।"

"प्लीज कम, खाना तैयार है।" मिसेज गिल एक ओर लगी मेजों की तरफ़ बढ़ गयी। उसके पीछे-पीछे अन्य लोग भी उस ओर चले गये। मिसेज़ गिल, मिसेज़ यादव, मिसेज़ शर्मा, मिसेज़ वासू और मिसेज़ करमरकर अपने हाथों से सबको प्लेटें दे रही थीं। कैप्टन इलावत सबसे अलग खड़ा था। मिसेज़ शर्मा उसकी ओर प्लेट बढ़ाती हुई बोली, "कैप्टन इलावत, हमारे यहाँ कब आ रहे हो?"

कैप्टन इलावत चौंक गया और वह मुसकराने की कोशिश करता हुआ बोला, "दो दिन के लिए तो बुक हो चुका हूँ। अगले बुधवार को मिसेज़ यादव ने इन्वाइट किया है और अगले शनि के लिए मैं मिसेज़ वासू का मेहमान हूँगा। उसके बाद अवेलेबल हूँ। अगर आप बुला लें तो मेहरबानी होगी वरना मैं खुद आ जाऊँगा।"

"प्लीज डू। क्यों रघु?" मिसेज़ शर्मा अपने पति, मेजर शर्मा की ओर देखते हुए बोली।

"श्योर!" मेजर शर्मा ने कहा।

"यहाँ आप ही लोग हमारे माई-बाप हैं। आप हमारा खयाल नहीं रखेंगे तो और कौन रखेगा।" कैप्टन इलावत ने चेहरा बहुत मसकीन बनाकर कहा।

मिसेज़ शर्मा, मिसेज़ यादव और मिसेज़ करमरकर खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

सब खाना ले चुके थे। लेकिन कैप्टन इलावत खाली प्लेट को पेट से लगाये मिसेज़ शर्मा से बातों में व्यस्त था। मिसेज़ गिल उसके पास आयी और डाँटती हुई बोली, "इलावत, तुम्हारी प्लेट क्यों खाली है? क्या कर रहे हो? उस वक़्त शोर मचा रहे थे कि भूख से मरे जा रहे हो और अब बातों से पेट भरने की कोशिश कर रहे हो। प्लेट इधर लाओ।"

"मैडम, मेरा पेट तो किचन में खाना टेस्ट करते-करते ही भर गया था। यह अलग बात है कि अभी नीयत नहीं भरी।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

"डोण्ट बी सिली। प्लेट इधर लाओ।" मिसेज़ गिल ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"मैडम, मैं तो सिर्फ़ स्वीट-डिश खाऊँगा। सुना है, कोई अनोखी चीज़ बनी है।" कैप्टन इलावत ने सेमी को सुनाने के लिए ऊँची आवाज़ में कहा लेकिन सेमी इर्द-गिर्द से बेख़बर मिसेज़ यादव और कैप्टन सूद से बातों में खोयी हुई थी।

मिसेज़ गिल ने कैप्टन इलावत की प्लेट में थोड़े चावल, फ़िश और चिकन डाल दिये। "जबतक नमक नहीं खाओगे, स्वीट-डिश नहीं मिलेगी, समझे?"

कैप्टन इलावत धीरे-धीरे मछली के टुकड़े चबाता हुआ एक ओर जा खड़ा हुआ। उसे रह-रहकर खयाल आ रहा था कि शायद सेमी उससे नाराज़ है। उसने फ़ैसला किया कि सेमी से सीधी बात कर ले। वह उसकी ओर गया भी लेकिन यह

सोचकर रुक गया कि उसकी यह कोशिश और भी बड़ी ग़लतफ़हमी का कारण बन सकती है।

मिसेज़ गिल घूमती हुई प्रत्येक मेहमान के पास जा रही थी। कैप्टन इलावत उससे दूर रहने के लिए निरन्तर पोज़ीशन बदल रहा था। उसे उदास और परेशान-सा देखकर मेजर ढिल्लों और मिसेज़ शर्मा उसके पास आ गये।

"कैप्टन इलावत, आप चुप क्यों हैं?" मिसेज़ शर्मा ने पूछा।

"यों ही बोल-बोलकर थक गया था।" कैप्टन इलावत ने मुसकराने की कोशिश करते हुए कहा।

"नहीं, यों ही तो नहीं। तुम्हारी हालत बिलकुल उस नौजवान-जैसी है जिसे या तो किसी लेडी ने झाड़ दिया हो और या फिर वह नया-नया प्रेमग्रस्त हुआ हो।" मेजर ढिल्लों ने उसे छेड़ते हुए कहा।

"क्या आप अपने तजुरबे की बिना पर कह रहे हैं?" कैप्टन इलावत ने मेजर ढिल्लों को उलझाने के लिए पूछा।

"अपना तजुरबा भी है और गिर्देपेश पर भी नजर रखते हैं।" मेजर ढिल्लों ने आँखें आधी बन्द करते हुए कहा।

"मेजर ढिल्लों सर, मैं आपको एक बात बता दूँ। मुझे जब भी किसी लड़की से प्रेम होगा तो मैं सभी स्टेज एक ही छलांग में पार कर जाऊँगा।" कैप्टन इलावत जोश में आ गया।

"क्या तुम कोर्टशिप नहीं करोगे?"

"कोर्टशिप?" कैप्टन इलावत ने घृणापूर्ण स्वर में कहा, "कोर्टशिप वह लोग करते हैं जिनमें आत्म-विश्वास नहीं होता। मैं तो तुरन्त फ़ैसला कर लेता हूँ।" कैप्टन इलावत ने सेमी की ओर देखते हुए कहा।

"जल्दबाज़ी में किया गया फ़ैसला अकसर ग़लत होता है।"

"सोच-समझकर किये गये फ़ैसले भी कई बार ग़लत निकलते हैं।" कैप्टन इलावत ने तुरन्त उत्तर दिया।

सेमी एक ओर अकेली खड़ी दीवार के साथ-साथ लगे सफ़ेदे के लम्बे वृक्षों को देख रही थी। कैप्टन इलावत ने अपनी प्लेट जूठी प्लेटों के लिए निश्चित मेज़ पर रख दी और वह सेमी की ओर बढ़ गया।

कैप्टन इलावत को अपनी ओर आता देखकर सेमी कुछ परेशान-सी हो गयी। अपने दोनों हाथ पतलून की जेबों में डाले कैप्टन इलावत उसके सामने आ खड़ा हुआ। सेमी के चेहरे पर एक बार फिर एक रंग आने और जाने लगा। कैप्टन इलावत उसकी मनःस्थिति भाँपता हुआ नम्र स्वर में बोला, "सेमी, इस नाम से पुकारने के लिए मुझे क्षमा करना, क्योंकि एक बार इन्फ़ारमल होने के बाद मैं फ़ारमल नहीं हो सकता।" कैप्टन इलावत ने उसे समझाते हुए कहा, "सोलजरी मेरा प्रोफ़ेशन है लेकिन इसका

यह मतलब नहीं कि मैं असभ्य और उजड्ड हूँ। सैनिक होने के कारण मैं बहुत स्पष्ट, सीधा-सादा और स्ट्रेट आदमी हूँ। मैं तो यह जानता हूँ कि दो और दो हमेशा चार होते हैं।"

सेमी सिर झुकाये उसकी बातें सुन रही थी। कैप्टन इलावत ने सशक्त स्वर में कहा, "मैंने उस समय जो कुछ कहा था उसे फिर कहने को तैयार हूँ।"

सेमी उसकी आँखों में कुछ क्षणों तक झाँकती रही और फिर मुसकराकर सिर झुका लिया। कैप्टन इलावत खिल उठा और बहुत प्यार भरे लहजे में बोला, "मेरे मन पर बहुत बोझ था। कुछ लोग हमेशा मुसकराने के लिए जन्म लेते हैं। उनके चेहरे पर कभी मलाल नहीं आना चाहिए। मुझे बहुत अफ़सोस है कि मेरी वजह से आपके मन को कष्ट पहुँचा। विश्वास करो, मेरी कभी ऐसी इच्छा हो ही नहीं सकती।"

सेमी ने एक बार फिर उसकी आँखों में झांका और नज़रें झुकाकर धीमे स्वर में बोली, "कैप्टन इलावत !"

"प्लीज़, मुझे इलावत मत कहिए। अगर तुम सेमी हो तो मैं देवू हूँ।" कैप्टन इलावत ने बेखुदी में कहा।

सेमी हँस दी और फिर होंठ काटती हुई बोली, "मैं.......मैं घबरा गयी थी। बस यों ही, अकारण, तुमने....।" सेमी एकदम ख़ामोश हो गयी और एक बार फिर होंठ काटती हुई बोली, "आई एम सॉरी। आपने जो मुझे....तुमने जो कम्पलीमेण्ट मुझे दिया था मैं उसके योग्य नहीं हूँ। मैं बहुत मामूली-सी सीधी-सादी लड़की हूँ।"

"सच ?" कैप्टन इलावत ने हैरानी और खुशी की मिली-जुली भावना से कहा, "मैं भी ऐसा ही हूँ। बल्कि गँवार होने की हद तक सीधा और स्ट्रेट फ़ारवर्ड हूँ।"

"बिलकुल ग़लत। तुम तो मिनटों में दूसरे आदमी को पागल बना देते हो।" सेमी ने उसे एक क्षण के लिए भरपूर नजरों से देखकर आँखें झुका लीं।

"छोड़ो इन बातों को। अगर हम पागल हैं, तो दोनों हैं। यह बताओ, पढ़ाई के बाद क्या प्रोग्राम है ?"

"कोई ख़ास नहीं।"

"फिर भी, कुछ न कुछ तो होगा।"

"किसी बारोज़गार नौजवान की रोटी बनाऊँगी और क्या करूँगी। डैडी आगे पढ़ाने के हक़ में नहीं हैं।" सेमी ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"रोटी की तो मुझे भी बहुत तकलीफ़ है।" कैप्टन इलावत ने सेमी को तृष्णा भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

सेमी ने अपना निचला होंठ दांतों के नीचे दबा लिया। वह बार-बार कैप्टन इलावत की ओर देखकर नज़रें झुका लेती।

कैप्टन इलावत धीमे स्वर में बोला, "वैसे इतनी जल्दी नहीं है। अगले मास मई तक मैं सबस्टेण्टिव कैप्टन बन जाऊँगा और फिर एकटिंग मेजर, शायद इससे पहले

हो। इसके बाद किसी भी दिन।"

कैप्टन इलावत एक-दो मिनट तक सेमी को देखता रहा। सेमी नजरें झुकाये चुपचाप खड़ी थी।

"मैंने अपना मन खोल दिया है। आगे आपकी मरजी है। मैं आपको मजबूर नहीं कर सकता।" कैप्टन इलावत ने कुछ मायूस लहजे में कहा।

सेमी ने आँखें उठाकर उसकी ओर देखा और सिर को थोड़ा-सा झुकाकर आगे बढ़ गयी। कैप्टन इलावत वहीं पर मन्त्रमुग्ध-सा खड़ा सेमी को छोटे-छोटे क़दम उठा कर जाते हुए देखता रहा।

सेमी का मस्तिष्क जैसे जाम हो गया था। उसका दिल धक-धक कर रहा था। वह सोच रही थी कि किस तरह एक-डेढ़ घण्टे में उसकी जीवन की धारा ही बदल गयी है। अपने बहकते हुए जज़्बात को रोकने के लिए सेमी ने टेपरिकार्डर का वॉल्यूम एकदम ऊँचा कर दिया। सब लोग हैरान से उसकी ओर देखने लगे।

"सेमी डार्लिंग, क्या कर रही हो ?" मिसेज़ गिल ने घबराकर पूछा।

"कुछ नहीं, दीदी।" सेमी ने टेपरिकार्डर का वॉल्यूम कम करते-करते स्विच ऑफ़ ही कर दिया।

कैप्टन इलावत कुछ फासले पर खड़ा सब कुछ देख रहा था। वह लपककर टेपरिकार्डर के पास गया और उसका वॉल्यूम ठीक करता हुआ सेमी से सरगोशी में बोला, "सेमी, टेक इट इज़ी।"

"यू सेन, आई काण्ट। मुझे तो ऐसे लग रहा है जैसे मैं फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाऊँगी।" सेमी ने विचलित स्वर में कहा।

"कैप्टन इलावत उस ओर आ गया जहाँ अधिकतर लोग खड़े थे। वह हँसता हुआ बोला, "मिस ग्रेवाल बहुत कनसिडरेट है। मेजर शर्मा और मिसेज़ शर्मा के संगीत की धुन पर बेख़याली में ही पाँव थिरक रहे थे, इसलिए मिस ग्रेवाल ने यह सोच कर कि शायद वे दोनों नाचना चाहते हैं, टेप का वाल्यूम बढ़ा दिया।"

"डैम इट, इलावत! इट इज़ आल बुल शीट, सब झूठ है।" मेजर शर्मा ने शरमिन्दगी छिपाने के लिए कहा।

कैप्टन इलावत मेजर शर्मा की ओर तीखी नज़रों से देखता हुआ बोला, "सर, इसमें शरमाने की क्या बात है। अचेतन में संगीत पर पाँव थिरकना तो जिन्दगी की निशानी है। पाँव तभी थिरकते हैं जब संगीत की ध्वनि मन की तान से मिलती है।"

"अगर किसी को डान्स में दिलचस्पी है तो बता दे। मेरे पास डान्स म्यूज़िक के कुछ रिकार्ड हैं।" मिसेज़ गिल ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

"मैडम, इतना अच्छा खाना खिलाने के बाद यह अत्याचार न कीजिए।" मेजर यादव गिड़गिड़ाता हुआ बोला।

स्वीट-डिश सर्व होने लगा तो मिसेज़ गिल ने ऊँची आवाज़ में घोषणा की—

"यह स्पेशल स्वीट-डिश सेमी ने बनायी है। कुछ नयी चीज़ ही है।"

"वण्डरफ़ुल! वेरी टेस्टी! आहा, लुत्फ़ आ गया! फ़्लेवर बहुत अच्छा है।" स्वीट-डिश की तारीफ़ में भांति-भांति की आवाज़ें आ रही थीं। अपनी प्रशंसा सुनकर सेमी का चेहरा तमतमाने लगा था।

"सेमी, बहुत अच्छी डिश है। मुँह में रखते ही गले के नीचे उतर जाती है। अगर हम दोनों मिलकर बनाते तो शायद और भी ज्यादा अच्छी बनती।" कैप्टन इलावत ने भँवें ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

"थैंक्यू, वी शैल ट्राई टूगेदर आलसो।" सेमी ने मुसकराकर उत्तर दिया।

लेडीज़ ने सेमी को घेर लिया।

"सतेन्द्र प्लीज़, इस डिश की रेसिपी हमें भी बताना।" मिसेज़ शर्मा ने कहा।

"मैडम, ऐसे नहीं बतायेंगे। कोई नयी चीज़ सीखने के लिए गुरु धारण करना पड़ता है। खर्च करना पड़ता है।" कैप्टन इलावत ने मिसेज़ शर्मा से कहा और फिर सेमी की ओर मुड़ता हुआ बोला, "सेमी प्लीज़! आप मुझे अपना सेक्रेटरी बना लें। मैं स्वीट-डिश की सूरत में ही मुआवज़ा लेकर काम करने को तैयार हूँ।"

सेमी ने मुसकराकर सिर झुका लिया तो कैप्टन इलावत लेडीज़ को सम्बोधित करता हुआ बोला, "आपसे मिलकर मैं क्लास का प्रोग्राम बना दूँगा। बेहतर यही होगा कि आप घर पर इन्वाइट करें और बारी-बारी सीखें।"

कॉफ़ी का दौर खत्म होने तक दस बज गये। मेजर यादव ने घड़ी देखी और सब अफ़सरों पर उचटती-सी नजर डालकर वह और उसकी पत्नी कर्नल गिल और मिसेज़ गिल के पास आ गये। मेजर यादव बहुत नम्र स्वर में बोला, "मैडम, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया! आज की शाम बहुत अच्छी रही। खाना बेहद अच्छा था। अब आपसे इजाज़त चाहते हैं।"

"आप समय निकाल कर हमारे यहाँ आये, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!" मिसेज़ गिल ने कहा।

"ईश्वर करे ऐसी शामें रोज़ आयें। घर का खाना तो मिलता है।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

"श्योर-श्योर!" एक साथ कई आवाज़ें आयीं।

मिसेज़ गिल और कर्नल गिल बड़े गेट के पास आ खड़े हुए और प्रत्येक अफ़सर को थैंक्स देते हुए उन्हें विदा करने लगे। कैप्टन इलावत सबसे आखिर में गेट पर पहुँचा।

"हैलो इलावत, आई होप, यू मस्ट हैव इन्जायेड दी इवनिंग।" कर्नल गिल ने कहा।

"सर, इतनी अच्छी शाम आज तक ज़िन्दगी में कभी नहीं आयी थी।" कैप्टन इलावत ने सेमी की ओर देखते हुए कहा।

"थैंक्स ए लॉट, सर, गुड नाइट, बाई-बाई।" कैप्टन इलावत ने कर्नल गिल को जम्हाई लेते हुए देखकर कहा।

"गुड नाइट, बाई-बाई।"

सेमी अपने दायें हाथ से पल्लू थामे खड़ी थी। उसकी आँखें मौसमे-बहार के खुले रुपहले बादलों की तरह चमक रही थीं। सेमी ने धीरे से हाथ हिलाकर कैप्टन इलावत को विदा किया।

कैप्टन इलावत ने मोटर साइकिल को स्टार्ट करके तुरत फ़ुल थ्रोटल दे दिया। मोटर साइकिल का इंजन दहाड़ने लगा। वह ब्रेक लाइट बार-बार जलाता-बुझाता आगे निकल गया।

"गुड सोल।" कर्नल गिल ने मोटर साइकिल की दिशा में देखते हुए कहा।

"बहुत हँसमुख है।" मिसेज़ गिल ने उत्तर दिया।

सेमी कैप्टन इलावत की प्रशंसा सुनकर होंठों में ही मुसकरा दी। उसने क्यारी से गुलाब का एक फूल तोड़ लिया। थोड़ी देर तक सहलाकर उसे बालों में टिका लिया और फूलों से खेलती वह आहिस्ता-आहिस्ता क़दम उठाती हुई उनके पीछे-पीछे बँगले के अन्दर चली गयी।

पाँच

रेज़िंग-डे ज्यों-ज्यों नज़दीक आ रहा था, कैप्टन इलावत की व्यस्तता बढ़ रही थी। वह लंच के लिए मुश्किल से आधा घण्टा निकाल पाता और सुबह से शाम तक भाग-दौड़ में रहता।

रेज़िंग-डे में केवल दो दिन बाक़ी थे। कैप्टन इलावत आनेवाले मेहमानों की रिहाइश, ट्रांसपोर्ट, वेलफ़ेयर फ़ेट इत्यादि के प्रबन्ध को चेक करने के बाद कोई ढाई बजे मेस में पहुँचा। उसने जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धोया और खाने की मेज़ पर आ बैठा। मेस में रहनेवाले सभी अफ़सर लंच ले चुके थे। उसने आराम करने के लिए कुहनियाँ मेज़ पर टिका दीं और सिर दोनों हाथों में थाम लिया।

बैरा खाना लगा चुका तो कैप्टन इलावत सीधा बैठ गया और उसने नेपकिन की तहें खोलते हुए पूछा, "लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल साहब खाना खा गये?"

"साब, उन्होंने खाना कमरे में ही मँगवा लिया था। उनका गेस्ट [illegible] है।" मस्तराम ने जवाब दिया।

"गेस्ट आया है? कैसा गेस्ट है?" कैप्टन इलावत ने [illegible]

रोकते हुए पूछा ।

"साव, गेस्ट है ।" मस्तराम कैप्टन इलावत के प्रश्न को समझ न पाकर असमंजस में पड़ गया ।

"गेस्ट तो है—मर्द है, औरत है ? लड़का है, लड़की है ?"

"साव बुजुर्ग है, बहुत साधारण-सा ।" मस्तराम हाथ मसलता हुआ डरता-डरता बोला, "साव, लफटेन साव गेस्ट पर बहुत नाराज़ हुए कि वह क्यों आया है ।"

"अच्छा !" कैप्टन इलावत ने सोच में डूबी हुई आवाज़ में कहा और फिर मस्तराम की ओर देखे बिना बोला, "देखो, लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल साहब को हमारा सलाम दो और बोलो कि हम लाऊंज में उनका इन्तज़ार कर रहे हैं ।"

"जी साव," कहकर मस्तराम चला गया ।

खाना खाकर कैप्टन इलावत लाऊंज में आ बैठा और ब्रीफ़-केस से फ़ाइल निकालकर पढ़ने लगा । लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल दबे पाँव लाऊंज में आया और अटेंशन खड़ा होकर बोला, "गुड आफ़्टरनून सर ।"

"वेरी गुड, आफ़्टरनून । बैठो दर्शन, क्या हाल है ? क्या बहुत मसरूफ़ हो ?" कैप्टन इलावत ने पूछा ।

"नो सर ।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने सोफ़े पर बैठते हुए कहा ।

"सुना है, तुम्हारे गेस्ट आये हैं ? कैप्टन इलावत ने उसकी ओर देखते हुए कहा ।

लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल का चेहरा एकदम उतर गया और वह हाथ मसलने लगा ।

"कौन हैं ? कम आउट, मैन ?" कैप्टन इलावत ने उसपर जोर देते हुए ऊँची आवाज़ में कहा, "मुझे विश्वास है कि तुमने किसी जवान लड़की का अपहरण कर उसे अपने कमरे में बन्द नहीं किया है ।"

"सर, मेरे पिता आये हैं ।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने बड़ी मुश्किल से ये शब्द मुँह से निकाले और गरदन झुकाकर फ़र्श को घूरने लगा ।

"वण्डरफ़ुल, वे तो हमारी बटालियन के पहले गेस्ट हैं । मैं उनसे ज़रूर मिलूँगा ।" कैप्टन इलावत ने प्रसन्न स्वर में कहा ।

"सर ।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने झिझकते हुए कहना शुरू किया, "वह इस क़ाबिल नहीं हैं, ही इज़ ए रिक्शा-पुलर । मुझे उनके यहाँ आने पर बहुत शर्म महसूस हो रही है ।"

"दर्शन, यू आर ए बास्टर्ड । यू आर ए रीयल बास्टर्ड, आई एम सॉरी टू से ।" कैप्टन इलावत के लहजे में क्रोध के साथ अफ़सोस भी शामिल था । वह भारी आवाज़ में बोला, "दर्शन, वह यहाँ रिक्शा-पुलर की हैसियत में नहीं बटालियन के गेस्ट बनकर आये हैं ।"

लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल सिर झुकाकर गुमसुम बैठा रहा। कैप्टन इलावत ने उठते हुए रोब से कहा, "दर्शन, अब तुम ड्यूटी पर नहीं जाओगे। तुम्हारी प्लाटून को मैं वेलफ़ेयर फ़ेट के लिए स्टॉल बनाने का काम देना चाहता था। मैं तुम्हारे नायब सूबेदार को बोल दूँगा। तुम अपने पिता जी के पास बैठो। मैं थोड़ी देर के बाद उन्हें मिलने आऊँगा।"

कैप्टन इलावत ने अपने कमरे में आकर बरफ़ी की चार-पाँच टुकड़ियाँ जल्दी-जल्दी खायीं और दफ़्तर चला गया। कर्नल गिल का अरदली दफ़्तर के द्वार के सामने खड़ा था।

"साहब हैं?" कैप्टन इलावत ने कमरे की ओर संकेत करते हुए कहा।

"जी साब।" अरदली ने चिक़ उठा दी।

कैप्टन इलावत अन्दर गया तो कर्नल गिल काग़ज़ात में खोया हुआ था। कैप्टन इलावत ने खटाक से सैल्यूट दिया तो कर्नल गिल उसकी ओर देखता हुआ बोला, "आओ इलावत।"

"सर, आप अभी गये नहीं?"

"अभी कहाँ? ब्रिगेड-कमाण्डर की कॉल थी। बात नहीं हो सकी। उसी कॉल के इन्तज़ार में हूँ।" कर्नल गिल ने काग़ज़ात एक तरफ़ खिसकाते हुए कहा और कुरसी की पीठ पर झुकता हुआ बोला, "इलावत, एक बहुत इम्पारटेण्ट लेटर आया है। इसके बारे में रेज़िंग-डे के बाद ही बात करेंगे।"

"येस्सर। कैप्टन इलावत ने कहा और फिर कर्नल गिल की ओर ध्यान से देखता हुआ बोला, "सर, लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल के फ़ादर आये हैं। दर्शनलाल उनके आने पर बहुत नाराज़ और लज्जित है। वे रिक्शा-पुलर हैं।"

"दर्शन इज़ ऐन इडियट! कहाँ हैं उसके फ़ादर?"

"मेस में, सर!"

"अच्छा, मैं उनसे ज़रूर मिलूँगा। दर्शन को कोई हक़ नहीं कि बटालियन के गेस्ट पर नाराज़ हो, चाहे वे उसके फ़ादर ही क्यों न हों।" कर्नल गिल ने घण्टी बजाते हुए कहा। सूबेदार सन्तप्रकाश तुरत अन्दर गया। कर्नल गिल काग़ज़ समेटकर उसकी ओर बढ़ाता हुआ बोला, "इन्हें कपबोर्ड में रख दें।" और फिर उठता हुआ कहने लगा, "मैं मेस में जा रहा हूँ। ब्रिगेड-हेडक्वार्टर से एक कॉल आयेगी, वह वहीं डाइवर्ट करा देना। ओके?"

"येस्सर।"

कर्नल गिल ने हैट-स्टैण्ड से अपनी टोपी उठायी और आँखों पर धूप का चश्मा लगाता हुआ बोला, "इलावत, आओ चलें।"

वे कुछ मिनटों में ही मेस में पहुँच गये। लाऊँज में आकर कैप्टन इलावत ने

आवाज़ देकर बैरे को बुलाया और फिर कर्नल गिल को सम्बोधित करता हुआ बोल
"सर, आप क्या लेंगे, बीयर, जिन, कोक ?...."

"नथिंग, थैंक्यू !" कर्नल गिल ने दीवारों पर लगी तसवीरें देखते हुए कहा।

"सर, मेरे पास बरफ़ी है, अगर आप कहें तो....।" कैप्टन इलावत उसकी ओर देखने लगा।

"ओह, आई सी, क्या हमेशा स्टाक रखते हो ?" कर्नल गिल ने मुसकराते हुए पूछा।

"सर, शौक़ जो है।"

"पहले दर्शन के फ़ादर से मिलेंगे।" कर्नल गिल ने लाऊंज से बरामदे की ओर बढ़ते हुए कहा।

कैप्टन इलावत ने बैरे को बुलाकर कहा, "देखो, भागकर लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल साहब के पास जाओ और उनसे बोलो कि सी. ओ. साहब अभी उनके कमरे में आ रहे हैं। डबल अप।"

कर्नल गिल और कैप्टन इलावत धीरे-धीरे क़दम उठाते हुए लेफ़्टिनेण्ट दर्शन-लाल के कमरे के सामने आ गये। कैप्टन इलावत ने आगे बढ़कर दस्तक दी। लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल जैसे द्वार के पीछे ही खड़ा था। उसने तुरत द्वार खोल दिया। कर्नल गिल को देखते ही उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और फिर वह अपने-आपको सँभालता हुआ बोला, "गुड आफ़्टरनून सर !"

"वेरी गुड आफ़्टरनून।" कर्नल गिल ने बहुत नम्र और सौजन्य भरे स्वर में पूछा, "दर्शन, क्या हाल है ? मैंने सुना है, तुम्हारे फ़ादर आये हैं। कहाँ हैं वे ?"

"सर, बाथ-रूम में।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल दो कुरसियों की ओर झुकता हुआ बोला, "प्लीज़ सर, बैठिए।"

"कब आये वे ?"

"सर, दोपहर की गाड़ी से।"

"डैम इट, तुमने बताया ही नहीं। रेज़िग-डे के समारोह के लिए आनेवाले बटालियन के वे पहले गेस्ट हैं।"

इतनी देर में बाथ-रूम का दरवाज़ा खुला। एक दुबला-पतला बुज़ुर्ग-सा आदमी कमरे में आया। उसने अपने क़द-काठ से कहीं बड़ी क़मीज़ पहन रखी थी और सेफ़्टीरेज़र से शेव बनाने की कोशिश में चेहरे पर कई ज़ख़्म हो गये थे और कई जगह बाल रह गये थे। कमरे में आते ही दो अफ़सरों को यूनिफ़ॉर्म में देखकर वह झिझका और फिर जहाँ खड़ा था वहीं ठिठक गया। लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने आगे बढ़कर कहा, "पिता जी, हमारे कमाण्डिंग ऑफ़िसर कर्नल गिल साहब आये हैं। यह हमारे सबसे बड़े ऑफ़िसर हैं और साथ में एडजूटेण्ट कैप्टन इलावत साहब हैं।" कर्नल गिल और कैप्टन इलावत ने हाथ जोड़कर नमस्ते की।

"पिता जी, बैठिए।" कर्नल गिल ने कुरसी के सामने से हटते हुए कहा।

"तुसीं बैठिए।" पिता जी ने हाथ जोड़ दिये।

"कर्नल गिल ने पिता जी को हाथ से पकड़कर कुरसी पर बिठाया और [illegible] भी साथ ही बैठ गया।

"पिता जी, हमें बहुत खुशी है कि आपने हमारी [illegible] तशरीफ़ लाये हैं।"

"पुत्र,...." पिता जी आगे कुछ न कह सके जैसे गले में [illegible] थी। वह थूक निगलते हुए बोले, "पुत्र, सब अन्न-जल के हाथ में है [illegible] पानी लिखा होता है वहाँ आदमी ज़रूर पहुँचता है। [illegible]

"सफ़र में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई?"

"नहीं, सवेरे गाड़ी में बैठा था, दोपहर को यहाँ [illegible]

"पिता जी, दर्शन बहुत भाग्यशाली बेटा है [illegible]" कर्नल गिल ने कहा।

अपनी प्रशंसा सुनकर पिता जी [illegible] और भी गहरी हो गयीं—"तुसी कहते हो तो [illegible]"

"पिता जी, दर्शन भी बहुत अच्छा लड़का है। [illegible] करें, बहुत तरक्क़ी करेगा।" कर्नल गिल ने [illegible]।

"आपकी दया है। मैंने तो इसे बहुत [illegible] है।" पिता जी खुलकर बातें करने लगे।

लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल का हाल [illegible]। [illegible] था लेकिन वह कर्नल गिल की उपस्थिति में कुछ [illegible]। पिता जी कुरसी पर उचककर बैठते हुए बोले, "साहब जी, [illegible] हैं। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। सोचा था, इसको नौकरी लग गयी है, अब हमारी भी कुछ मदद करेगा। लेकिन इसका अपना गुज़ारा ही नहीं होता।" पिता जी कर्नल गिल की ओर ध्यान से देखते हुए विस्मित स्वर में बोले—"साहब जी, दर्शन दी सौ रुपये की रोटी कैसे खा जाता है? मैंने तो बहुत [illegible] लेकिन मेरी समझ में नहीं आता। मैं डेढ़ सौ रुपये में छह जनों का पेट भरता हूँ।"

"पिता जी, दर्शन तो बिल्कुल फ़ज़ूलखर्च नहीं है। हर समय आप लोगों के बारे में ही सोचता है। [illegible] बना है। दो-तीन साल में तरक्की [illegible] और तनख्वाह भी बढ़ जायेगी। दर्शन ने [illegible] हज़ार का बीमा भी करा लिया है।" कर्नल गिल ने कहा और [illegible] के लिए फिर बोला, "पिता जी, परसों [illegible] बड़ा दिन है। आपको यह देखकर खुशी होगी कि हम सब लोग एक [illegible] तरह रहते हैं।"

"साब जी, इकट्ठे रहने में ही बरकत है।"

"पिता जी, आपने खाना खाया ?"

"हाँ पुत्र।"

"अच्छा था ?"

"हाँ, बहुत अच्छा। इतनी तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत थी। हम तो दाल-सब्ज़ी न हो तो अचार और प्याज़ से ही गुज़ारा कर लेते हैं।" पिता जी ने बहुत सादगी से कहा।

"पिता जी, आप कौन-सा रोज़-रोज़ यहाँ आयेंगे। हम बहुत छोटी जगह में बैठे हैं। यहाँ कुछ मिलता ही नहीं। कोई कमी रह जाये तो हमें माफ़ी देना।" कर्नल गिल ने क्षमा-याचना करते हुए कहा।

"राम-राम। आप यह क्या कह रहे हैं ?" पिता जी कर्नल गिल के दोनों हाथ पकड़ते हुए मार्मिक स्वर में बोले, "साब जी, मैं पचास से दो साल ऊपर हूँ। मैंने यह चीज़ें ज़िन्दगी में पहली बार देखी हैं।" पिता जी ने पलंग, मेज़-कुरसियाँ, बुक-सेल्फ़, वार्डरोब इत्यादि की ओर संकेत करते हुए कहा, "एक बार बाइस्कोप देखा था। उसमें ऐसी बढ़िया चीज़ें थीं।"

"पिता जी, यह बाइस्कोप क्या होता है ?" कर्नल गिल की जिज्ञासा जाग उठी।

"बाइस्कोप ?" पिता जी ने ज़ोर देते हुए कहा, "जिसे अब सिनेमा कहते हैं।"

"अच्छा, सिनेमा ! मैंने पहली बार सुना है कि सिनेमा को बाइस्कोप भी कहते हैं।"

"पुराने ज़माने में लाहौर में लोग बाइस्कोप ही कहते थे। अब नया ज़माना है। लोगों ने पुरानी चीज़ों के नये नाम रख लिये हैं।" पिता जी ने दायाँ हाथ पलटते हुए कहा।

कर्नल गिल कुछ क्षणों तक चुप बैठा रहा और फिर घड़ी देखकर उठता हुआ बोला, "अच्छा पिता जी, अब आज्ञा दीजिए। आप कुछ दिन यहीं हैं। जल्दी ही फिर दर्शन करूँगा।"

"आपकी कोई सेवा तो की ही नहीं।" पिता जी भी उठ खड़े हुए।

"पिता जी, आप आ गये हैं, हमारी सबसे बड़ी यही सेवा है। आपने खुद आकर आशीर्वाद दिया है हमारी इससे बड़ी सेवा और क्या हो सकती है ?" कर्नल गिल ने हाथ जोड़ दिये और द्वार की ओर बढ़ता हुआ दर्शन से वह बोला, "दर्शन, पिता जी का खयाल रखना। इन्हें किसी क़िस्म की तकलीफ़ न होने पाये।"

लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल कर्नल गिल और कैप्टन इलावत को दरवाज़े तक छोड़ने आया।

"देखो दर्शन, कल सुबह दस बजे कैप्टन इलावत से मिलना।" कर्नल गिल ने

रोब से कहा।

"येस्सर।"

"आओ, तुम पिता जी के पास बैठो। हेल्प हिम टू फ़ील ऐट होम।"

"येस्सर।"

कर्नल गिल और कैप्टन इलावत लाऊंज की ओर बढ़ गये। कर्नल गिल अचानक रुक गया और कैप्टन इलावत से बोला, "इलावत, दर्शन के फादर के लिए सुबह साढ़े नौ तक एक अचकन, चार पाजामे और चार कुरते सिलने चाहिए। तुम बटालियन-टेलर को एमरजेंसी बेसिस पर कपड़े तैयार करने का आॅर्डर दो और इन्हें एक अच्छा-सा शू ले दो।"

"येस्सर।"

"दर्शन का फादर बहुत सीधा-साधा आदमी है। इस बात का खास ध्यान रखना कि इस वातावरण में दोनों में कोई कम्प्लेक्स पैदा न होने पाये। दर्शन से बोलना कि अपने फादर को जब वह जाये दो सौ रुपये दे दे। उसे एडवान्स दे देना। बाद में एडजस्ट कर लेंगे। दि ओल्ड मैन मस्ट गो बैक हैप्पी एण्ड सैटिसफ़ाइड।" कहकर कर्नल गिल आगे बढ गया।

कर्नल गिल और कैप्टन इलावत लाऊंज में आ गये।

कर्नल गिल अपनी जीप की ओर बढ़ता हुआ बोला, "इलावत, मैं घर जा रहा हूँ। अब दफ्तर नहीं आऊँगा। कोई ज़रूरी काम हो तो फ़ोन पर बतला देना या वहाँ आ जाना।"

"येस्सर।" कहकर कैप्टन इलावत अपने कमरे की ओर चला गया।

छह

रेज़िंग-डे के समारोह में शामिल होनेवाले मेहमानों में अवकाश-प्राप्त लेफ्टिनेण्ट कर्नल पी. एस. सरोहा भी था। यद्यपि वह बूढा हो गया था लेकिन अब भी व्यवहार, रंग-ढंग और चाल-ढाल से वह पक्का फ़ौजी था।

युवा अफसरो के बीच में घिरा वह अपनी जवानी के क़िस्से और दूसरे विश्व-युद्ध में अपनी बहादुरी की कहानियां एक युवक की तरह लहक-लहककर सुना रहा था :

"जब मेरी पलटन फ्रांस के तट पर उतरी तो वहाँ के लोगों और [illegible] देखकर मैं दंग रह गया। यहाँ हमारी औरतें पराये मर्दों को तो छोड़ अपने [illegible]

देखकर घूँघट निकाल लेती हैं लेकिन वहाँ मामला ही दूसरा था।" कर्नल सरोहा ने अपने कोट के अन्दर की जेब से प्लास्टिक में लिपटा हुआ एक रेशमी रूमाल निकाला। उसने बहुत आहिस्ता-आहिस्ता रूमाल की तहें खोलीं और उसकी सिलवटें सँवारता हुआ बोला, "यह रूमाल वहाँ मुझे एक नौजवान लड़की ने दिया था। उस लड़की ने ज़ोर से मुझे होंठों पर किस् किया और मेरे साथ लिपटती हुई बोली...." कर्नल सरोहा ने अपनी छिदरी मूँछों पर हाथ फेरते हुए सबकी ओर गर्व से देखकर आगे कहा, "यू इण्डियन, गुड सोल्जर! आई लव यू। उन दिनों तो ऐसी हालत थी कि मैं चाहता तो मेमों की गाड़ी भरकर ले आता। हम जिधर जाते थे मेमें हमें घेर लेतीं थीं।" कर्नल सरोहा की बात पर सब हँस पड़े। वह भी उनकी हँसी में शरीक हो गया।

"यू यंग ऑफ़िसर्स, आपको शायद ये बातें अजीब लगती होंगी, तुम सोचते होगे कि बुड्ढा झूठ बोल रहा है और गप मार रहा है।" कर्नल सरोहा उनकी ओर घूर-घूरकर देखता हुआ बोला।

"नो सर, आपका एक-एक शब्द सही है। हम तो आपके कहानी सुनाने के आर्ट की प्रशंसा कर रहे हैं।" कैप्टन इलावत ने सफ़ाई पेश करते हुए कहा।

इतने में दो बैरे ड्रिंक और सोडा लेकर आ गये। सबसे पहले कर्नल सरोहा को गिलास पेश किया गया। बहुत से अफ़सरों ने कोकाकोला उठाया और कुछ ने केवल पानी के गिलास लिये। केवल छह अफ़सर ऐसे थे जिन्होंने ड्रिंक उठाया।

कर्नल सरोहा विस्मित सा उनकी ओर देखता हुआ बोला, "आप ऑफ़िसरों को हो क्या गया है। आप लोग ड्रिंक क्यों नहीं लेते? हमारे ज़माने में जो ऑफ़िसर ड्रिंक नहीं लेता था उसे निकम्मा समझा जाता था।"

"सर, ज़माना बदल गया है। पहले तो यही कि अब आर्मी-ऑफ़िसरों की न तो उतनी 'पे' हैं जो ब्रिटिश इण्डियन आर्मी के दिनों में थी और दूसरे महँगाई बहुत है। अधिकतर ऑफ़िसर ड्रिंक एफ़ोर्ड ही नहीं कर सकते। ऑफ़िसरों की नयी जनरेशन की दिलचस्पियाँ बदल गयी हैं।" मेजर इन्द्रसिंह ने कोकाकोला सिप करते हुए कहा।

"अब ऑफ़िसरों की दिलचस्पियाँ क्या हैं?" कर्नल सरोहा ने आधा गिलास एक ही साँस में खाली करते हुए पूछा।

"सर, कोई खास नहीं हैं। दरअसल डेली ड्रिल इतनी सख्त और लम्बी होती है कि कुछ सूझता ही नहीं। शाम को कभी फ़िल्म देख ली या क्लब चले गये।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"ड्रिंक के बारे में मुझे एक लतीफ़ा याद आ गया।" कर्नल सरोहा ने घूंट भरते हुए कहा, "हमारी बटालियन में एक टामी था। बहुत ड्रिंक करता था। एक दिन हमारे कमाण्डर ने उसे बुलाकर कहा...." कर्नल सरोहा ने गिलास को दोनों हाथों में घुमाते हुए बात जारी रखी—"जॉन, तुम ऐसे शराब पीते हो जैसे मछली

राजमहल के फ़र्नीचर-जैसा हुआ करता था। मेस में सिलवर इतनी होती थी कि वाथ-टव के मग तक चाँदी के होते थे।"

"सर, आप ब्रिटिश इण्डियन आर्मी के ऑफ़िसर थे। इम्पिरीयल आर्मी के किंग्स कमीशण्ड ऑफ़िसर थे। आपके वक़्त में महाराजों, राजों, नवावों, जागीरदारों और ज़मींदारों के वेटे ही आर्मी में ऑफ़िसर्स भरती होते थे। अब इण्डियन आर्मी में मोची से लेकर मालदार सबके बच्चे ऑफ़िसर्स बनते हैं। स्टैण्डर्ड पहले-सा कैसे रह सकता है।" मेजर ढिल्लों प्रत्येक शब्द पर ज़ोर देता हुआ वोला।

"ड्रिंक को ही ले लो। उन दिनों जो ऑफ़िसर ड्रिंक नहीं करता था उसे सब मन्दिर का पुजारी या गुरुद्वारे का ग्रन्थी समझते थे।" कर्नल सरोहा ने घृणापूर्ण स्वर में कहा।

"सर, आर्मी-ऑफ़िसरों ने इसीलिए ड्रिंक छोड़ दिया है क्योंकि अब पुजारियों और ग्रन्थियों ने ड्रिंक शुरू कर दिया है।" कैप्टन इलावत ने हँसते हुए कहा।

कर्नल सरोहा खिलखिलाकर हँसने लगा। वह दोनों हाथ सोफ़े के वाज़ुओं पर टिकाकर आगे झुकता हुआ कहने लगा, "मैंने यहाँ कुछ ऑफ़िसरों के कमरे देखे हैं। मुझे यों लगा जैसे किसी गर्ल्ज़ होस्टल में पहुँच गया हूँ।" कर्नल सरोहा ने खुलकर ठहाका मारा और प्रशंसा-वाचक नजरों से उनकी ओर देखने लगा। फिर वह व्यंग्य भरी आवाज़ में वोला, "एक ऑफ़िसर के कमरे में गुरु नानक की तसवीर थी और मेज़ पर दो-तीन मोटी-मोटी कितावें पड़ी थीं। दूसरे ऑफ़िसर के कमरे में स्वामी विवेकानन्द की तसवीर, फ़ैमिली पोर्ट्रेट और योगासन पर कितावें थीं, तीसरे कमरे में शेरांवाली माता की तसवीर, गीता और हिन्दी में एक-दो कितावें रखी थीं।"

कर्नल सरोहा ने सिर झटक दिया और फिर कुछ ऊँचे स्वर में वोला, "हमारे टाइम में हर ऑफ़िसर के कमरे में कुछ पिन-अप तसवीरें लाज़मी होती थीं वरना उसे नामर्द समझा जाता था। नाइट रीडिंग के लिए वेड साइड पर 'वन थाउज़ेण्ड डर्टी जोक्स' वाज़ ए मस्ट ! लेकिन अब ? आखिर ऐसा क्यों है। यंग ऑफ़िसर्स इन चीज़ों से क्यों भागते हैं ?" कर्नल सरोहा ने कैप्टन इलावत की ओर उँगली से संकेत करते हुए पूछा और फिर वोला, "तुम सुन्दर हो, नौजवान हो और तन्दुरुस्त हो लेकिन तुम्हारा व्यवहार एक शरमीली लड़की की तरह है, ऐसा क्यों ?"

"सर, इसलिए कि हम जेण्टलमैन ऑफ़िसर्स हैं।" कैप्टन इलावत ने वहुत इतमिनान से कहा।

सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। कुछ क्षणों तक हँसी की लहरें गूँजती रहीं। कर्नल सरोहा एकदम खामोश था। मेजर ढिल्लों ने घड़ी पर समय देखा और ऊँची आवाज़ में वोला, "नौ वज रहे हैं, डिनर के लिए तैयार हो जाओ। दस वजे वटालियन मन्दिर के सामने मैदान में भगवती-जागरण है। आप सबको वहाँ जाना है।"

"माई फ़ुट, हमारे टाइम में तो रात को वालरूम डान्स हुआ करते थे। अब

भगवती-जागरण होते हैं।" कर्नल सरोहा ने उठते हुए घृणापूर्ण स्वर में कहा, "मुझे मेरा कमरा दिखाओ, मैं खाना वहीं खाऊँगा।"

कैप्टन सूद उठकर कर्नल सरोहा के पास आ गया—"येस्सर! प्लीज़ कम।" कैप्टन सूद ने बरामदे की ओर बढ़ते हुए कहा।

"भई, मीनाबाज़ार कब है?"

"सर, मीनाबाज़ार नहीं, वेलफ़ेयर फ़ेट होगा। जवानों के वेलफ़ेयर के लिए।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"माई फुट।" कर्नल सरोहा ने घृणापूर्ण स्वर में कहा और कैप्टन सूद की ओर देखता हुआ बोला, "एक बड़ा मँगवा दो। उसके बाद ही डिनर खा सकूँगा।" कर्नल सरोहा लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ गया।

सात

रेज़िंग-डे का समारोह बटालियन-मन्दिर में हवन और संकीर्तन से आरम्भ हुआ। बटालियन के सब ऑफ़िसर, जे. सी. ओ., जवान और उनके परिवार हवन और संकीर्तन में शामिल होने के लिए आये।

हवन सवेरे सात बजे आरम्भ हुआ लेकिन इलावत छह बजे ही वहाँ पहुँच गया।

पौने सात बजे इक्का-दुक्का अफ़सर और मेहमान आने शुरू हो गये। सात बजने में दस मिनट थे, जब कर्नल गिल, मिसेज़ गिल, कर्नल गिल के ससुर ब्रिगेडियर (रिटायर्ड) एच. एस. ग्रेवाल और मिसेज़ ग्रेवाल पहुँचे। कैप्टन इलावत ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। सेमी को उनके संग न पाकर उसका दिल बैठ गया परन्तु उसने तुरत ही अपने-आपपर क़ाबू पा लिया।

"इलावत, हमें आने में देर तो नहीं हुई?" कर्नल गिल ने प्रसन्न भाव से कहा।

"नो सर, आप बिलकुल ठीक समय पर आये हैं।"

"इलावत, इनसे मिलो, मेरे सास-ससुर आये हैं।" कर्नल गिल ने गोपनीय स्वर में कहा, "आप हैं ब्रिगेडियर ग्रेवाल....मिसेज़ ग्रेवाल।"

कैप्टन इलावत ने अटेंशन होकर बहुत गर्मजोशी से हाथ मिलाया—"सर, यह हमारी बहुत बड़ी खुशक़िस्मती है कि आप तशरीफ़ लाये हैं। पहले तो आपने इनकार देकर बहुत निराश कर दिया था।" कैप्टन इलावत ने प्रसन्न भाव से कहा।

"डैडी-ममी का अचानक ही प्रोग्राम बन गया।" मिसेज़ गिल बोली।

"सर, प्लेज़र इज़ अवार्ज। आप हमें स्वयं आशीर्वाद देंगे।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"प्लेज़र इज़ इक्वली आवर्ज।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल बोला।

"सर, मेरा तो आपसे स्पेशल रिश्ता है।" कैप्टन इलावत ने उत्तेजित स्वर में कहा।

विशेष रिश्ते की बात सुनकर ब्रिगेडियर ग्रेवाल, मिसेज़ ग्रेवाल, कर्नल और मिसेज़ गिल चौंक गये और अधखुले मुँह से कैप्टन इलावत की ओर देखने लगे। कैप्टन इलावत अपनी ही तरंग में कह रहा था, "सर, आपको तो मैं बचपन से जानता हूँ। जब आप लेफ़्टिनेण्ट कर्नल थे और अम्बाला छावनी में रहते थे, माल रोड पर।"

"हाँ, चौदह नम्बर में। यह तो पन्द्रह साल पुरानी बात है।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने उत्सुकता से कहा।

"येस्सर, उन दिनों मैं स्कूल में पढ़ता था। स्कूल जाते-आते मैं रोज़ आपके बँगले के सामने से गुज़रता था। आपके बँगले के गेट पर आपकी नेम-प्लेट थी। ब्लैक वुड के बोर्ड पर पीले अक्षरों में आपका नाम लिखा था।" कहकर कैप्टन इलावत खिलखिलाकर हँस पड़ा और फिर हँसी रोकता हुआ बोला, "मैं जब भी गुज़रता था, आपकी नेम-प्लेट ज़रूर पढ़ता था—लुट. कोल. एच. एस. ग्रेवाल। मुझे अपने डैडी से पता चला कि लुट. कोल. का अर्थ लेफ़्टिनेण्ट कर्नल होता है।"

"इलावत, यू आर सो फ़नी।" कर्नल गिल ने कठिनाई से हँसी रोकते हुए कहा।

"माई गुडनेस।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल हँसी को कण्ट्रोल करने का यत्न करता हुआ बोला।

उनकी हँसी थमी तो कैप्टन इलावत का ध्यान फिर सेमी की ओर चला गया। वह उसके न आने का कारण जानने की कोशिश करता हुआ बोला, "सर, आपका तो अचानक ही प्रोग्राम बना होगा।"

"हाँ, इरादा तो नहीं था। लेकिन मेरी छोटी बेटी यहाँ थी—सतेन्द्र। उसकी वजह से आना पड़ा।"

"क्यों उन्हें क्या हो गया? कुछ दिन पहले तो ठीक-ठाक थीं।" कैप्टन इलावत घबरा गया।

"डैडी ने उसके लिए बहुत अच्छा मैच तलाश किया है। वह लड़का भी इनके साथ आया है। वे दोनों घर में हैं। यंग पीपल वाण्ट टू बी एलोन।" मिसेज़ गिल ने मुसकराते हुए कहा। कैप्टन इलावत के पाँव तले से ज़मीन खिसक गयी। लेकिन उसने अपने चेहरे पर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया न होने दी। कर्नल गिल

और मेहमान पण्डाल में चले गये। कैप्टन इलावत का दिल और दिमाग जैसे हिल गये थे। मिसेज गिल के शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे लेकिन उसे विश्वास नहीं आ रहा था। वह मुँह में बुदबुदाया कि वह अन्तिम निर्णय कर चुका है लेकिन सेमी को अपने निर्णय का पाबन्द नहीं कर सकता। कैप्टन इलावत ने ज़ोर से कन्धे झटक दिये और मुसकराता हुआ मेजर और मिसेज यादव, मेजर और मिसेज बासू, मेजर और मिसेज शर्मा के स्वागत के लिए आगे बढ़ गया। वह मिसेज शर्मा को सम्बोधित करता हुआ बोला, "मैडम, आप लोगों को हवन के बाद सुहाग का टीका लगाया जायेगा। मैं खुद शायद सारी उम्र कुँवारा ही रहूँ लेकिन बटालियन के ऑफ़िसरों की पत्नियों के सुहाग का बहुत खयाल रखता हूँ।"

"तुम सारी उम्र कुँवारे रहोगे?" मिसेज शर्मा उसका मज़ाक़ उड़ाती हुई बोली, "तुम कहो तो इसी हवन-कुण्ड के सामने तेरा विवाह करवा दूँ।"

"मैडम, सब तसल्ली देते हैं लेकिन करवाता कोई नहीं। मुझे तो ऐसा महसूस होने लगा कि मेरा केस हॉपलेस है।" कैप्टन इलावत ने बुरा-सा मुँह बनाकर कहा।

"कैप्टन इलावत, आप मेरे साथ बात कीजिए। बहुत अच्छी लड़की है। कहो तो तार देकर बुला लूँ?" मिसेज यादव ने पूछा।

"अगर उसने मुझे नापसन्द कर दिया तो क्या मुझे उसको वापसी का किराया तो नहीं देना पड़ेगा?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"लुक ऐट हिम।" मिसेज शर्मा उसकी ओर उँगली उठाती हुई कहने लगी, "तुम सिर्फ़ लड़कियों के बारे में बातें करना चाहते हो, शादी करना नहीं।"

"सर, पण्डाल में चलिए। कर्नल साहब अपने सास-ससुर के साथ आ गये हैं।" कैप्टन इलावत ने एकदम विषय बदल दिया।

"इज़ इट? हरी अप।" मेजर यादव ने कहा और वे सब तेज़ क़दम उठाते हुए पण्डाल की ओर बढ़ गये।

सात बजने में दो मिनट शेष थे जब मेस के ऑफ़िसर और मेहमान पहुँचे।

"बन्धु, आप लोगों ने देर कर दी है। हरी अप।" कैप्टन इलावत ने उन्हें गाड़ी से छलाँगें मारकर उतरते हुए देखकर कहा। सब लोग पण्डाल की ओर भाग गये। मेजर ढिल्लों कैप्टन इलावत के निकट रुकता हुआ उसके कान में बोला, "वह आ गयी है?"

"कौन?" कैप्टन इलावत विस्मित-सा उसकी ओर देखने लगा।

"वही, डिनर के दिन जिसे एक कोने में लेकर खड़ा था।"

"अच्छा वह! वह नहीं आयी?" कैप्टन इलावत एकदम उदास हो गया।

"क्यों?"

"बाद में बताऊँगा।" कैप्टन इलावत गरदन झुकाये मेजर ढिल्लों के साथ पण्डाल की ओर बढ़ गया।

पूरे सात वजे हवन शुरू हो गया। कर्नल और मिसेज़ गिल ने सबसे पहले आहुति डाली और वाक़ी सवने वाद में। सारे पण्डाल में सामग्री की महीन सुगन्धि छा गयी थी। दो पण्डितों के मन्त्र-उच्चारण के अतिरिक्त वहाँ कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। कैप्टन इलावत सिर झुकाये और आँखें वन्द किये हुए वहुत श्रद्धा से मन्त्रों का जाप सुन रहा था जवकि एक जवान ने झुककर उसके कान में कहा, "सर, एक नम्बर गेट पर गाड़ी रुकी है। उसमें एक साव, एक मेम साव वैठे हैं। वह अन्दर आना चाहते हैं।"

"आने दो।" कैप्टन इलावत ने कहा और फिर मन्त्रों के जाप में खो गया।

पौन घण्टे के वाद कर्नल और मिसेज़ गिल ने पूर्ण आहुति डाली। हवन की समाप्ति के वाद दोनों पण्डितों ने विवाहित स्त्रियों को सुहाग का टीका लगाया।

सव लोग अपने-अपने स्थान पर वैठे प्रसाद की प्रतीक्षा कर रहे थे। कैप्टन इलावत ऐसी जगह वैठा था जहाँ उसे दोनों पण्डितों के अतिरिक्त और कुछ नज़र नहीं आ रहा था। उसने वायीं ओर गरदन घुमाकर देखा और उधर ही देखता रह गया। सेमी हलकी गुलावी रंग की साड़ी पहने जमीन पर घुटने टिकाये उचकी वैठी थी। उसके साथ एक युवक भी वैठा था। उसने आँखों पर काला चश्मा लगा रखा था। उसके साइड वर्नज मूँछों से मिले हुए थे और सिर के लम्वे-लम्वे वाल उलझे हुए थे। कैप्टन इलावत को देखकर सेमी मुसकरा दी और धीरे से हाथ हिलाया। उत्तर में कैप्टन इलावत भी मुसकरा दिया। प्रसाद वाँटने पर नियुक्त जवानों को आदेश देने के वहाने वह अपने स्थान से उठकर ऐसी जगह आ वैठा जहाँ से वह सेमी को आसानी से देख सके।

कैप्टन इलावत ने सेमी के साथ वैठे युवक को ध्यान से देखा। वह वेल वोटम पहने हुए था। सेमी जैसे उससे अपरिचित वैठी थी। वह युवक कभी-कभार ब्रिगेडियर ग्रेवाल से वात कर लेता और फिर वुरा-सा मुँह वनाकर वैठ जाता।

प्रसाद वँट जाने के वाद दस मिनट की ब्रेक थी। उसके वाद पौन घण्टे तक संकीर्तन था। ब्रेक में सव लोग उठ गये। कैप्टन इलावत ब्रिगेडियर ग्रेवाल और मिसेज़ ग्रेवाल के पास आ गया और सेमी का अभिवादन करके मुसकराते हुए पूछा, "आप कव आयीं? मैडम ने तो वताया था कि आप घर में हैं?"

"मैं साढ़े सात वजे पहुँची।" सेमी ने शरमाते हुए कहा।

फिर कैप्टन इलावत ब्रिगेडियर ग्रेवाल की ओर मुड़ता हुआ वोला, "सर, प्रोग्राम पसन्द आया आपको?"

"येस, वेरी गुड! हमारे वक़्त में मन्दिर या गुरुद्वारे का प्रोग्राम होता था लेकिन इतना एलेवोरेट नहीं। ज्यादा से ज्यादा आधा घण्टा।"

इतनी देर में कर्नल गिल, मिसेज गिल और नवागन्तुक युवक भी उनके पास आ गये।

"इलावत ! कनग्रेचूलेशन्ज ! तुम बहुत अच्छे आर्गेनाइजर हो।" कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत का कन्धा थपथपाते हुए कहा।

"थैंक्यू सर, ये सब आपकी गाइडेंस का नतीजा है।" कैप्टन इलावत ने गरदन झुकाते हुए कहा।

"मुझे यह सब कुछ बकवास दिखाई दे रहा है। इण्डिया किस क़िस्म का सैकूलर देश है। अँगरेज कभी ऐसा नहीं करते।" नवागन्तुक युवक ने बिगड़े हुए लहजे में कहा।

कैप्टन इलावत हैरानी से उसकी ओर देखने लगा। कर्नल गिल कैप्टन इलावत की प्रतिक्रिया को भाँपता हुआ बोला, "ये तो विश्वास की बात है। कई ऑफ़िसर और जवान ऐसे भी हैं जो पक्के नास्तिक हैं।" फिर कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत की ओर देखकर कहा, "इलावत, आप हैं मिस्टर तेजेन्द्र। आप इंगलैण्ड में रहते हैं। इनका वहाँ अपना बिज़नेस है। कुछ दिनों के लिए इण्डिया आये हैं। और आप हैं—कैप्टन इलावत, माई एडजूटेण्ट।"

"हैपी टू मीट यू।" कैप्टन इलावत ने हाथ मिलाते हुए कहा।

"प्लेज़र इज़ माइन।" तेजेन्द्र ने बहुत औपचारिक ढंग से उत्तर दिया।

"सर, हम बहुत खुशक़िस्मत हैं। हमारे रेजिग-डे में विदेश से भी गेस्ट शामिल हुए हैं।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

"ओ येस।" कर्नल गिल ने प्रसन्न लहजे में उत्तर दिया।

तेजेन्द्र हवन-कुण्ड से उठ रहे हलके धुएँ की ओर देखता हुआ बोला, "इट वाज़ मीयर वेस्टेज ऑफ टाइम एण्ड मैटीरियल। लोगों को घी खाने को नहीं मिलता, यहाँ आग में जलाया जा रहा है। आई टेल यू, नो बडी विल परमिट इट इन इंगलैण्ड।"

"तेजेन्द्र!" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने नपे-तुले शब्दों में कहना शुरू किया, "मैंने अपनी पैंतीस वर्षों की सर्विस के बीस वर्ष ब्रिटिश-इण्डियन आर्मी में गुज़ारे हैं। मैं अपने तजुरबे की बिना पर कह सकता हूँ कि अँगरेज हमसे ज़्यादा रिलिजस माइण्डेड हैं।"

"लेकिन वे ऊटपटांग रिच्युल्ज़ में नहीं जाते। रिलिजस सैरीमनीज़ में घी नहीं जलाते।" तेजेन्द्र ने क्रोधित स्वर में कहा, "इट इज़ क्रिमिनल वेस्टेज।"

"तेजेन्द्र, यह तो विश्वास की बात है। रस्मो-रिवाज उस समय बुरे बनते हैं जब उन्हें ज़बरदस्ती किसी के ऊपर थोपा जाये।" कर्नल गिल संयत स्वर में बोला।

"भाई साहब, आप यह बात कह रहे हैं? क्या आपको इन बातों में विश्वास है?" तेजेन्द्र की भँवें तन गयीं।

"येस आई हैव! क्योंकि मेरे जवानों को इन बातों में विश्वास है।" कर्नल गिल ने कहा।

"आप कैसे कमाण्डर हैं जो अपने जवानों को समझाने की बजाय उनकी

पैरवी करते हैं ?" तेजेन्द्र के लहजे में व्यंग्य था।

कैप्टन इलावत क्रोध से लाल-पीला हो रहा था। यह सुनकर उससे चुप नहीं रहा गया। वह कर्नल गिल के उत्तर देने से पहले ही दाँत पीसता हुआ बोला, "मिस्टर तेजेन्द्र, आप हमारे गेस्ट हैं। मैं आपको कुछ कहना नहीं चाहता लेकिन एक बात बता दूँ कि आपको हमारे सी. ओ. साहब का अपमान करने का कोई हक़ नहीं है। आई मस्ट टेल यू, वी आर ए वेरी प्राउड लोट।"

कैप्टन इलावत का चेहरा देखकर तेजेन्द्र सहम गया। ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने मामला बिगड़ता देखा तो बात खत्म करने के लिए बोला, "छोड़ो इन बातों को। तेजेन्द्र माडर्न नौजवान है। इंगलैण्ड में पला है। जिस वातावरण में यह रहता है वहाँ ऐसी बातें वाक़ई अजीब लगेंगी।"

कीर्तन-पार्टी अपने सुर-ताल ठीक करने लगी तो मैदान में बिखरे हुए लोग पण्डाल की ओर आ गये। तेजेन्द्र उकताहट का इजहार करता हुआ बोला, "अब क्या प्रोग्राम है?"

"पौन घण्टे तक कीर्तन होगा।" कर्नल गिल ने उत्तर दिया।

"आई काण्ट स्टैण्ड इट। मैं घर जाकर रिलैक्स करना पसन्द करूँगा।" तेजेन्द्र ने कहा।

"थोड़ी देर के लिए सुनो। कीर्तन-पार्टी हमारी बटालियन के जवानों की है।" कर्नल गिल आग्रह करता हुआ बोला।

"नहीं, मैं जाऊँगा।" तेजेन्द्र ने निर्णयात्मक स्वर में कहा, "आई हेट वेस्टिंग टाइम।"

कर्नल गिल ने ब्रिगेडियर ग्रेवाल की ओर देखा और उन्होंने सेमी को आवाज़ दी और कहा, "सेमी बेटी, तेजेन्द्र घर जाना चाहता है। तुम इसके साथ घर जाओ। अगर मैं गया तो बटालियन के अफ़सरों और जवानों को बुरा लगेगा।"

"डैडी, मैं तो कीर्तन सुनना चाहती हूँ।" सेमी ने वापस मुड़ते हुए कहा। ब्रिगेडियर ग्रेवाल उसके पीछे जाकर समझाते हुए बोले, "बेटी, तेजेन्द्र हमारा गेस्ट है। और फिर वह तुम्हारे साथ कुछ बातें भी करना चाहता है।"

"क्या बात करना चाहता है? ही इज़ सच ए बोर। मैंने इतना खुदपसन्द आदमी आज तक नहीं देखा। बात-बात पर कहता है—इन इंगलैण्ड....।" सेमी ने उसकी नक़ल उतारते हुए कहा।

"लेकिन उसको लुक आफ़्टर करना हमारा फ़र्ज़ है। वह हमारा मेहमान है।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने समझाते हुए कहा।

कैप्टन इलावत ब्रिगेडियर ग्रेवाल के पीछे खड़ा था। उसने सेमी को जाने का संकेत किया तो वह हाथ झटकती हुई बोली, "ओके डैडी, आई गो, गॉड ब्लैस मी।" सेमी ने प्रार्थना के लिए मुँह और हाथ ऊपर उठाकर कहा।

जब तेजेन्द्र और सेमी गेट की ओर जाने लगे तो कैप्टन इलावत उन्हें रोकता हुआ बोला, "मिस्टर तेजेन्द्र, आपको हमारा मन्दिर का प्रोग्राम पसन्द नहीं आया इसका हमें अफ़सोस है। आप वेलफ़ेयर फ़ेट और फ़ुटबाल मैच में जरूर आइए। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आपका मन खुश हो जायेगा।"

"जरूर आऊँगा।" तेजेन्द्र ने मुसकराने की कोशिश करते हुए कहा।

"मैं भी आऊँ?" सेमी ने शरारत भरी मुसकराहट के साथ पूछा।

"प्लीज डू! वैसे आप मेहमान नहीं मेजबान हैं क्योंकि आप कई दिनों से यहाँ हैं।" कैप्टन इलावत तेजेन्द्र को आने की ताकीद करके मिसेज गिल के पास चला गया।

"मैडम, मिस्टर तेजेन्द्र को वेलफ़ेयर फ़ेट के लिए इन्वाइट किया है। उनको कहाँ तक डैमेज लगाना है?"

"क्यों डैडी?" मिसेज गिल ब्रिगेडियर ग्रेवाल की ओर देखने लगी। वह अभी सोच ही रहा था कि कर्नल गिल बोल उठा, "कम से कम पाँच सौ रुपये। वह बहुत अमीर है। क्यों डैडी?"

"देख लो।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल अभी तक निर्णय नहीं कर पाया था।

"ठीक है। पाँच सौ रुपये तक।" कर्नल गिल ने सिर झटकते हुए कहा।

"थैंक्यू, सर।" कहकर कैप्टन इलावत पण्डाल की ओर चला गया।

आठ

वेलफ़ेयर फ़ेट का बन्दोबस्त बटालियन ग्राउण्ड में था। उसमें चार-चार स्टॉलों के चार ग्रुप थे। नम्बर एक स्टॉल के माथे पर कपड़े के लम्बे-चौड़े बैनर पर मोटे सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था—'अगर आप दिल लेना चाहते हैं तो यहाँ आइए। अगर आप दिल देना चाहते हैं तो भी यहाँ आइए।'

दूसरे स्टॉल पर किस्मत आजमाने का सामान था। तीसरे स्टॉल में बिलियर्ड-टेबल था। चौथे स्टॉल में सापट ड्रिंक्स थी।

नम्बर एक स्टॉल पर कैप्टन इलावत ज्योतिषी बनकर बैठा था। उसने राजस्थानी पगड़ी बाँध रखी थी, ऐनक लगायी हुई थी और लम्बा गाऊन पहन रखा था। माथे पर लम्बा टीका और गले में मोटे मनकों की माला थी। इस स्टॉल पर केवल जोड़े ही आ सकते थे। और दोनों के लिए एक-दूसरे को वहाँ से गिफ्ट खरीदकर भेंट करना अनिवार्य था। वहाँ एक तख्ते पर नम्बरवार गिफ्ट-कूपन रखे थे। गिफ्ट-कूपन

पर लिखे नम्बर के पैकेट पर ही गिफ़्ट की क़ीमत लिखी हुई थी ।

साढ़े तीन वजे स्टॉलों के परदे उठा दिये गये । नम्बर एक स्टॉल पर सवसे पहले कर्नल गिल और मिसेज़ गिल आये । कैप्टन इलावत का हुलिया देखकर मिसेज़ गिल खिलखिलाकर हँस दी । कैप्टन इलावत ने अपनी पगड़ी पर लगे छोटे-से वोर्ड की ओर संकेत किया जिसपर लिखा था—'मेरा हुलिया देखकर हँसनेवाले को पचीस रुपये जुर्माना देना होगा ।'

कैप्टन इलावत ने वहुत गम्भीर स्वर में कहा, "मैडम, पचीस रुपये निकालिए ।"

"जुर्माना ज़्यादा है । कुछ कन्सेशन होना चाहिए ।" मिसेज़ गिल ने गिड़गिड़ाते हुए कहा ।

"अगर आपको कन्सेशन दे दिया तो पूरी वटालियन को रियायत देनी पड़ेगी । मेरा विज़नेस खराव न कीजिए ।"

मिसेज़ गिल ने पचीस रुपये कैप्टन इलावत को दे दिये और उसने तुरत रसीद थमाकर कहा, "लाइए, अव आप हाथ दिखायें, अच्छा नम्वर वताऊँगा ।"

कैप्टन इलावत ने जेव से कान्वेक्स लैंस निकाला और मिसेज़ गिल का हाथ उलट-पुलटकर देखता हुआ वोला, "आप पचीस नम्वर कूपन उतार लें । वहुत अच्छा गिफ़्ट मिलेगा ।"

मिसेज़ गिल ने कूपन फाड़कर कर्नल गिल को दे दिया और उसने वही कूपन काउण्टर क्लर्क को थमा दिया । कैप्टन इलावत ने पैकेट पर लिखी क़ीमत पढ़ी—'एक सौ पचीस रुपये' ।

"वहुत वढ़िया गिफ़्ट होगा ।" कैप्टन इलावत ने कर्नल गिल की ओर मुसकराकर देखते हुए कहा ।

कर्नल गिल पर्स से पैसे निकालकर देता हुआ वोला, "अच्छा नम्वर वताया है । मेरा पर्स ही खाली कर दिया ।"

"लाइए, अव आपका हाथ देखूँ । वहुत अच्छा नम्वर वताऊँगा ।" कैप्टन इलावत ने कर्नल गिल का हाथ अपनी ओर खींचते हुए कहा, "आप वेधड़क सत्तर नम्वर ले लें ।"

कर्नल गिल ने उस नम्वर का कूपन फाड़कर मिसेज़ गिल को दे दिया । काउण्टर-क्लर्क ने सत्तर नम्वर का गिफ़्ट पैकेट कैप्टन इलावत को थमा दिया । उसने क़ीमत पढ़कर सुनायी ।

"स्टॉल के मालिक को हाथ जोड़कर नमस्ते कीजिए ।"

मिसेज़ गिल ने हाथ जोड़कर नमस्ते की और खिलखिलाकर हँसती हुई आगे वढ़ गयी ।

"मैडम, रसीद तो ले लें । क़ीमत नक़द दी है ।" कैप्टन इलावत ने कहा ।

कुछ जोड़ों के वाद तेजेन्द्र और सेमी आये । तेजेन्द्र ने वहुत वढ़िया सूट पहन

रखा था और उसके कपड़ों से भीनी-भीनी खुशबू आ रही थी। कैप्टन इलावत को पहचानकर तेजेन्द्र ज़ोर से हँसा—"क्या आर्मी-ऑफिसर स्वांग भी करते हैं ?"

"जी हाँ, कभी-कभी उन्हें बिजनेसमैन बनना पड़ता है।" कैप्टन इलावत ने पगड़ी पर लगे छोटे बोर्ड की ओर संकेत किया—"पचीस रुपये निकालिए!"

"आई एम सॉरी ! मैंने यह वार्निंग पढ़ी नहीं थी।"

"जनाब, इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। पचीस रुपये निकालें। मैंने तो बहुत कम फीस रखी है। यूरोप में तो लोग एक मिनट तक खुलकर हँसाने के लिए हज़ारों रुपये लेते हैं।" कैप्टन इलावत ने आग्रह किया।

तेजेन्द्र को लाचार होकर पचीस रुपये देने पड़े। उसे रसीद देकर कैप्टन इलावत ने सेमी से कहा, "हाथ दिखाइए। आपको बहुत अच्छा नम्बर बताऊँगा।"

सेमी ने अपना हाथ कैप्टन इलावत के हाथों में रख दिया। उसके हाथ का स्पर्श पाकर कुछ क्षणों के लिए कैप्टन इलावत अपनी ज्योतिष-विद्या भूल गया। वह दोनों एक-दूसरे की आँखों में झाँकते हुए मुसकराते रहे और फिर कैप्टन इलावत ऐनक नाक से सरकाता हुआ बोला, "आप तो बहुत भाग्यवान् हैं।" और फिर कैप्टन इलावत ने काग़ज़ के टुकड़े पर एक नम्बर लिखकर तेजेन्द्र के हाथ में दे दिया—"इस नम्बर का गिफ्ट पार्सल लेकर दें!"

तेजेन्द्र ने उस नम्बर का कूपन उतारा और गिफ्ट लेकर क़ीमत पढ़ी तो दंग रह गया।

"माई गुडनेस, इतना महँगा गिफ्ट। पाँच सौ रुपये!"

उसने अनचाहे पाँच सौ रुपये कैप्टन इलावत को दे दिये। कैप्टन इलावत उसे रसीद देता हुआ बोला, "लाइए, अब आपका हाथ देखूँ।" उसने तेजेन्द्र का हाथ पकड़ते हुए कहा, "आप तेरह नम्बर ले लें। आपके लिए लकी नम्बर है।"

सेमी ने तेरह नम्बर देकर गिफ्ट ले लिया। उसपर क़ीमत लिखी थी—"बस एक मीठी मुसकान और कुछ नहीं।"

सेमी कैप्टन इलावत की ओर मुसकराकर देखती हुई आगे बढ़ने लगी तो वह ऊँची आवाज़ में बोला, "क़ीमत तो देती जाइए।"

सेमी शरमा गयी और कैप्टन इलावत की आँखों में झाँकती हुई मुसकरा दी।

सौ नम्बर खत्म करके जब कैप्टन इलावत उठा तो उसके पास चार हज़ार नौ सौ पचास रुपये थे। थोड़ी दूर पर ग्राउण्ड में फुटबाल-मैच की तैयारी हो रही थी। कभी-कभार सीटी की आवाज़ सुनाई देती। कैप्टन इलावत ने जल्दी-जल्दी कैश का हिसाब किया और रुपये काउण्टर-क्लर्क के हवाले कर दिये। उसने पगड़ी, ऐनक और गाऊन उतार दिये। उसने नीचे पी. टी. यूनिफ़ॉर्म पहन रखी थी। वह माथा पोंछता हुआ सीधा ग्राउण्ड की ओर भाग गया जहाँ विवाहित और अविवाहित अफसरों की टीमों के बीच फ़ुटबाल-मैच होनेवाला था।

ग्राउण्ड के तीनों ओर जवान और उनके परिवार बैठे थे। एक ओर बीच में अफ़सरों, उनके परिवारों और मेहमानों के लिए कुरसियाँ रखी थीं। बटालियन का सूबेदार मेजर उदयचन्द रेफ़री था।

अविवाहित अफ़सरों की पूरी टीम ग्राउण्ड में मौजूद थी। कुछ अफ़सर बाहर बैठे थे। कर्नल गिल ने अपनी टीम पर नज़र डाली। वहाँ केवल सात खिलाड़ी थे। तीन विवाहित मेहमानों ने खेल में शरीक होने में असमर्थता व्यक्त की थी। कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत को बुलाकर कहा, "इलावत, सात आदमी ग्यारह से कैसे खेलेंगे ?"

"सर, कुछ कन्सेशन दीजिए।"

"क्या ?"

"जिन अफ़सरों की यद्यपि शादी नहीं हुई लेकिन सगाई हो चुकी है उन्हें भी अपनी टीम में शामिल कर लें।" कैप्टन इलावत ने सुझाव दिया।

"गुड आइडिया !" कर्नल गिल ने माइक पर यह एलान किया तो दो अफ़सर विवाहित अफ़सरों की टीम में चले गये। दर्शकों ने तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया लेकिन एक ओर से आवाज़ आयी—"डिफ़ैक्टर जा रहे हैं। दल-बदली हो रही है।" तालियाँ एक बार फिर गूँज उठीं।

कर्नल गिल ने अपनी टीम के खिलाड़ियों की गिनती की। वे नौ थे। वह निराशा भरे स्वर में बोला, "इलावत, अभी दो कम हैं।"

"सर, और कन्सेशन दीजिए।"

"क्या ?"

"जिन ऑफ़िसरों की सगाई नहीं हुई लेकिन बात पक्की हो चुकी है उन्हें भी मैरीड ऑफ़िसरों की टीम में शामिल कर लें।"

"वण्डरफ़ुल आइडिया !" कर्नल गिल द्वारा माइक पर यह घोषणा सुनकर मेजर ढिल्लों भी विवाहित अफ़सरों की टीम की ओर चला गया। लोगों ने खड़े हो तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया।

"बस एक की कमी है।" कहकर कर्नल गिल अविवाहित अफ़सरों की टीम की ओर देखने लगा।

सेमी बहुत ध्यान से कैप्टन इलावत की ओर देख रही थी। उसकी नजरें पाकर वह मुसकराती हुई बोली, "तुम क्यों नहीं जाते ?"

"क्या मैं भी जाऊँ ?" कैप्टन इलावत के मन-प्राण जैसे सिमट गये। सेमी ने सिर हिलाकर हाँ कह दी तो वह ग्राउण्ड की हाफ़ लाइन के साथ-साथ सेण्टर की ओर भागने लगा। सब लोग साँस रोके उसकी ओर देख रहे थे। सेण्टर के निकट पहुँचकर उसने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये और उस ओर मुड़ गया जिधर विवाहित अफ़सरों की टीम थी। दर्शकों ने बहुत ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाकर उसका स्वागत किया।

"अरे, अपने जीटन साव तो छिपे रुस्तम है।" कई आवाजें एक साथ आयीं। तालियाँ एक विंग में बन्द होतीं तो दूसरे में शुरू हो जातीं। विवाहित अफसर कैप्टन इलावत को घेरे खड़े थे और कुरेद-कुरेदकर उसकी प्रेयसी के बारे में पूछ रहे थे।

सेमी की इस हरकत पर तेजेन्द्र बहुत क्रुद्ध और ब्रिगेडियर ग्रेवाल बेहद बेचैन था। कैप्टन इलावत की ओर देखती हुई सेमी तालियाँ बजाने लगी तो तेजेन्द्र से सहन नहीं हो सका। वह कुरसी से उठता हुआ ब्रिगेडियर ग्रेवाल से बहुत सख्त लहजे में बोला, "आई काण्ट स्टैण्ड ऑल दिस। क्या आप मुझे इसलिए यहाँ लाये थे कि मेरी जगह-जगह इन्सल्ट करायें।"

ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने बहुत तीखी नजरों से सेमी की ओर देखा और मिसेज ग्रेवाल को साथ लेकर तेजेन्द्र के पीछे चला गया।

मिसेज गिल सब कुछ देख रही थी। उसने सहमी हुई आवाज में कर्नल गिल से पूछा, "अब क्या होगा?"

"मैं क्या कह सकता हूँ।" कर्नल गिल ने विवशता में कन्धे झटकते हुए कहा और सीटी सुनकर ग्राउण्ड की ओर भाग गया।

मिसेज गिल घबरायी-सी गरदन पीछे घुमाकर अपने माता-पिता को तेजेन्द्र के पीछे जाते हुए देखकर कुसमुसा उठी। उसने सेमी की ओर देखा। वह उल्लास में मुँह खोले जोर-जोर से तालियाँ बजा रही थी। मिसेज गिल ने उसकी ओर झुकते हुए क्रुद्ध स्वर में कहा, "सेमी, तुमने अच्छा नहीं किया। तुम्हें बाद में पछताना पड़ेगा।"

"व्हाट हैव आई डन ? नथिंग राग।" कहकर सेमी फुटबाल के खेल में खो गयी। और जब कैप्टन इलावत दो खिलाड़ियों को डाज करके बाल के साथ गोल की ओर भागा तो वह कुरसी से उठ खड़ी हुई और जोर-जोर से तालियाँ बजाती हुई बोल उठी, "वण्डरफुल....वण्डरफुल।"

फिर उसने अपने दायें ओर कुरसियाँ खाली देखकर मिसेज गिल से पूछा, "डैडी, ममी गये?"

"गये।"

"गुड।"

"वह गया?"

"गया।"

"वेरी गुड।" कहकर सेमी फिर खेल में खो गयी।

जबतक मैच होता रहा मिसेज गिल बेचैनी से पहलू बदलती रही और मैच खत्म होने के तुरत बाद प्राइज-डिस्ट्रिब्यूशन की प्रतीक्षा किये बिना ही सेमी को साथ ले कर वहाँ से चल दी। उसने रास्ते-भर सेमी से कोई बात नहीं की। वह बहुत बेचैन, उदास और क्रुद्ध थी। सेमी से एक-दो बार बात शुरू करने की कोशिश की

लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया। सेमी ने भी उससे मुँह फेर लिया और खिड़की से बाहर देखने लगी।

सेमी कुछ सोचकर मुसकरा दी और फिर खिड़की के साथ आँखें और होंठ टिकाकर गुनगुनाने लगी। यह देखकर मिसेज़ गिल का गुस्सा और भी ज़्यादा बढ़ गया और वह बहुत सख्त लहजे में बोली, "सेमी प्लीज़, चुप रहो। मेरा ध्यान बँट रहा है। गाड़ी चला रही हूँ, एक्सीडेण्ट हो गया तो कौन ज़िम्मेदार होगा?"

"मैं।" सेमी ने बहुत इतमीनान से कहा।

"आई विश कि तुम्हें अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास होता। प्लीज़ मुझे डिस्टर्ब न करो।" मिसेज़ गिल ने बहुत कटु स्वर में कहा।

"दीदी, कहो तो मैं गाड़ी से नीचे उतर जाऊँ? मैं पैदल घर पहुँच जाऊँगी। मैं आपको गुस्से में डिस्टर्ब नहीं करना चाहती।"

मिसेज़ गिल ने कोई उत्तर नहीं दिया तो सेमी ने अपनी बाँहों को एक दूसरे में जकड़ लिया और होंठ भींचकर बैठ गयी।

जब वे घर पहुँचीं तो ब्रिगेडियर ग्रेवाल लाऊंज में बैठे थे। तेजेन्द्र अपने कमरे में था। सेमी ने लाऊंज में प्रवेश करते हुए शिकायत भरे लहजे में ब्रिगेडियर ग्रेवाल से पूछा, "डैडी, आप मैच से उठकर क्यों चले आये? बहुत दिलचस्प खेल था। मैरीड ऑफ़िसर्स ने ट्रॉफ़ी जीत ली।"

"बेटा, तेजेन्द्र की तबीयत अचानक खराब हो गयी थी। इसलिए आना पड़ा।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने बहुत उदास स्वर में कहा।

"क्या हो गया? ज़्यादा तकलीफ़ तो नहीं?"

"नहीं। यों ही तबीयत खराब है।"

"ममी कहाँ है?"

"बेड-रूम में है। उसकी तबीयत भी खराब है।"

"अचानक क्या हो गया सबकी तबीयत को? ममी की तबीयत ठीक नहीं, मिस्टर तेजेन्द्र की तबीयत ठीक नहीं, दीदी का मूड खराब है। आप भी कुछ सुस्त दिखाई दे रहे हैं।" सेमी ने हैरानी में सिर झटकते हुए कहा।

"सब तुम्हारी वजह से है।" मिसेज़ गिल ने सेमी को घूरते हुए कहा।

"मेरी वजह से? मैंने तो किसी से कुछ नहीं कहा।" सेमी इनकार में सिर हिलाती हुई बोली।

"यू आर रेस्पौंसिबल एण्ड यू डोण्ट नो।" मिसेज़ गिल के लहजे में बहुत व्यंग्य और तल्खी थी।

मिसेज़ गिल लाऊंज से उठ गयी और तेजेन्द्र के कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दी।

"येस, कम इन।" तेजेन्द्र ने कमरे के अन्दर से ही रोब से पुकारा।

मिसेज गिल ने धीरे से किवाड़ खोल दिया और इधर-उधर झांकती हुई अन्दर चली गयी। तेजेन्द्र को सामान बांधते देखकर वह हैरान रह गयी। "यह क्या कर रहे हो?"

"सामान बाँध रहा हूँ।" तेजेन्द्र ने अटैची में कपड़े ठूँसते हुए कहा।

"क्यों?"

"इसलिए कि मैं जा रहा हूँ। आई हैव एनफ़ ऑफ़ इट।" तेजेन्द्र सीधा खड़ा होता हुआ बोला।

"लुक तेजेन्द्र," मिसेज गिल उसे समझाती हुई बोलीं, "सेमी बहुत भोली-भाली लड़की है। उसमें अभी बहुत बचपना है। मुझे पता है कि तुम किस बात पर नाराज हो। मुझे विश्वास है कि उसने जो कुछ भी किया है मज़ाक और भोलेपन में किया है।"

"नो-नो-नो, मेरे साथ धोखा हुआ है। इन्सल्ट आफ्टर इन्सल्ट हैव बीन होल्ड ऑन मी।" तेजेन्द्र ने वेलफ़ेयर फ़ेट में कैप्टन इलावत से खरीदकर जो गिफ्ट पैकेट सेमी को भेंट किया था वह मिसेज गिल की ओर क्रोध में फेंकता हुआ बोला, "यह देखिए।"

मिसेज गिल ने गिफ्ट पैकेट खोला। उसमें कैप्टन इलावत की पूरी यूनिफ़ॉर्म में कैबिनेट साइज में फ़ोटो देखकर मिसेज गिल को हँसी आ गयी।

"तेजेन्द्र डीयर, आपका पैसा जवानों के वेलफ़ेयर फ़ण्ड में गया है। आपके साथ धोखा नहीं हुआ है। आप ठहरें, मैं सेमी से खुद बात करती हूँ।"

तेजेन्द्र पलंग पर लेटकर सिगार पीने लगा तो मिसेज गिल लाऊंज में आ गयीं। ब्रिगेडियर ग्रेवाल को अकेला पाकर उसने पूछा, "डैडी, सेमी कहाँ है?"

"अपनी ममी के पास।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल की आवाज बहुत उदास थी। "तेजेन्द्र तो अपना अटैची तैयार कर रहा था। अभी जाना चाहता था। मैंने बड़ी मुश्किल से उसे रोका है।" मिसेज गिल ने सरगोशी में कहा।

"डैडी, ममी के कमरे में चलते हैं, वहीं बात करेंगे।' मिसेज गिल ने सुझाव दिया।

ब्रिगेडियर ग्रेवाल और मिसेज गिल वहाँ गये तो मिसेज ग्रेवाल पलंग पर लेटी हुई थी। निकट ही सेमी कुरसी पर बैठी थी। दोनों बहुत गम्भीर और उदास थीं।

"ममी, तबीयत कैसी है?" मिसेज गिल ने घबरायी हुई आवाज में पूछा।

"ठीक ही है।" मिसेज ग्रेवाल ने कमजोर और निराशा भरे स्वर में कहा।

"ममी तुम्हारी वजह से बीमार हुई हैं।" मिसेज गिल ने सेमी की ओर घूरकर देखते हुए कहा।

"मैंने क्या किया है?" सेमी ने ऊँचे स्वर में पूछा।

"बेटा, आहिस्ता बोलो।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने द्वार बन्द करते हुए कहा।

मिसेज़ गिल कुरसी सेमी के निकट घसीटती हुई बोली, "सेमी, तुम्हें अब तक पता लग गया होगा कि तेजेन्द्र यहाँ क्यों आया है।"

"क्यों आया है मुझे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं है।" सेमी ने कुछ रूखे स्वर में कहा।

"लेकिन ममी-डैडी को दिलचस्पी है।" मिसेज़ गिल उत्तेजित स्वर में बोली।

"तेजेन्द्र डैडी के दोस्त का लड़का है, बहुत अमीर नौजवान है....।" मिसेज़ गिल अभी बात पूरी भी न कर पायी थी कि ब्रिगेडियर ग्रेवाल बीच में बोल पड़ा, "देखो बेटा, मैं जो करना चाहता हूँ तुम्हारी बेहतरी के लिए है। अब तुम्हारी पढ़ाई खत्म हो चुकी है। तुम उन्नीस वर्ष पूरे कर चुकी हो....।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल सेमी की ओर देखने लगा। वह सिर झुकाये खामोश बैठी थी।

ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने फिर कहना शुरू किया, "तेजेन्द्र इसी सिलसिले में मेरे साथ आया है। मैं तुम्हारे लिए उससे बेहतर वर तलाश नहीं कर सकता। बल्कि मैं यह कहूँगा कि उसकी हैसियत हमसे कहीं ज्यादा है। छब्बीस-सत्ताईस वर्ष की उम्र में ही वह लाखों रुपये का मालिक है। वह इंगलैण्ड में रहते हुए भी वहाँ शादी नहीं करना चाहता। वह यहाँ किसी अच्छी लड़की से शादी करना चाहता है।"

सेमी बदस्तूर खामोश थी और वह फ़र्श को घूरती हुई अपने ही विचारों में खोयी हुई थी। मिसेज़ गिल सेमी की ओर देखती हुई कहने लगी, "वह इसीलिए यहाँ आया है ताकि तुम दोनों एक-दूसरे से मिल सको। उसने तुम्हें पसन्द कर लिया है, तुम्हारी क्या मरज़ी है?"

सेमी ने कोई उत्तर नहीं दिया तो ब्रिगेडियर ग्रेवाल बोला, "तेजेन्द्र से अच्छा लड़का नहीं मिल सकता। हमारे आई. ए. एस., आई. पी. एस., आर्मी-ऑफ़िसर ही टॉप के लड़के समझे जाते हैं, लेकिन अपनी सर्विस के खात्मे पर भी वे जीवन की ऐसी सहूलियतें और आराम नहीं पा सकते जो तेजेन्द्र को इस छोटी उम्र में ही हासिल हैं। उसका लण्डन में अपना मकान है। एक कण्ट्री हाउस है। दिल्ली में कोठी खरीदी है।"

"डैडी, आर्मी-ऑफ़िसर से शादी करने की बजाय कुँवारी रहना अच्छा है। आर्मी-ऑफ़िसरों की बीवियों की जिन्दगी बहुत ख़राब है। हर दूसरे-तीसरे साल उन्हें तीन-चार साल का बिछोड़ा झेलना पड़ता है।"

"सेमी तुम बहुत लकी हो तुम्हें इतना अच्छा लड़का मिल रहा है।" मिसेज़ गिल बोली।

सेमी ने कोई उत्तर न दिया तो ब्रिगेडियर ग्रेवाल सिर पकड़कर बैठ गया। मिसेज़ ग्रेवाल करवट बदलकर धीमी आवाज़ में कराहने लगीं। मिसेज़ गिल भी उदास और क्रुद्ध-सी होकर छत को घूर रही थी।

इस बीच में कर्नल गिल भी वहाँ आ पहुँचा और वातावरण को बहुत गम्भीर

और तनावपूर्ण पाकर चुपके से एक ओर बैठ गया। मिसेज गिल ने उधर देखा तो उसने इशारे से तनाव का कारण पूछा। मिसेज गिल ने सेमी को झंझोड़ते हुए मस्ती से पूछा "तुम बोलती क्यों नहीं ? अगर तुम्हें कोई और लड़का पसन्द है तो बता दो।"

"वक़्त आने पर बता दूंगी!" कहकर सेमी ने फिर आँखें झुका लीं।

"वह तो तुमने बता दिया है। तुमने पब्लिक एनाउंसमेण्ट की है। तेरे जैसी बेशर्म लड़की मैंने आज तक कभी नहीं देखी।" मिसेज गिल ने बहुत क्रुद्ध स्वर में कहा।

सेमी ने एक बार तेज़ नज़रों से मिसेज गिल को देखकर सिर झुका लिया और खामोश बैठी रही जैसे उस वातावरण से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था।

"कौन है वह ?" कर्नल गिल ने सरगोशी में पूछा।

"इलावत। आजकल दोनों एक-दूसरे में बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। वह फुटबाल-मैच में मैरीड ऑफ़िसरों की टीम में इसी के कहने पर शामिल हुआ था।"

"आई सी।" कर्नल गिल ने इतमीनान भरे लहजे में कहा।

"तुम उसे मना क्यों नहीं करते ? वह तुम्हारा मातहत ऑफिसर है।" मिसेज गिल ने कहा।

"मैं उसे कैसे मना कर सकता हूँ?" कर्नल गिल बेबसी प्रकट करता हुआ बोला।

"तुम चाहो तो सब कुछ कर सकते हो। कैरियर खराब कर देने की सिर्फ़ धमकी दे दो। वह इसकी ओर आँख उठाकर भी नही देखेगा।" मिसेज गिल ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

"पैमी डार्लिंग, बटालियन को निजी मामलों में मत घसीटो प्लीज। हालात बदल रहे हैं। दुश्मन की ओर से हर समय शरारत का डर है। पता नहीं कब मूव करने का ऑर्डर आ जाये।"

"अच्छा।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने हैरानी से पूछा।

"डैडी, दुश्मन के बिल्ड-अप और सीमा पर उसकी तैयारियों की तो बहुत दिनों से रिपोर्ट्स आ रही हैं।" कर्नल गिल ने कहा और फिर सेमी को सम्बोधित करता हुआ बोला, "सेमी, प्लीज आप अपने कमरे में जायें। आप बहुत थकी हुई दिखाई दे रही हैं।"

सेमी उठ गयी तो कर्नल गिल ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और [illegible] उचटती-सी नज़र डालता हुआ बोला, "यहाँ सेमी पर ज़्यादा प्रेशर डालने का [illegible] फ़ायदा नहीं होगा। घर में ऊँची-नीची बात होगी तो बटालियन तक [illegible] आप सेमी को कहीं दूर ले जायें। शायद वक़्त और फ़ासले से [illegible] बदल जाये।"

ब्रिगेडियर ग्रेवाल को सुझाव पसन्द आया—"हम आज ही [illegible]

जायें ?"

"नहीं डैडी, सुबह जाइए। देर हो चुकी है, रात में कार का सफ़र ठीक नहीं है। दूसरे आपका बड़े खाने में शामिल होना जरूरी है। अगर आप इस समय चले गये तो खामखाह अफ़वाहें फैलेंगी।" कर्नल गिल बोला।

"ठीक है, हम सुबह छह बजे जायेंगे।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने कहा।

"डैडी, सेमी से इस सिलसिले में बात नहीं करनी चाहिए। मैं तो यह सजेस्ट करूँगा कि आप तेजेन्द्र और सेमी को मंसूरी, नैनीताल, दार्जिलिंग कहीं ले जायें। ममी की भी हवा बदली हो जायेगी।" कर्नल गिल ने सुझाव दिया।

"गुड आइडिया। पहाड़ पर जाने का मौसम भी है।" ब्रिगेडियर ग्रेवाल ने कहा।

ब्रिगेडियर ग्रेवाल, कर्नल गिल और मिसेज गिल लाऊंज में आ गये।

"तेजेन्द्र कहाँ है ?" कर्नल गिल ने पूछा।

"अपने कमरे में।"

"हैलो तेजेन्द्र, भई बाहर आओ। कहाँ छिपे बैठे हो ?"

तेजेन्द्र लाऊंज में आया तो कर्नल गिल उसके साथ गर्मजोशी से हाथ मिलाता हुआ बोला, "आज रात को बटालियन में बड़ा खाना है। आप उसमें जरूर आना।"

"सॉरी, नहीं आऊँगा। दैट स्वाइन विल बी देयर। आज उसने मुझे धोखा देकर पांच सौ रुपये ले लिये।" तेजेन्द्र ने क्रुद्ध स्वर में कहा।

"आप कैप्टन इलावत की बात कर रहे हैं ?" कर्नल गिल ने हँसते हुए पूछा।

"उसने सबसे रुपये लिये हैं, दी मनी गोज़ टू जवान्ज वेलफ़ेयर फ़ण्ड।"

"रुपये कहाँ गये हैं—मेरा इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसने मुझे चीट किया है। ही इज ए चलाइटर ! मैं उसकी शक्ल नहीं देखना चाहता।" तेजेन्द्र ने घृणा से कहा।

"वह नहीं आयेगा। यू विल नॉट सी हिज़ फ़ेस।" कर्नल गिल ने सशक्त स्वर में कहा और फिर उसे समझाता हुआ बोला, "एक बात याद रखना। एक आर्मी-ऑफ़िसर के सामने दूसरे आर्मी-ऑफ़िसर को गाली नहीं देनी चाहिए। हम बहुत बुरा मानते हैं ऐसी बातों का। हम एक फ़ैमिली की तरह हैं।"

"आई एम सॉरी।" तेजेन्द्र बोला। कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत को टेलिफ़ोन पर बुलाकर कहा, "इलावत, तुम आज रात को ड्यूटी-ऑफ़िसर हो। खाना वहीं मँगवा लेना। मैं भी आऊँगा।" कर्नल गिल ने फ़ोन रख दिया। तेजेन्द्र दिलचस्पी से उसकी ओर देख रहा था। उसने सिगार सुलगाया और सोफ़े पर आराम से बैठता हुआ इतमीनान से कश खींचने लगा।

बड़े खाने के बाद कर्नल गिल मेस से सीधा ऑफ़िस आ गया। कैप्टन इलावत ड्यूटी-रूम में बैठा कागज़ों पर झुका हुआ था। कर्नल गिल ने कमरे में प्रवेश करते हुए प्रसन्न भाव से कैप्टन इलावत को पुकारा। अपना नाम सुनकर कैप्टन इलावत चौंक गया और कर्नल गिल को देखकर एकदम उठ खड़ा हुआ और एक ओर हटता हुआ बोला, "गुड इवनिंग सर, इधर बैठिए।"

"यहीं ठीक है।" कर्नल गिल ने सामने पड़ी कुरसी पर बैठते हुए कहा, "इलावत, आई एम सो सॉरी, आपको बड़ा खाना मिस करना पड़ा।"

"सर, बड़े खाने से काम ज्यादा जरूरी है।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

कर्नल गिल ने मेज़ की टाँगों पर दोनों पाँव जमाकर कुरसी पीछे की ओर झुका दी—"मेजर यादव भी आ रहा है। वह अपनी वाइफ़ को घर छोड़ने गया है। इन्फ़ॉर्मेशन तो कल ही आ गयी थी लेकिन मैं रेजिंग-डे का प्रोग्राम डिस्टर्ब नहीं करना चाहता था। एक्सरसाइज़ के बाद जवानों को आराम के लिए पाँच दिन ही तो मिले हैं।"

इसी बीच मेजर यादव ने आहिस्ता से दरवाज़ा खोला और ऊँची आवाज़ में बोला, "मे आई कम इन सर ?"

"आओ यादव !" कर्नल गिल ने कहा। वह कुरसी घसीटकर कर्नल गिल के पास ही बैठ गया।

"यादव, हम अगले कुछ घण्टों में फ़ॉरवर्ड मूव कर रहे हैं। आप एडवान्स पार्टी को कमाण्ड करेंगे। हर कम्पनी से एक ऑफ़िसर, एक जे. सी. ओ., दो एन. सी. ओ. और सात जवान ले लो।

"येस्सर !"

कर्नल गिल ने सब नक्शे निकलवा लिये और बड़ा नक्शा मेज़ पर फैलाता हुआ बोला, "इस प्वाइण्ट से लेकर इस प्वाइण्ट तक के इलाके की सुरक्षा की हमारी जिम्मेदारी है। यह हमारा हार्बर एरिया है। यहाँ आपको बटालियन के रिसेप्शन का बन्दोबस्त करना है। यहीं आपको बिग्रेड और बी. एस. एफ. के लिएँज़न ऑफ़िसर मिलेंगे।" कर्नल गिल ने एक प्वाइण्ट पर पेन्सिल रखकर कहा।

"अभी ग्यारह बजे हैं। मूव करने में कितना समय लगेगा ?"

"सर, पौन घण्टा।......पार्टी डीटेल करनी है।"

"टेक वन आवर........हार्बर एरिया यहाँ से तीन घण्टे का रास्ता है। आप लोग तीन-साढ़े तीन तक वहाँ पहुँच जायेंगे। सेट्ल होने के लिए काफ़ी समय मिल जायेगा।

"येस्सर।" मेजर यादव ने उठते हुए कहा।

मेजर यादव के जाने के बाद कर्नल गिल ने सब कम्पनी-कमाण्डरों को आधे घण्टे के बाद कान्फ्रेन्स-रूम में इकट्ठे होने का ऑर्डर दिया। कर्नल गिल और कैप्टन इलावत मिलकर उस एरिया को लाल और हरे रंग के धागों से अंकित कर रहे थे। मेजर यादव लौट आया। उसने सैल्यूट देकर कहा,—"सर, एडवान्स पार्टी मार्च के लिए तैयार है।"

कर्नल गिल और मेजर यादव उस जगह आ गये जहाँ गाड़ियों के इंजनों की घूँ-घूँ निरन्तर सुनाई दे रही थी। कर्नल गिल मेजर यादव और अन्य ऑफ़िसरों से गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाता हुआ भावुक स्वर में बोला, "ऑल दी बेस्ट। गॉड बी विथ यू! कीप इन टच। बाई-बाई।" वह स्निग्ध आँखों से उन्हें देखता हुआ हाथ हिलाने लगा।

कर्नल गिल जब वापस आया तो सब कम्पनी कमाण्डर कान्फ्रेन्स-रूम में उपस्थित थे। उसे देखकर वे खड़े हो गये।

"प्लीज, बी सीटेड।" कर्नल गिल ने छोटे-से मेज़ के ऊपर बैठते हुए कहा। उसने अपने सामने बैठे अफ़सरों पर नज़र डाली और बहुत गम्भीर स्वर में बोला, "जेण्टलमेन, हम अगले कुछ घण्टों के अन्दर यहाँ से फ़ॉरवर्ड मूव हो रहे हैं। मेजर यादव की कमाण्ड में एडवान्स पार्टी रवाना हो चुकी है।"

फिर उसने पतली छड़ी उठाते हुए कहा, "हायर कमाण्ड का अनुमान यह है कि दुश्मन ने सीमा पर अपनी तैयारी पूरी कर ली है। वह अपने रिज़र्व भी आगे ले आया है।"

कर्नल गिल ने छड़ी की नोक एक लाल सिरवाले पिन के साथ रख दी। "यह प्वाइण्ट 'ए' है" और फिर टेढ़े-मेढ़े लाल रंग के धागे के साथ-साथ छड़ी घुमाता हुआ बोला, "और यह प्वाइण्ट 'बी' है। 'ए' से 'बी' तक इलाक़े की रक्षा की हमारी ज़िम्मेदारी है। इस एरिया में इस समय बी. एस. एफ. की एक कम्पनी है। उनके पाँच पोस्ट हैं—आर वन, आर टू, आर थ्री, आर फ़ोर और आर फ़ाइव। इस एरिया में एक छोटा और दो बड़े ऑब्ज़रवेशन टावर हैं।" कर्नल गिल उन्हें अंकित करता हुआ बोला।

"हमारे एरिया के सामने दुश्मन के इलाक़े में सात पोस्ट हैं—पी वन, पी टू, पी थ्री, पी फ़ोर, पी फ़ाइव, पी सिक्स और पी सेवन। दो पोस्ट पी थ्री और पी सिक्स पर बड़े और पी वन और पी सेवन पर छोटे ऑब्ज़रवेशन टावर हैं।"

"ओके? कर्नल गिल ने सबपर नज़र डाली और छड़ी को कमर के साथ

टेक कर बोला, "इस एरिया की टोपोग्राफ़ी यह है कि यहाँ एक नदी है, जो कहीं पर हमारे इलाके में है और कही दुश्मन के इलाके में। हमारे एरिया में और दुश्मन के इलाके में भी नदी के साथ-साथ बन्ध है। वही मेन डिफ़ेंसिज होंगी।" कर्नल गिल ने पहले अपने बन्ध की ओर और फिर दुश्मन के बन्ध की पोजीशन बताते हुए कहा, "हमारी बटालियन की डेप्लायमेण्ट इस तरह होगी। चार्ली कम्पनी आर वन से आर टू और आर थ्री के मिडल तक। एल्फ़ा कम्पनी आर टू और थ्री के मिडिल से आर फोर और आर फाइव के मिडिल तक और डेल्टा कम्पनी उससे आगे पोज़ीशन लेगी। ब्रेवो कम्पनी हार्बर एरिया में रहेगी। एनी डाउट्स ?"

"नो सर!" एक साथ कई आवाज़ें आयीं।

"वेरी गुड। अभी टाइम है। आप इस एरिया को अच्छी तरह स्टडी कर लें। तैयारी ऐसी हो कि पूरी बटालियन पन्द्रह मिनट के नोटिस पर मार्च कर सके। सब बन्दोबस्त टिप-टाप होगा। मैं 'अगर-मगर' सुनने का आदी नहीं हूँ।" कर्नल गिल ने उठते हुए दृढ स्वर में कहा।

सब ऑफ़िसर्स कान्फ़्रेन्स-रूम से चले गये और वहाँ केवल कर्नल गिल, कैप्टन इलावत और सूबेदार मेजर उदयचन्द रह गये। कर्नल गिल ने घड़ी में समय देखा, तीन बज रहे थे। उसने मुँह पर हाथ रखकर जम्हाई ली और बरामदे की ओर बढ़ता हुआ बोला, "इलावत, तुम सब कम्पनी-कमाण्डरों से बन्दोबस्त चेक करा लेना। ब्रिगेडियर साहब सुबह छह बजे जा रहे हैं। उन्हें विदा करने के बाद मैं मेस में ठहरे हुए मेहमानों को सी-ऑफ़ करूँगा। कोई भी प्राब्लम हो, मुझे टेलिफ़ोन करना। गुड नाइट।" कर्नल गिल ने जीप की ओर बढ़ते हुए कहा।

कैप्टन इलावत उसे जीप तक छोड़ने आया। सड़क के पोल पर लगी ट्यूब की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी। कर्नल गिल ने उसे ध्यान से देखा तो उसे सेमी का खयाल आ गया। वह सोचने लगा कि वे दोनों "मेड फ़ॉर ईच अदर कपल" बन सकते हैं, लेकिन ब्रिगेडियर साहब दौलत के पीछे हैं। इलावत का दोष केवल यही है कि वह बेचारा इण्डियन-आर्मी का कैप्टन है।

"ओके इलावत!" कहकर कर्नल गिल ने मुँह दूसरी ओर फेर लिया और अपनी जीप की ओर बढ़ गया।

कर्नल गिल के जाने के बाद कैप्टन इलावत फिर अकेला रह गया। दिन-भर के कामों की सूची देखने के लिए उसने डायरी निकाली और पहले आइटम पर ही रुक गया। "लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल को दो सौ रुपये देने हैं।" वह मुँह ही मुँह में बुदबुदाया।

कैप्टन इलावत ने पर्स निकालकर पैसे गिने और मेस में टेलिफ़ोन किया। लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल वहाँ नहीं था। कैप्टन इलावत ने उसकी कम्पनी को कॉल किया। उधर से मेजर ढिल्लो ने टेलिफ़ोन उठाया।

"गुड मार्निंग सर। कैप्टन इलावत स्पीकिंग।"

"हैलो इलावत, कोई नयी वात है ?" मेजर ढिल्लों ने उत्तेजित स्वर में पूछा।

"नथिंग सर। वस मेहमान जा रहे हैं।"

"तुम्हारा गेस्ट कव जा रहा है ?"

"सभी मेरे गेस्ट हैं। आप किस गेस्ट की वात कर रहे हैं ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"लुक इलावत, तुम उतने भोले नहीं जितने वनते हो। सी. ओ. साहव कव गये ?"

"आप लोगों के कोई पन्द्रह मिनट वाद।"

"कुछ कहा उसने ?"

"किसके वारे में ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"इलावत, तुम्हें क्या हो गया है ? एक रात जागकर ही दिमाग़ चकरा गया ?" मेजर ढिल्लों ने उसे प्यार से डाँटते हुए कहा, "मैं उसी के वारे में पूछ रहा हूँ जिसके पीछे तुम दीवाने हुए हो, समझे ?"

"येस्सर, लेकिन उसके वारे में पूछना क्या है ?"

"यही कि उसका क्या प्रोग्रम है ?"

"सर, मुझे उन्होंने वटालियन की मूवमेण्ट का प्रोग्राम वनाने के लिए कहा है, सो वना रहा हूँ।"

"आल राइट, तुम वहुत होशियार वन रहे हो। यह वताओ, व्रिगेडियर साहव को सी-ऑफ़ करने जा रहे हो।"

"सर, मैं कैसे जा सकता हूँ। ड्यूटी पर हूँ।"

"तुम्हारी जगह मैं ड्यूटी देता हूँ। तुम चले जाओ।"

"सर, ऐसे मामलों में सवस्टीट्यूट्स नहीं चलते।" कैप्टन इलावत ने कहा और दोनों हँसने लगे।

"ओह इलावत, तुम सचमुच वहुत क्लेवर हो।" मेजर ढिल्लों लटकती हुई आवाज़ में वोला।

कैप्टन इलावत ने घड़ी में समय देखकर पूछा, "सर, क्या लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल आप के पास है ?"

"इस समय तो नहीं है, दस-पन्द्रह मिनट तक आ जायेगा, कहो कुछ काम है ?"

"येस्सर, उसे कहना कि मेस में जाने से पहले मुझसे ड्यूटी-रूम में मिलता जाये।"

"कह दूँगा, और कोई खास वात ?"

"सर, आप कॉलेज कव जा रहे हैं ?"

"ओह इलावत, क्यों मेरे दिल के ज़ख्म कुरेद रहे हो। वह तो इन्तज़ार में है

कि मैं उसे शादी की डेट बताने आऊँगा और अब क्या उसे यह बताने जाऊँ कि मैं फ़ॉरवर्ड जा रहा हूँ। यह सुनकर उसकी तो जान ही निकल जायेगी।" मेजर ढिल्लों एकदम उदास हो गया और उसने टेलिफोन रख दिया।

कैप्टन इलावत कुरसी की पीठ पर झुक गया और आँखें बन्द करके सेमी के बारे में सोचने लगा। वह हर बात पर मुसकरा उठता। वह फ़ुटबाल-मैच पर आकर रुक गया। वह सोचने लगा कि अगर मूव का ऑर्डर न आता तो कर्नल गिल की मारफत ब्रिगेडियर ग्रेवाल से आज ही बात कर लेता। बहुत अच्छा मौक़ा था।

कैप्टन इलावत इन्हीं ख़यालों में खोया हुआ ऊँघ गया। साढ़े पाँच बजे लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने उसके ख़यालों के ताने-बाने को बिखेर दिया "गुड मॉर्निंग सर!"

"हैलो दर्शन!" कैप्टन इलावत अँगड़ाई लेकर सीधा बैठता हुआ बोला।

"सर, आपने बुलाया था ?"

"हाँ दर्शन, तुम्हारे फ़ादर आज जा रहे हैं। सी. ओ. साहब चाहते हैं कि तुम उन्हें जाते समय दो सौ रुपये दो।" कैप्टन इलावत ने दो सौ रुपये उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "बाद में तेरे एकाउण्ट में एडजस्ट कर लेंगे।" और फिर उसकी आँखों में झाँकते हुए बोला, "दर्शन, बटालियन फ़ॉरवर्ड जा रही है। वहाँ तुम्हारा ख़र्च बहुत कम रह जायेगा। तुम्हारे फ़ादर ज़रूरतमन्द हैं। मेरी राय है कि तुम उन्हें पाँच सौ रुपये दे दो। तीन महीने में एडजस्ट हो जायेंगे। क्या ख़याल है तुम्हारा ?"

"ठीक है सर।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल का गला भर आया।

कैप्टन इलावत ने उसे पाँच सौ रुपये देते हुए कहा, "मैं उन्हें सी-ऑफ़ करने नहीं आ सकूँगा। मेरी ओर से माफ़ी माँगना।"

लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल के जाने के बाद कैप्टन इलावत एक बार फिर कुरसी पर झुक गया और अपने ख़यालों की टूटी हुई लड़ी को जोड़ने लगा। वह कुछ भी सोच नहीं पा रहा था। उसका अस्तित्व बँटकर टूट रहा था। उसने मेज़ पर बाज़ुओं का सिरहाना बनाया और माथा टिका दिया। वह कई मिनट तक इसी तरह पड़ा रहा। टेलिफ़ोन की घण्टी ने उसे सचेत कर दिया। उसने झुनझुनी-सी ली जैसे सुस्ती को उतार फेंक रहा हो, फिर भारी आवाज़ में बोला, "ड्यूटी-ऑफ़िसर कैप्टन इलावत।"

"कैप्टन इलावत है ?" किसी स्त्री की आवाज़ थी।

"जी, बोल रहा हूँ।" कहकर उसकी साँस जैसे रुक गयी।

"सेमी बोल रही हूँ!"

"ओह सेमी! मैं सोच रहा था कि इतनी मीठी आवाज़ तुम्हारे सिवा किसी और की नहीं हो सकती।" कैप्टन इलावत ने कुरसी पर अच्छी तरह बैठते हुए कहा।

"मैं जा रही हूँ।" सेमी ने उदास आवाज़ में कहा।

"कहाँ ?"

"चण्डीगढ़।"

"कब ?"

"अभी ! दो-तीन-चार-पाँच मिनटों में।"

"फिर कब आओगी ?"

"जब वे बुलायेंगे, या तुम लाओगे।"

"जा क्यों रही हो ?"

"जाना पड़ रहा है।"

"ओह ! इन हालात में जाना ही चाहिए।"

"क्या मतलब ? कैसे हालात ?" सेमी ने घबराकर पूछा।

"यही कि हालात खराब हो रहे हैं। कर्नल साहब ने कुछ बताया ?"

"नहीं।"

"तो फिर मैं भी नहीं बता सकता।"

"अच्छा, तुम्हारी मरज़ी।" सेमी ने बहुत उदास आवाज़ में कहा।

"सेमी, क्या तुम ठीक हो ? तुम्हारी आवाज़ से ऐसा लगता है जैसे ऑल इज़ नॉट वेल विथ यू।" कैप्टन इलावत घबरा गया।

"मैं तो ठीक हूँ। तुम ठीक हो ?"

"हाँ ?"

"रात बड़े खाने में क्यों नहीं आये ?"

"ड्यूटी लग गयी थी। शाम के आठ बजे से कुरसी पर बैठा हूँ। सुबह आठ बजे ही उठूँगा। सेमी डियर, बहुत बड़ा काम आ पड़ा है।"

"क्या ?"

"कर्नल साहब ने नहीं बताया ?"

"उहूँ।"

"तो फिर मैं भी नहीं बता सकता।"

"मत बताओ। मैं जा रही हूँ। बाई।" सेमी ने तेज़ आवाज़ में पूछा, "क्या [तुम] दो मिनट के लिए नहीं आ सकते ?"

"सेमी, ड्यूटी नहीं छोड़ सकता। तुम दो मिनट के लिए इधर आ जाओ [प्ली]ज़। मैं बिलकुल अकेला बैठा हूँ।"

"काण्ट कम।"

"क्यों ?"

"ड्यूटी।" सेमी ने फीकी-सी हँसी के साथ कहा, "अच्छा मैं जा रही हूँ।"

"सेमी।" कैप्टन इलावत ने ऊँची आवाज़ में पुकारा।

"हूँ।"

"क्या नाराज़ हो गयी हो ?"

"नहीं तो, मुझे बुला रहे हैं। डैडी इधर आ रहे हैं। ओके, बाई-बाई। भूल न जाना।"

"सेमी, यू डोण्ट गो एलोन। माई हार्ट गोज़ विथ यू।" कैप्टन इलावत ने बहुत स्निग्ध स्वर में कहा।

"अच्छा मैं जा रही हूँ। बाई-बाई।"

"लेटर लिखना।"

"देखूँगी।"

"क्या कहा ?"

"लिखूँगी। अच्छा, बाई-बाई।"

"बाई-बाई।" कैप्टन इलावत ने, कहा और रिसीवर हाथ में पकड़े सामने दीवार की ओर घूरने लगा। कुछ क्षणों के पश्चात् उसने सिर झटककर रिसीवर रख दिया और सब कुछ भूलकर बटालियन के मार्च की तैयारी करने लगा। एक घण्टे में पूरी बटालियन मार्च के लिए तैयार हो गयी। भारी सामान गाड़ियों में लादा जा चुका था। लेकिन कभी मूवमेण्ट ऑर्डर नहीं मिला था। कर्नल और मिसेज़ गिल अफ़सरों, जूनियर कमीशण्ड अफ़सरों और जवानों के परिवारों से मिल आये थे।

कम्पनी-कमाण्डर और अन्य अफ़सर अपनी-अपनी कम्पनियों में मौजूद थे। बहुत-से जवान गाड़ियों में बैठे ऊँघ रहे थे और कुछ छोटे-छोटे ग्रुपों में बंटे सरगोशी में बातें कर रहे थे।

"भूख महसूस होने लगी है।" सिपाही रामसरन ने कहा।

"भूख तो महसूस होगी ही। रात का खाना पाँच बजे ही खा लिया था।" बुद्धराम बोला।

"सूबेदार साब से बात करते हैं।" रामसरन ने उठते हुए कहा।

"शौरत! उसके पास मत जाना। डाँट से तुम्हारा पेट भर देगा।"

"क्या हो रहा है ?" मेजर ढिल्लों ने उनके सिर के ऊपर आकर रोब से पूछा। रामसरन, बुद्धराम और वहाँ बैठे अन्य जवान अपनी टोपियाँ और हथियार सँभालते हुए एकदम खड़े हो गये।

"राम-राम, साब! कुछ नहीं, साब!"

"*कुछ बात हो रही थी। क्या बात थी, बोलो!*"

"साब, रामसरन कह रहा था कि भूख चमक उठी है। रात का खाना दिन में पाँच बजे ही खा लिया था।" बुद्धराम ने डरते-डरते कहा।

"सर, रामसरन तो जन्म-जन्मान्तर से भूखा है। रोटी खाकर हाथ धोते-धोते इसे फिर भूख लग जाती है। सोच रहा हूँ कि इसे लागरी बना दूँ।" सूबेदार ओमप्रकाश ने कहा।

"साब, अगर बारह बजे तक मूवमेण्ट ऑर्डर नहीं आता तो इनके लिए चाय

का बन्दोवस्त करा देना।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"जी साब। रेयर पार्टी को बोल देंगे।"

"और सब ठीक है?"

"जी साब।"

मेजर ढिल्लों अपनी कम्पनी का तीसरी बार चक्कर लगाकर ड्यूटी-बैन में कैप्टन इलावत के पास आ गया और कुरसी की टाँग के साथ अपनी स्टेनगन रखता हुआ बोला, "ह्वाट इज़ दि लेटेस्ट?"

"स्टैण्ड स्टिल, कुछ खास नहीं, सर।"

"सी. ओ. साहब कहाँ हैं?"

"घर गये हैं। मैडम को अब अकेले रहना पड़ेगा।"

"क्या वह भी गयी अपने माता-पिता के साथ?"

"येस्सर, आज सुबह।" कैप्टन इलावत ने बुझी हुई आवाज़ में कहा।

"मैं पूछना भूल गया था। उनके साथ वह हिप्पी टाइप लड़का कौन था?"

"सेमी का सूटर, कोर्टशिप करने के लिए इंगलैण्ड से आया है।"

"ब्लडी फ़ूल! इस काम के लिए तो लोग यहीं से इंगलैण्ड जाते हैं और वह यहाँ आया है! मस्ट बी ए ग्रेट फ़ूल।" मेजर ढिल्लों ने कहा।

"काण्ट से सर, लेकिन सी. ओ. साहब का ब्रदर-इन-ला बनना चाहता है।"

"तेरा क्या स्कोप है?"

"आई एम फ़र्म! पक्के पाँव हूँ। सुबह टेलिफ़ोन पर बात हुई थी।"

"क्या कहा उस ने?" मस्ट बी फ़ीलिंग वेरी सैड।"

"काण्ट से।"

"इलावत! आर्मी-ऑफ़िसर के साथ प्रेम करने के लिए लड़की का दिल स्टील का होना चाहिए। हैज़ शी दैट?"

"देखा नहीं, पूछूँगा। अगर हुआ तो मैं अपने पास ताक़तवर चुम्बक रखूँगा।" कैप्टन इलावत ने धीमी आवाज़ में हँसते हुए कहा।

"इलावत, मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा। डोण्ट टेक माई वर्ड्ज़ सो लाइटली।" मेजर ढिल्लों ने गम्भीर स्वर में कहा।

कैप्टन इलावत व्यंग्य-भरी नज़रों से मेजर ढिल्लों की ओर देखता हुआ बोला, "सर आपके मन में अभी से शंकाएँ उभरने लगी हैं। आप अभी यहीं बैठे हैं।"

"इलावत, चंचल मन कुछ भी कर सकता है।" मेजर ढिल्लों ने उदास स्वर में कहा।

"सर, बी श्योर ऑफ़ योरसेल्फ़। आप अपने ऊपर विश्वास रखें।"

इतनी देर में गाड़ी से बाहर मेज़ पर रखे टेलिफ़ोन की घण्टी बज उठी। कैप्टन इलावत ने झुककर टेलिफ़ोन उठा लिया।

"एडजूटेण्ट कैप्टन इलावत स्पीकिंग।"

"ब्रिगेड मेजर हरीश।"

"गुड इवनिंग सर।"

"तुम्हारा बटालियन तीन बजे तक हार्बर एरिया में पहुँचना चाहिए—ओके ?"

"येस्सर !"

कैप्टन इलावत टेलिफोन सुनते ही उत्तेजित हो गया। उसने घड़ी पर समय देखा और मैसेज लिखकर टाइपिस्ट को देता हुआ मेजर ढिल्लों से बोला, "सर, मूवमेण्ट-ऑर्डर आ गया है।"

इलावत ने नायब सूबेदार क्वार्टर-मास्टर दीपचन्द को आवाज़ दी—"साब, जागो आ गयी, सब को बता दो। आधे घण्टे के अन्दर मार्च होगा।"

आधी रात का चाँद निकल रहा था। चारों ओर हलकी रोशनी फैल रही थी। वृक्षों के आकार धुँधले-से दिखाई देने लगे थे। बटालियन के कम्पाउण्ड में चारों ओर 'जागो आयी, जागो आयी' की आवाज़ें गूँज रही थीं। दौड़ रहे जवानों की दगड़-दगड़ सुनाई दे रही थी। अपने निजी सामान के साथ जवान गाड़ियों में बैठ रहे थे।

मूवमेण्ट-ऑर्डर आने के पाँच मिनट बाद ही कर्नल गिल, मिसेज़ गिल, मिसेज़ यादव, मिसेज़ बासू, मिसेज़ शर्मा और मिसेज़ करमरकर असेम्बलिंग-प्वाइण्ट पर मौजूद थीं। चार्ली कम्पनी की गाड़ियों के इंजन स्टार्ट हो चुके थे और उनकी घूँ-घूँ वातावरण पर छा गयी थी। मेजर बासू, मेजर शर्मा और मेजर करमरकर अपनी पत्नियों को वहाँ देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उदास भी।

"आप यहाँ कैसे पहुँच गयी ?" मेजर बासू ने विस्मित स्वर में पूछा।

"हम आपको सी-ऑफ करने आयी हैं।" मिसेज़ बासू ने दिल कड़ा करके मुसकराने की कोशिश करते हुए कहा लेकिन वह अपनी भावनाओं को काबू में न रख सकी और उसकी आवाज़ रुँध गयी।

कर्नल गिल मौक़ा की नज़ाकत को भाँपता हुआ बोला, "इलावत, चार्ली कम्पनी को मूव करने का ऑर्डर दो।"

"येस्सर।" कैप्टन इलावत ने मेजर ढिल्लों को टेलिफोन पर ऑर्डर सुना दिया।

कर्नल गिल अपनी पत्नी की ओर मुड़ता हुआ बोला, पैमी डार्लिंग, बी ब्रेव। अपनी छोटी बहनों का ख़याल रखना और जे. सी. ओज़ और जवानों के परिवारों का भी। मैं इन्हें तुम्हारी देख-रेख में छोड़ रहा हूँ।"

मेजर बासू अपनी पत्नी सुनीती की आँखों में छलकते आँसू देखकर स्निग्ध स्वर में बोला, "हम दोनों की बेहतरीन कृति मैं तुम्हारे पास छोड़ रहा हूँ। ही इज़ गॉड्ज़ गिफ्ट टू अस। तुम इसका ख़याल रखना, ईश्वर मेरा ख़याल रखेगा।"

मिसेज़ वासू सिर झुकाये खामोशी से आँसू बहाती रही ।

मेजर शर्मा अपनी पत्नी मालती के दोनों कन्धों पर हाथ रखे हुए आग्रह कर रहा था कि वह उसे मुसकराकर विदा करे । मेजर करमरकर अपनी पत्नी के साथ थोड़ी दूर खड़ा बातें कर रहा था । कर्नल गिल मिसेज़ यादव से कह रहा था कि वह दो दिन में मेजर यादव को कुछ समय के लिए अवश्य भेजेगा ।

मेजर करमरकर और मिसेज़ करमरकर को अपनी ओर आते देखकर वह खामोश हो गया । मेजर करमरकर ने कर्नल गिल के बहुत निकट आकर कहा, "सर, आप जानते हैं, माई वाइफ़ इज़ एक्सपेक्टिंग ।"

"हाँ करमरकर, जानता हूँ ।"

"सर, आप कहें तो इन्हें पूना भेज दूँ ।"

"करमरकर, इन्हें यहीं रहने दो । वहाँ अकेली चिन्ता करेंगी । दो-तीन दिन में यहाँ से हमारी टेलिफ़ोन-सर्विस शुरू हो जायेगी । तुम रोज़ बात कर सकोगे और फिर यहाँ और भी लेडीज़ हैं, वे खयाल रखेंगी ।" कर्नल गिल ने कहा ।

"मिसेज़ करमरकर, आप घबराती क्यों हैं ? वी शैल लुक ऑफ़्टर ईच अदर । इकट्ठे रहने से फ़िक्र भी कम हो जाता है । मिसेज़ गिल ने कहा ।

कैप्टन इलावत ने कर्नल गिल के पास आकर कहा, "सर, तीन कम्पनियाँ मूव आउट हो चुकी हैं ।"

"गुड, हम भी चलते हैं ।" कर्नल गिल अपनी पत्नी की ओर मुड़ता हुआ बोला, "ओके पैमी डार्लिंग ! गॉड बी विथ ऑल ऑफ़ अस ।"

कम्पाउण्ड से एक दूसरी के बाद जीपें निकलनी शुरू हो गयीं । मिसेज़ गिल, मिसेज़ यादव, मिसेज़ शर्मा, मिसेज़ वासू और मिसेज़ करमरकर जीपों को हसरत-भरी नज़रों से देखती हुई उस समय तक हाथ हिलाती रहीं जबतक कि गाड़ियों की परछाइयाँ नज़र आती रहीं । उनके अन्दर जैसे कोई चीज़ टूटकर कुसमुसा रही थी । उनके दिल भरे हुए थे और वे बात-बेबात पर रो देना चाहती थीं ।

जब दूर जा रही गाड़ियों की घुरघुराहट भी सुनाई देनी बन्द हो गयी तो मिसेज़ गिल गला साफ़ करती हुई बोली, "आओ, मेरे साथ चलो ।"

"मेरे घर चलिए । मिसेज़ यादव के बच्चे वहीं हैं । मिसेज़ वासू का बेटा भी वहीं सो रहा है ।" मिसेज़ शर्मा ने कहा ।

"ठीक है, थोड़ी देर गपशप करेंगी । हमारी नींद तो वे अपने साथ ले गये ।" मिसेज़ गिल ने बहुत उदास स्वर में कहा ।

वे पाँचों दो सशस्त्र जवानों के संरक्षण में बटालियन के खाली और सुनसान कम्पाउण्ड को हसरत-भरी नज़रों से देखती हुई धीरे-धीरे मिसेज़ शर्मा के बँगले की ओर बढ़ गयीं ।

दस

सूर्योदय से पहले ही बटालियन के अफ़सर और जवान अपने निश्चित ठिकानों पर पहुँच गये।

बटालियन का फ़ॉरवर्ड-हेडक्वार्टर आमों और बेरियों के एक बाग में बनाया गया था। एक बड़े खेत के अगले भाग में, जहाँ से पक्की सड़क केवल पचास गज दूर थी, आमों के पेड़ थे। खेत के तीन ओर बेरियों के वृक्ष थे। खाली जगह में, आधे हिस्से में आलू और बाकी आधे में सरसों लगी हुई थी और आम के एक पेड़ के नीचे कुएँ में रहट लगा था। खेतों के चारों ओर डेढ़ फ़ुट चौड़ा रास्ता घूम जाता था। सब उसी रास्ते से आते-जाते थे ताकि फ़सल का कम से कम नुक़सान हो।

कर्नल गिल और मेजर यादव ऑप्रेशनल बंकर में बैठे उस इलाक़े के नक्शे का अध्ययन कर रहे थे जिसकी रक्षा का उनपर दायित्व था। कैप्टन इलावत ने आकर रिपोर्ट दी—"सर, टेलिफ़ोन लाइन लगभग बिछ गयी है। आधे घण्टे तक तमाम कम्पनियों से टेलिफोन का सम्बन्ध कायम हो जायेगा।"

"गुड। बेस के साथ लाइन कम्यूनीकेशन की क्या पोजीशन है?"

"सर, शाम तक वह लाइन भी चालू हो जायेगी।"

"वेरी गुड। आज शाम को बेस से बात करेंगे। जब हमने मूव किया था तो लेडीज बहुत उदास थी।" कर्नल गिल ने सहानुभूति-भरे लहजे में कहा।

"नैचुरली सर।" मेजर यादव बोला।

"हाँ यादव, मुझे याद आया, मैंने मिसेज यादव को प्रामिस दिया है कि तुम एक-दो दिन में कुछ समय के लिए वापस आओगे।" कर्नल गिल ने उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा।

"थैंक्यू सर।" मेजर यादव का चेहरा खिल उठा और वह स्निग्ध स्वर में बोला, "सर, मैं जब वहाँ से चला था तो मेरा बड़ा बेटा गोल्डी सो रहा था। राधिका उसे जगाने लगी लेकिन मैंने मना कर दिया क्योंकि वह ज़िद करने लगता है—पापा पास जायेंगे, पापा साथ चलेंगे।" मेजर यादव उसकी नकल उतारता हुआ बोला।

"हाऊ स्वीट।" कर्नल गिल ने प्यार-भरे लहजे में कहा और फिर गम्भीर स्वर में बोला, "यह घड़ी बहुत कठिन है। सस्पेंस की लाइफ़ सबसे बुरी होती है और आर्मी-वाइव्ज की किस्मत में इसके सिवा है ही क्या। यू नो, कोई नहीं कह सकता कि फिर मुलाक़ात होगी या नहीं। हमें फ़र्क़ नहीं पड़ता क्योंकि फ़्रण्ट-लाइन पर घर-

वार के बारे में सोचने का मौक़ा ही कब मिलता है। हम अपने परिवारों के लिए ही अजनबी बन जाते हैं।"

"येस्सर, जब बच्चों की याद आती है तो बहुत ज्यादा आती है। मुझे यहाँ आये छत्तीस घण्टे से ज्यादा नहीं हुए लेकिन ऐसा महसूस होता है कि कई हफ़्तों से यहाँ पड़ा हूँ।" मेजर यादव ने कहा।

"ह्वीज़ (पतियों) के फ़्रण्ट पर जाने के बाद आर्मी-वाइब्ज़ को काम ही क्या होता है ? सिवा इसके कि अपने पतियों के बारे में फ़िक्र करें और उनके लिए प्रार्थना करें।" कर्नल गिल ने कुछ उदास स्वर में कहा।

"लेकिन एक बात कहूँगा, सर, वे बहादुर औरतें हैं।"

उनकी बातें सुनकर कैप्टन इलावत को भी सेमी का खयाल आ गया। कर्नल गिल उसे विचारमग्न देखकर बोला, "हैलो सनी, तुम क्या सोच रहे हो ?"

"सर, कुछ खास नहीं।" कैप्टन इलावत चौंक गया।

"कम ऑन मैन ! मन ही मन में कोई सीक्रेट मत रखो।" कर्नल गिल ने बेतकल्लुफ़ी से कहा।

"सर, बस कुछ याद आ गया था। बीती बात सिर्फ़ याद बनकर रह जाती है। बस कुछ ऐसी ही यादें हैं जिनके बारे में सोच रहा था।" कैप्टन इलावत ने दार्शनिक भाव में कहा।

"इलावत, मैं समझता हूँ कि तुम उन लोगों में से हो जो किसी बात का दिल पर असर नहीं होने देते।"

"सर, एक तरह से आप ठीक ही कहते हैं। मैं तुरत फ़ैसला कर लेता हूँ। मैं अपनी पोज़ीशन लोकेट कर लेता हूँ।" कैप्टन इलावत सशक्त स्वर में बोला।

"क्या पोज़ीशन है तुम्हारी ?"

"सर, आई एम फ़र्म, वेरी फ़र्म, बिलकुल पक्के पाँव हूँ।" कैप्टन इलावत ने विश्वास से कहा।

कर्नल गिल खिलखिलाकर हँस पड़ा, "इलावत, तुम बहुत चुस्त हो ! क्यों यादव ?"

"येस्सर, ही इज़ लेडीज डार्लिंग।"

"सर, क्यों मेरी टाँग खींच रहे हैं।" कैप्टन इलावत ने बनावटी प्रोटेस्ट करते हुए कहा।

"डैम इट ! सच्ची बात कहना टाँग खींचना नहीं होता।" यादव बोला।

कुछ मिनटों के बाद वे फिर अपने-अपने विचारों में खो गये। कैप्टन इलावत वहाँ से कम्यूनिकेशन बंकर में चला गया। जब वह वापस आया तो कर्नल गिल की आँखें बन्द थीं और वह किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था। उसने आँखों की पलकें ज़ोर से दबाकर खोलीं, "इलावत, देखो कम्पनियों से टेलिफ़ोन लिंक बन गया है

कि नहीं।"

"सर, मैं कम्यूनीकेशन बंकर से ही आ रहा हूँ। सब कम्पनियों के साथ टेलिफोन लिंक क़ायम हो गया है। मैंने कम्पनी-कमाण्डरों से बात भी की है। मेजर ढिल्लों कुछ नाखुश है।"

"क्यों ?"

"सर, उन्हें जगह पसन्द नहीं। कह रहे थे बिलकुल उजाड़ है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"तुम उसे मेरी ओर से कहो कि उसे खास तौर पर वहाँ भेजा गया है ताकि वह अपनी प्रेमिका को जी भरकर याद कर सके। विछोह में प्रेमियों को उजाड़ जगहें ही पसन्द होती हैं।" बात करते कर्नल गिल एकदम उदास हो गया और कुछ क्षणों के पश्चात् सुस्त आवाज़ में बोला, "ढिल्लों अगले मास शादी करने का प्लान बना रहा था कि इधर फ़ॉरवर्ड जाने का ऑर्डर मिल गया। पुअर चैप !"

कर्नल गिल की बात सुनकर वे भी उदास हो गये। लेकिन कुछ क्षणों के पश्चात् ही कैप्टन इलावत मुसकराने लगा तो कर्नल गिल ने उसकी ओर आश्चर्य से देखते हुए पूछा, "क्या बात है। तुम होंठों ही होंठों में क्यों मुसकरा रहे हो ?"

"सर, ईश्वर ने चाहा तो तीन खुशियाँ इकट्ठी मनायेंगे।" कैप्टन इलावत ने बदस्तूर मुसकराते हुए कहा।

"कौन-सी तीन खुशियाँ ?"

"सर, विक्टरी-डे, मास्टर करमरकर का बर्थ, और मेजर ढिल्लों की शादी।"

"दो तो हो सकती हैं लेकिन तीसरी के बारे में फ़िफ्टी-फिफ्टी चांसिज़ हैं।" कर्नल गिल ने सोचते हुए कहा।

"सर, कौन-सी ?"

"मास्टर करमरकर का बर्थ। लड़की भी तो हो सकती है।"

"सर, एक्सपर्ट राय तो यही है कि लड़का होगा।" कैप्टन इलावत ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

"एक्सपर्ट राय का क्या मतलब ? मेरे ख़याल में साइन्स अभी तक कोई ऐसी मशीन नहीं बना सकी जो बर्थ से पहले बच्चे का सेक्स बता दे।" कर्नल गिल ने कहा।

कैप्टन इलावत उत्तर देने की बजाय मेजर यादव की ओर देखने लगा।

"यादव की ओर क्यों देख रहे हो ? बताओ ना ?" कर्नल गिल ने आग्रहपूर्ण स्वर में पूछा।

"सर, मेरा सोर्स तो मेजर यादव ही है।"

"डैम इट, मुझे क्यों बीच में घसीट रहे हो !" मेजर यादव ने आपत्ति की।

"सर, बैक आउट नहीं करना चाहिए।" कैप्टन इलावत नम्र स्वर में बोला।

"कम ऑन यादव, झिझक क्यों रहे हो ?"

"सर, इसने खाहमखाह बात बना ली है।" मेजर यादव ने क्रोध-भरी नज़रों से कैप्टन इलावत की ओर देखते हुए कहा।

"सर, मैं शुरू कर देता हूँ, आप....।" कैप्टन इलावत ने शरारत से मुसकराते हुए कहना शुरू किया, "सर, पिछले शनिवार की रात को मैं और कैप्टन मिश्रा इनके घर गये थे। उस समय मेजर और मिसेज़ यादव सैर के लिए जाने ही वाले थे।"

"इलावत, डोण्ट बी सिली ! तुम साढ़े दस बजे आये थे। और हम सोने की तैयारी कर रहे थे।" मेजर यादव ने तेज आवाज़ में कहा।

"सर, आप ठीक कहते हैं। आई एम सॉरी ! आप कह रहे थे कि आप सोने की तैयारी कर रहे थे।" कैप्टन इलावत कुरसी की पीठ पर झुकता हुआ बोला।

"सर, इन्होंने राधिका को मजबूर किया कि वह इनके लिए खाना बनाये। दोनों ने किचन में ही बैठकर खाना खाया।" मेजर यादव ने कहना शुरू किया।

"यादव, प्लीज़ बी ब्रीफ़।" कर्नल गिल ने बेसबरी से कहा।

"सर, इसने राधिका से शर्त लगायी कि मेजर करमरकर के घर लड़की होगी।" मेजर यादव ने कैप्टन इलावत की ओर देखते हुए कहा।

"इलावत ! डैम इट ! क्या तुम ज्योतिष भी लगाते हो ? तुमने किस बिना पर शर्त लगायी ?" कर्नल गिल ने पहलू बदलते हुए पूछा।

"सर, पचीस हज़ार की इन्श्योरेंश पॉलिसी पर, जो मेजर करमरकर ने बीस साल के लिए दो हफ़्ते पहले ली थी।" कैप्टन इलावत ने भोलेपन से कहा।

"ओह, गुड गॉड !" कर्नल गिल हँसी से लोट-पोट होने लगा।

"इलावत, यू आर ए रोग।" कर्नल गिल को हँसते-हँसते खाँसी आने लगी। जब उसने खाँसी और हँसी पर क़ाबू पा लिया तो कैप्टन इलावत बोला, "सर, मैडम यादव ने मुझे तुरत कन्ट्राडिक्ट कर दिया और शर्त लगाने को तैयार हो गयी। क्यों सर यादव ?"

"कम ऑन यादव, हरी-अप।" कर्नल गिल ने कहा।

"सर, यू नो, लेडीज़ को इन मामलों का ज्यादा पता होता है। राधिका ने बताया कि मिसेज़ करमरकर के आजकल खान-पान और चाल-ढाल से पता चलता है कि वह लड़के को जन्म देंगी। मेजर यादव खिसियाना-सा कर्नल गिल की ओर देखने लगा।"

"सर, आपने उनकी राय की पुष्टि की थी ?"

"नो। मैंने इस सारी बातचीत में बिलकुल हिस्सा नहीं लिया।" मेजर यादव ने सशक्त स्वर में कहा।

"नो सर, माफ़ करना, आपने मिसेज़ यादव की बात की पुष्टि की थी।" कैप्टन इलावत अड़ गया, "सर, आप शायद भूल गये हैं।........आपने कहा था कि

जब गोल्डी पैदा होनेवाला था तो मिसेज़ यादव का हाल-अहवाल बिलकुल मिसेज़ करमरकर-जैसा था। वट्स एल्स कुड कनफ़र्म दिस ?" कैप्टन इलावत ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

कर्नल गिल उनकी नोक-झोंक पर कुछ देर तक हँसता रहा और फिर घड़ी देखकर उठता हुआ बोला, "यादव, चलो ब्रिगेड-हेडक्वार्टर चलते हैं। यू मस्ट मीट दि ओल्डमैन। ब्रिगेडियर स्वामी बहुत उम्दा ऑफ़िसर हैं।" फिर वह कैप्टन इलावत को सम्बोधित करता हुआ बोला, "बेस से टेलिफ़ोन लाइन चालू हो जाये तो लेडीज को छह बजे बटालियन-हेडक्वार्टर आने के लिए कह देना। उनके हज़्बीज बात करेंगे।"

"येस्सर, आप कहें तो मेजर ढिल्लों की फ़िएन्सी को भी बुला लें।"

"येस। अगर वे आना चाहें।"

कर्नल गिल और मेजर यादव के जाने के बाद कैप्टन इलावत ने मेजर ढिल्लों को कॉल किया और हँसता हुआ बोला, "सर, आज शाम को आपकी उनसे टेलिफ़ोन पर बात कराने के बारे में सोच रहा हूँ।"

"सच !" मेजर ढिल्लों को विश्वास नहीं आ रहा था।

"सच ! लेकिन एक शर्त है।"

"क्या, जल्दी बोलो।"

"मेरी फ़ीस मिलनी चाहिए, सिर्फ़ दो किलो बरफ़ी।"

"इलावत कुछ तो सोचो, तू जंगल में आ गया है। मरेगा या जियेगा कोई नहीं कह सकता। अब तो बरफ़ी का लालच छोड़ दे।"

"सर, सोच लो, मरज़ी है आपकी।" कैप्टन इलावत ने बात समाप्त करने के लिए कहा।

"इलावत, तुम स्टाफ़-ऑफ़िसर होने का फ़ायदा उठा रहे हो। कोई बात नहीं, शर्त मंज़ूर है।"

"आल राइट सर, छह बजे आ जाना। उनके साथ बात भी कराऊँगा और मुँह मीठा भी।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"बहुत ग्रैण्ड ऑफ़र दे रहे हो, अभी आ जाऊँ ?"

'नो सर, छह बजे। सर, माफ़ करना, दूसरे टेलिफ़ोन पर कॉल है।"

"ओके, छह बजे आऊँगा। बाई-बाई।" कैप्टन इलावत ने दूसरा टेलिफ़ोन उठा लिया—"कैप्टन इलावत स्पीकिंग।"

"इलावत, मैं मेजर इन्द्रसिंह बोल रहा हूँ।"

"गुड आफ़्टरनून सर, कैसे हैं आप ?"

"ठीक हूँ लेकिन कुछ ऐसी बात हो गयी है जो नहीं होनी चाहिए थी।"

"क्या हुआ ?" कैप्टन इलावत घबरा गया।

"मैं 'ए' प्लाटून की पोज़ीशनें देखने गया हुआ था जब ब्रिगेड मेजर हरीश मेरी

कम्पनी में आया। उसने मेरे दो जवानों को खेत से गन्ने तोड़ते हुए पकड़ लिया।"

"वेरी वैड ! जवानों को ऐसा नहीं करना चाहिए था। इस बारे में बहुत सख्त ऑर्डर्स हैं।"

"येस, आई नो ! लेकिन मेजर हरीश ने उन्हें मुझे या मेरे टू-आई-सी को पूछे बिना ही एक हफ़्ते की क्वार्टरगार्द दे दी है।" मेजर इन्द्रसिंह ने बहुत दुखद आवाज़ में कहा।

"यह तो और भी ज्यादा बुरा है।" कैप्टन इलावत बोला।

"यही नहीं, वह वापस चला गया लेकिन उसने मुझे इन्फ़ॉर्म करने की भी तकलीफ़ नहीं की। मेरा सूबेदार वहाँ मौजूद था, उससे भी पूछा तक नहीं। उसने मुझसे बात करने को कहा तो उसे भी डांट दिया कि वह सारी कम्पनी को ऑन चार्ज कर देगा।" इससे मेरी पोज़ीशन और जवानों के मॉरल (मनोबल) और डिसिप्लिन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।" मेजर इन्द्रसिंह ने कहा।

कैप्टन इलावत ने सोच में डूबी आवाज में कहा, "सर, आप सी. ओ. साहब से बात करें।"

"तुम खुद कर लेना। मैंने तुम्हें बता दिया। आई फ़ील वेरी वैड अबाउट इट।" मेजर इन्द्रसिंह की आवाज़ भारी थी।

"ओके सर, मैं बात करता हूँ। सी. ओ. साहब ब्रिगेड-हेडक्वार्टर गये हैं, पहुँचने ही वाले होंगे।"

कैप्टन इलावत ने दूसरे फ़ोन पर ब्रिगेड-हेडक्वार्टर माँगा।

"कैप्टन क्रिशनन, ड्यूटी-ऑफ़िसर।"

"हैलो क्रिश, डैम इट, तुम यहाँ कब आये ?" कैप्टन इलावत ने उसकी आवाज़ पहचानते हुए प्रसन्न भाव से कहा।

"सर, कौन बोल रहे हैं आप ?" कैप्टन क्रिशनन ने पूछा।

"योर पोप, तुम्हारा पिता। कैप्टन क्रिशनन समझ गया कि दूसरी ओर उसका कोई पुराना मित्र है। उसने भी बहुत बेतकल्लुफ़ी से उत्तर दिया, "अपने पोप की लास्ट राइट्स (अन्त्येष्टि) तो मैंने एक हफ़्ता पहले ही पूरी की है। यह मेरा नया बाप कौन है ?"

"इलावत।"

"हाँ ? देवू ? तुम यहाँ कैसे पहुँच गये ?" कैप्टन क्रिशनन ने खुशी के मारे चीखती आवाज़ में पूछा।

"बन्धु, जैसे तुम पहुँच गये।" मिश्रा भी यहीं है। हाँ क्रिश, मेरे सी. ओ. कर्नल गिल यहाँ आये हैं, उनसे मेरी बात कराना।"

"ओके। मैं पता कराता हूँ।" कहकर कैप्टन क्रिशनन ने पूछा, "और देवू, हाउ इज़ लाइफ़ ?"

"सर, साढ़े चार साल।"

"यू एक्टिंग कैप्टन ! तुम एक सबस्टेटिव मेजर को रूल्ज सिखाना चाहते हो ?"

"नो सर ! मैं तो सिर्फ़ यह कहना चाहता हूँ कि आपको कम्पनी-कमाण्डर को जरूर बताना चाहिए था या कर्नल गिल को इन्फ़ॉर्म कर देते। हम उन्हें सात दिन की बजाय चौदह दिन की सज़ा देते।" कैप्टन इलावत ने संयत स्वर में कहा।

"लुक इलावत ! मुझे आर्मी में आये पन्द्रह साल हो गये हैं और तुम आर्मी में अभी पैदा ही हुए हो।" मेजर हरीश का क्रोध और भी बढ़ गया।

"सर, सवाल सर्विस की लम्बाई का नहीं, डिसिप्लिन और चेन ऑफ़ कमाण्ड का है।" कैप्टन इलावत बोला।

"ह्वाट, तुम यह कहना चाहते हो कि मैंने ग़लती की है ! लुक, यू एक्टिंग कैप्टन, आई विल फ़िक्स यू अप।" मेजर हरीश दहाड़ा।

"सर, आप मुझे तो मनमानी सज़ा दे सकते हैं लेकिन ग़लत को सही नहीं बना सकते।"

"शट-अप ! मैं तुम्हारी दलीलबाज़ी नहीं सुनना चाहता।" मेजर हरीश ने चीखती हुई आवाज़ में कहा और धप से रिसीवर रख दिया।

कैप्टन इलावत सटपटा रहा था। वह क्रोध की आग में फुंकता हुआ बंकर के अन्दर टहलने लगा। उसके मन पर बहुत बोझ था कि उसे मेजर हरीश ने केवल इसलिए अपमानित किया है क्योंकि वह सीनियर अफ़सर है।

कैप्टन इलावत ने मेजर इन्द्रसिंह को टेलिफ़ोन किया और उसे मेजर हरीश से हुई अपनी वार्ता सुनाकर बोला, "सर, मैं एडजूटेण्ट नहीं रहूँगा। सी. ओ. साहब आ जायें तो उनसे रिक्वेस्ट करूँगा कि मुझे आपकी कम्पनी में पोस्ट कर दें ! आपके पास एक वेकेन्सी भी है।"

"इलावत, तुम मेरी कम्पनी में आ जाओ इससे बड़ी मेरी गुडलक क्या हो सकती है। लेकिन क्या सी. ओ. साहब मान जायेंगे ?" मेजर इन्द्रसिंह ने पूछा।

"मैं उनसे बात करूँगा। लेकिन जाने से पहले इस केस का ज़रूर निपटारा करूँगा। बी. एम. ने ग़लती की है और उसे वह माननी होगी। वह अपनी ग़लती से केवल इसलिए नहीं बच सकता क्योंकि वह ब्रिगेड मेजर है।"

"छोड़ो इलावत, झगड़ा करने से कोई फ़ायदा नहीं होगा ?" मेजर इन्द्रसिंह ने कहा।

"सर, यह असूल का झगड़ा है। डिसिप्लिन और मॉरल क़ायम रखना है तो ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए।" कैप्टन इलावत ने सशक्त स्वर में कहा।

"ब्रिगेड मेजर कुछ शार्ट टेम्पर्ड (गर्म स्वभावी) दिखाई देता है। छोड़ो, जो हो गया सो हो गया, मैंने अपने सूबेदार की तसल्ली करा दी है। सी. ओ. साहब आ जायें तो उनसे बात करके सज़ा कन्फ़र्म कर देंगे।" मेजर इन्द्रसिंह ने कहा।

"सर, आप जो मरजी करें ! मैं तो इस केस पर स्टैण्ड लूँगा।" कैप्टन इलावत अपनी बात पर अड़ा रहा।

"अच्छा, सी. ओ. साहब आ जायें तो मुझे बता देना। मैं भी उनसे बात करूँगा।"

कैप्टन इलावत के मन का बोझ हलका नहीं हुआ था। उसके कानों में मेजर हरीश के शब्द बार-बार गूँजते और उसके मन में उबाल-सा उठने लगता। उसपर एक-एक क्षण भारी गुज़र रहा था।

कर्नल गिल और मेजर यादव वापस पहुँचे तो कैप्टन इलावत अपने बंकर के बाहर बेचैनी से टहल रहा था।

"हैलो इलावत, एवरी थिंग ओके ?" कर्नल गिल ने प्रसन्न भाव से पूछा।

"येस्सर।"

"कोई ख़बर ?"

"नो सर।"

"दैट्स गुड।"

कर्नल गिल कैप्टन इलावत की ओर ध्यान से देखता हुआ बोला, "सनी, तुम्हें क्या हुआ है ? उदास और बेचैन क्यों हो ?" और फिर वह अर्थपूर्ण मुसकान के साथ बोला, "देखो, जबतक हम यहाँ पर हैं वह हर बात भूल जाओ जो हमारी प्रोफ़ेशनल ड्यूटी पर बुरा असर डालती है।"

"ठीक है, सर।" कैप्टन इलावत ने बुझी हुई आवाज़ में कहा और कर्नल गिल की ओर देखने लगा।

"कहो, कुछ कहना चाहते हो ?"

"येस्सर। सर, मैं एडजूटेण्ट नहीं रहना चाहता। मुझे किसी कम्पनी में पोस्ट कर दें।" कैप्टन इलावत फूट पड़ा।

"क्यों, क्या हुआ ? मैं तुम्हें अच्छा-भला छोड़कर गया था।" कर्नल गिल हैरान रह गया।

"सर, मैंने फ़ोन पर आपको 'एल्फ़ा' कम्पनी के बारे में बताया था।"

"हाँ-हाँ, मेजर हरीश वहाँ गया था। उसने इन्द्र की कम्पनी के दो जवानों को सज़ा दी है।"

"येस्सर। मैंने बी. एम. से इस सिलसिले में बात की है। उसने अपनी ग़लती मानने की बजाय मेरा बहुत अपमान किया और यहाँ तक कहा कि वह मुझे फ़िक्स-अप कर देगा। एडजूटेण्ट के नाते मेरा उनसे रोज़ काम रहेगा। मैं उनसे पुल ऑन नहीं कर सकूँगा।" इलावत बहुत गम्भीर था।

कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत को ध्यान से देखते हुए कहा, "डोण्ट बी सिली। वह तुम्हें कैसे फ़िक्स-अप कर सकता है। वह तुम्हारा सी. ओ. नहीं है।"

"सर, आप मुझे मेजर इन्द्रसिंह की कम्पनी में पोस्ट कर दें। वहाँ वेकेन्सी भी है।"

"इलावत, तुम इस समय गुस्से में हो। शान्त हो जाओ तो फिर सोचना और बताना। यों मैं एक बात तुम्हें बता दूँ कि बटालियन में एडजूटेण्ट किंग-पिन होता है और किंग-पिन को रिप्लेस करना आसान नहीं होता।" कर्नल गिल ने कहा।

"सर, मैं आपका आभारी हूँ, लेकिन जो ऑफ़िसर हर समय अपनी सीनियारिटी का रोब दिखाये उससे पुल-ऑन करना मुश्किल है।" कैप्टन इलावत ने प्रत्येक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा। कर्नल गिल और कैप्टन इलावत आपस में बातें कर ही रहे थे कि हवलदार क्लर्क देवीदास ने डाक-पैड सामने रख दिया। कर्नल गिल ने पत्र पढ़कर कैप्टन इलावत की ओर बढ़ाते हुए कहा, "यह लेटर पढ़ लो। इसके बाद शायद तुम अपना मन बदल लोगे। बी. एम. ने तुम्हारी बात मान ली है।" कर्नल गिल मुसकराता हुआ बोला।

कैप्टन इलावत चिट्ठी पढ़ रहा था जब टेलिफ़ोन की घण्टी बजी। कर्नल गिल के पीछे-पीछे वह भी बंकर में चला गया।

"हैलो हरीश, कैसे हो ?"

"फ़ाइन सर। सर, मैंने अभी एक लेटर भेजा था। शायद आपको मिल गया होगा। मैंने आपकी 'एल्फ़ा' कम्पनी के दो जवानों को सजा दी है। उसे कन्फ़र्म कर दें।" हरीश ने नम्र स्वर में कहा।

"हरीश, एडजूटेण्ट कैप्टन इलावत से बात कर लो। उसे सारे केस का पता है। शायद टेलिफ़ोन पर आप लोगों की पहले भी बात हो चुकी है।"

कर्नल गिल ने टेलिफ़ोन कैप्टन इलावत की ओर बढ़ा दिया—"तुम्हारा मित्र मेजर हरीश है।"

"गुड आफ़्टरनून सर ! एक्टिंग कैप्टन इलावत स्पीकिंग।"

"गुड आफ़्टरनून इलावत ! आई एम सॉरी। मैंने तुम्हारे साथ बहुत सख्त बरताव किया है। तुम्हारा प्वाइण्ट ठीक था। मेरा लेटर पढ़ लिया होगा। सजा कन्फ़र्म करके मुझे बता देना।" मेजर हरीश ने बहुत मैत्रीपूर्ण स्वर में कहा।

"सर, आपने यह कहकर मेरी चिन्ता दूर कर दी है। मुझे तो बहुत फ़िक्र हो गयी थी कि मैं अपनी ड्रिल और रूल्ज़-रेगूलेशन भूल गया हूँ।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"नो इलावत, तुम बिलकुल ठीक कह रहे थे। ग़लती मेरी थी। मुझे अफ़सोस है, मैंने तुम्हारे साथ बहुत सख्त बरताव किया।"

"सर, ग़लती मेरी थी। मैं अकारण ही आपके साथ बहस में उलझ गया।" कैप्टन इलावत ने बहुत सभ्य लहजे में कहा।

"इलावत, मैं तुम्हारी निडरता और आत्मविश्वास पर बहुत खुश हूँ। आई

लाइक स्ट्रेट फ़ॉरवर्ड ऑफ़िसर। ओके इलावत, मुझे माफ़ कर देना प्लीज़। मैं तुम्हारे साथ बहुत हार्श था।"

"प्लीज़ सर, अब छोड़िए इस बात को। आप मुझे क्यों लज्जित कर रहे हैं।"

"कभी ब्रिगेड-हेडक्वार्टर आओ तो जरूर मिलना। बाई-बाई।"

"श्योर सर, बाई-बाई।" कैप्टन इलावत ने रिसीवर रख दिया तो कर्नल गिल मुसकराता हुआ बोला, "अब खुश हो?"

"सर, मेरा उनसे कोई निजी झगड़ा नहीं था। यह तो उसूल की लड़ाई थी।" कैप्टन इलावत बोला, "सर, आप मुझे किसी कम्पनी में पोस्ट कर दें।"

"क्यों? अब तो मामला खत्म हो गया।"

"सर, वह तो बहाना बन गया था। मुझे स्टॉफ़ जॉब से फ़ील्ड-ड्यूटी ज्यादा पसन्द है। मुझे आप्रेशनल बंकर में बैठने की बजाय बैटल में रहना ज्यादा अच्छा लगता है।" कैप्टन इलावत ने नजरें झुका लीं—"सर, मेरी कुछ अपनी समस्याएँ भी हैं। मुझे अपना एक प्लेज पूरा करना है।"

"क्या?"

"सर, माफ़ करना, मैं अभी नहीं बता सकता। समय आने पर सब बता दूँगा।"

कर्नल गिल ने प्यार-भरी नजरों से कैप्टन इलावत को ओर देखते हुए कहा, "प्रॉमिज़ नहीं करता, कोशिश करूँगा।"

"थैंक्यू वेरी मच सर।" कहकर इलावत दूसरे बंकर में चला गया।

ग्यारह

कर्नल गिल और मेजर यादव कान्फ़्रेन्स के लिए ब्रिगेड-हेडक्वार्टर गये हुए थे। कैप्टन इलावत कम्पनी-कमाण्डरों से प्राप्त सिचुएशन रिपोर्ट पढ़ने में व्यस्त था। कई दिनों से पूरी नींद न ले सकने के कारण उसे थकावट महसूस हो रही थी और वह बार-बार ऊँघ जाता था। नींद को दूर रखने के लिए वह पाँच-दस मिनट के बाद ठण्डे पानी के दो घूँट पी लेता।

कैप्टन इलावत ने रिपोर्ट फ़ाइल में रखकर एक ओर खिसका दी और कुरसी की पीठ पर झुकता हुआ सोचने लगा कि वह लंच के बाद सो जायेगा और अगले दिन ही उठेगा। टेलिफ़ोन की घण्टी अचानक बज उठी और वह उसकी ओर देखता हुआ सोचने लगा कि शायद अपनेआप बन्द हो जाये और वह उसे सुनने की कोफ़्त से बच

जाये। लेकिन घण्टी निरन्तर बज रही थी। वह अलसाया-सा कुरसी से आगे झुक गया और रिसीवर उठाकर भारी आवाज़ में बोला, "कैप्टन इलावत स्पीकिंग।"

"गुड मार्निंग सर, लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल बोल रहा हूँ।"

"हाँ दर्शन, कैसे हो ?"

"फ़ाइन, थैंक्यू सर ! सर, मेजर ढिल्लों का एक्सीडेण्ट हो गया है।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने एक क्षण रुककर घबरायी हुई आवाज़ में कहा।

"माई गुडनेस ! वे ठीक हैं न ?"

"सर, दायीं टाँग में घुटने के पास फ़्रेक्चर मालूम होता है। वे टाँग सीधी नहीं कर सकते। बहुत तकलीफ़ है। हम उन्हें और ड्राइवर निहालचन्द को ए. डी. एस. (एडवान्स ड्रेसिंग स्टेशन) में ले जा रहे हैं।"

"वेरी सैड। निहालचन्द को कहाँ चोट लगी है ?" कैप्टन इलावत ने दुखद स्वर में पूछा।

"सर, सिर में। वह बेहोश पड़ा है।"

"माई गुडनेस ! एक्सीडेण्ट कैसे हो गया ?"

"सर, जीप फिसलकर उलट गयी।"

"अच्छा, तुम ए. डी. एस. फ़ौरन पहुँचो। मैं भी आ रहा हूँ।" कैप्टन इलावत ने तेज़ स्वर में कहा।

उसने पानी का गिलास खाली कर दिया। कील पर टँगी टोपी उतारकर पहन ली और सूबेदार मेजर उदयचन्द को बुलाकर कहा, "साब, मेजर ढिल्लों साब का एक्सीडेण्ट हो गया है। मैं ए. डी. एस. जा रहा हूँ। ब्रिगेड-हेडक्वार्टर में ड्यूटी-ऑफ़िसर को बता देना। वह सी. ओ. साहब को इन्फ़ॉर्म कर देगा। इस फ़ाइल में सिच्यूएशन रिपोर्ट्‌स पड़ी है।" कैप्टन इलावत ने एक ही साँस में कह दिया।

कोई बीस मिनट में कैप्टन इलावत ए. डी. एस. में पहुँच गया। चार जवान मेजर ढिल्लों और ड्राइवर निहालचन्द को स्ट्रेचरों पर डालकर फ़र्स्ट एड बंकर में ले जा रहे थे। वह भी उनके पीछे-पीछे चला गया।

कैप्टन इलावत को देखकर लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल सावधान हो गया—"गुड मार्निंग सर !"

"गुड आफ़्टरनून दर्शन, कब पहुँचे ?"

"अभी सर, कोई पाँच मिनट पहले। आप बहुत जल्दी आ गये। सर, आई एम सॉरी। मुझे टाइम का आइडिया नहीं रहा। हम आमतौर पर लंच के बाद ही गुड आफ़्टरनून कहते हैं ? आज हमने लंच नहीं किया।"

"नेवर माइण्ड।" कैप्टन इलावत ने कहा और स्ट्रेचरों के पीछे-पीछे बंकर में उतर गया।

मेजर ढिल्लों को एक मेज़ पर लिटा दिया गया। उसकी आँखें बन्द, चेहरा

पीला, होंठ सख्ती से भिंचे हुए और माथे की लकीरें खिंची हुई थीं। कैप्टन इलावत उसका हाथ अपने हाथ में लेता हुआ नम्र और धीमे स्वर में बोला, "मेजर ढिल्लों सर !"

मेजर ढिल्लों ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं और कैप्टन इलावत को देखकर मुसकराने की कोशिश की लेकिन उसकी मुसकराहट पीड़ा की लहर में बदल गयी और वह बहुत कमज़ोर आवाज़ में बोला, "निहालचन्द का क्या हाल है ?"

"वह भी ठीक है।" कैप्टन इलावत ने उसे तसल्ली देते हुए कहा।

"इलावत, यह क्या हो गया है ? मेरे तो सब अरमान धरे के धरे रह गये। आई एम आउट ऑफ़ लाइफ़।" मेजर ढिल्लों ने गरदन एक ओर झुकाकर आँखें बन्द कर लीं। आँसुओं की दो पतली लकीरें पलकों के कोनों से कानों की ओर फैल गयीं।

"सर, टेक इट ईज़ी।" कैप्टन इलावत मेजर ढिल्लों का कन्धा थपथपाता हुआ बोला।

इतनी देर में ए. डी. एस. का ऑफ़िसर-कमाण्डिंग मेजर डॉक्टर पाल चौधरी अपने सहायक डॉक्टर लेफ़्टिनेण्ट डॉ. प्रकाश के साथ बंकर में आ गया। मेजर पाल चौधरी चोट के बारे में संक्षिप्त जानकारी पाकर मेजर ढिल्लों के पास आ गया और लेफ़्टिनेण्ट प्रकाश निहालचन्द को देखने लगा।

"कहाँ चोट लगी है ?" मेजर पाल चौधरी ने ब्लड-प्रेशर चेक करते हुए मेजर ढिल्लों से पूछा।

मेजर ढिल्लों ने कोई उत्तर नहीं दिया। मेजर पाल चौधरी उसके बाज़ू से पट्टी खोलता हुआ बोला, "आप बहुत जल्दी ठीक हो जायेंगे।"

"डॉक्टर, आप पहले मेरे ड्राइवर निहालचन्द को देखें।" मेजर ढिल्लो ने दर्द के एहसास को दबाने की कोशिश करते हुए कहा।

"चिन्ता मत करें, उसका भी इलाज हो रहा है। आप बतायें, आपको कहाँ चोट लगी है ?" मेजर पाल चौधरी ने नम्र स्वर में कहा।

मेजर ढिल्लों ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया तो लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल मेजर ढिल्लों की दायीं टाँग की ओर इशारा करता हुआ सरगोशी में बोला, "सर, घुटने के पास, शायद फ़्रैक्चर है।"

मेजर पाल चौधरी ने दो-तीन बार सिर हिलाया और नर्सिंग आरडर्ली को बुलाकर उसके कान में बोला, "मार्फ़िया के इंजेक्शन तैयार करो।"

मेजर पाल चौधरी मेजर ढिल्लो के पाँव की ओर आ खड़ा हुआ और उसकी दायीं टाँग के टखने पर हाथ रखता हुआ बोला, "टाँग को सीधा करने की कोशिश करो।"

"नहीं होती।" मेजर ढिल्लों ने पीड़ा-भरी आवाज़ में कहा और फिर सिर उठाकर निहालचन्द की ओर देखने की कोशिश करते हुए पूछा, "निहालचन्द कहाँ है ?

उसका क्या हाल है ?"

निहालचन्द टेवल पर वेहोश पड़ा धीमी आवाज़ में कराह रहा था। जब उसे होश आता तो वह एक ही वात पूछता, "मेजर साव ठीक हैं ?"

निहालचन्द को फिर होश आया तो वह कराहता हुआ वोला, "मेजर साव ठीक हैं ?"

"हाँ निहालचन्द, मैं ठीक हूँ।" मेजर ढिल्लों ने उठने की विफल कोशिश करते हुए कहा।

निहालचन्द अपना दायाँ हाथ ऊपर उठाकर हवा में टटोलने लगा जैसे मेजर ढिल्लों को छूकर अपनी तसल्ली करना चाहता हो।

मेजर पाल चौधरी ने निहालचन्द को मार्फ़िया का टीका लगा दिया और उसकी ओर झुकता हुआ वोला, "अभी पाँच मिनट में आराम आ जायेगा।"

फिर उसने मेजर ढिल्लों को भी मार्फ़िया का टीका लगा दिया और टाँग पर स्लिंग वाँध दी। मेजर ढिल्लों कैप्टन इलावत का हाथ अपने हाथ में लेता हुआ वोला, "इलावत, आई एम आउट ऑफ़ इट....तुम मेरी कम्पनी में चले जाओ। अगर हो सका तो मैं भी ओल्डमैन से वात करूँगा। मुझे शायद अव नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करनी पड़ेगी।" मेजर ढिल्लों का गला रुँध गया।

"सर, आप रिलैक्स करें। जितना ज़्यादा रिलैक्स करेंगे उतनी जल्दी दवाई का असर होगा।"

"डॉक्टर, एक सेकेण्ड।" मेजर ढिल्लों ने एक उँगली उठाते हुए कहा और फिर कैप्टन इलावत की ओर देखता हुआ वोला, "इलावत, गॉड वी विद आल ऑफ़ यू। मैं हमेशा यही प्रार्थना करूँगा कि हम जल्दी मिलें और वन पीस मिलें।"

"सर, हम वहुत जल्दी मिलेंगे। आप कुछ दिनों में ही ठीक हो जायेंगे।" मेजर ढिल्लों पर वेहोशी छाने लगी। उसके होंठ हिले लेकिन उसने क्या कहा किसी की समझ में नहीं आया।

लेफ़्टिनेण्ट प्रकाश ने कैप्टन इलावत और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की मौजूदगी में मेजर ढिल्लों और ड्राइवर निहालचन्द की जेवों की तलाशी ली और सब चीज़ें फ़ील्ड मेडिकल रिपोर्ट में दर्ज कर दीं।

मेजर ढिल्लों की जेव से दो पत्र निकले। एक उसके नाम वाहर से आया था और दूसरा उसने लिखा था। कैप्टन इलावत ने पत्र पर ऐड्रेस पढ़ा तो एकदम उदास हो गया। वह पत्र हाथ में लेता हुआ वोला, "सर, यह लेटर पोस्ट होना है। अगर आप इजाजत दें तो मैं पोस्ट कर दूँगा।"

मेजर पाल चौधरी कैप्टन इलावत की ओर देखता हुआ वोला, "यू नो। नार्मली ऐसा होता नहीं।" मेजर पाल चौधरी ने वहुत नरमी से इनकार करते हुए कहा, "एक और वात भी है। मेजर ढिल्लों नयी सिचुएशन में शायद यह लेटर पोस्ट

ही न करना चाहूँ।"

"हो सकता है।" कैप्टन इलावत गहरे सोच में डूब गया।

कुछ मिनटों में ही मेजर ढिल्लों और ड्राइवर निहालचन्द के स्ट्रेचर एम्बुलेन्स में रख दिये गये। एम्बुलेन्स कच्चे रास्ते पर हिचकोले खाती हुई कोई एक फर्लांग दूर पक्की सड़क की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगी। कैप्टन इलावत बहुत उदास स्वर में बुदबुदाया—"एक सेटल्ड लाइफ़ अनसेटल हो गयी, पुअर चेप!" उसने मेजर पाल चौधरी से इजाज़त ली और गरदन झुकाये अपनी जीप की ओर बढ़ गया।

कैप्टन इलावत जब अपने हेडक्वार्टर वापस पहुँचा तो बहुत उदास था। वह ऑप्रेशनल बंकर में घुसते ही कुरसी में ढेर हो गया। मेजर यादव ने मेजर ढिल्लों का हाल पूछा तो वह वहीं से बोला, "सर, वेरी बैड! मुझे उनकी शक्ल याद आती है तो रोने को जी चाहता है।" कैप्टन इलावत का गला रुँध गया और वह उठकर मेजर यादव के पास आ गया।

"पुअर चेप!" मेजर यादव ने अफ़सोस-भरी आवाज़ में कहा और फिर सिर को झटकता हुआ बोला, "इट इज आल इन दि गेम। मैंने ए. डी. एस. से टेलिफ़ोन पर पूछा था, फ्रैक्चर है।"

"येस्सर, उनकी पलकों से ढलकती हुई आँसुओं की धार अभी तक मेरी आँखों के सामने घूम रही है। यह कहकर वह रो पड़े कि, उसे जिन्दगी शायद नये सिरे से शुरू करनी पड़ेगी।" कहते-कहते कैप्टन इलावत की आँखों में भी आँसू आ गये।

"सी. ओ. साहब ने भी डॉक्टर पाल चौधरी से बात की थी। शायद एक-दो दिनों में वे उसे एम. एच. (मिलिट्री हॉस्पीटल) में देखने जायेंगे।"

"सर, ज़रूर जाना चाहिए। उन्हें बहुत खुशी होगी। ही वाज़ फ़ीलिंग वेरी बैड। लेट डाउन बाई फ़ेट।"

मेजर यादव ने कैप्टन के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "इलावत, टेक इट ईज़ी।" और फिर उसके हाथ में एक काग़ज़ थमाता हुआ बोला, "मुबारकबाद, तुम अपना चार्ज कैप्टन मिश्रा को दे रहे हो।"

कैप्टन इलावत ने ऑर्डर पढ़ा और उसे जेब में रख लिया। मेजर यादव उसे खामोश देखकर बोला, "आज शाम के पाँच बजे तक तुम्हें चार्ली कम्पनी की कमाण्ड सँभालनी है, कोई दो घण्टे बाद।"

"येस्सर।" कैप्टन इलावत ने उदास स्वर में कहा।

मेजर यादव ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए पूछा, "इलावत, तुम्हे कम्पनी की कमान मिल गयी है। क्या तुम खुश नही हो?"

"नो सर, इस तरह नहीं। मुझे मेजर ढिल्लों का सेकण्ड-इन-कमाण्ड बनकर ज्यादा खुशी होती।" कैप्टन इलावत ने दुखद आवाज़ में कहा।

तभी कर्नल गिल ने बंकर में प्रवेश किया तो वे दोनो उठकर खड़े हो गये।

"गुड आफ़्टरनून सर।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"गुड आफ़्टरनून। कब वापस आये ?"

"सर, दस मिनट हुए हैं।"

"मुझे मेजर ढिल्लों के बारे में बहुत अफ़सोस है। बहुत अच्छा ऑफ़िसर लेकिन क़िस्मत का खोटा।"

"सर, ही वाज फ़ीलिंग वेरी बैड, ही वाज इन टीयर्ज़।"

"नैचुरली। लड़े बिना एक्शन से बाहर हो जाना बहुत बड़ा दुखान्त है। इट इज आलमोस्ट किलिंग।" कर्नल गिल ने कहा और कैप्टन इलावत को सिर से पाँव तक देखता हुआ बोला, "तुम आज से ही मेजर ढिल्लों की जगह ले रहे हो। यादव ने ऑर्डर दे दिया होगा। कंग्रेचुलेशंज़।" कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"थैंक्यू सर !"

"तुम्हें पैक करने में कितना समय लगेगा ?"

"सर, दस मिनट।"

"चार्ज हैण्ड-ओवर करने में ?"

"पन्द्रह मिनट। मेरा फ़ाइल वर्क पूरा है।"

"गुड।" कर्नल गिल ने कहा और एक बार फिर उसे सिर से पाँव तक देखता हुआ गम्भीर स्वर में बोला, "इलावत, तुम्हें ज़्यादा कहने और समझाने की ज़रूरत नहीं है। तुम्हारा पहला और मोस्ट इम्पॉरटेण्ट काम अपने जवानों का विश्वास हासिल करना है। यह हो गया तो समझो कि तुमसे अच्छा कमाण्डर नहीं हो सकता।"

"येस्सर।" कैप्टन इलावत बहुत ध्यान से सुन रहा था। कर्नल गिल ने उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा, "एक बात और याद रखना, तुम हर काम में अपनी मिसाल क़ायम करो। अपने जवानों में यह स्पिरिट पैदा करो कि वे कठिन से कठिन काम के लिए भी अपने-आपको वालन्टीयर करें। बस, मैं यही कहना चाहता था। दो-तीन दिनों में तुम्हारे इलाक़े में आऊँगा।"

"सर, आपने मुझमें जो विश्वास रखा है उसपर पूरा उतरने की मैं हर मुमकिन कोशिश करूँगा।" कैप्टन इलावत ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कैप्टन मिश्रा आनेवाला है। इतनी देर में तुम अपना सामान पैक कर लो।"

"येस्सर।" कहकर कैप्टन इलावत अपने बंकर की ओर बढ़ गया।

बारह

कैप्टन इलावत साढ़े चार बजे ही चार्ली कम्पनी में पहुँच गया। लेफ़्टिनेण्ट सिंह, लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल और सूबेदार ओमप्रकाश ने उसका स्वागत किया।

"साब, आप भले समय में कम्पनी-कमाण्डर बनकर आते तो आपका शानदार स्वागत करते। सेरिमोनियल परेड होती, सैनिक दरबार लगता और बड़ा खाना होता। अब तो जंगल में बैठे है, कुछ नही कर सकते।" सूबेदार ओमप्रकाश ने निराश स्वर में कहा।

"साहब, यह क्या कम स्वागत है ? आप सब मुझे जिस आदर और प्यार से मिले हैं, वह न तो परेड में हो सकता है और न ही बड़े खाने में।" कैप्टन इलावत ने हँसते हुए कहा, "यों तो इस कम्पनी के सब जे. सी. ओ. साहबान को मैं जानता हूँ लेकिन फिर भी मैं उनसे मिलना चाहूँगा।"

"सर, जे. सी. ओ. साहबान से आपकी मुलाक़ात का इन्तज़ाम कर दिया है।" सूबेदार ओमप्रकाश ने कहा।

"वेरी गुड ! पहले उनसे मिलाप कर लें। बाक़ी काम बाद में देखेंगे।"

लेफ्टिनेण्ट सिंह और सूबेदार ओमप्रकाश के साथ कैप्टन इलावत सरकण्डों में घिरी साफ़-सुथरी जगह में आ गया जहाँ कम्पनी के जे. सी. ओ. और सीनियर एन सी. ओ. मौजूद थे। कैप्टन इलावत के पहुँचने पर वे अपनी-अपनी सीनियारिटी के हिसाब से क़तार में खड़े हो गये। सूबेदार ओमप्रकाश कैप्टन इलावत को बारी-बारी उनका परिचय देने लगा—"ये 'ए' प्लाटून के नायब सूबेदार सरवनलाल हैं।"

"राम-राम साब।" नायब सूबेदार सरवनलाल ने गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा।

"साब, राम-राम। आपके उस मनीआर्डर का क्या बना जो गुम हो गया था ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"साब, मिल गया है। पाँच दिन पहले घर से लेटर आया था।"

"परमात्मा का शुक्र है, दो सौ रुपये थे। बड़ी हक़-हलाल की कमाई है, आपकी प्लाटून कहाँ है ?"

"सर, आर वन एरिया में।"

"नायब सूबेदार सरवनलाल लेफ़्टिनेण्ट जिल साहब के सेकण्ड-इन-कमाण्ड है।" सूबेदार ओमप्रकाश ने बताया।

"लेफ़्टिनेण्ट जिल साहब कहाँ हैं, उन्हें देखा नहीं।" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"सर, उन्हें भी आना था, लेकिन ओ. पी. कैप्टन रावत साहब आ गये थे, उनके साथ आगे गये हैं।" नायब सूबेदार सरवनलाल ने बताया।

कैप्टन इलावत आगे बढ़ गया।

" 'बी' प्लाटून के नायब सूबेदार दयाराम। लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल के सेकण्ड-इन-कमाण्ड।" सूबेदार ओमप्रकाश ने आगे कहा।

"साब, आपकी माताजी का अब क्या हाल है?" कैप्टन इलावत ने हाथ मिलाते हुए पूछा।

"मेहरबानी है साब, पहले से बहुत ठीक हैं।"

" 'सी' कम्पनी के नायब सूबेदार रामसिंह। लेफ़्टिनेण्ट सिंह साब के सेकण्ड-इन-कमाण्ड।"

"साब, क्या आपके बेटे को सैनिक स्कूल में एडमिशन मिल गया था?"

"नहीं साब, नम्बर कुछ कम थे।"

"अभी चान्स है, अगले साल फिर कोशिश करेंगे। उसे लेटर लिखना कि मेहनत करे।"

जे. सी. ओ. साहबान से परिचय के पश्चात् कैप्टन इलावत सीनियर एन. सी. ओज़ से मिला। परिचय के बाद चाय आयी। भाँति-भाँति के गिलास और मग थे। सूबेदार ओमप्रकाश क्षमा माँगता हुआ बोला, "सर, आप पहली बार आये हैं। हम आपकी कोई सेवा नहीं कर पा रहे हैं। केवल चाय और पकौड़े ही पेश कर सके हैं। यों तो सेवा में बहुत कमी रह गयी है लेकिन हमारे मन में आपके लिए जो आदर-इज्जत है, मान और प्यार है उसे बयान नहीं कर सकते।" भावुकता से सूबेदार ओमप्रकाश का गला रुँध गया।

"साब, हम सब एक ही परिवार हैं। आप मेरे हैं, मैं आपका हूँ। हम सब एक दूसरे के हैं।" कैप्टन इलावत भी भावुक हो गया और हाथ में मग लिये वह छोटे-छोटे ग्रुपों में बँटे जे. सी. ओ. और एन. सी. ओ. साहबान के साथ बारी-बारी गपशप करने लगा और उनकी समस्याओं के बारे में पूछता रहा।

चाय के बाद कैप्टन इलावत अपने नये हेडक्वार्टर में वापस आ गया। उसने लेफ़्टिनेण्ट सिंह से पूछा, "मेरा बंकर कहाँ है?"

"सर, नजदीक ही है, मैं दिखाता हूँ।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह और कैप्टन इलावत एक वृक्ष के नीचे घास-फूस में ढके बंकर में उतर गये।

"मेजर ढिल्लो कहाँ रहते थे?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"सर, इसी बंकर में। उनका सामान एक ओर रख दिया है।"

"हमने एक दिन यहाँ इकट्ठे रहने का प्रोग्राम बनाया था लेकिन ईश्वर को मंजूर नहीं था।" कैप्टन इलावत ने फ़ील्ड कुरसी पर बैठते हुए बहुत उदासीन स्वर

में कहा।

कुछ क्षणों के लिए वे दोनों मेजर ढिल्लों के बारे में सोचते रहे। फिर कैप्टन इलावत लेफ्टिनेण्ट सिंह की ओर देखता हुआ बोला, "आपका बंकर कहाँ है ?"

"सर, बिलकुल पास ही है। दर्शन का बंकर थोड़ी दूर है।"

"मेस का क्या इन्तजाम है ?"

"सर, मेस तो नाममात्र का ही है। लंगर से खाना आता है। जरूरत हो तो सप्लीमेण्ट कर लेते हैं।"

"वेरी गुड, पेट्रोल जाती है ?"

"येस्सर, दिन में बी. एस. एफ़. गश्त करती है, रात में हम पेट्रोल पार्टियाँ भेजते हैं।"

"बी. एस. एफ. की पोस्ट कितनी दूर है ?"

"सर, आर वन यहाँ से कोई दो हजार गज पूर्व में है। आर टू कोई छह सौ गज और आर थ्री कोई पन्द्रह सौ गज पश्चिम में है।"

"स्ट्रेंथ क्या है ?"

"सर, ज्यादा नही है, तीनों पोस्टों पर एक प्लाटून। ये पोस्टें एसेंशली ऑब्जर्वेशन पोस्टें हैं।"

"दुश्मन की क्या-क्या एक्टिविटी देखने में आयी है ?"

"कोई खास नही, सर ?"

"दुश्मन के एरिया से पशु चराई के लिए आते हैं ?"

"येस्सर।"

"कितने ?"

"सर, ठीक से बताना मुश्किल है। वे चार-पाँच प्वाइण्ट पर नदी क्रॉस करते हैं।"

"मवेशियों के साथ कितने आदमी होते हैं ?"

"सर, ठीक से बताना कठिन है।"

"उनकी उम्र क्या होती है ? उनकी चाल-ढाल मामूली चरवाहों जैसी है या कुछ अलग है ?"

"सर, कभी नोट नही किया।"

"ऑब्जर्वेशन टावर पर हमारी ओर से कौन है ?"

"सर, लेफ्टिनेण्ट नायर और नायब सूबेदार प्रतापचन्द ड्यूटी देते हैं। एक एन. सी. ओ. और दो जवान हैं।"

"आज रात को हम भी पेट्रोल पर जायेंगे। एक सिरे से दूसरे सिरे तक। आप और सूबेदार साब और कुछ जवान साथ चलेंगे।" कैप्टन इलावत घड़ी देखता हुआ बोला, "अभी पौने छह बजे हैं। आर-टू पर चलते हैं। वहाँ बी. एस. एफ की क्या

स्ट्रेंथ है ?"

"सर, एक सेक्शन से ज़्यादा नहीं। हेड कांस्टेवल दुर्लभसिंह सेक्शन-कमाण्डर हैं।"

"उन्हें इन्फ़ॉर्म कर दो। अगर हो सके तो वी. एस. एफ़. के कम्पनी-कमाण्डर बचिन्तसिंह साहब को भी बुला लें।"

कैप्टन इलावत, लेफ़्टिनेण्ट सिंह और सूबेदार ओमप्रकाश बंकर से बाहर निकले तो सूर्यास्त हो रहा था। पक्षी शोर मचाते हुए अपने घोंसलों को वापस जा रहे थे। सूर्य की अन्तिम किरणों ने नदी के पानी में सोना घोल रखा था। ऑब्ज़र्वेशन टावर डूबते सूर्य की रोशनी में अपनी वास्तविक लम्बाई से कहीं अधिक ऊँचा नज़र आ रहा था।

"बहुत शान्त जगह है।" कैप्टन इलावत ने बन्ध पर चढ़ते हुए कहा।

"सर, थोड़ी देर में बहुत रौनक़ हो जायेगी। अँधेरा गहरा हो जाने के बाद गीदड़ बोलना शुरू कर देते हैं। उनका सेशन रात के बारह बजे तक चलता है।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"ओह आई सी।" कैप्टन इलावत मुसकरा दिया। चलते-चलते वह अचानक रुक गया और जिधर सूर्यास्त हुआ था उधर देखता हुआ बोला, "धूल क्यों उड़ रही है उधर ?"

"सर, दुश्मन के एरिया में चराई के बाद मवेशी वापस जा रहे हैं। इस एरिया में नदी दुश्मन के इलाक़े में है और वे नदी के पार आते हैं।"

"यह शोर कैसा है ? जैसे कोई गाड़ी जा रही हो।"

"येस्सर, उधर पक्की सड़क है। उसपर सिविल ट्रैफ़िक चलता है।"

"क्या आर्मी-ट्रैफ़िक नहीं हो सकता ?"

"सर, हो सकता है।"

"कल से इस शोर और धूल को ऑब्ज़र्व करना है। लेफ़्टिनेण्ट नायर से बोल देना।"

जब वे तीनों वी. एस. एफ़. पोस्ट के निकट पहुँचे तो अँधेरा कुछ गहरा हो चुका था। गीदड़ों के चीखने की इक्का-दुक्का आवाज़ें आने लगी थीं। वे बन्ध से उतरकर नशेब में आ गये और कोई चार सौ गज़ जाकर फिर दूसरे बन्ध पर चढ़ने लगे जो आर टू के चारों ओर घूम गया था। बन्ध पर सन्तरी पोस्ट थी। सन्तरी ने उन्हें सैल्यूट दिया तो कैप्टन इलावत ने पूछा, "ज्वान, क्या नाम है तुम्हारा ?"

"साब, कांस्टेवल आत्मासिंह।"

"आत्मासिंह, तुमने हमें रोका क्यों नहीं ? पास-वर्ड क्यों नहीं पूछा ?"

"साब, मुझे पता था, आप आ रहे हैं।"

"अगर हमारी जगह दुश्मन आ जाता तो फिर क्या करता ?"

"सर, फायर खोलता। सलामी देने की बजाय भून डालता।"

"वेरी गुड।" कहकर कैप्टन इलावत लेफ़्टिनेण्ट सिंह और सूबेदार ओमप्रकाश के साथ आगे बढ गया। उन्हें देखकर असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट बचिन्तसिंह और सेक्शन कमाण्डर दुर्लभसिंह आ गये।

"जय हिन्द साब।" बचिन्तसिंह ने आगे बढ़कर कैप्टन इलावत और उसके साथियों से हाथ मिलाते हुए कहा।

"साब, मुझे अभी पता चला कि मेजर ढिल्लों साब की जगह आप आये हैं। मेजर ढिल्लों साब का हाल क्या है?"

"फ्रैक्चर है। हॉस्पिटल में है।"

"बहुत अच्छे अफसर हैं। जब कभी इधर आते मुझसे जरूर मिलकर जाते। सवेरे जब जा रहे थे तो मुझे रास्ते में मिले थे। आधे घण्टे के बाद पता चला कि उनका एक्सीडेण्ट हो गया है। जिन्दगी का क्या भरोसा है? पल में है, पल में नहीं है।" बचिन्तसिंह ने दार्शनिक भाव से कहा।

एक सिपाही थाल में चाय के गिलास रखे आ गया। बचिन्तसिंह एक गिलास कैप्टन इलावत की ओर बढ़ाता हुआ बोला, "साब, चाय लीजिए।"

"बचिन्तसिंह साहब, चाय की क्यों तकलीफ की? चाय पीकर ही आये थे?"

"साब, हम तो जंगल में बैठे हैं। आपकी कोई सेवा नहीं कर सकते। आप पहली बार आये हैं। चाय जरूर पीजिए।" बचिन्तसिंह ने आग्रह किया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" कैप्टन इलावत ने चाय का गिलास पकड़ते हुए कहा।

चाय पीने के बाद वे मोर्चों की ओर चले गये। वहाँ से सीधे नदी कोई सौ गज़ दूर थी। नदी के पार एक सफ़ेद बिल्डिंग नज़र आ रही थी।

"अच्छा, यह पुराना रेलवे-स्टेशन है।"

"जी साब। इसमें अब दुश्मन ने पोस्ट बना रखी है। कुछ दिन से वहाँ पर काफ़ी सरगर्मी है।" बचिन्तसिंह ने बताया।

"मेजर ढिल्लों ने रिपोर्ट भेजी थी। कितनी स्ट्रेंथ होगी दुश्मन की वहाँ?"

"क्यों दुर्लभसिंह?" बचिन्तसिंह ने पूछा।

"साब, ठीक से बताना मुश्किल है। कभी-कभी वहाँ बड़ी गाड़ी भी आती है।"

"आपका तो एक सेक्शन है यहाँ?"

"जी साब।"

कैप्टन इलावत एक मोरचे के पास चला गया—"बचिन्तसिंह साहब, जवानों का ट्रेनिंग और मॉरल कैसा है?"

"साहब, ठीक ही है। ज्यादा नफ़री नहीं है। कोर्ट दी मार्च का भरती है तो

कोई एक साल का। एक सिपाही को ट्रेनिंग किये सिर्फ़ तीन हफ़्ते हुए हैं और फिर है भी मदरासी। अफ़सर पोस्टिंग करते वक़्त कुछ नहीं सोचते।" बचिन्तसिंह ने खिन्न स्वर में कहा।

कैप्टन इलावत ने एक मोरचे में झुकते हुए पूछा, "जवान, क्या नाम है तुम्हारा ?"

"सर, प्रभाकरण पिल्ले।"

"कहाँ का रहनेवाला है ?"

"सर, केरल का।"

"साव, इसे आये सिर्फ़ तीन हफ़्ते हुए हैं। बिलकुल नया रंगरूट है।" बचिन्तसिंह ने कहा।

"दुश्मन आयेगा तो क्या करेगा ?"

"सर, गोली चलायेगा।" प्रभाकरण पिल्ले ने मुस्तैदी से पोजीशन लेते हुए कहा।

"अगर एमूनेशन खत्म हो गया तो फिर क्या करेगा ?"

"पीछे भागेगा, बन्दूक़ फेंककर, जूता छोड़कर ?" बचिन्तसिंह ने खुलकर हँसते हुए कहा।

"नहीं साव, हम भिनट (ब्योनेट) चार्ज करेगा।" पिल्ले ने दृढ़ स्वर में कहा।

"भिनट चार्ज के लिए ताक़त चाहिए, वह कहाँ से लायेगा ?" बचिन्तसिंह ने उसका मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा।

"सर, टाइम आने दो, आपको ज़रूर बतायेगा कि पिल्ले कैसे लड़ता है।" प्रभाकरण पिल्ले ने दृढ़ स्वर में कहा।

"वेरी गुड ! दैट शुड बी दि स्पिरिट। पिल्ले, कीप इट अप। तुम डैम गुड जवान बनोगे।" कैप्टन इलावत ने उसका कन्धा थपथपाते हुए कहा। और फिर वह बचिन्तसिंह की ओर झुक गया और धीमे स्वर में बोला, "दुश्मन अपनी ओर नदी तक ज़रूर पेट्रोल करता होगा। इसका ध्यान रखना है।"

"जी साव !"

"आपने पोस्ट और नदी के बीच का एरिया माइन किया है या नहीं ?"

"नहीं साव, मेजर ढिल्लों से बात हुई थी। साव, एक बात है। हमारे जवान दरिया पर नहाने-धोने जाते हैं।"

"इन्हें मनाही कर दें। कल रात को एरिया में बारूदी सुरंगे बिछा दी जायेंगी।" कैप्टन इलावत का लहजा सख्त पाकर बचिन्तसिंह गम्भीर हो गया।

"बचिन्तसिंह साव, यहाँ आस-पास नदी में पानी कितना गहरा है ?"

"क्यों दुर्लभसिंह, कुछ पता है ?" बचिन्तसिंह ने पूछा।

"साव, दरिया कभी पार नहीं किया, जहाँ हम नहाते हैं उस किनारे पर

पानी कमर तक है।"

"चलो कोई बात नहीं।" कैप्टन इलावत ने कहा और बचिन्तसिंह की ओर मुड़ता हुआ बोला, "बचिन्तसिंह साब, बहुत-बहुत धन्यवाद। अब तो हर रोज आपसे मिलाप होगा। जय हिन्द।"

"जय हिन्द साब।" कहकर बचिन्तसिंह साथ ही चल पड़ा।

कुछ क़दम वे खामोशी से चलते रहे। आर टू के बन्ध के ऊपर आकर बचिन्तसिंह नम्र स्वर में बोला, "साब, आपसे एक अर्ज करनी है। आप जानते हैं कि आर्मी के हों या बी. एस. एफ़. के, सब अफ़सर इस पोस्ट पर जरूर आते हैं। सब अफ़सरान को चाय पेश न करें तो बुरा लगता है। राशन तो नफ़री के हिसाब से ही मिलता है। हमारा चीनी का राशन बहुत कम पड़ता है। अगर आप चीनी का बन्दोबस्त करा दें तो मेहरबानी होगी।"

"क्यों साहब, बचिन्तसिंह साहब की मदद करना चाहिए।" कैप्टन इलावत ने सूबेदार ओमप्रकाश से कहा।

"साब, आपका हुक्म होना चाहिए। मैं बोरी उठवा दूँगा।" सूबेदार ओमप्रकाश ने कहा।

"साब, राशन के मालिक आप हैं। आप देंगे तो मुझे क्या एतराज़ हो सकता है। क्यों सिंह?" कैप्टन इलावत ने अपनी बात की पुष्टि के लिए लेफ़्टिनेण्ट सिंह से पूछा।

"बचिन्तसिंह साब, आप कल दस बजे सूबेदार साहब के पास अपना आदमी भेज दें, कुछ न कुछ जरूर हो जायेगा।"

"साब, आपकी मेहरबानी है।" बचिन्तसिंह खुश हो गया।

"साहब, मेहरबानी कैसी?" हम तो एक फ़ैमिली की तरह हैं। कल को हमें किसी चीज की जरूरत पड़ी तो आपके पास ही आयेंगे। कैप्टन इलावत ने उत्तर दिया।

कैप्टन इलावत, लेफ़्टिनेण्ट सिंह और सूबेदार ओमप्रकाश बन्ध से नीचे उतर आये। सरकण्डों के बीच में से गुजरते हुए कैप्टन इलावत बोला, "सिंह, दुश्मन की इस पोस्ट में दिलचस्पी होनी चाहिए। इस पोस्ट पर कब्जा करके उसे न सिर्फ़ अटैक लांच करने के लिए स्टेजिंग ग्राउण्ड मिल जायेगी बल्कि उसे हमारी सब एक्टिविटी ऑब्ज़र्व करने का मौक़ा भी मिलेगा। कल यह एरिया माइन होना चाहिए। बटालियन-हेडक्वार्टर से लेफ़्टिनेण्ट कृपलानी को बुला लेना।"

"सर, माइनफ़ील्ड की मार्किंग हो चुकी है, सिर्फ़ बिछानी है।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"वही तो असली काम है। नदी तक जो रास्ता जाता है उसे जरूर माइन करना है। इन्हें यह भी पता नहीं कि नदी में नहाकर वे दुश्मन को बहुत महत्त्वपूर्ण

"येस्सर ! हमारी पोस्ट से कोई पचीस सौ गज़ दूर दक्षिण में। वहाँ दुश्मन की एक पोस्ट भी है।"

"गाँव की आबादी कितनी होगी ?"

"सर, छोटा गाँव है, साठ-सत्तर घर होंगे। बेचिराग़ मालूम होता है।"

"इसका मतलब है कि वहाँ दुश्मन की एक कम्पनी रह सकती है।" कैप्टन इलावत दाँतों में पेंसिल दबाकर गहरी सोच में डूब गया। लेफ़्टिनेण्ट सिंह और सूबेदार ओमप्रकाश ने उसके विचारों की शृंखला को भंग कर दिया।

"सर, आधी रात होने में दो मिनट बाक़ी हैं।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"चलो।" कैप्टन इलावत ने अपना पर का कोट उठाते हुए कहा।

"सर, प्लाटूनों को इन्फ़ॉर्म कर दें कि आप आ रहे हैं ?" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने पूछा।

"नहीं, मैं उन्हें आम हालत में देखना चाहता हूँ।"

"पेट्रोल पार्टी के पास हथियार क्या हैं ?"

"सर, एक लाइट मशीनगन, पाँच राइफ़ल और दो स्टेनगन।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"मेरे पास आठ हैण्डग्रिनेड हैं। मेरा यही वेपन है। मैं स्कूल में गोला फेंका और क्रिकेट खेला करता था।" कैप्टन इलावत ने हँसते हुए कहा। और फिर वह लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की ओर देखता हुआ बोला, "ओके दर्शन, हम जा रहे हैं। अगर कोई ज़रूरी सन्देश हो तो वायरलेस पर देना। तुम्हें कोड मालूम है।"

वे ऑप्रेशनल बंकर से निकलकर बन्ध पर आ गये। काली अँधेरी रात में आकाश पर अनगिनत तारे चमक रहे थे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था और साँ-साँ की आवाज़ आ रही थी।

आपस में फ़ासला अधिक न होने के बावजूद वे एक-दूसरे को अच्छी तरह देख नहीं पा रहे थे।

"साब, अलर्ट कैसा है ?" कैप्टन इलावत ने सरगोशी में पूछा।

"सर, अच्छा है। हम सन्तरी की पोस्ट के नज़दीक पहुँच रहे हैं।" सूबेदार ओमप्रकाश ने कहा और बन्ध से थोड़ा नीचे उतरकर उसने झाड़ी की ओट में लाइटर से इस तरह सिगरेट जलाया कि रोशनी बिलकुल नज़र न आये। फिर वह भागकर पार्टी के साथ आ मिला और सिगरेट का कश लेने लगा।

"सिगरेट-बीड़ी बन्द करो।" किसी ने सख़्त लहजे में पुकारा। सूबेदार ओमप्रकाश ने दायें हाथ के अँगूठे से सिगरेट का जलता हुआ हिस्सा मसल दिया।

"पिकट है ?" कैप्टन इलावत ने सरगोशी में पूछा।

"जी साब।"

वे थोड़ा आगे बढ़े तो किसी ने धीमी लेकिन सख़्त आवाज़ में हुक्म दिया,

"दम।"

"आपका पासवर्ड क्या है ?"

"सच्चा।"

"ठीक।"

"आपका पासवर्ड क्या है ?"

"पक्का।"

"ठीक।"

"कौन, सुभाषचन्द्र है ?" सूबेदार ओमप्रकाश ने पूछा।

"राम-राम, साब।"

"राम-राम। नये ओ. सी. कैप्टन इलावत साब आये हैं।"

"राम-राम, साब।" नायब सूबेदार दयाराम ने आगे आकर कहा।

"साब, पूरी प्लाटून को मोरचा सँभालने में कितना समय लगता है ?"

"साब, पूरी प्लाटून एक मिनट में स्टैण्ड टू हो जाती है।" नायब सूबेदार दयाराम ने रिपोर्ट दी।

"गुड, साब, कोई पेट्रोल पार्टी भेजा है ?"

"जी साब, एक पेट्रोल पार्टी वापस आया है, एक गया है। सवेरे साढ़े पाँच बजे तक पेट्रोल पार्टी आता रहेगा, जाता रहेगा।"

"गुड, कोई समस्या, कोई तकलीफ़ ?"

"बहुत मेहरबानी है, सर। आप आ गये हैं अब कोई चिन्ता नहीं रही।"

"अच्छा साब, राम-राम।"

"सर, दो मिनट रुकिए, चाय आ रही है।"

"साब, यह कोई चाय का समय है ?"

"सर, आप इस प्लाटून में पहली बार आये हैं। आप की कोई सेवा नहीं कर सकते। न समय है और न ही जगह है।" नायब सूबेदार दयाराम ने बेबसी प्रकट करते हुए कहा।

"साब, आप बहुत तकलीफ़ कर रहे हैं।"

कैप्टन इलावत मन ही मन बहुत प्रसन्न था। चाय पीकर उसने उनका धन्यवाद करते हुए कहा, "साब, हमें आर बन जाना है।"

"सर, बायें चलें, बन्ध से नीचे उतरकर रास्ता आयेगा। रास्ते में पेट्रोल पार्टी से भी मिलाप होगा। मैं आप के साथ चलता हूँ।"

बन्ध पर कोई पचास गज आगे जाकर वे नीचे उतर गये। थोड़ी दूर जाने पर सरकण्डा घना और लम्बा हो गया।

"साब, यहाँ न तो फ्रंट फ़ॉर्मेशन चलेगी और न ही एरो फ़ॉर्मेशन, सिंगल फ़ाइल में जाना पड़ेगा।" नायब सूबेदार दयाराम ने कहा।

नायब सूबेदार दयाराम सबसे आगे था। वह सरगोशीमें जवानों से बोला, "राइफ़ल का ब्योनेट चढ़ा लो। यहाँ जंगली सूअर बहुत हैं।" वह अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि एक जंगली सूअर उनकी बगल में से सरकण्डों को झँझोड़ता हुआ निकल गया।

"देखा सर?"

"हाँ, साब।"

"सर, मेरी प्लाटून में एक जवान है—सदाराम, वह बहार पर आयी गिदड़ी की इतनी अच्छी आवाज़ निकालता है कि मिनटों में ही गीदड़ उसके गिर्द जमा हो जाते हैं। एक दिन तो उसने कोई पचास गीदड़ जमा किये होंगे।"

"अच्छा, वह गीदड़ों की भाषा सीख गया है?"

"जी सर, जब उनके बीच रहते हैं तो उन से कुछ न कुछ तो सीखना ही पड़ेगा।"

कोई आधा घण्टा चलने के बाद वे नदी के निकट पहुँच गये। नायब सूबेदार दयाराम वहाँ रुक गया और सरगोशी में बोला, "सर, नदी के पार दुश्मन का इलाक़ा है। यहाँ से ट्रैक दरिया के साथ-साथ दायें घूम जाता है।"

थोड़ी दूर आगे जाने पर उन्हें पेट्रोल पार्टी मिल गयी। कुछ क्षणों की तनातनी के बाद उन्होंने एक-दूसरे को पहचान लिया—"शिवराम?"

"जी साब।"

"नये, ओ. सी. साब, कैप्टन इलावत साब आये हैं।"

"राम-राम साब।" हवलदार शिवराम ने नम्रतापूर्वक कहा।

"राम-राम, क्या हाल है?"

"मेहरबानी है साब।"

"आर वन यहाँ से कितनी दूर है?"

"साब, सीधा तो चार सौ गज़ होगा। लेकिन सीधा जाना ठीक नहीं। एक तो नदी का किनारा कटा हुआ है दूसरे, रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ है।"

"तो फिर कहाँ से आते-जाते हो?"

"साब यहाँ से कोई डेढ़ सौ गज़ जाकर आप दायें घूम जायें। वह रास्ता बन्ध पर चला जाता है। मुश्किल नहीं है। डेढ़ सौ गज जाकर एक बिरख आयेगा। उसके आगे पचास क़दम गिन कर दायें घूम जायें। रास्ता बन्ध पर जाता है।"

"कोई बात नहीं, हम पहुँच जायेंगे।" कैप्टन इलावत ने उनसे विदा होते हुए कहा।

सूबेदार ओमप्रकाश आगे बढ़ता हुआ बोला, "सर, मैं आगे चलता हूँ। मैं दिन में एक बार इस रास्ते से गया हूँ।"

सूबेदार ओमप्रकाश के पीछे-पीछे वे थोड़ा फ़ासला छोड़कर चलने लगे।

कैप्टन इलावत को पहली बार एहसास हुआ कि रात बहुत भयानक है। वृक्ष के नज़दीक पहुँचकर वे रुक गये। "गिनकर पचास क़दम आगे जाना है फिर दायें घूमना है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"जी साब।" सूबेदार ओमप्रकाश क़दम गिनता हुआ चलने लगा। पचास क़दम चलकर वह रुक गया और ज़मीन पर बैठकर रास्ता टटोलने लगा।

"साब, क्या ढूँढ़ रहे हो ?"

"सर, रास्ता टटोल रहा हूँ। जहाँ से जवान गुज़रते हैं वहाँ मिट्टी नर्म होनी चाहिए।"

जब सूबेदार ओमप्रकाश किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका तो कैप्टन इलावत ने टार्च जलाकर रास्ता देखा और टटोलता हुआ आगे बढ़ गया। "मेरे पास स्टिक है। मैं लीड करता हूँ।"

कोई तीन सौ गज़ जाने के बाद कैप्टन इलावत रुक गया—"आगे नाला या डिच जान पड़ती है। एक सेकेण्ड ठहरो।" कैप्टन इलावत सावधानी से नीचे उतर गया और नशेब में पहुँचकर बोला, "धीरे-धीरे आना, सँभलकर, नशेब है।"

कोई दस मिनट में वे नशेब पार कर गये। थोड़ी दूर आगे जाने पर सरकण्डा छिदरा होता गया।

"बन्ध नज़दीक ही जान पड़ता है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"येससर, यह सामने जो घनी आउट लाइन नज़र आ रही है शायद बन्ध की है।" लेफ्टिनेण्ट सिंह बोला।

"हो सकता है।" कैप्टन इलावत उधर ध्यान से देखता हुआ बोला।

कुछ ही मिनटों के बाद वे बन्ध पर खड़े थे।

"साब, सन्तरी-पोस्ट कहाँ है ?"

"सर, शायद आगे होगी।"

"पीछे भी तो हो सकती है ?"

उसी क्षण उन्हें एक आवाज़ ने चौंका दिया—"कौन है ? हाथ ऊपर उठाओ और मेरी ओर आओ। अगर हरकत की तो गोली मार दूँगा।"

"तुम कौन हो ? तुम हमारे घेरे में हो। पासवर्ड बोलो !"

"सच्चा।"

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"आप कौन हैं ?"

"मैं चार्ली कम्पनी का ओ. सी. हूँ—कैप्टन इलावत !" कैप्टन इलावत ने रोब से कहा।

"कैप्टन इलावत कौन है ?" सन्तरी ने पूछा।

"दिलदार सिंह, नये ओ. सी. हैं। मेजर ढिल्लों साब की जगह आये हैं।"

हवलदार शोभासिंह ने उसके कान में कहा और फिर कड़कती हुई आवाज़ में बोला, "जवान, कैसे बोलता है। नाम क्यों नहीं बताता ?"

"साब, मैं दिलदार सिंह हूँ।"

"तुम सन्तरी-ड्यूटी पर हो ?"

"जी साब।"

"हम इतने आदमी तुम्हारी आँखों के सामने बन्ध पर चढ़े हैं। तूने हमें रोका क्यों नहीं, चैलेंज क्यों नहीं किया ?" कैप्टन इलावत ने बहुत रोब से पूछा।

"साब, देखा नहीं।" दिलदार सिंह ने सहमी हुई आवाज़ में उत्तर दिया।

"देखा नहीं तो सन्तरी की ड्यूटी कैसे दे रहा है ? क्या उस समय देखेगा जब दुश्मन तेरे हाथ से राइफल छीन लेगा ?"

"साब, उधर ध्यान नहीं गया।"

"कौन है तुम्हारा कमाण्डर ?"

"राम-राम, साब। मैं हूँ हवलदार शोभासिंह।"

"तुम लोगों को दुश्मन उठाकर ले जायेगा तो भी शायद तुम्हें पता नहीं चलेगा। लेफ़्टिनेण्ट जिल साहब कहाँ हैं ?"

"सर, पेट्रोल पर गये हैं।"

"जे. सी. साहब कहाँ हैं ?"

"सर, वह भी उनके साथ गये हैं।"

"इसीलिए तुम लोग सो रहे हो। कल तुम दोनों सूबेदार साहब को रिपोर्ट करना। देखो, हम बहादुर जवान पर जान देता है लेकिन सुस्त और कमजोर जवान का जान लेता है। अलर्ट कैसा है ? कितनी देर में प्लाटून स्टैण्ड टू होता है ?" कैप्टन इलावत ने क्रुद्ध स्वर में पूछा।

"साब, एक मिनट में।"

"करके दिखाओ।"

"मंगतराम, सबको सावधान कर दो, स्टैण्ड टू हो गया है।"

मंगतराम के भागते ही दगड़-दगड़ शुरू हो गयी। वह जहाँ पहुँचता दगड़-दगड़ शुरू हो जाती। कैप्टन इलावत खामोशी से सब कुछ देख रहा था। वह थोड़ा पीछे जाकर रुक गया और चिन्तित स्वर में बोला, "अलर्ट तो ठीक है लेकिन सन्तरी चुस्त नहीं है। यह तो पूरी प्लाटून का सत्यानाश करा देगा।"

"सर, जवान तो चुस्त है। प्लाटून-कमाण्डर साब ने प्रोमोशन के लिए रिकमेण्ड किया है।" हवलदार शोभासिंह ने कहा।

"तुम्हारा रिश्तेदार है क्या ?"

"नहीं साब, यह कांगड़ा का है मैं जम्मू का हूँ।"

"क्या कांगड़ा और जम्मू में रिश्तेदारी नहीं होती ? यह जवान कितने दिन से

रात को सन्तरी-ड्यूटी दे रहा है ?"

"साब, यह तो सिर्फ़ रात की ड्यूटी ही करता है। वलेण्टर है।"

"अच्छा वालण्टियर है। इसको अभी ड्यूटी से हटाओ।"

हवलदार शोभासिंह ने दिलदारसिंह को उसी समय ड्यूटी से उतार दिया।

"चलो चलें।" कैप्टन इलावत ने खिन्न स्वर में कहा।

"साब, चाय बन रही है। बस जवान ला रहा है।" हवलदार शोभासिंह ने कहा।

"यह कोई चाय का टाइम है। डेढ़ बज गया है।" कैप्टन इलावत ने सख्त स्वर में कहा।

हवलदार शोभासिंह भौंचक्का-सा रह गया। यह सोचकर उसके पाँव तले से ज़मीन निकल गयी कि ओ. सी. साहब प्लाटून से नाराज़ जा रहे हैं। कैप्टन इलावत जब वापस चल पड़ा तो हवलदार शोभासिंह भर्रायी आवाज़ में बोला, "साब, अगर लेफ़्टिनेण्ट जिल साहब यहाँ होते तो वे आपको चाय पिये बिना कभी न जाने देते।"

कैप्टन इलावत ने हवलदार शोभासिंह की ओर वात्सल्य-भरी नज़रों से देखा और गद्गद स्वर में बोला, "शोभासिंह, अगर यह बात है तो मैं तुम्हारे कहने पर भी चाय ज़रूर पिऊँगा, लेकिन जल्दी करो।"

"साब, अभी लाया।" कहकर हवलदार शोभासिंह स्वयं ही बन्ध से नीचे उतर गया।

चाय पीकर कैप्टन इलावत ने हवलदार शोभासिंह और अन्य जवानों से विदाई ली और अपने हेडक्वार्टर की ओर वापस आ गया। थोड़ी दूर आकर वह रुक गया। सामने दूर दुश्मन के इलाके में एक जगह रोशनी का गुब्बार-सा चढ़ रहा था जैसे बहुत बड़ा फ़व्वारा चल रहा हो। पीछे अपने इलाक़े में थोड़ी दूर पर टाउन की स्ट्रीट-लाइट देखकर यों लगता था जैसे रोशनी की नदी बह रही हो।

"ब्यूटीफुल साइट।" कैप्टन इलावत ने रोमांचक स्वर में कहा।

"इन्डीड सर, जिल बहुत बार इस लाइट का ज़िक्र किया करता है?" लेफ्टिनेण्ट सिंह बोला।

"सिंह, क़िस्मत की बात है। वहाँ इतनी चमकदार रोशनियाँ हैं लेकिन लोग सो रहे हैं और यहाँ इतना अँधेरा है लेकिन लोग जाग रहे हैं।" कैप्टन इलावत ने आँखें झपकाते हुए कहा।

कुछ मिनटों के लिए रुककर वे फिर चल पड़े। दो बजे के बाद आकाश के एक कोने में फीकी-सी रोशनी फैल गयी और थोड़ी देर के बाद चाँद निकल आया। फीकी चाँदनी में आस-पास का सारा दृश्य एकदम यों नज़र आने लगा जैसे किसी ने एक ही झटके में अँधेरे की चादर खींच ली हो। हल्की हवा में लहलहाते

सरसराते सरकण्डे बहुत भले मालूम हो रहे थे। जहाँ कहीं नदी का पानी नजर आता था वहाँ जैसे चांदी की लकीर-सी खिच गयी थी। नदी के पानी पर थिरकती हुई चांदनी जैसे पानी के घूँट भर रही हो। दुश्मन के इलाक़े और अपने एरिया में ऊँचे टावर जैसे एक दूसरे के इन्तज़ार में खड़े थे।

"यहाँ रात का अपना ही सौन्दर्य है। शहर में ऐसी सुहानी रात कहाँ मिलेगी।" कैप्टन इलावत ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"येस्सर, पूरे चाँद की रात में यह इलाक़ा बहुत ही सुन्दर लगता है। माफ़ कीजिए सर, पूरे चाँद की रात में इश्क़ करने के लिए इससे बेहतर जगह नहीं मिल सकती।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने डूबी हुई आवाज़ में कहा।

"हाँ सिंह, लव मेकिंग के लिए ही तो यहाँ आये हैं। तुम हनीमून के लिए यहीं आना।" कैप्टन इलावत ने हँसते हुए कहा और वह धीरे-धीरे अपने हेडक्वार्टर की ओर बढ़ता गया।

रात के ढाई बजे जब वह अपने हेडक्वार्टर में पहुँचा तो लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल मेज़ पर झुका हुआ ऊँघ रहा था। उनके क़दमों की चाप सुनकर वह हड़बड़ाकर उठ गया।

"हैलो दर्शन, क्या नींद आ रही है?"

"सर, ऊँघ आ गयी थी।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने लज्जित स्वर में कहा।

"कमाल है, तुम ऑप्रेशनल बंकर में भी सो सकते हो। ऊँघ रोकने का इलाज मैं बताता हूँ। तुम बाहर खुली हवा में जाकर दस मिनट तक पी. टी. करो।" कैप्टन इलावत का लहजा सख्त था।

"येस्सर।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल बंकर के द्वार की ओर बढ़ गया।

"कोई मेसेज था?"

"सर, एल्फ़ा कम्पनी से मेजर इन्द्रसिंह का टेलिफ़ोन आया था।"

"मिलाओ एल्फ़ा कम्पनी से, देखें वे किस हाल में हैं।"

लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने एल्फ़ा कम्पनी लेकर रिसीवर कैप्टन इलावत की ओर बढ़ा दिया और स्वयं बाहर निकल गया।

"ड्यूटी-ऑफ़िसर लेफ़्टिनेण्ट गुप्ता।"

"हैलो गुप्ता, कैसे हो? कैप्टन इलावत बोल रहा हूँ।"

"गुड मार्निंग सर! कंग्रेचूलेशन्ज़ सर! हमें रात को दस बजे पता चला, लोयर फ़ॉर्मेशन में हैं न।" लेफ़्टिनेण्ट गुप्ता ने शिकायत-भरे लहजे में कहा।

"थैंक्यू गुप्ता।"

"सर, थ्री लायन्स कब मिल रहे हैं? मेजर बनने की पार्टी कब देंगे?"

"गुप्ता, यू नो, मैं क्या कह सकता हूँ। यह बताओ, मेजर इन्द्रसिंह कहाँ हैं?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"सर, अभी पाँच मिनट पहले यहीं थे, मैं चेक करता हूँ।"

"गुप्ता, और क्या हो रहा है ?"

"सर, न्यूज़-पेपर पढ़ रहा हूँ।"

"क्या किसी ऑफिसर ने आज ही सामान खोला है ?"

"नो सर, मैं ताज़ा अखबार पढ़ रहा हूँ।"

"ताज़ा अखबार कहाँ से आ गया ?"

"सर, कल का अखबार है। यानी बाईस तारीख का न्यूज़-पेपर बाईस को ही मिला है।"

"तो फिर महीना दूसरा होगा ?"

"नो सर, महीना भी यही है।" लेफ्टिनेण्ट गुप्ता ने विश्वस्त स्वर में कहा।

"वण्डरफुल! लेकिन यकीन नहीं आयेगा, जबतक अपनी आँखों से न देख लूँ।"

"सर, आप यह क्यों नहीं कहते कि आपको न्यूज़-पेपर चाहिए।"

"गुप्ता, तुम बहुत इन्टेलिजेण्ट ऑफिसर हो।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"थैंक्यू सर, माफ करना सर।" कहकर गुप्ता कुछ क्षणों के लिए किसी से बात करके बोला, "सॉरी सर, मेजर इन्द्रसिंह पन्द्रह-बीस मिनट के बाद आयेंगे। वे कैप्टन डेविड के साथ बन्ध की ओर गये हैं।"

"ओके। उन्हें बता देना।" कहकर कैप्टन इलावत टेलिफोन रखता-रखता रुक गया और ऊँची आवाज़ में बोला, "सुनो गुप्ता, किसी जवान के हाथ अखबार भेज देना। मैं आर श्री की ओर आ रहा हूँ। हम आर श्री के मोड़ पर उससे ले लेंगे।"

"सर, अखबार तो फट गया है। उसे कम से कम बीस आदमियों ने पढ़ा होगा।"

"कोई बात नहीं, मैं उसे जोड़कर पढ़ लूँगा।"

कैप्टन इलावत ने घड़ी में समय देखा। तीन बज रहे थे। वह उठता हुआ बोला, "दर्शन, हम आर श्री पर जा रहे हैं। अब सोना नहीं, वरना ज्यादा सख्त डोज दूँगा।"

"नो सर।" लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल ने कुछ लज्जित स्वर में कहा।

कैप्टन इलावत, लेफ्टिनेण्ट सिंह और सूबेदार ओमप्रकाश पाँच जवानों के साथ आर श्री की ओर चल पड़े। आर टू के मोड़ पर आकर वे रुक गये।

"आर श्री को कहाँ से रास्ता जाता है ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"सर, कोई दो सौ गज आगे जाकर बायें को नीचे उतर जायेंगे, वहाँ से कोई चार सौ गज पर आर श्री है।" लेफ्टिनेण्ट सिंह ने बताया।

"सिंह, ख्याल रखना। उस प्वाइण्ट पर पलटन का जवान हमारे लिए न्यूज़-पेपर लेकर खड़ा होगा।"

वे अपनी धुन में जा रहे थे कि एक कड़कदार आवाज़ ने उन्हें चौंका दिया—"हैंड्ज़ अप ! अगर हरकत की तो फ़ायर खुल जायेगा।"

उनके पांव अपनेआप ही रुक गये और वे अभी स्थिति को समझने की कोशिश ही कर रहे थे कि उन्हें और भी ज्यादा सख्त ऑर्डर मिला—"हथियार नीचे रखो।"

वे सब जड़वत्-से खड़े थे। ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी।

"हथियार नीचे रखो !" किसी ने चीखती हुई आवाज़ में हुक्म दिया।

कैप्टन इलावत ने स्टिक और ग्रिनेड बेल्ट ज़मीन पर रख दी। अन्य लोगों ने भी अपने-अपने हथियार ज़मीन पर रखकर हाथ ऊपर उठा दिये।

"एक-एक करके दस क़दम आगे बढ़ो, और क़तार में खड़े हो जाओ, हाथ ऊपर होंगे।" किसी ने बहुत रोबदार आवाज़ में कहा।

जब वे क़तार में खड़े हो गये तो उन्हें छह जवानों ने घेर लिया। वे पूरी बैटल ड्रेस में थे। पेन्सिल-टार्च से सबके रैंक देखने के बाद एक आदमी बन्ध से नीचे उतर गया और उसने बहुत एक्साइटेड आवाज़ में कहा, "सर, वण्डरफ़ुल कैच ! एक कैप्टन, एक लेफ़्टिनेण्ट, एक सूबेदार और पांच जवान।"

"वेरी गुड ! टाइगर, तुम तो सचमुच टाइगर हो। इन्हें मार्च करके कैम्प में ले जाओ। मैं हेडक्वार्टर को इन्फ़ॉर्म करता हूँ ताकि वे जल्दी से जल्दी इन्टेरोगेशन-टीम भेज दें।"

कैप्टन इलावत बेहद परेशान था। उसका दिमाग़ शिथिल हो चुका था। अज्ञात भय और लज्जा से उसका सिर झुक गया था। लेफ़्टिनेण्ट सिंह और सूबेदार ओमप्रकाश सोच रहे थे कि इस एरिया में पहले भी पेट्रोल पार्टियाँ आयी हैं लेकिन किसी को कोई गड़बड़ी नज़र नहीं आयी थी।

उनकी सोच का ताना-बाना उस समय फिर चकनाचूर हो गया जब उन्हें हुक्म मिला—"सामने देखो ! दायें-बायें मत देखो ! मार्च !"

छह जवानों के घेरे में वे मार्च करने लगे। कुछ दूर जाने के बाद उन्हें हाल्ट का हुक्म मिला। वे रुक गये। उनकी आँखों पर पट्टियाँ बांध दी गयीं। उन्हें कई चक्कर दिये गये ताकि उन्हें दिशा का बोध न रहे और फिर उनके हाथ में एक रस्सी थमा दी गयी—"रस्सी के साथ-साथ चलो।"

कैप्टन इलावत और लेफ़्टिनेण्ट सिंह को एक बंकर में ले जाकर उनकी एक साथ पट्टियाँ खोल दी गयीं।

"गुड मार्निंग इलावत।" मेजर इन्द्रसिंह ने मुसकराते हुए कहा। उसकी आवाज़ पहचान लेने के बावजूद कैप्टन इलावत को विश्वास नहीं आया। यह विश्वास करके कि उसके सामने मेजर इन्द्रसिंह ही खड़ा है, कैप्टन इलावत बोला, "गुड मार्निंग सर !" और फिर अपने आपको सँभालते हुए कहा, "सर, हैट्स ऑफ़ टू यू।"

उसने जंगल कैप उतारते हुए झुककर कहा, "कमाल कर दिया आपने, बहुत अच्छा ड्रामा खेला।"

"डैम इट! तुम इसे ड्रामा कह रहे हो, तुम मेरे क़ैदी हो। तुमने दोस्त बनकर आने से इनकार किया हम तुम्हें क़ैदी बनाकर ले आये।" मेजर इन्द्रसिंह ने रोब-भरे स्वर में कहा और फिर इलावत को अपने बाजुओं में लेता हुआ बोला, "इलावत, आई एम सो हैंपी टू सी यू! कंग्रेचुलेशन्ज़!"

"थैंक्यू सर।" कैप्टन इलावत ने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

मेजर इन्द्रसिंह लेफ्टिनेण्ट सिंह की ओर मुड़ता हुआ बोला,—"सिंह, कैसे हो?"

"सर, मैं अभी तक उस भौंचक्के पर ही क़ाबू नहीं पा सका जो आपने हमें दिया है।"

"माइ ब्वायज़ आर जंगल फॉक्सेज।" मेजर इन्द्रसिंह ने गर्व से कहा और फिर कैप्टन इलावत से बोला, "इलावत, पकड़े जाने के बाद तुम क्या सोच रहे थे?"

"सर, मेरे मन में डर नहीं था। सिर्फ़ एक ही एहसास था—घोर लज्जा का कि मैं कम्पनी की कमान संभालते ही और एक भी गोली चलाये बिना दुश्मन का क़ैदी बन गया।"

इतनी देर में कैप्टन डेविड भी वहाँ आ गया। वह कैप्टन इलावत की ओर बढ़ता हुआ बोला, "गुड मार्निंग सर।"

"गुड मार्निंग डेविड! क्या हाल है?"

"फ़ाइन सर, मुझे अफ़सोस है कि हमने कुछ क्षणों के लिए आपको जोखम में डाला। मुझे मेरे ओ. सी. का ऑर्डर था।" कैप्टन डेविड ने मुसकराते हुए कहा।

"इलावत, अगर तुम गुप्ता से अख़बार न माँगते तो कम से कम आज की रात में हमारा मिलाप न होता।" मेजर इन्द्रसिंह ने कहा और फिर वह कैप्टन डेविड की ओर देखता हुआ बोला, "डेविड, दास कहाँ है?"

"सर, अभी आ रहा है।"

फिर मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत को सम्बोधित करते हुए पूछा, "इलावत, तुम कैप्टन डी. के. को जानते हो?"

"वेरी वेल सर, हम एक ही बैच से हैं।"

"डी. के. मेजर प्रोमोट होकर सब-एरिया में पोस्ट हो गया है।"

"इज़ इट?" कैप्टन इलावत ने विस्मित स्वर में कहा और फिर अर्थपूर्ण मुसकराहट के साथ बोला, "सर, इसमें हैरानी की कोई बात नहीं। ही इज़ ए गुड चैप! वह सीनियर ऑफ़िसरों की वाइव्ज़ को खुश करना जानता है। अच्छा सर, अब इजाज़त दीजिए। हमें आर भी जाना है।"

"चाय पिये बिना तुम कैसे जा सकते हो?"

"सर, बारह बजे के बाद दो बार चाय पी चुका हूँ। आज तो आगे?"

मुझे चाय पीने का शौक़ नहीं है। वरफ़ी रखी है तो खिला दें।"

"अव तुम आ गये हो तो वरफ़ी भी रखनी पड़ेगी। फ़िलहाल तुम चाय पियो। उसमें भी मीठा होता है। कहो तो चाय ही चीनी की वनवा दूँ।"

लेफ़्टिनेण्ट दास के पीछे एक जवान ट्रे में चाय के गिलास लेकर आ गया।

"गुड मार्निंग सर।" लेफ़्टिनेण्ट दास ने अटेंशन होते हुए कहा।

"लेफ़्टिनेण्ट दास।" मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत से उसका परिचय कराते हुए कहा।

"ही मास्टर-माइण्डेड दि ऑप्रेशन 'खेड़ा'।"

"कंग्रेचुलेशन्ज़। इट वाज़ फ़ाल्टलेस।" कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट दास से हाथ मिलाते हुए कहा।

"थैंक्यू सर। यह न्यूज़-पेपर आपके लिए है।" लेफ़्टिनेण्ट दास ने अखवार कैप्टन इलावत की ओर वढ़ाते हुए कहा।

"मैंने दास को ऑर्डर किया था कि तुम लोगों को यहाँ जरूर लाये।" मेजर इन्द्रसिंह ने कहा।

चाय पीने के वाद कैप्टन इलावत अपनी पार्टी के साथ आर थ्री की ओर आ गया। वे अभी वन्ध पर ही थे कि उन्हें नदी के पार शोर सुनाई दिया। वे रुककर उस शोर को ध्यान से सुनने लगे। ट्रक या वड़ी गाड़ी के इंजन-जैसा शोर था। कभी आवाज़ तेज़ हो जाती और कभी धीमी।

"आर टू में चलते हैं।" कैप्टन इलावत ने धीमे स्वर में कहा और वे तेज़-तेज़ क़दम उठाने लगे। सन्तरी को पासवर्ड वताकर वे अन्दर चले गये और एक जवान को सेक्सन-कमाण्डर दुर्लभसिंह को वुलाने के लिए भेज दिया।

दुर्लभसिंह आँखें मसलता हुआ वाशा (झोंपड़ा) से वाहर आ गया।

"दुर्लभसिंह, यह शोर सुन रहे हो?"

"जी साव!" दुर्लभसिंह ने दुश्मन के इलाक़े में पुराने रेलवे स्टेशन की दिशा में देखते हुए कहा।

वे दुश्मन के इलाक़े की ओर मोरचे के निकट रुककर शोर सुनने लगे। कैप्टन इलावत प्रभाकरण पिल्ले के पास चला गया—"पिल्ले! यह शोर कव से सुन रहे हो?"

"सर, आव घण्टे से।"

"हूँ।" कैप्टन इलावत चिन्तित स्वर में वुदवुदाया और फिर वह दुर्लभसिंह को सम्वोधित करता हुआ वोला, "क्या हम और आगे जा सकते हैं?"

"जी साव, कोई डेढ़ सौ गज़ तक; मेरे साथ आइए।"

कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह, सूवेदार ओमप्रकाश और तीन जवानों को आर टू में छोड़ दिया और दो जवानों के साथ दुर्लभसिंह के पीछे-पीछे वन्ध से नीचे

उतर गया। कुछ दूर जाकर वे ढलान में चले गये और धीरे-धीरे नदी के किनारे पर पहुँच गये।

"साब, यहाँ से पत्थर फेंकें तो दुश्मन के इलाक़े में जा गिरेगा।" दुर्लभसिंह ने सरगोशी में कहा।

कैप्टन इलावत ने उस जगह का ध्यान से निरीक्षण किया और जवानों को ऊँचे स्थान पर पोज़ीशन लेने के लिए कहकर स्वयं दुर्लभसिंह के साथ ऐसी जगह पर जा लेटा जहाँ से स्टेशन का एरिया बिलकुल सामने था। उसके कान और आँखें उधर ही लगे हुए थे। ढलान में पानी नहीं था लेकिन नमी बहुत थी। उसे शीघ्र ही कपड़ों को चीरती हुई नमी का अपने शरीर पर स्पर्श महसूस होने लगा। ठिठरन के बावजूद वह चुपचाप वहाँ लेटा रहा।

पाँच बजे तक कुछ-कुछ समय के बाद चार बार शोर सुनाई दिया और फिर एकदम बन्द हो गया। कैप्टन इलावत जब वहाँ से उठा तो उसकी वर्दी और पर के कोट का अगला भाग गीली मिट्टी से पूरी तरह भीगा हुआ था। कमर जैसे जम गयी थी और सारा शरीर ऐंठ रहा था लेकिन वह प्रसन्न था कि मेहनत व्यर्थ नहीं गयी।

तेज़-तेज़ क़दम उठाते हुए वे आर टू से अपने हेडक्वार्टर की ओर आ गये। अँधेरा फीका पड रहा था और वृक्षों पर पक्षियों की चहचहाहट शुरू हो गयी थी। हेडक्वार्टर ज्यों-ज्यों नज़दीक आ रहा था कैप्टन इलावत की गति बढ़ रही थी। हेड-क्वार्टर के निकट पहुँचकर वह दौड़ने लगा और ऑप्रेशनल बंकर में घुसता हुआ तीव्र स्वर में बोला, "दर्शन, गेट मी टावर! नायर को बुलाना।"

लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल ने कॉल करके रिसीवर कैप्टन इलावत की ओर बढ़ा दिया। दूसरी ओर से कोई उत्तर नहीं आ रहा था। क्षण प्रति क्षण कैप्टन इलावत की परेशानी बढ रही थी। वह क्रोध में बुदबुदाने लगा। दूसरी ओर से आवाज़ सुनकर वह चीखता हुआ बोला, "कौन? नायर?"

"येस्सर।"

"लुक नायर, तुम बहुत इम्पारटेण्ट जॉब पर हो। तुम्हें हमेशा टेलिफ़ोन के नज़दीक रहना चाहिए।"

"सॉरी सर।"

"अच्छा देखो, दुश्मन के इलाक़े में रेलवे स्टेशन के जनरल एरिया में मूवमेण्ट हुई है। वे बड़े ट्रक भी हो सकते हैं और टैंक भी। तुम फौरन टावर पर चले जाओ और स्टेशन के जनरल एरिया को बहुत क्लोज़ली वाच करो। तुम घास के एक तिनके को भी मिस नहीं करोगे। समझ गये?"

कैप्टन इलावत ने टेलिफ़ोन पर बटालियन-हेडक्वार्टर लेकर कैप्टन मिश्रा से बात की।

"बन्धु, क्या सो रहे थे?"

"तुम लोग, आई मीन फ़ील्ड-ऑफ़िसर्स, हमें कहाँ सोने देते हैं।" कैप्टन मिश्रा ने भारी आवाज़ में कहा।

"तुम रात-भर कहाँ थे ?"

"वन्धु, तुम्हारे लिए मछलियाँ पकड़ने गया था लेकिन मगरमच्छ हाथ लग गया। उसी के बारे में बताने लगा हूँ। दुश्मन के इलाक़े में रेलवे स्टेशन के जनरल एरिया में रात को मूवमेण्ट हुई है। दुश्मन थ्री टन गाड़ियाँ या फिर टैंक लाया है। मोस्ट प्रोवबली टैंक लाया है। मूवमेण्ट साढ़े तीन बजे शुरू हुई और पाँच बजे खत्म हुई है। मैंने लेफ़्टिनेन्ट नायर को टावर से आब्ज़र्व करने के लिए कह दिया है।"

"मैं अभी ओल्डमैन को इन्फ़ॉर्म करता हूँ। मुझे सोये हुए सीनियर ऑफ़िसरों को जगाने में बहुत मज़ा आता है। कोई और बात ?"

"कुछ खास नहीं। ओके वन्धु। बाई-बाई।"

कैप्टन इलावत ने टेलिफ़ोन रख दिया और पर का कोट उतारकर पेटी ढीली करता हुआ बोला, "वर्दी खराब हो गयी है।"

अखबार को मिट्टी और नमी में पूरी तरह लुथड़ा और गला हुआ देखकर कैप्टन इलावत भिन्ना गया और बहुत निराश स्वर में बोला, "इस न्यूज़पेपर के लिए मेजर इन्द्रसिंह के जाल में भी फँसे और इसका यह हाल हो गया है।"

"सर, आप यूनिफ़ॉर्म वदल लें। बहुत गन्दी हो गयी है।"

"दर्शन, तू यूनिफ़ॉर्म की बात कर रहा है, यहाँ सारी मेहनत व्यर्थ जा रही है। जगहँसाई भी हुई और अखबार भी पढ़ने लायक़ नहीं रहा।"

कैप्टन इलावत ने धीरे-धीरे तहें खोलकर अखबार के पन्ने मेज़ पर विछा दिये और उन्हें सुखाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से फूँकें मारने लगा।

चौदह

कैप्टन इलावत पिछले दिन का फटा और कीचड़ से सना हुआ अखबार पढ़ने की कोशिश कर रहा था जब कर्नल गिल और मेजर हरीश की जीप वन्ध की ओट में आकर रुकी। उन्हें देखकर कैप्टन इलावत ने अखबार तह करके रख दिया और तेज़ क़दम उठाता हुआ उनकी ओर चला गया।

"गुड मार्निंग सर !"

"वेरी गुड मार्निंग, इलावत।" कर्नल गिल ने प्रसन्न भाव से आगे कहा, "इलावत, तुम मेजर हरीश को नहीं जानते क्या ?"

"माइ गुडनैस। गुड मार्निंग सर। मैं सोच ही रहा था...." कैप्टन इलावत खुश होने के साथ-साथ हैरान भी था।

"वेरी गुड मार्निंग।" मेजर हरीश ने कैप्टन इलावत से हाथ मिलाते हुए कर्नल गिल से कहा, "सर, बेशक हमारी यह पहली मुलाक़ात है लेकिन हम अच्छे दोस्त हैं। क्यों इलावत ?"

"येस्सर।" कैप्टन इलावत मेजर हरीश की ओर प्रशंसा भरी नजरों से बार-बार देख रहा था। बड़ी-बड़ी आँखों के नीचे बड़ी-बड़ी मूँछें, गोरा रंग, भरा और गठा हुआ शरीर और छह फ़ुट से अधिक ऊँचा क़द। उसके हाथ की गिरफ्त मजबूत और गर्म थी।

"सो इलावत, डट गये हो ?"

"येस्सर। सर, घर में सब ठीक है....?"

"हाँ, मैडम से तो दूसरे-तीसरे दिन बात हो जाती है। नो प्राब्लम्ज, सिवा इसके कि उन्हें फ़िक्र रहती है।" कर्नल गिल ने कहा और कैप्टन इलावत को अपनी ओर देखता पाकर वह मुसकरा दिया—"बाक़ी ब्रिगेडियर साहब, ममी, सेमी साउथ गये हुए हैं। तेजेन्द्र ने साउथ नहीं देखा था, कल बंगलौर से उनका लेटर आया था। सब मज़े में हैं।"

कैप्टन इलावत जमीन को घूरने लगा तो कर्नल गिल ने ऊँची आवाज़ में पूछा, "टावर से कोई रिपोर्ट मिली है ?"

"सर, अभी तक कोई रिपोर्ट नहीं मिली।"

"चलो, वहीं चलते हैं।" कर्नल गिल ने कहा।

"सर, एक मिनट रुकिए, चाय आ रही है।"

"चाय नहीं चाहिए, हम ब्रेकफ़ास्ट करके आये हैं।"

"सर, चाय तो आपको पीनी ही पड़ेगी क्योंकि आप मेरी कम्पनी में पहली बार आये हैं।" कहकर कैप्टन इलावत खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"क्या हुआ ?" कर्नल गिल हैरानी से उसकी ओर देखने लगा।

"सर, इसी दलील के कारण मुझे रात को चार घण्टे में तीन बार चाय पीनी पड़ी।"

"सो तुम हमें चाय पिलाने के लिए वही दलील इस्तेमाल करना चाहते हो।"

चाय पीकर वे आर पी चले गये। लेफ्टिनेण्ट नायर टावर के ऊपर ही था। उसने दूरबीन कर्नल गिल की ओर बढ़ा दी।

"नायर, कुछ नज़र आया ?"

"कुछ खास नहीं, सर।"

कर्नल गिल दूरबीन से पुराने रेलवे स्टेशन की बिल्डिंग की ओर देखने लगा। मेजर हरीश और कैप्टन इलावत टावर के जंगले पर झुके हुए बातें करने लगे।

"इलावत, शोर किधर सुना था ?"

"सर, आप वह बिल्डिंग देख रहे हैं।" कैप्टन इलावत ने दूर एक इमारत के बुर्ज की ओर संकेत करते हुए कहा, "सर, शोर पश्चिम से, यों समझिए साढ़े दस बजे (साढ़े सड़सठ डिग्री) से आता था और स्टेशन के जनरल एरिया में खत्म हो जाता था।"

"शोर कैसा था ?"

"सर, शोर टैंक का भी हो सकता है और साइलेंसर के बिना थ्री टन ट्रकों का भी। लेकिन मेरा खयाल है कि दुश्मन इस एरिया में टैंक लाया है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

कर्नल गिल दूरबीन आँखों से हटाता हुआ बोला, "मुझे तो कुछ नज़र नहीं आया।"

"सर, ज़रा मैं भी देखूँ।" मेजर हरीश ने दूरबीन लेते हुए कहा। वह कोई पन्द्रह मिनट तक दूरबीन से उस इलाक़े में हर चीज़ को देखने और परखने का यत्न करता रहा। कर्नल गिल और कैप्टन इलावत इधर-उधर की बातें करते रहे।

मेजर हरीश ने दूरबीन से देखते हुए कहा, "गुड गॉड ! इलावत सीम्ज़ टू बी करेक्ट।" और फिर दूरबीन कर्नल गिल की ओर बढ़ाता हुआ बोला, "सर, आप पहले बारह बजे (नब्बे डिग्री) देखिए। फिर बारह से धीरे-धीरे साढ़े ग्यारह बजे आइए और वहाँ ध्यान से देखिए।"

"देख रहा हूँ।"

"वहाँ आपको पतली-सी छड़ी नज़र आयेगी, बिलकुल मोशनलेस, जड़वत्।"

"है।" कर्नल गिल ने कुछ क्षणों तक देखने के बाद कहा।

"सर, अब उस पतली छड़ी के आस-पास सरकण्डे को ध्यान से देखें।"

"येस, मोशन है।"

"सर, वह छड़ी टैंक के वायरलेस का एरियल होना चाहिए।"

"येस, हो सकता है।" कर्नल गिल ने दूरबीन आँखों से हटाते हुए कहा।

बाद में कैप्टन इलावत और लेफ़्टिनेण्ट नायर ने बारी-बारी दूरबीन से देखकर मेजर हरीश के कथन की पुष्टि की। वे टावर पर एक घण्टा ठहरने के बाद नीचे उतर आये। उनके लिए चाय का कप तैयार था।

"साब, जब भी मैं यहाँ आता हूँ, आप बहुत तकलीफ़ करते हैं।" कर्नल गिल ने कहा।

"सर, हमें तो हर बार शर्मिन्दगी का एहसास होता है कि हम आपकी कोई सेवा नहीं कर पाते।" असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट बचिन्तसिंह ने कहा।

चाय पीकर वे अपनी जीप की ओर जाने लगे तो बचिन्तसिंह कैप्टन इलावत के बराबर आकर सरगोशी में बोला, "सर, चीनी के लिए आदमी भेजूँ ?"

"सूबेदार साब के पास भेज देना, काम हो जायेगा। आप कोई और सेवा बतायें।"

"बहुत मेहरबानी है, साब।"

वे कैप्टन इलावत के हेडक्वार्टर में आ गये। मेजर हरीश कुरसी की पीठ पर झुकता हुआ चिन्तित स्वर में बोला, "सर, इस इलाके में दुश्मन की तैयारियों और उसे प्राप्त सैनिक और सामरिक सुविधाओं के बारे में जितना ज्यादा सोचता हूँ उतनी ही ज्यादा मेरी चिन्ता बढ़ती जाती है। सर, इस इलाके में दुश्मन की कंक्रीट डिफेंसिज़ हैं और वे इतनी अच्छी तरह छिपायी हुई हैं कि एरियल रिकोनेसेंस, टावर ऑब्जर्वेशन, रेकी, किसी से कुछ पता नहीं चलता। और फिर नदी पर पुल उसके एरिया में है। ब्रिज देकर हमारी पोलिटिकल लीडरशिप ने बहुत बड़ा ब्लण्डर किया है। दुश्मन को अपनी छाती पर बिठा लिया है कि वह जब जो चाहे हमारा गला काट दे। ब्रिज उसके क़ब्ज़े में है। टेरेन भी उसके हक़ में है और अगर क़िस्मत ने भी उसका ही साथ दिया तो शायद हमें ईश्वर भी नहीं बचा सकेगा।" मेजर हरीश ने दुखद स्वर में कहा।

"डैम इट! क्यों इतनी चिन्ता करते हो? तुम सेण्ड मॉडल रिहर्सल कब रख रहे हो?" कर्नल गिल ने पूछा।

"सर, आज दोपहर बाद रखने का इरादा था। लेकिन यह एक नयी समस्या पैदा हो गयी है। हमें ज्यादा जानकारी हासिल करने के लिए कम से कम चौबीस घण्टे और इन्तज़ार करना होगा।" मेजर हरीश ने कहा।

कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत को उसकी कम्पनी के सामने दुश्मन के एरिया में पशुओं के तमाम रास्तों, गुज़रगाहों, जिस इलाक़े में वे चरते हैं, किधर से आते हैं, किधर जाते हैं, किस-किस प्वाइण्ट पर नदी के निकट आते हैं—सब देखने और नक़्शे पर निशान लगाने के लिए कहा और फिर वह उठता हुआ बोला, "इलावत, दुश्मन की एक्टिविटी पर दिन-रात ध्यान रखो और जो कुछ भी ऑब्ज़र्व करो तुरत बताओ।"

कर्नल गिल और मेजर हरीश के जाने के बाद कैप्टन इलावत ने लेफ्टिनेण्ट सिंह, लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल और सूबेदार ओमप्रकाश को बुला लिया।

"सिंह, जिल को भी बुला लो, उसे बोलना कि वह लंच हमारे साथ ही करेगा। उसके पास ट्रांस्पोर्ट क्या है?"

"सर, वन टन गाड़ी है।"

"दैट्स गुड। उसे कहो, फ़ौरन आ जाये।"

"बीस मिनट के बाद लेफ़्टिनेण्ट जिल पहुँच गया। वह बीस साल का छरहरे शरीर का पतला और लम्बा युवक था, जो दाढ़ी को सख्त और घनी बनाने के लिए दिन में दो बार शेव करता था।

"जिल कल रात मैं तुम्हारे एरिया में गया था।"

"सर, हम मछलियाँ देखने गये थे। मेरा बैडलक है कि आपको रिसीव नहीं कर सका।"

"फ़ॉल्ट इज़ माइन। मैं इन्फ़ॉर्म किये बिना आया था।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

कुछ समय तक इधर-उधर की बातें करने के बाद वे ऑप्रेशनल बंकर में आ गये। कैप्टन इलावत नक़्शे पर एक ओर हरे निशान की ओर संकेत करता हुआ बोला, "इस इलाक़े में दुश्मन का यह कन्सेन्ट्रेशन एरिया है। वह कल रात यहाँ टैंक लाया है।" फिर वह लेफ़्टिनेण्ट सिंह की ओर देखता हुआ बोला, "सिंह, हमारा अन्दाज़ा ठीक निकला, एक टैंक का एरियल हमने टावर से आइडेण्टीफ़ाई (देख) कर लिया है।"

कैप्टन इलावत ने कर्नल गिल और मेजर हरीश से हुई अपनी बातचीत का ब्योरा बताकर कहा, "आप लोगों को बहुत सावधान रहना होगा। हमें कोई भी बात चांस पर नहीं छोड़नी चाहिए। मुझे रात की रिपोर्ट सवेरे सात बजे और दिन की रिपोर्ट शाम के सात बजे पहुँचनी चाहिए। ओके?"

"येस्सर।"

"आप अपने-अपने एरिया के सामने दुश्मन के इलाक़े में पशुओं के आने-जाने के रास्ते नक़्शे पर मार्क करें। अगर कहीं वे नदी पार करते हैं तो यह देखें कि वे तैर-कर पार होते हैं या चलकर आते हैं।" कैप्टन इलावत उन्हें समझाकर कुछ क्षणों तक फ़ील्ड-मैप के ऊपर हरी पेंसिल से निशान लगाता रहा और फिर लेफ़्टिनेण्ट जिल से बोला, "जिल, कल रात हम जब तुम्हारी पिक्ट पर गये थे तो तुम्हारा एक सन्तरी, दिलदारसिंह बिलकुल अलर्ट नहीं था। अगर यही हाल रहा तो फिर हमारा ईश्वर ही रखवाला है।"

"सर, हवलदार शोभासिंह ने सिपाही दिलदारसिंह को सुबह मेरे सामने पेश किया था। दिलदारसिंह यों तो बहुत चुस्त जवान है। वह कई दिन से रात की ड्यूटी दे रहा है। शायद ऊँघ गया होगा।"

"ह्वाट डू यू मीन—ऊँघ गया होगा?" कैप्टन इलावत को एकदम क्रोध आ गया—"ऊँघ के उसी एक क्षण का ही दुश्मन फ़ायदा उठायेगा। उसे हमारे सिर पर आने के लिए घण्टों दरकार नहीं होंगे।" कैप्टन इलावत ने सख़्त लहजे में कहा, "तुम एक ही जवान को रोज़ रात की ड्यूटी क्यों देते हो? तुम हर जवान को मुनासिब रेस्ट क्यों नहीं देते।"

"सर, दिलदारसिंह नाइट ड्यूटी के लिए रोज़ वालण्टियर कर देता है।"

"ह्वाट वालण्टियर? एज कमाण्डर यू मस्ट नो ह्वाइ ही वालण्टियर्ज़ फ़ॉर ड्यूटी एवरी नाइट। यू मस्ट नो दी रीज़न्ज़। अगर फिर कभी ऐसा हुआ तो मैं पूरी प्लाटून को ऑन चार्ज कर दूँगा।" कैप्टन इलावत का चेहरा सुर्ख़ हो गया—"दिलदार-सिंह से पूछना कि उससे इतनी बड़ी ग़लती क्यों हुई। साढ़े तीन बजे मुझे रिपोर्ट

चाहिए।"

लंच के बाद लेफ़्टिनेण्ट जिल अपने हेडक्वार्टर चला गया। कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह की ओर देखते हुए पूछा, "सिंह, बन्ध से परे ग्रीशम के पास सन्तरी-पोस्ट कर दिया है ?"

"सर, आई एम सॉरी। मैं दूसरे कामों में उलझा रहा, अभी करवा देता हूँ।"

"लुक सिंह, यू यंग ऑफ़िसर्स। अभी तक एकेडमी के वातावरण से नहीं निकल सके हो। मैं उन ऑफ़िसरों में से हूँ जो हर टास्क के बारे में सिर्फ यह रिपोर्ट चाहता हूँ—हो गया। डन। अगर तुम हर टास्क टाइम पर पूरा करोगे तो तुम्हें कभी 'आई एम सॉरी' नहीं कहना पड़ेगा। कीप ए ब्लडी नोट बुक इन पॉकिट। हर काम लिखो उसमें।" कैप्टन इलावत ने सख्त लहजे में कहा और वह अपने बंकर की ओर बढ़ गया।

वह वर्दी और बूटों समेत ही खाट पर लेट गया। कुछ क्षणों में ही उसे नींद आ गयी। तीन बजे आसाराम ने डरते-डरते उसे जगाया—"सर, गाँव के लोग आपसे मिलने आये हैं।"

"मुझसे मिलने आये हैं ?" कैप्टन इलावत विस्मित-सा आसाराम की ओर देखने लगा।

"जो साब, सन्तरी बता गया है।"

"अच्छा, तुम लेफ़्टिनेण्ट सिंह साहब को हमारी ओर से बोलो कि उनसे मिलाप करें। उनसे बोलना हम दस मिनट में आयेंगे।"

"कैप्टन इलावत हाथ-मुँह धोकर वृक्ष की ओर चला गया जहाँ गाँव की पंचायत बैठी थी। सरकण्डे से निकलकर जब वह खुली जगह में पहुँचा तो पंचायत के सदस्य हाथ जोड़कर खड़े हो गये। लेफ़्टिनेण्ट सिंह कैप्टन इलावत का उनसे परिचय कराने लगा—"सरपंच गण्डासिंह, पंच रामदयाल, पंच नत्थासिंह, पंच दासराम....।" कैप्टन इलावत ने सबके साथ गर्मजोशी से हाथ मिलाया।

"और पंच बीबी अमर कौर।"

कैप्टन इलावत हाथ जोड़ता हुआ बोला, "तशरीफ रखिए।"

सरपंच गण्डासिंह हिन्दुस्तानी में बात करने की कोशिश करता हुआ बोला, "साबजी, हम एक अर्ज करने लई आये हैं।"

"सरदारजी, तुसी हुक्म करो।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"गाँव ने अपने जवानों की फतह के लिए अखण्ड पाठ रखिया है। कल नौ बजे सवेरे भोग है, तुसीं जरूर आना। हमें बहुत खुशी होयेगी।"

"सरदारजी, हम सब तो नहीं आ सकेंगे।" कैप्टन इलावत ने नम्र स्वर में कहा।

"साहबजी, तुसीं जरूर आना।" सरपंच ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

"सरदारजी, आप हाथ क्यों जोड़ रहे हैं।" कैप्टन इलावत ने सरपंच गण्डासिंह के दोनों हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा। "मैं जरूर आवांगा, लेफ़्टिनेण्ट सिंह साहब भी आवेंगे, कुछ जवान भी आवेंगे।"

"वाह-वाह ! साहबजी, तुसीं सब आओ। सिर मत्थे पे।" सरपंच गण्डासिंह खुश हो गया।

दो जवान चाय लेकर आये तो सरपंच गण्डासिंह बोला, "साहबजी, तुसीं चाय की खेचल क्यों कीती है। हमारा फ़र्ज़ है आप जी की सेवा करें।"

"आपसे जो प्रेम और विश्वास सानूं मिला है, उसका बदला हम नहीं दे सकते।" कैप्टन इलावत ने कहा और चाय का गिलास बीबी अमर कौर की ओर बढ़ाता हुआ बोला, "माताजी, तुसीं चाय लो।"

"पुतरा, तुसीं पियो।"

"माताजी, आप लें ना।" कैप्टन इलावत ने आग्रह करते हुए कहा। "हम भी पियेंगे, हम आपकी कोई सेवा नहीं कर सकते। जंगल में बैठे हैं।"

कैप्टन इलावत ने पंचों को अपने हाथ से चाय दी।

"साहबजी, बीबी अमर कौर के तीन पुत्तर फ़ौज में हैं।" सरपंच गण्डासिंह ने बताया।

"अच्छा।" कैप्टन इलावत प्रशंसा-भरी नजरों से बीबी अमर कौर की ओर देखता हुआ बोला, "माता जी, आप धन्य हैं।"

"पुतरा, मैं तुसा नूं देखती हां ते मैंनू ऐसा लगदा है जैसे मेरा तरसेमा घूम रिहा है। मेरा बलवन्ता फिरदा पिया ए। मेरा भक्तसिंह औंदा पया ए।" बीबी अमर कौर ने वात्सल्य-भरे लहजे में कहा और आकाश की ओर हाथ उठाती हुई बोली, "वाहगुरु सबका रखवाला है। सब नूं अपना हथ दे के रखदा है।"

"माताजी, आपके बेटे किस पलटन में हैं ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"पुतरा, एस तरा मैंनू दसना नहीं औंदा।"

"साबजी, बीबी का बड़ा काका बलवन्तसिंह हवलदार है, इलाहाबाद से परे ओस दी पलटन सी।" सरपंच गण्डासिंह ने बताया।

"हुन, आगे चला गया ए। परवार ओथे आ, बच्चे स्कूल जांदे ने। छुट्टियाँ विच पिण्ड आन गे। परसों चिट्ठी आई सी।" बीबी ने कहा।

"तरसेम राजस्थान में ते भगतसिंह उप्पर पहाड़ां विच ए।"

"माताजी, उनकी चिट्ठी आती होगी ?"

"हाँ पुतरा, हर पन्द्रहवें दिन।" बीबी अमर कौर ने कहा और फिर उसने गम्भीर स्वर में पूछा, "पुतरा, कोई खतरेवाली गल (बात) ते नहीं ?"

"ना माताजी, खतरा किस बात का।" कैप्टन इलावत ने बीबी अमर कौर की शंका दूर करने के लिए विश्वासपूर्ण स्वर में कहा, "दुश्मन आँख उठायेगा तो आँख

फोड़ देंगे। हाथ उठायेगा तो हाथ तोड़ देंगे।"

"पुत्तरा, तुसी मेरे मन दी गल कीती ए। रोज़-रोज़ दी कला (झगड़ा) अच्छी नहीं हुँदी। इस बार छेड़छाड़ करे ते पक्का फ़ैसला कर दयो।"

"ज़रूर, माताजी।" कैप्टन इलावत ने ऊँचे स्वर में कहा।

"पुत्तरा, तुसी भी सारी रात पहरा दिंदे हो। मैं भी पिण्ड दी चौकीदारी करदी हाँ। सारी-सारी रात गलियाँ विच घुमकर देखदी हाँ कि किते बत्ती ताँ नहीं जल रही। पुछ लयो सरपंच जी तों।" बीबी अमर कौर ने कहा।

"बीबी ठीक कहती है।" सरपंच गण्डासिंह बोला।

"पुत्तरा, पक्की सड़क पर खोखा है ना, शराब दा ठेका, ओ भाई रात नूँ कई बार बत्ती जलती छड़ के सौं जांदा है। ओहनूँ तिन बार मना भी कीता है पर ओह बाज नहीं आया। पुत्तरा, ओस दा तुसी बन्दोबस्त करो।" बीबी अमर कौर ने आग्रह-पूर्ण स्वर में कहा।

"माताजी, आप चिन्ता न करें। आज मैं रात को खुद चेक करूँगा।"

"पुत्तरा, जुग-जुग जियो। तुसाँ नूँ देख के कलेजे विच ठण्ड पै जांदी है।" बीबी अमर कौर ने ममता-भरे स्वर में कहा।

"साहबजी, कल नौ बजे दर्शन दे के सानूँ ज़रूर कृतार्थ करना।" सरपंच ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

"कितनी देर का प्रोग्राम है?"

"साबजी, दस बजे तक खत्म कर देंगे।"

"ठीक है। सिंह, नोट कर लो और पार्टी डिटेल कर देना।"

कैप्टन इलावत सरपंच गण्डासिंह की ओर देखकर हाथ जोड़ता हुआ बोला, "सरपंचजी, हम ज़रूर आयेंगे। हमारी इतनी चिन्ता शायद हमारे घरवालों को भी नहीं होगी जितनी आप करते हैं।"

सरपंच गण्डासिंह ने पंच नत्थासिंह के साथ कुछ खुसर-फुसर की और वह जाकर गड्डे से एक छोटी बोरी उठा लाया।

"साबजी, थोड़ा गुड़ लाये हैं आपके लिए। नत्थासिंह ने कमाद पीडना शुरू किया है। पहली पत आप जी लई निकाली है।" सरपंच गण्डासिंह ने फिर हाथ जोड़ दिये।

"आप हमारे लिए बहुत तकलीफ कर रहे हैं। हम मुफ़्त में नहीं लेंगे। इसके कितने पैसे हैं?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"साबजी, एह तुसाँ की कह रहे हो? वाहगुरु! वाहगुरु!" सरपंच गण्डासिंह ने कान छूते हुए कहा।

"सरदारजी, हमें सरकार सब कुछ देती है।" कैप्टन इलावत ने कहना शुरू किया लेकिन बीबी अमर कौर बात खत्म करने के लिए बोली, "पुत्तरा, मैं थवाड़ी

सब दी माँ हाँ। ठण्ड दे मौसम विच गुड़ खाना चंगा है। गरमायश दिन्दा है। ए मेरी वलों रखो। मैनू लोड़ होयेगी मैं थवातों पैसे ले लवाँगी।"

कैप्टन इलावत के पास कोई उत्तर नहीं था। वह लेफ़्टिनेण्ट सिंह की ओर देखने लगा।

"सानों कोई होर सेवा दस्सो।" सरपंच गण्डासिंह ने विदा लेते हुए कहा।

पंचायत के जाने के बाद कैप्टन इलावत उनकी ओर कुछ क्षणों तक देखता रहा और फिर लेफ़्टिनेण्ट सिंह को सम्बोधित करता हुआ बोला, "सिंह, इनकी स्पिरिट देखो, माई गॉड, जिस आर्मी की बैक पर इतनी बहादुर सिविलियन पापुलेशन हो वह कभी नहीं हार सकती! आई फ़ील सो प्राउड ऑफ़ देम।" कैप्टन इलावत ने गर्व से कहा।

"सिंह, आप बटालियन इण्टेलिजेंस ऑफ़िसर से बोलना कि रात को शराब का ठेका चेक करे।"

कैप्टन इलावत और लेफ़्टिनेण्ट सिंह हेडक्वार्टर पहुँचे तो लेफ़्टिनेण्ट जिल पहले से ही वहाँ मौजूद था। अभिवादन के बाद जिल बोला, "सर, सुना है आपके कुछ गेस्ट आये हैं।"

"येस। सिर्फ़ मेरे नहीं तुम्हारे भी, पूरी कम्पनी के। तुम्हारे लिए कोई बीस किलो गुड़ दे गये हैं।" कैप्टन इलावत ने बोरी की ओर संकेत करते हुए कहा।

"सर, गुड़ क्या होता है?"

"रॉ शूगर। अभी दिखाता हूँ।" कैप्टन इलावत ने एक जवान को बोरी से गुड़ की ढेली निकालने के लिए कहा।

कैप्टन इलावत ने ढेले के दो टुकड़े किये और एक टुकड़ा लेफ़्टिनेण्ट जिल की ओर बढ़ाता हुआ बोला, "ज़रा टेस्ट करो।"

"सर, टेस्ट बहुत अच्छा है।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने गुड़ चबाते हुए कहा।

कैप्टन इलावत ने गुड़ की बोरी क्वार्टरमास्टर हवलदार को सब प्लाटूनों में बाँटने के लिए भेज दी। लेफ़्टिनेण्ट जिल कैप्टन इलावत के निकट होता हुआ बोला, "सर, मैंने सिपाही दिलदारसिंह से पूछताछ की है।"

"क्या कहता है वह?"

"सर, उसे अपनी फ़ैमिली से उसी दिन चिट्ठी आयी थी। उसकी वाइफ़ सख्त बीमार है, इसी वजह से वह बहुत वरीड (चिन्तित) था।"

"उसे अन्दर बुलाओ।"

लेफ़्टिनेण्ट जिल ने बंकर के बाहर आकर हवलदार शोभासिंह से दिलदारसिंह को पेश करने के लिए कहा। कैप्टन इलावत ने सूबेदार ओमप्रकाश को भी बुला लिया। दिलदारसिंह बहुत घबराया हुआ और परेशान नज़र आ रहा था। कैप्टन इलावत ने उसे सिर से पाँव तक देखते हुए सख्त लहजे में कहा, "कल जब हम तुम्हारी पिक्ट पर गये थे तो तुम सो क्यों रहे थे?"

"सर, सो नहीं रहा था। अपनी चिन्ता में डूबा हुआ था। इसलिए चूक हो गयी।" दिलदारसिंह ने सहमी हुई आवाज में कहा।

"क्या चिन्ता है तुझे ?"

"सर, कल शाम को फ़ैमिली से लेटर आया था। मेरी वैफ सख्त बीमार है।" दिलदारसिंह ने थूक निगलते हुए कहा।

"कहाँ है तुम्हारी फ़ैमिली ?"

"सर, गाँव में।"

"क्या हो गया ?"

"सर, बच्चा होनेवाला है। केस बिगड़ गया है, बहुत तकलीफ़ हो गयी है। घर में कोई नहीं।" दिलदारसिंह ने कहा।

"हूँ।" कैप्टन इलावत सोच में पड़ गया और फिर दिलदारसिंह की ओर देखता हुआ बोला, "तुम क्या चाहते हो ?"

"सर, अगर चार दिन की छुट्टी मिल जाये तो गाँव जाकर इन्तजाम कर सकता हूँ।"

"छुट्टी नहीं मिल सकती। और बोलो, क्या हो सकता है ?" कैप्टन इलावत ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

"सर, और क्या कह सकता हूँ। उसके पास कोई होगा तो दवा-दारू का बन्दोबस्त हो सकता है।"

"पास में कोई अस्पताल है ?"

"सर, सात किलोमीटर पर शहर में है।"

"क्या वहाँ इलाज हो सकता है ?"

"जी साब ! वहाँ एक प्राइवेट डॉक्टर भी बहुत अच्छा है। लेकिन प्राइवेट इलाज के लिए पैसा चाहिए।"

"तुमने इस महीने कितना पैसा 'पे' में लिया है ?"

"सर, सौ रुपये।"

"फैमिली को कितना भेजा ?"

"सर, पचासी रुपये।"

"अगर तुम और पैसा भेज दो तो इलाज हो सकता है ?"

"जी सर, फीस देकर डॉक्टर घर बुलाया जा सकता है।"

"हूँ!" कैप्टन इलावत फिर सोच में पड़ गया—"कितना पैसा भेजना चाहते हो ?"

"सर, दो सौ रुपये।"

"पहले पे ओवर ड्रा किया है ?"

"नहीं सर।"

"अच्छा, सवेरे दो सौ रुपये ले जाना। कल उधर गांव में अखण्ड पाठ का भोग है। लेफ़्टिनेण्ट जिल साहब से बोलकर तुम उधर जाना और सिविल मनीआर्डर करा देना। सर्विस मनीआर्डर पहुँचने में ज्यादा दिन लगेंगे।"

"जी सर। बहुत मेहरबानी है।"

"अब चौकस रहना। ड्यूटी में ढील नहीं होगा।"

"जी सर।"

दिलदारसिंह के जाने के बाद कैप्टन इलावत कुरसी से उठता हुआ कहने लगा, "जवान तभी अच्छा लड़ेगा जब उसे घरबार की चिन्ता नहीं होगी।" और फिर वह घड़ी देखकर बोला, "अभी चार बजे हैं, मैं दो-तीन घण्टे सोना चाहता हूँ। सिंह, तुम आज ऑप्रेशनल बंकर में रहो। आठ बजे दर्शन आ जायेगा। हाँ जिल, मैं रात को तुम्हारे एरिया में आने की कोशिश करूँगा, लेकिन पक्का नहीं है। तुम अपने जवानों को बताना कि सुस्ती और लापरवाही की बिलकुल गुंजाइश नहीं है। ओके, आल दि बेस्ट बाई-बाई।"

कैप्टन इलावत अपने बंकर में पहुँचा तो मेज पर एक पत्र पड़ा था। उसने हैण्डराइटिंग पहचानने के लिए एड्रेस पर नज़र डाली और लिफ़ाफ़ा चाक करके जल्दी-जल्दी पत्र पढ़ने लगा। पत्र उसकी माँ की ओर से था।

"प्रिय पुत्र देवु, चिरंजीव रहो। युग-युग जियो।

यहाँ कुशल से है। तुम्हारा कुशल-क्षेम भगवान् जी से सदा माँगती हूँ।"

कैप्टन इलावत पत्र पढ़ता-पढ़ता खाट पर लेट गया—

"हम सबका ध्यान हमेशा तुम्हारी ओर ही रहता है। कहाँ तुम्हें इन दिनों छुट्टी पर होना था और कहाँ तुम न जाने कैसी जगह और किस हाल में हो?

तेरे डैडी तो मुझे बहुत हौसला देते हैं लेकिन मन नहीं मानता। ईश्वर से हर समय यही प्रार्थना करती हूँ कि मेरी आयु भी तेरी आयु के साथ लग जाये। कई बार मैं भी सोचती हूँ कि चिन्ता करना व्यर्थ है लेकिन तुम्हें देखे भी तो एक वर्ष हो गया है। तेरे डैडी बात कम करते हैं लेकिन चिन्ता वे भी बहुत करते हैं। जब मैं बात करती हूँ तो यही कहते हैं कि ईश्वर पर भरोसा रखो। बेटा, तुम अपना खयाल रखना। मेरा पत्र पढ़कर उदास न होना।

पत्र जल्दी-जल्दी लिखा करो। मन को कुछ हौसला हो जाता है। मैंने तेरे लिए खोया बनवा रखा है लेकिन भेजूँ कैसे? तेरी बटालियन से कोई इधर आये तो लिखना। उसके हाथ भेज दूँगी। ईश्वर तुम्हें हमेशा सुखी और सुरक्षित रखे।

तुम्हारी माता
पार्वती"

कैप्टन इलावत ने पत्र फैलाकर आँखों पर रख लिया और अपनी माँ के बारे में सोचता-सोचता सो गया।

पन्द्रह

कैप्टन इलावत, लेफ्टिनेण्ट सिंह और लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल ऑप्रेशनल बंकर के बाहर फ़ील्ड-कुरसियों पर बैठे थे। शाम की ढलती धूप भी सर्द थी और जब ठण्डी हवा शरीर के नंगे हिस्सों को छूती तो उनमें सनसनी-सी होने लगती। लेफ्टिनेण्ट सिंह ने दोनों हाथों को गर्म करने के लिए ज़ोर से रगड़ा और उन्हें बग़लों में लेता हुआ बोला, "सर, सर्दी बढ रही है।"

"हाँ बढ रही है।" कैप्टन इलावत ने सुस्त आवाज़ में उत्तर दिया।

"सर, सर्दी से ज़्यादा बोरियत बढ़ रही है।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने कहना शुरू किया।

"दिल खाली है, दिमाग़ खाली है।"

"न बीवी है, न महबूबा है, न प्यार का एहसास है, न नफ़रत का। न मिलन की चाह है न विरह का दुख।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह लटकती हुई आवाज़ में बोलता गया।

"डैम इट। तुम दोनों को हो क्या गया है? यूनिफ़ॉर्म पहनकर पोइटिक होना बहुत खतरनाक हो सकता है।" कैप्टन इलावत ने हँसने की कोशिश करते हुए कहा।

"सर, इतनी बोरियत ज़िन्दगी में कभी महसूस नहीं हुई थी। घर से लेटर आता है तो पढ़ने को जी नहीं चाहता। हर लेटर का एक ही विषय होता है, इसलिए उत्तर देने को भी मन नहीं होता।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"क्या आज डाक आ गयी?"

"नो सर, आदमी गया हुआ है।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल बोला।

कहीं दूर से धमाके की आवाज़ आयी तो तीनों ने एक क्षण के लिए एक-दूसरे की ओर देखा।

"माइन बर्स्ट है। कोई कुत्ता, कोई पशु या हो सकता है कोई बच्चा, औरत या आदमी माइन-फ़ील्ड में चला गया हो।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने उदास स्वर में कहा।

दोनों ने कोई उत्तर नहीं दिया तो लेफ़्टिनेण्ट सिंह दोनों हाथ जेबों में डालकर टहलने लगा। वह कुछ क़दम आगे जाता और फिर मुड़ आता। दूर उसे एक गाड़ी आती नज़र आयी। वह कैप्टन इलावत की ओर मुड़ता हुआ बोला, "सर, एक व्हिकल

जहालत के अँधेरे से निकालकर नूर से मालामाल कर ताकि ये तेरे नेक बन्दों को पहचान सकें।" लेफ्टिनेण्ट जिल ने 'आमीन' कहने के लिए हाथ उठाये तो उन तीनों ने भी हाथ ऊपर उठा दिये और 'आमीन' कहकर जोर-जोर से हँसने लगे।

"जिल, क्या प्राब्लम है तुम्हारी ?" कैप्टन इलावत ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"नो प्राब्लम। मैंने अपने सब प्राब्लम सुलझा लिये हैं। मैं तो आप लोगों के प्राब्लम सुलझाने आया हूँ।" जिल ने कैप्टन इलावत की ओर देखते हुए कहा।

"दर्शन, बटालियन-डॉक्टर को फ़ोन करो कि लेफ़्टिनेण्ट जिल का दिमाग़ खराब हो गया है। वह फ़ौरन पहुँच जाये।" कैप्टन इलावत ने हँसते हुए कहा और फ़िर लेफ्टिनेण्ट जिल से पूछा, "जिल, तुम ठीक हो ?"

"सर, आपको कैसा दिखाई देता हूँ ?"

"ठीक दिखाई नहीं देते। दिमागी तौर पर।"

"सर, जिस वातावरण में मैं रह रहा हूँ उसमें किसी का भी दिमाग़ ठीक नहीं रहेगा। जवान आपस में दिल बहला लेते हैं। मैं उनके साथ एक हद तक ही मिक्स-अप हो सकता हूँ। मैं वहाँ छह हफ्ते से निपट अकेला पड़ा हूँ। कम से कम आठ बार बाइबल पढ़ चुका हूँ। मेरे पास तीन किताबें थी। वे इतनी बार पढ़ चुका हूँ कि अब मेरा उन्हें छूने को भी जी नहीं चाहता। अब ऐसी कोई बात नहीं कि जिस-पर हँस या रो सकूँ।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने गाउन की जेब से तसवीरों का एक लिफाफ़ा कैप्टन इलावत की ओर बढ़ाते हुए कहा, "ये तसवीरें उन लड़कियों की हैं जिनसे मेरे घनिष्ठ सम्बन्ध थे। मुझे बहुत अच्छी लगती थी।"

"बहुत खूबसूरत लड़कियाँ हैं।" कैप्टन इलावत तसवीरों को बहुत ध्यान से देखता हुआ बोला।

"डैम इट! तुम बहुत लकी हो। तुम्हारी गर्ल-फ्रेण्ड्स बहुत सुन्दर है।" कैप्टन इलावत ने फ़ोटो लेफ़्टिनेण्ट सिंह की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"सर, खाक लकी हूँ। वे नये फ्रेण्ड्स तलाश कर लेंगी। अब मैं उन तसवीरों को देखता तक नहीं। मेरा इनसे जी ऊब गया है।" लेफ्टिनेण्ट जिल ने उदास लहजे में कहा।

"तो फिर मेरे पास रहने दो। मेरा इनसे बहुत मन लगेगा।" लेफ्टिनेण्ट सिंह ने शरारत से मुसकराते हुए कहा।

लेफ्टिनेण्ट जिल ने दूसरी जेब से पत्रों का पुलिन्दा निकाला और कैप्टन इलावत की ओर बढ़ाता हुआ बोला, "ये लेटर भी इन्ही लड़कियो के हैं। मैंने इन्हें इतनी बार पढा है कि मुझे इनसे नफ़रत हो गयी है। उतनी ही जितनी टैक्स्ट बुक के लेमन से होती है।" लेफ़्टिनेण्ट जिल कैप्टन इलावत की ओर देखता हुआ बोला, "सर, इतनी बोर्डम हो गयी है कि मैं बयान नहीं कर सकता। मेरे बंकर के पास एक छप्पर था। उसमें रात को झींगुर बोला करते थे। बंकर के अन्दर मच्छरो की भिनभिनाहट

रहती थी। अब सर्दी के कारण वे भी नहीं रहे।"

"जिल, मैं तुम्हारे साथ सिर्फ़ हमदर्दी कर सकता हूँ और कुछ नहीं।" कैप्टन इलावत ने बेबसी प्रकट करते हुए कहा।

"सर, सिम्पथी तो मेरी गर्ल-फ्रेण्ड्स ने भी बहुत शो की है। मुझे सिम्पथी की नहीं कम्पनी की जरूरत है।"

"कम्पनी ?" कैप्टन इलावत ने कुछ ऊँचे स्वर में दोहराया।

"येस्सर ! कम्पनी, जिस वातावरण में मैं हूँ उसमें न दिन का इन्तज़ार है और न रात की चाह। दूरबीन से देखते-देखते सारा टाइम बारह बजे हो गया है।" जिल ने दुखी स्वर में कहा।

"जिल, तुम्हारे बारे में मुझे सचमुच फ़िक्र हो रही है। मुझे तुम्हारे लिए कुछ न कुछ जरूर करना होगा।" कैप्टन इलावत ने चिन्तित स्वर में कहा।

"सर, प्लीज़ डू। मैं सारी उम्र आपका एहसान मानूँगा।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने झुकते हुए कहा।

"क्या चाहते हो ?"

"सर, अड़तालीस घण्टे की छुट्टी, शहर जाने के लिए।"

"क्या मिलेगा जाकर, सिवा इसके कि पैसा बरबाद करोगे।"

"सर, एक तो मुझे 'स्टेप एण्ड स्टेप' डांसिंग स्कूल का हिसाब चुकाना है। मैं वहाँ डांस सीखता रहा हूँ। और फिर वहाँ अपनी पार्टनर से डांस भी कर लूँगा।" अपना केस मजबूत बनाने के लिए लेफ़्टिनेण्ट जिल बहुत भावुकता-भरे स्वर में बोला, "सर, विश्वास कीजिए, पिछले छह हफ़्ते से एक भी खूबसूरत चेहरा नहीं देखा। क्लब और सिनेमा का तो सवाल ही नहीं उठता।"

लेफ़्टिनेण्ट जिल कैप्टन इलावत की ओर देखता हुआ बोला, "सर, रात को जब पेट्रोल पर जाते हैं तो बन्ध के दोनों ओर दूर रोशनियाँ देखकर मेरे मन में अँधेरा छा जाता है। प्लीज सर, अड़तालीस घण्टे की छुट्टी दे दें, जस्ट फ़ॉर ए चेंज।"

"जिल, यू नो, छुट्टी नहीं मिल सकती।" कैप्टन इलावत ने रूखी आवाज में कहा।

"सर, तो फिर मुझे बन्ध के पार दुश्मन के इलाक़े में उस टाउन पर अटैक करने का ऑर्डर दे दें जिसकी रोशनियाँ मुझे रोज रात को रुलाती हैं।"

"यह ऑर्डर भी नहीं दे सकता।"

"सर, तो फिर क्या ऑर्डर दे सकते हैं ?"

"सिर्फ़ यही कि जिस हाल में बैठे हो उसी में खुश रहने की कोशिश करो। अपने को वातावरण से एडजस्ट करो।" कैप्टन इलावत ने निर्णयात्मक स्वर में कहा।

"सर, यहाँ आकर मच्छरों से प्यार किया, झींगुरों से दोस्ती की। अगर वे मौसम के हाथों मजबूर होकर साथ छोड़ दें तो मेरा क्या क़सूर है।" लेफ़्टिनेण्ट

जिल आवेग में बोला, "सर, लड़ाई तो होगी नहीं, आप मुझे छुट्टी दे दें।"

"क्या किसी मैगज़ीन में भविष्यवाणी पढ़कर आये हो ?"

"सर, यह तो कामनसेन्स की बात है। हम पहल करेंगे नहीं, दुश्मन लड़ाई छेड़ता नहीं, ऐसी हालत में लड़ाई क्यों होगी ?"

"जिल, दुश्मन के बारे में तुम कैसे कह सकते हो ? वह हमारे ऊपर एप्वाइण्टमेण्ट करके हमला करेगा नहीं।" कैप्टन इलावत ने तीव्र स्वर में कहा।

"सर, लड़ाई होने की कोई सम्भावना नज़र नहीं आती।"

"लुक जिल, यह एक ऐसा मामला है जिसपर हम कई दिन तक, बल्कि महीनों तक बहस करने के बाद भी किसी नतीजे पर नहीं पहुँचेंगे। मैंने पिछले दिनों कहीं पढ़ा था, मुझे ठीक से तो याद नहीं लेकिन बात कुछ ऐसी थी सब दलीलें जंग के खिलाफ हैं लेकिन विश्वास जंग के हक़ में है—कुछ ऐसा ही लिखा था।" कैप्टन इलावत ने कहा।

लेफ़्टिनेण्ट जिल अभी अपनी दलीलों के बारे में सोच ही रहा था कि मेजर इन्द्रसिंह और लेफ़्टिनेण्ट गुप्ता आ गये। उन्हें देखकर वे दोनों कुरसियों से उठ गये।

"गुड इवनिंग सर।" कैप्टन इलावत ने आगे बढ़कर हाथ मिलाते हुए बहुत प्रसन्न भाव से कहा।

"वेरी गुड इवनिंग, इलावत !" मेजर इन्द्रसिंह बहुत प्रसन्न था।

"इलावत, तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि कल से मैं छह दिन की छुट्टी पर जा रहा हूँ।"

"रीयली सर ? आप बहुत लकी हैं !" कैप्टन इलावत चकित रह गया।

"रीयली लकी।" मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत की आँखों में झाँकते हुए कहा, "पहले तो सी. ओ. साहब ने इनकार कर दिया था। यू नो, कौन देगा छुट्टी तनातनी के इन दिनों में। लेकिन जब मैंने उन्हें बताया कि मेरी सिस्टर की शादी है और मैं ही घर में सीनियरमोस्ट मेल-मेम्बर हूँ तो वे चुप हो गये। लेकिन जब मैंने विस्तार से बताया कि लड़का अमेरिका में रहता है और ज्यादा दिन तक इन्तज़ार नहीं कर सकता तो ओल्डमैन मान गया।" मेजर इन्द्रसिंह ने सन्तोषपूर्ण स्वर में कहा।

"सर, शादी किस दिन है ?"

"चार दिन बाद।"

"सर, यह कहना तो सिर्फ़ फ़ॉरमेलिटी होगा कि हमारे लिए कोई सेवा बतायें।" कैप्टन इलावत ने उदास स्वर में कहा।

"टेक इट इज़ी, मैन ! तुम्हारी शुभकामनाएँ हमेशा मेरे साथ हैं।" मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत को धन्यवाद देते हुए कहा, "ओके इलावत, आइ गो ! मुझे अभी सामान भी बाँधना है।"

"सर, जस्ट ए मिनट।" कहकर कैप्टन इलावत अपने बंकर की ओर दौड़ गया। उसने एक लिफ़ाफ़े में पचास रुपये डाले और साथ में चिट डाल दी जिसपर लिखा था, 'ए स्माल गिफ़्ट फ्रॉम चार्ली कम्पनी' और लिफ़ाफ़ा बन्द कर दिया।

कैप्टन इलावत ने लिफ़ाफ़ा जेब में डाल लिया और मेजर इन्द्रसिंह के पास आकर बोला, "सॉरी सर, मैंने आप को डिटेन किया।"

"नेवर माइण्ड इलावत, अगर पैक-अप न करना होता तो मैं आधा-पौन घण्टा और बैठता। आल दी बेस्ट। बाई-बाई" मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत से हाथ मिलाते हुए कहा।

कैप्टन इलावत मेजर इन्द्रसिंहके बहुत निकट होकर उसकी ओर लिफ़ाफ़ा बढ़ाता हुआ बोला, "सर, इनकार न करना, इट इज ए स्मॉल गिफ़्ट फ्रॉम माइ कम्पनी।" कैप्टन इलावत भावुक हो गया, "सर, भले समय में हम शादी में शामिल होते और अपनी सिस्टर को अपने हाथों से डोली में बिठाते।"

मेजर इन्द्रसिंह रुक गया और कैप्टन इलावत की ओर प्यार-भरी नज़रों से देखता हुआ बोला, "इलावत, इसमें क्या है?"

"सर, नथिंग। मेरी कम्पनी की ओर से बहुत मामूली-सा तोहफ़ा है।"

मेजर इन्द्रसिंह का भावुकता से गला भर आया और वह उसका हाथ ज़ोर से दबाता हुआ बोला, "थैंक्यू इलावत। आल दी बेस्ट। बाई-बाई।"

"बाई-बाई। सर, मेरी चीज़ लाना न भूलना, दो किलो।" कैप्टन इलावत ने दो उँगलियाँ उठाते हुए याद दिलाया।

"हाँ, मुझे याद है, पिस्तेवाली। आई शैल ब्रिंग।" मेजर इन्द्रसिंह ने कहा और वह कैप्टन इलावत और लेफ़्टिनेण्ट जिल के साथ हाथ मिलाने लगा।

"सर, लड़ाई नहीं होनी चाहिए, कम से कम अगले छह दिन तक।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"लेट अस होप सो। लेकिन अगर शुरू हो गयी तो मैं तुरत वापस आऊँगा। बाई-बाई।" मेजर इन्द्रसिंह ने हाथ हिलाते हुए क़दम तेज़ कर दिये।

कुछ देर तक वे बन्ध पर खड़े उन्हें जाते हुए देखते रहे।

"लकी मैन! गोइंग होम।" लेफ़्टिनेण्ट जिल बुदबुदाया और धड़प से कुरसी पर बैठ गया।

सोलह

दोपहर को डाक आयी तो उसमें कैप्टन इलावत के लिए दो पत्र थे। एक बन्द लिफ़ाफ़ा और एक आर्मी-मेलसर्विस का इनलैण्ड कार्ड। उसने भेजनेवाले का पता पढ़ा और उसके मन में खुदबुदी-सी होने लगी।

सिंह, मेजर ढिल्लो का लेटर आया है। कैप्टन इलावत ने पत्र खोला और उसे बेचैनी से पढ़ने लगा।

डीयर इलावत,

मैं फ़ील्ड-हॉस्पीटल से इस हॉस्पीटल में आ गया हूँ। कई दिनों से तुम्हें लेटर लिखने के बारे में सोच रहा था लेकिन जब भी बैठता तो लिखने के लिए इतनी बातें याद आ जातीं कि कुछ भी न लिख पाता और लेटर कोरे का कोरा रह जाता। मेरा प्लास्टर खुलने में अभी तीन हफ़्ते बाक़ी हैं लेकिन मेरी चिन्ता बढ़ रही है। हर समय यही फ़िक्र रहती है कि टाँग ठीक से जुड़ेगी या नहीं। फ़ील्ड-ड्यूटी के लिए फ़िट रहता हूँ कि नहीं।

यहाँ पर एटमसफ़ीयर काफ़ी अच्छा है। रंगारंग लोग हैं लेकिन मैं बुझा-बुझा ही रहता हूँ। कभी-कभी मुझे अपनी क़िस्मत पर बहुत अफ़सोस होता है कि जब एक्शन का टाइम आया तो मैं बाहर निकल गया।

ओल्डमैन मुझे फ़ील्ड-हॉस्पीटल में मिलने आया था। उन्होंने बताया था कि तुम मेरी कम्पनी को कमाण्ड कर रहे हो। इलावत, विश्वास करना, मुझे इतनी खुशी हुई कि मैं यह भी भूल गया कि मेरा मल्टीपल फ्रैक्चर हुआ है, उठकर नाचना चाहता था इसलिए कि कम से कम मेरी एक इच्छा तो पूरी हुई!

फ़ील्ड-हॉस्पीटल में अमरजीत मुझसे मिलने आती रहती थी। पहली बार जब वह आयी तो उसने सीन क्रियेट कर दिया। उसका रोना थमता ही नहीं था। अब हर तीसरे या चौथे दिन उसका पत्र आ जाता है। अगर क्रिस्मस तक हॉस्पीटल से डिस्चार्ज नहीं हुआ तो वह छुट्टियों में मुझसे मिलने आयेगी।

तुम्हारा क्या बना? बात कुछ आगे बढ़ी? उसका लेटर आता होगा। इलावत, तुम बहुत भाग्यवान् हो। तुम दोनों शायद एक-दूसरे के लिए पैदा हुए हो। मुझे डिटेल में लिखना। कई बार दिल इतना उदास हो जाता है कि

हॉस्पीटल से भागकर आप लोगों के पास पहुँच जाने का मन होता है। बट दिस ब्लडी प्लास्टर। मेरे जज़्बे को कुचल देता है। सब दोस्तों को मेरी याद दिलाना। सिंह, दर्शन, जिल और सूबेदार ओमप्रकाश कैसे हैं? आई विश आल दी बेस्ट फ़ॉर आल ऑफ़ यू। उत्तर जरूर और जल्दी भेजना।

तुम्हारा
ढिल्लों।

कैप्टन इलावत ने कई बार पत्र पढ़ा। उसे यह जानकर खुशी हुई कि मेजर ढिल्लों का मामला बहुत ठीक चल रहा है। लेकिन सेमी के बारे में सोचकर उसका मन बेहद उदास हो गया। कर्नल गिल की डिनर-पार्टी से लेकर सेमी के जाने तक की तसवीरें उसकी आँखों के सामने घूमती-घूमती धुँधली पड़ गयीं। वह सिर झटककर खाट पर लेट गया।

"आर्मी-ऑफ़िसर से प्रेम करने के लिए फ़ौलाद का दिल चाहिए। और वह कितनी लड़कियों के पास है?" मेजर ढिल्लों के ये शब्द याद आते ही कैप्टन इलावत बहुत उदास हो गया।

"सर, एक लेटर आप बाहर ही छोड़ आये थे।" आसाराम ने पत्र उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

आसाराम को पत्र मेज़ पर रखने का इशारा करके कैप्टन इलावत फीकी-सी मुसकराहट के साथ सोचने लगा कि मेजर ढिल्लों प्रोग्रेस पूछ रहा है और यहाँ यह भी पता नहीं कि वह कहाँ है, किस हाल में है। कैप्टन इलावत सिर झटककर उठ बैठा और अनमना-सा मेज पर पड़े पत्र की ओर देखने लगा। उसने हाथ आगे बढ़ाकर पत्र उठा लिया और लिफ़ाफ़ा चाक करके पत्र निकाल लिया। धीरे-धीरे उसकी तहें खोलीं और पत्र के अन्त में सेमी का नाम पढ़कर उसकी साँस जैसे रुक गयी। पत्र बहुत संक्षिप्त था।

कैप्टन इलावत ने सेमी का पत्र कई बार पढ़ा। कभी शुरू से पढ़ता, कभी आखिर से और कभी बीच में से।

"तुम बहुत बहादुर लड़की हो, सेमी डार्लिंग! आई सैल्यूट यू।" कैप्टन इलावत ने सेमी का पत्र दोनों आँखों पर रखते हुए कहा। उसने पत्र को एक बार फिर जल्दी-जल्दी पढ़ा और उसे तह करके जेब में रखते हुए आवाज़ दी, "आसाराम!"

"जी साब।"

"गर्म पानी का इन्तज़ाम करो।"

"जी साब।"

"मेरा गर्म सूट निकालो, नीलावाला। वरदी पहनकर मन ऊब गया है।"

"जी साब।"

कैप्टन इलावत दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला, "शेव का सामान रखो, आज शेव भी नहीं किया।"

"साब, सवेरे किया था।"

"किया था, तो फिर ब्लेड ठीक नहीं होगा। दाढ़ी के बाल हाथ को चुभते हैं।"

आसाराम शेव का सामान रखकर कैप्टन इलावत को ध्यान से देखता हुआ बोला, "साब, आप बहुत खुश हैं। लेटर आया है?"

"हाँ।"

"तभी साब! मैं भी बहुत खुश हूँ, मुझे भी लेटर आया है।"

"क्या नयी फ़ैमिली का बन्दोबस्त हो गया है?" कैप्टन इलावत ने उसकी ओर मुसकराकर देखते हुए कहा। आसाराम शरमा गया और यह कहता हुआ बाहर भाग गया, "साब, आप सब बात तुरत समझ लेते हैं।"

कैप्टन इलावत उसको बाहर जाते हुए देखकर मुसकराता रहा। उसने शेव का सामान डिब्बे से निकाला और शीशे में अपना चेहरा देखकर मुसकरा दिया। आसाराम गर्म पानी से भरा मग चुपके से रखकर दबे पाँव बाहर जाने लगा लेकिन कैप्टन इलावत ने उसे रोक लिया, "आसाराम, शादी कब करेगा?"

"साब, आधा बूढ़ा हो गया हूँ, शादी करूँगा तो जग-हँसाई होगी। चादर ही डालूँगा। इसपर खर्च भी कम आयेगा।"

"चादर कब डालोगे?"

"साब, जब आप छुट्टी दे दें।" आसाराम ने शरमाते हुए कहा।

"अच्छा, तुम गर्म पानी बाथरूम में रखो। छुट्टी के बारे में सोचते हैं।"

स्नान करके कैप्टन इलावत ने शोख रंग की नेकटाई बाँधी और अपना सबसे बढ़िया नीले रंग का सूट पहना। वह बहुत देर तक अपने आपको शीशे में देखता रहा। उसने सेमी का पत्र कोट की अन्दरूनी जेब में रखा और बंकर से बाहर आ गया।

बाहर निकलकर वृक्ष के नीचे खड़ा वह इधर-उधर देखने लगा। किसी को भी वहाँ न पाकर उसने आवाज दी।

"जी साब।" एक जवान ने सैल्यूट देकर कहा।

"लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल साहब कहाँ हैं?"

"साब, ऑप्रेशनल बंकर में हैं?"

"चाय तैयार है?"

"जी साब, मेस में पता करता हूँ।"

कुछ क्षणों के पश्चात् ही जवान वापस आ गया। "जी साब, चाय तैयार है।"

"चाय लाने को बोलो और ऑप्रेशनल बंकर में खबर दो।"

कुछ क्षणों के पश्चात् ही लेफ्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल बंकर

से बाहर आ गये। कैप्टन इलावत को सूट में देखकर दोनों हैरान रह गये और मुसकरा दिये। लेफ़्टिनेण्ट सिंह वृक्ष की टहनी पकड़ता हुआ बोला, "टच वुड, सर। आप बहुत हैण्डसम लग रहे हैं।"

"हैण्डसम लग रहा हूँ!" कैप्टन इलावत ने कृत्रिम हैरानी दिखाते हुए कहा और फिर खिलखिलाकर हँसता हुआ बोला, "डैम इट, मैं तो हमेशा से हैण्डसम हूँ। तुम्हें अभी एहसास हुआ है।"

"सर, आप ठीक कहते हैं लेकिन आज तो आप....आप खिले गुलाब की तरह दिखाई दे रहे हैं।"

"थैंक्यू वेरी मच!" कैप्टन इलावत ने दोनों की ओर मुसकराकर देखते हुए कहा, 'जब से यहाँ आया हूँ आज का दिन सबसे अच्छा है।"

उन्होंने वृक्ष के नीचे खड़े-खड़े चाय पी। कैप्टन इलावत घड़ी देखता हुआ बोला, "साढ़े चारे बजे हैं, जिल को बुला लेते हैं। उस दिन वह बहुत उदास और बोर्डम महसूस कर रहा था। उसे बोलना, खाना यहीं खाये। मैं आप सबको ड्रिंक भी ऑफ़र कर रहा हूँ।"

"थैंक्यू वेरी मच सर, एक्सक्यूज़ मी सर।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कैप्टन इलावत की ओर देखते हुए पूछा, "सर, क्या आज आपका जन्मदिन है?"

"बर्थ-डे तो नहीं, लेकिन एक लिहाज से नया वर्ष जरूर है।" कैप्टन इलावत खिलखिलाकर हँस पड़ा। फिर बोला, "आज मैं बहुत खुश हूँ। सिंह, जिल को कहो छह बजे तक आ जाये ताकि नौ बजे वापस जा सके।"

"येस्सर।" कहकर लेफ़्टिनेण्ट सिंह टेलिफ़ोन करने चला गया।

"सर, मैं पन्द्रह-बीस मिनट के लिए अपने बंकर में जाना चाहता हूँ, हाथ-मुँह धोने और कपड़े बदलने के लिए।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने कहा।

"गो अहैड। मैं यहीं हूँ।"

लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने वापस आकर रिपोर्ट दी—"सर, जिल को टेलिफ़ोन कर दिया है। लेकिन वह छह बजे आने की पाबन्दी पर नाखुश था।"

"क्या वह जल्दी आना चाहता है। देन ही इज़ मोस्ट वेल्कम! लेकिन उसे यह बता दो कि ड्रिंक छह बजे से पहले नहीं मिलेगी। वह जल्दी उतावला हो जाता है।"

"येस्सर, मैं उसे टेलिफ़ोन पर कह देता हूँ।" कहकर सिंह बोला, "सर, मैं भी पन्द्रह-बीस मिनट के लिए जाना चाहता हूँ, फ़ॉर ए वाश एण्ड चेंज।"

"गो अहैड। लेकिन ज्यादा देर मत लगाना। आज मैं एक मिनट के लिए भी अकेला नहीं रहना चाहता।" कैप्टन इलावत ने वृक्ष की टहनी से झूलते हुए कहा।

कैप्टन इलावत ने चारों ओर देखा और चुपके से सेमी का पत्र निकालकर

रहता है।"

"नीले रंग का लिफ़ाफ़ा ? ह्वाट डू यू मीन टू से ?" कैप्टन इलावत असमंजस में पड़ गया।

"सर, कई लोगों की फ़ैन्सी होती है, फ़ैड होता है। वे खास रंग का पैड और लिफ़ाफ़े ही इस्तेमाल करते हैं। जिल की फ़िएन्सी का भी शायद नीला लिफ़ाफ़ा फ़ैड होगा।"

"ओ, आई सी, उसे आने दो, मैं पता करने की कोशिश करूँगा।"

"सर, मैंने एक-दो बार मज़ाक़ में पूछने की कोशिश की लेकिन वह बहुत सफ़ाई से विषय बदल देता है।"

"अच्छा ?" कैप्टन इलावत हैरानी से उसकी ओर देखने लगा, "एक बार फिर कोशिश करते हैं।" कैप्टन इलावत ने मुश्किल से अपनी बात खत्म की ही थी कि वृक्ष के नीचे जिल की गाड़ी रुकी। वह छलांग मारकर नीचे उतरा और बन्ध की ओर दौड़ने लगा। जिल निकट आ गया तो कैप्टन इलावत ऊँची आवाज़ में बोला, "जिल, तुम्हारी उम्र बहुत लम्बी है। हम तुम्हारे बारे में ही बात कर रहे थे।"

"थैंक्यू सर। मुझे बहुत खुशी है कि मेरे बारे में कहीं तो बात होती है।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने मुसकराते हुए कहा। उसने बहुत सुन्दर क़मीज़ पहनी हुई थी, पुल-ओवर को बाँहें गले के गिर्द लपेटी हुई थीं।

"जिल तुम बहुत स्मार्ट और हैण्डसम दिखाई दे रहे हो।"

"सर, आप ज़्यादा स्मार्ट और हैण्डसम लग रहे हैं। टच वुड। मेरा जी चाहता है कि आपको चूम लूँ।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने प्यार-भरे लहजे में कहा।

"जिल, बिलीव मी, तुम बहुत ज़्यादा खूबसूरत लग रहे हो।"

"सर, कोई लड़की होती तो उससे फ़ैसला करवा लेते। अब तो आपस में काम्पलीमेण्ट्स के आदान-प्रदानवाली बात है।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने कहा और फिर कैप्टन इलावत की आँखों में झांकता हुआ बोला, "सर, आप बहुत खुश नज़र आ रहे हैं।"

"येस जिल।"

"सर, क्या यहाँ से वापसी के ऑर्डर आ गये हैं ?"

"ओह, नो।"

"सर, फिर किस बात पर इतने खुश हैं ? यह बढ़िया सूट, चेहरे पर चमक, ड्रिंक और डिनर का इन्वीटेशन।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने कैप्टन इलावत को पाँव से सिर तक अपनी नज़रों में उतारते हुए पूछा, "सर, क्या आपने जैक पोट हिट किया है ?"

"येस। एक तरह से।"

इतनी देर में बी. एस. एफ़. का जवान प्रभाकरण पिल्ले उनके पास आ गया। वह सैल्यूट देकर एक ओर हट गया।

"पिल्ले, क्या हाल है तुम्हारा ?"

"ठीक है, सर।"

"कैसे आया है ? चीनी चाहिए ?"

"येस्सर। असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट साहब ने बोला है, थोड़ा चाय-पत्ती भी चाहिए।"

"ठहरो।" कैप्टन इलावत ने चारों ओर नजर दौड़ायी और एक जवान को सूबेदार ओमप्रकाश को बुलाने के लिए कहा।

सूबेदार ओमप्रकाश आ गया तो कैप्टन इलावत प्रभाकरण पिल्ले की ओर संकेत करता हुआ बोला, "साब, पिल्ले आया है। इन्हें चीनी और चाय की पत्ती चाहिए। इनकी कुछ मदद करो।"

"सर, सप्लाई-हवलदार से पूछता हूं।"

"साब, कुछ न कुछ जरूर कर दो।"

"अच्छा सर, अभी बुलाता हूं।" कहकर सूबेदार ओमप्रकाश चला गया।

लेफ्टिनेण्ट जिल पिल्ले को सम्बोधित करता हुआ बोला, "पिल्ले, आर यू फ्रॉम साउथ ?"

"येस्सर।"

"कौन-सी जगह ?"

"सर, मेरा गांव मदुराय से दस किलोमीटर पर है।"

"अच्छा ! तुम तो मेरे पड़ोसी हो। मैं मदुराय का हूं।"

लेफ्टिनेण्ट जिल और प्रभाकरण पिल्ले मलयालम में बातें करने लगे और वे एक-दूसरे में इतने व्यस्त हो गये कि उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि कैप्टन इलावत उनके पास खड़ा है।

सूबेदार ओमप्रकाश ने पिल्ले को आवाज दी तो लेफ्टिनेण्ट जिल तेज आवाज में बोला, "साब, दो मिनट, छह हफ्ते के बाद अपनी भाषा जाननेवाला आदमी मिला है, थोड़ा बातचीत करने दो। और पिल्ले तो मेरा पड़ोसी है।"

लेफ्टिनेण्ट सिंह और लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल को देखकर लेफ्टिनेण्ट जिल ने पिल्ले से विदा ली और उसे अपनी प्लाटून में आने को कहा। लेफ्टिनेण्ट सिंह और लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल को भी सिविलियन कपड़ों में देखकर उसने कैप्टन इलावत से पूछा, "सर, क्या हम किसी मैरेज पार्टी में जा रहे हैं ?" और फिर चारों ओर नजर दौड़ाकर बोला, "सर, करें शुरू, पौने छह तो हो गये हैं।"

"दस मिनट और ठहर जाओ। कहते हैं, धूप में ड्रिंक नहीं लेनी चाहिए।" कैप्टन इलावत ने लेफ्टिनेण्ट जिल को समझाते हुए कहा।

"सर, ह्विस्की के बारे में तो ऐसी कोई सुपरस्टीशन नहीं है। अमृत के बाद यही सबसे पवित्र ड्रिंक मानी गयी है।" लेफ्टिनेण्ट जिल ने कहा।

"ऐज़ यू प्लीज, कहाँ बैठोगे ?"

"सर, यहीं बैठते हैं, खुले में, मौसम भी बहुत सुहावना है।"

"नहीं, यहाँ अच्छा नहीं लगेगा। हमसे ज़्यादा तो जवान बोर्डम फ़ील कर रहे हैं। मेरे बंकर में चलो।"

"सर, आज जवानों के लिए फ़्री-ईशू रम कर दें। खुश हो जायेंगे।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने कहा।

"ज़रूर कर देते लेकिन वे खाना खा चुके हैं।"

कैप्टन इलावत ने अपने बंकर की ओर जाते हुए आसाराम को आवाज़ दी, "आसाराम, मेरे बंकर में लैम्प जला दो और अटैची में से रम की बोतल मेस में ले जाओ। तीन गिलास में रम और एक गिलास में पानी लाना।"

"देखो आसाराम, ड्रिंक के साथ सोडा लाना।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने कहा।

"सोडा यहाँ कहाँ ? सोडा बटालियन-हेडक्वार्टर से आगे नहीं पहुँचता।" कैप्टन इलावत ने बताया।

"अच्छा, पानी ही ले आना।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने बंकर के अन्दर प्रवेश करते हुए कहा।

वे अभी बैठने की व्यवस्था के बारे में सोच ही रहे थे कि बाहर तेज़ क़दमों की चाप सुनाई दी। एक जवान बंकर के अन्दर तेज़ी से घुस आया और झाँकता हुआ बोला, "सर टेलिफ़ोन है। आपको तुरत बुलाया है।"

"क्या हुआ ?"

"साब, पता नहीं, सूबेदार साब ने टेलिफ़ोन सुना है।"

"वे तेज-तेज़ क़दम उठाते हुए ऑप्रेशनल बंकर की ओर आ गये। कैप्टन इलावत ने बंकर में पांव रखा ही था कि सूबेदार ओमप्रकाश आवेग भरे स्वर में बोला, "सर, दुश्मन ने हमला कर दिया है।"

यह सुनकर वे भौंचक्के रह गये। कैप्टन इलावत ने आगे बढ़कर टेलिफ़ोन का रिसीवर उठा लिया, "गुड इवनिंग सर, कैप्टन इलावत स्पीकिंग।"

"गुड इवनिंग बन्धु !"

"येस मिश्रा, क्या हाल है ?"

"ठीक है बन्धु, वैलून इज़ अप।"

"ह्वाट हैपण्ड !" कैप्टन इलावत ने आवेग-भरी आवाज़ में पूछा।

"ब्रिगेड-हेडक्वार्टर से बस इतनी ही फ़्लेश आयी है। रेडियो-न्यूज़ में बताया गया है कि दुश्मन ने हमारे कुछ हवाई अड्डों पर अचानक हमले किये हैं और बहुत-से सेक्टरों में आरटिलरी फ़ायर शुरू कर दिया है।"

"हमारे लिए क्या ऑर्डर हैं ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"सी. ओ. साहब चाहते हैं कि कम्पनियों, बटालियन, ब्रिगेड-हेडक्वार्टर और

पोस्टों के नये कोड तुरत फ़ॉलो किये जायें। मैं लिख देता हूँ।" कैप्टन मिश्रा ने कहा और कुछ क्षणों के बाद बोला, "ब्रिगेड का नया कोड नाम एलीफ़ैन्ट, बटालियन का बुल, एल्फ़ा कम्पनी का फ़ॉक्स, ब्रेवो कम्पनी का कैट, चार्ली का टाइगर और डेल्टा का पैन्थर है। ओके ?"

"ओके। मैंने नोट कर लिये हैं।"

"आर वन का लता, आर टू का ऊषा, आर थ्री का कमला—ओके ?"

"ओके। और कोई बात ?"

"हाँ, आप अपनी कम्पनी को स्टैण्ड टू ऑर्डर कर दें।"

"हो गया।"

कैप्टन इलावत ने रिसीवर रखते हुए कहा, "दर्शन, तुम अपनी प्लाटून में जाओ। जिल, तुम तुरत अपनी पोज़ीशन सँभालो। नये कोड नाम नोट कर लो।"

आसाराम को हाथ में ट्रे लिये खड़ा देखकर कैप्टन इलावत ने पानी का गिलास उठा लिया। लेफ़्टिनेण्ट जिल, लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शन ने भी गिलास उठा लिये। कैप्टन इलावत ने अपना गिलास ऊपर उठाते हुए कहा, "टू अवर विक्टरी !"

"चीयर्स।" उन तीनों ने एक आवाज़ में कहा।

"सर, मज़ा नहीं आया। बहुत दिनों के बाद आज इवनिंग इन्ज्वाय करनी थी, बट दीज़ रेचड फ़ेलोज़ ! हमला कर दिया है। इतनी भी दुश्मनी क्या कि हमारी ड्रिंक डिस्टर्ब करें। ओके सर, मैं चला !" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने अपना गिलास एक ही साँस में खाली करते हुए कहा।

"आल दि बेस्ट जिल ! गॉड बी विथ यू। बाई-बाई।" कैप्टन इलावत ने गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया।

लेफ़्टिनेण्ट जिल के जाने के बाद कैप्टन इलावत कुछ क्षणों तक अपने विचारों में खोया रहा और फिर आसाराम को बुलाकर बोला, "मेरा यूनीफ़ॉर्म यहीं ले आओ। हैमलेट, स्टेनगन और ग्रिनेड-बेल्ट भी लाना।"

"सर, मैं भी यूनिफ़ॉर्म पहन आऊँ ।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"यहीं मँगवा लो। बहुत काम करना है और बहुत जल्दी।" कैप्टन इलावत ने कहा और सूबेदार ओमप्रकाश से बोला, "साब, क्वार्टर-मास्टर, हवलदार और वायरलेस-आपरेटर को आप अब अपने साथ ही रखें।"

आसाराम यूनिफ़ॉर्म ले आया तो कैप्टन इलावत ने बंकर में ही कपड़े तबदील कर लिये। मेमी का पत्र बायीं जेब में रखकर फ्लैप ऊपर से बन्द कर दिया। उसने हैण्डग्रिनेड-बेल्ट कमर से बाँध ली और स्टेनगन कुरसी की टाँग के साथ टिका दी।

टेलिफ़ोन की घण्टी बजते ही कैप्टन इलावत ने रिसीवर उठा लिया, "कैप्टन इलावत फ़्रॉम टाइगर।"

"इलावत, कर्नल गिल बोल रहा हूँ ? जिल की प्लाटून को लता से मूव करके ऊपा एरिया में डेवलप कर दो। मूवमेण्ट साइलेण्ट होना चाहिए। अगर दुश्मन का पेट्रोल आये तो ऑटोमेटिक फ़ायर नहीं खोलना।"

कैप्टन इलावत ने तुरत ही लेफ़्टिनेण्ट जिल को टेलिफ़ोन पर लिया और उसे पोजीशन समझाकर मार्च करने का ऑर्डर देता हुआ बोला, "जिल, तुम्हारी मीडियम मशीनगन के लिए पोजीशन तैयार करवाने लगा हूँ। तुम जल्दी से जल्दी मार्च करो, बहुत खामोशी से।"

कैप्टन इलावत फ़ील्ड-मैप पर लेफ़्टिनेण्ट जिल की प्लाटून की तैनाती के लिए पोजीशनों पर निशान लगाने लगा। उसने अन्य प्लाटूनों की पोजीशनों में छोटी-मोटी तबदीलियाँ कीं और नक़्शा लेफ़्टिनेण्ट सिंह की ओर बढ़ाता हुआ बोला, "सिंह, जिल की प्लाटून आने से पहले ही ये मोरचाबन्दियाँ बन जानी चाहिए। ऊपा से बन्ध का रास्ता हर हालत में डिफ़ेण्ड करना है।"

"येस्सर! सर, कितनी फ़ोर्स लगाऊँ?" सिंह ने अपने नक़्शे पर निशान लगा लिये।

"दस जवान काफ़ी होंगे। बन्ध की पिछली ढलान में शेल्टर कल बन जायेंगे। लेकिन यह काम तुरत होना चाहिए। सूबेदार साहब को साथ ले लो।" कहकर कैप्टन इलावत फिर नक़्शे पर झुक गया।

पौन घण्टे के अन्दर-अन्दर लेफ़्टिनेण्ट जिल की प्लाटून ने अपने नये मोरचे सँभाल लिये। कैप्टन इलावत, लेफ़्टिनेण्ट सिंह, सूबेदार ओमप्रकाश, क्वार्टर-मास्टर-हवलदार सेवाराम और वायरलेस-ऑपरेटर सागरचन्द बन्ध पर आ गये। कैप्टन इलावत एक-एक मोरचे में जाकर प्रत्येक जवान का नाम लेकर साहस बढ़ाता हुआ लेफ़्टिनेण्ट जिल की प्लाटून की ओर बढ़ गया।

लेफ़्टिनेण्ट जिल प्रत्येक मोरचे में जाकर जवानों को उनका टास्क समझा रहा था। कैप्टन इलावत की आवाज़ सुनकर वह बाहर आ गया। "गुड इवनिंग सर!"

"वेरी गुड इवनिंग जिल! क्या हो रहा है?"

"सर, लड़कों को उनका टास्क बता रहा था।"

कैप्टन इलावत लेफ़्टिनेण्ट जिल की ओर झुकता हुआ बोला, "जिल, अब तो तुम्हें बोर्डम महसूस नहीं हो रही होगी। देख लो, दुश्मन तुम्हारा कितना खयाल रख रहा है! तुम्हारी दिलचस्पी का सामान पैदा कर दिया है।"

"सर, खाक इन्तज़ाम किया है। पहले दुश्मन के टाउन में रोशनियाँ होती थीं। मैं उन्हें देखता रहता था। आज वे भी नहीं हैं। सर, अब तो मैं उस टाउन पर मार्च कर सकता हूँ?" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने गोपनीय स्वर में पूछा।

"जिल, डोण्ट बी सिली, तुम क्या समझते हो कि वहाँ लड़कियाँ जयमालाएँ

लिये हुए तुम्हारे इन्तज़ार में खड़ी है ?"

"सर, आज तो हम बहुत उल्लू बने। ड्रिंक भी गयी और डिनर भी। अच्छे आपके गेस्ट बने, घर से बेघर भी हुए।"

"तुम्हें ड्रिंक मिलेगी, डिनर मिलेगा, घर मिलेगा, और...." कैप्टन इलावत अपना वाक्य पूरा करने के लिए उचित शब्दों के लिए सोचने लगा तो लेफ़्टिनेण्ट सिंह बोला, "घरवाली भी मिलेगी।"

वे दबी आवाज़ में हँस पड़े। कैप्टन इलावत ने पूछा, "डैम इट, उन सात में से तुम्हारी असली फ़िएन्सी कौन-सी है ?"

"सर, सभी हैं।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

"लेकिन शादी तो एक के साथ ही करोगे। इनमें वह भाग्यवती कौन है ?"

"सर, इस बारे में बताना बहुत मुश्किल है। देखना पड़ेगा कि उनमें से अवेलेबल कौन है।"

"आर दे सो फास्ट ?" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने पूछा।

"फ़ास्ट होने की बात नहीं है। यंग गर्ल्ज़ हमेशा यह चाहती हैं कि उन्हें एडमायर किया जाये, उनकी प्रशंसा की जाये, एण्ड यू नो, एडमीरेशन थ्रू आर्मी पोस्टल सर्विस इज नो एडमीरेशन। लेटर पर पचास मोहरें लगती हैं।"

"फिर भी तुमने कुछ तो सोचा होगा ?"

"सर, मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं। खाली पेट शादी नहीं सूझती। सेकण्ड लेफ़्टिनेण्ट को जो 'पे' मिलती है उसमें एक शर्ट बनाने के लिए पैसे नहीं बचते।" कहकर लेफ़्टिनेण्ट जिल बात पलटता हुआ पुनः बोला, "सर, आप अभी कह रहे थे कि ड्रिंक भी होगी और डिनर भी। सर्दी सता रही है और भूख भी।"

"सर्दी तो सबको सता रही है। जो जवान मोरचों के अन्दर बैठे हैं उन्हें सर्दी ज्यादा लग रही है। पहले उनका हक़ है।" कैप्टन इलावत ने गम्भीर स्वर में कहा।

"सर, मैं तो मज़ाक कर रहा था।" लेफ़्टिनेण्ट जिल सिर झटकता हुआ बोला।

"जिल, क्या तुम्हें सचमुच भूख लगी है ?"

"नो सर, नॉट एट आल। मेरे पास फ़ील्ड-राशन है।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने एक-एक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

"वह एमरजेन्सी के लिए रखो। तुम हमारे साथ आओ, इकट्ठे खाना खायेंगे। ऑल इज क्वाइट सो फार इन अवर एरिया।"

"सर, ज़रूर चलूँगा।"

वे एक-दूसरे से कुछ फ़ासला छोड़कर कम्पनी-हेडक्वार्टर की ओर आ रहे थे कि उनके पश्चिम में अचानक मशीनगन का फ़ायर होने लगा। फ़ायर की आवाज़

इतनी तेज़ थी जैसे बहुत-सी मशीनगनों के एक साथ मुँह खुल गये हों। वे रुककर उस ओर देखने लगे। कैप्टन इलावत सोच में डूबी हुई आवाज़ में बोला, "फ़ायर ब्रिज-एरिया से आ रहा है।"

"येस्सर!" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने चिन्तित स्वर में कहा, "सर, मैं अपनी प्लाटून के साथ ही रहूँगा। हू नोज़? आज क़िस्मत बहुत ही खराब है। दुश्मन मुझे आपकी किसी भी इन्वीटेशन से फ़ायदा नहीं उठाने देना चाहता।"

"जिल, आई एम सो सॉरी। मैं खाना यहाँ भेजने का बन्दोबस्त करता हूँ।" कहकर कैप्टन इलावत अपने साथियों सहित कम्पनी-हेडक्वार्टर में आ गया। उसे देखते ही लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल बोला, "सर, बटालियन-हेडक्वार्टर से अभी मेसेज आया है कि ब्रिगेड-कमाण्डर और सी. ओ. साहब हमारी कम्पनी में आ रहे हैं।"

"कब?"

"सर, कैप्टन मिश्रा ने कहा था कि वे दस मिनट में चलेंगे।"

कैप्टन इलावत ने सूबेदार ओमप्रकाश की ओर देखते हुए कहा, "साब, ब्रिगेड-कमाण्डर और सी. ओ. साहब आ रहे हैं। सन्तरी-पोस्ट को एलर्ट कर दो कि वे चौकस रहें।"

"येस्सर।" कहकर सूबेदार ओमप्रकाश बंकर से बाहर चला गया और सन्तरी-पिकेट के पास जाकर बोला, "ओह मुन्नुओ, सुनाओ की हाल है?"

"ठीक है साब।"

"देखो, चौकस रहना! कोई ढील नहीं होनी चाहिए, दुश्मन किसी भी भेस में आ सकता है।"

सूबेदार ओमप्रकाश कैप्टन इलावत को रिपोर्ट देकर एक ओर खड़ा हो गया।

"साब, चाय का इन्तज़ाम हो सकता है?"

"जी साब, मैंने तो जवानों को उनके मोरचों में चाय दी है।"

कैप्टन इलावत और सूबेदार ओमप्रकाश बंकर से बाहर आकर टाउन की ओर देखने लगे जिधर से ब्रिगेड-कमाण्डर और कर्नल गिल को आना था। कुछ ही समय के बाद उन्हें जीप के इंजन की आवाज़ सुनाई दी।

वे एक ऐसे प्वाइण्ट पर आ खड़े हुए जहाँ से रास्ते और सन्तरी-पोस्ट दोनों दिखाई देते थे। चाँदनी में जीप नज़र आ रही थी और उसके अगले पहियों के बीच लाल रोशनी का एक छोटा-सा धब्बा भी।

वे दोनों कुछ और आगे बढ़ गये। अचानक ही सन्तरी-पोस्ट से एक साया-सा लपका और उसकी आवाज़ इंजन की घूँ-घूँ पर छा गयी, "थम!"

जीप झटके के साथ रुक गयी। दोनों पहियों के बीच लाल रोशनी का धब्बा साफ़ नज़र आने लगा था।

"आपका पासवर्ड क्या है?"

"तौर। तुम्हारा पासवर्ड क्या है ?" ब्रिगेडियर स्वामी ने पूछा।

"तलवार।" सन्तरी ने चुस्ती से कहा और राइफ़ल के बट पर हाथ मारकर ब्रिगेडियर को सलामी देकर बोला, "राम-राम साब!"

"राम-राम।"

"साब, जीप की अगली लाल बत्ती बुझा दें।"

"तुम्हें पता नहीं कि ब्रिगेडियर साहब की गाड़ी के आगे रात को एक लाल बत्ती जलती है।" ब्रिगेडियर स्वामी ने रोब से कहा।

"साब, पीस टेम में जलता है। यहाँ नहीं जलेगा। लड़ाई शुरू है।"

"जवान, तुमको मालूम नहीं कि हम ब्रिगेड-कमाण्डर हैं। जो चाहें कर सकते हैं।"

"साब, मालूम है, लेकिन हुक्म है कि जो पासवर्ड नहीं बताता, रोशनी जलाता है और मना करने पर भी नहीं बुझाता वह दुश्मन है।" सिपाही केवलसिंह ने गोली चलाने की पोज़ीशन में सख्त आवाज़ में कहा।

सूबेदार ओमप्रकाश का दिल धक से रह गया और वह बहुत बेचैन आवाज़ में बोला, "सर केवलसिंह कहीं सचमुच गोली चला ही न दे।"

"केवलसिंह रुक जाओ।" कैप्टन इलावत ने मज़बूत आवाज़ में कहा और तेज़ रफ़्तार से बन्ध से नीचे उतरकर सरकण्डों को चीरता हुआ सन्तरी-पोस्ट पर पहुँच गया।

"गुड इवनिंग सर।" कैप्टन इलावत ने दायें हाथ से सन्तरी की राइफ़ल की बैरल को ऊपर उठाते हुए कहा।

"गुड इवनिंग।"

"सर, मैं कैप्टन इलावत हूँ, टाइगर कम्पनी का ओ. सी.।"

"ओह, आई सी। हाउ डू यू डू ?"

"फ़ाइन, थैंक्यू सर।" कैप्टन इलावत बहुत नम्र स्वर में बोला।

"सर, आप रेड लाइट बुझा दें।"

"ओह श्योर! लेकिन मुझे एक ही डर है।" ब्रिगेडियर स्वामी ने जीप से नीचे उतरकर कहा, "कल को जब मैं पीस-स्टेशन में रेड लाइट ऑन करके ड्राइव करूँगा तो आप यंग आफ़िसर्स ही उँगली उठायेंगे कि ओल्डमैन को देखो, यहाँ गाड़ी के आगे तेज़ रेड लाइट जलाकर चलता है और वार-फ़्रण्ड पर लाल बत्ती बुझाकर ड्राइव करता था।" ब्रिगेडियर स्वामी दबी आवाज़ में हँसने लगा।

ब्रिगेडियर स्वामी के पीछे-पीछे कर्नल गिल भी जीप से उतरा तो कैप्टन इलावत ने आगे बढ़कर कहा, "गुड इवनिंग, सर।"

"हैलो, सनी, वेरी गुड इवनिंग! कैसे हो ?"

"फ़ाइन सर, थैंक्यू।" कैप्टन इलावत कर्नल गिल के निकट जाकर बोला।

"सर, आई एम सॉरी ! ब्रिगेड-कमाण्डर साहब को लाल बत्ती बुझानी पड़ी है।"

"इलावत, टेक इट इज़ी। मैं बहुत खुश हूँ। वण्डरफ़ुल !" कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत का कन्धा थपथपाते हुए कहा।

बन्ध पार करके वे सब ऑप्रेशनल बंकर में आ गये। ब्रिगेडियर स्वामी फ़ील्ड-मैप पर कैप्टन इलावत की कम्पनी की डेप्लायमेण्ट देखने लगा, "तुम्हारी एम. एम. जी. पोज़ीशनें कहाँ हैं ?"

"सर, ये रहे।" कैप्टन इलावत ने फ़ील्ड-मैप पर दो काले सर्कल दिखाते हुए कहा।

"गुड। अगर दुश्मन हुक करके ऊषा पोस्ट के सामने तुम्हारे पीछे आ जाये तो उसे पछाड़ने का क्या बन्दोबस्त किया है ?"

"सर, यहाँ मेरी एक प्लाटून पड़ी है। दुश्मन आया तो उसे गले से पकड़ लेगी।"

"गुड ! आज इधर दुश्मन की कोई एक्टिविटी देखी।"

"नो सर। आल इज़ क्वाइट सो फ़ार।"

"हमने ब्रिज-एरिया में आज का स्टाक पूरा कर लिया है। पेट्रोल-पार्टी भेजी थी। उसपर दुश्मन ने अपना आटोमेटिक फ़ायर खोलकर अपनी पोज़ीशनें व्यक्त कर दी हैं। आपने मीडियम मशीनगन का फ़ायर जरूर सुना होगा।"

"येस्सर, कोई आधा-पौन घण्टे तक जारी रहा।"

"येस, अब हमें इस एरिया में दुश्मन के मोरचों की टोह लगानी है। तुम्हारी कम्पनी से एक पेट्रोल-पार्टी नदी को पार करके दुश्मन के एरिया में जायेगी।" ब्रिगेडियर स्वामी ने कहा।

"येस्सर ! मैं स्वयं जाऊँगा।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"नो। तुम नहीं जाओगे। मैं तुम्हें किसी बड़े एक्शन के लिए रिज़र्व रखना चाहता हूँ।" कर्नल गिल ने कहा।

"इलावत, पेट्रोल-पार्टी कितनी देर में तैयार हो सकती है ?"

"सर, पन्द्रह मिनट में।"

"ओके। डू इट।"

कैप्टन इलावत ने अफ़सरों और जे. सी. ओज में से वालण्टियर माँगे। उन सबने वालण्टियर कर दिया तो उनके नाम की पर्चियाँ निकाली गयीं। लेफ़्टिनेण्ट जिल और नायब सूबेदार दयाराम के नाम की पर्चियाँ निकलीं। पेट्रोल-पार्टी के लिए ग्यारह जवान तीनों प्लाटूनों से लिये गये और वायरलेस-आपरेटर सिराजदीन को पेट्रोल-पार्टी के साथ अटैच किया गया।

कैप्टन इलावत ने पेट्रोल-पार्टी ब्रिगेडियर स्वामी के सामने पेश की।

"सर, एक ऑफ़िसर, एक जे. सी. ओ. और बारह जवान तैयार हैं।"

"इनके पास हथियार कौन-कौन-से हैं ?"

"सर, एक लाइट मशीनगन, दो स्टेनगन और ग्यारह राइफलें और हैण्डग्रिनेड। सर, पेट्रोल-पार्टी का टास्क क्या है ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"आप लोगों को यह पता लगाना है कि दुश्मन का इस एरिया में क्या प्लान है और उसकी कैसी मोरचेबन्दियां हैं। बिना कारण खतरा में पड़ने से वचना है। पेट्रोल तीन बजे वापस आ जानी चाहिए। ओके ! आल दि बेस्ट ! गॉड वी विथ यू।" ब्रिगेडियर स्वामी और कर्नल गिल ने लेफ्टिनेण्ट जिल के साथ गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा।

कैप्टन इलावत कुछ दूर तक पेट्रोल-पार्टी के साथ गया और लेफ्टिनेण्ट जिल का हाथ अपने हाथ में लेता हुआ बोला, "टेक हार्ट माइ ब्वाय। जबतक तुम वापस नहीं आओगे मुझे....।" कैप्टन इलावत आगे कुछ न कह सका और लेफ्टिनेण्ट जिल का हाथ दबाता हुआ बोला, "जिल, गॉड बी विथ यू।"

"सर", लेफ्टिनेण्ट जिल ने स्नेह-भरे स्वर में कहा, "मैं जिन्दगी में पहली बार विदेश जा रहा हूँ। मुझे छाती से लगाकर विदा करें।"

कैप्टन इलावत ने लेफ्टिनेण्ट जिल को अपनी भुजाओं में ले लिया। वे दोनों एक दूसरे से लिपट गये और कुछ क्षणों तक वैसे ही खड़े रहे।

उन्होंने एक दूसरे को भीगी हुई आँखों से देखा और फिर लेफ्टिनेण्ट जिल सबसे आगे बन्ध से नीचे उतरकर सरकण्डों में खो गया।

सतरह

लेफ्टिनेण्ट जिल की पेट्रोल-पार्टी को दुश्मन के क्षेत्र में गये दो घण्टे हो गये थे। लेकिन उनकी ओर से कोई सन्देश नहीं मिला था। बहुत दूर से कभी-कभार धमाकों की आवाजें आती, वरना सारे वातावरण पर बोझिल-सी निस्तब्धता छायी हुई थी। फीकी चाँदनी ने सारे वातावरण को रहस्यमय बना दिया था।

कैप्टन इलावत मामूली-सी आहट पर भी चौंक जाता और आँखें फाड़कर दुश्मन के इलाके में दूर-दूर तक देखने की कोशिश करता। वहाँ भी वातावरण शान्त था। उसका ध्यान बार-बार लेफ्टिनेण्ट जिल की पेट्रोल-पार्टी की ओर चला जाता और चिन्ता बढ़ने लगती। जब बेचैनी असह्य होने लगी तो उसने कर्नल गिल को टेलिफ़ोन किया "सर, जिल की पेट्रोल-पार्टी को गये दो घण्टे से ज्यादा समय हो चुका है। उनसे कोई मैसेज नहीं मिला। एक्सक्यूज मी सर, मुझे उनके बारे में

चिन्ता हो रही है।"

"टेक हार्ट : माइ ब्वाय ! वे दुश्मन के एरिया में पेट्रोलिंग के लिए गये हैं, हाथ लगाने नहीं। घबराओ नहीं।" कहकर कर्नल गिल ने फ़ोन रख दिया।

सुबह के तीन बज रहे थे। कैप्टन इलावत की आँखें बोझिल हो रही थीं। वह अपने आपको सचेत रखने के लिए कभी कन्धों को झटकता और कभी टाँगों को।

अचानक ही ऊषा पोस्ट के एरिया में रोशनी का फ़व्वारा-सा फूटा और साथ ही बहुत ज़ोर से धमाका हुआ। उनके पाँव तले जमीन काँप गयी और धमाके की गूँज चारों ओर फैल गयी।

"कवर ले लो! ज़मीन पर लेट जाओ।" कैप्टन इलावत ने तीव्र स्वर में कहा।

एक के बाद दूसरा—कई धमाके हुए। कैप्टन इलावत भागकर ऑप्रेशनल बंकर में आ गया और टेलिफ़ोन पर बटालियन-हेडक्वार्टर लेकर बोला, "सर, दुश्मन ने ऊषा के जनरल एरिया में शेलिंग शुरू कर दी है।"

"हाँ, धमाके हमने भी सुने हैं। इलावत, एक सेकेण्ड होल्ड करो, मैं टेलिफ़ोन सी. ओ. साहब को दे रहा हूँ।" मेजर यादव ने कहा।

"सर, दुश्मन ने तोप फ़ायर खोल दिया है। हमारे लिए क्या ऑर्डर है।"

"अगर दुश्मन ऊषा पर हमला करता है और क़ब्ज़ा करके वहीं रुक जाता है तो तुम्हें फ़िलहाल कुछ नहीं करना है, सिर्फ़ उनपर नज़र रखनी है। अगर दुश्मन बन्ध पर अटैक करता है तो उसे हर हालत में रोकना है। बाक़ी जैसे-जैसे सिचुएशन और बैटल डिवेलप होगी वैसे ही एक्शन लेंगे।" कर्नल गिल ने कहा। कैप्टन इलावत ने रिसीवर रख दिया और गहरी सोच में डूब गया।

जब भी धमाका होता तो बंकर की कच्ची दीवारों से थोड़ा-सी मिट्टी गिरती और मेज़ और फ़र्श पर बिखर जाती। कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह को टेलिफ़ोन किया, "हैलो सिंह, क्या हाल है?"

"ठीक है सर, क्रैकर्ज़ का लुत्फ़ उठा रहे हैं।"

"कोई नुक़सान तो नहीं हुआ अपना?"

"नहीं सर, अभी तक तो नहीं। ऐसा लगता है कि ऊषा पोस्ट के अन्दर कुछ गोले गिरे हैं।"

"माइ गुडनेस, कोई नुक़सान तो नहीं हुआ वहाँ?" कैप्टन इलावत ने चिन्तित स्वर में पूछा।

"सर, कोई इन्फ़ॉर्मेशन नहीं है लेकिन वहाँ आग ज़रूर भड़की है। शायद उनका छप्पर जल गया है। नायब सूबेदार रामसिंह की कमान में एक पेट्रोल-पार्टी भेजी है। अभी वे वापस नहीं आये।"

"सिंह, जिल का कुछ पता नहीं चला! उसे गये तीन घण्टे से....।" कैप्टन

इलावत की बात जोरदार धमाके में डूब गयी और पूरा बंकर हिल गया।

"सिंह, बन्ध पर भी शेलिंग होने लगी है। तुमने धमाका सुना होगा।"

"येस्सर।"

"अच्छा सिंह, मैं आ रहा हूँ। जवानों को कहो, सचेत रहें और बन्ध पर न निकलें।"

सूबेदार ओमप्रकाश को ऑप्रेशनल बंकर में छोड़कर कैप्टन इलावत ने क्वार्टर-मास्टर हवलदार, वायरलेस-ऑपरेटर और बेटमैन आसाराम को साथ लिया और लेफ़्टिनेण्ट सिंह की प्लाटून की ओर चला गया।

दुश्मन ने बन्ध के पार भी गोलाबारी शुरू कर दी थी। उनके चारों ओर गोले फट रहे थे। कैप्टन इलावत ने प्रत्येक मोरचे में जाकर जवानों का हाल पूछा और उनका हौसला बढ़ाता हुआ बोला, "पुत्रो, तुम शेर हो! तैयार रहो!"

लेफ्टिनेण्ट सिंह की प्लाटून तक पहुँचते-पहुँचते उन्हें छह बार जमीन पर लेटना पड़ा। कैप्टन इलावत जब लेफ्टिनेण्ट सिंह के बंकर में पहुँचा तो वह बहुत घबराया हुआ था।

"हैलो सिंह, क्या हुआ? तुम इतने परेशान क्यों हो?"

"सर, मेरी प्लाटून का एक जवान दीनानाथ मिसिंग है।"

"कहाँ था वह?"

"सर, मैंने रूपा के एरिया में जो पेट्रोल-पार्टी भेजी थी वह उसमें था। वे वापस आ रहे थे कि दुश्मन ने उस एरिया में शेलिंग शुरू कर दी। सर, नायब सूबेदार रामसिंह पेट्रोल-पार्टी के कमाण्डर थे। साब बताओ, क्या हुआ था?" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने नायब सूबेदार रामसिंह से कहा।

कैप्टन इलावत सूबेदार रामसिंह की ओर देखने लगा। उसके चेहरे पर उदासी और घबराहट छायी हुई थी। वह रुक-रुककर बोला, "सर, हम वापस आ रहे थे, आधा रास्ता आ गये थे जब दुश्मन ने गोला फेंकना शुरू किया। दीनानाथ पीछे रह गया था। हमने बन्ध पर आकर शेल्टर ले लिया लेकिन वह एक वृक्ष के नीचे खड़ा हो गया। उसे आवाज़ें भी दी लेकिन वह वहीं टिका रहा। फिर एक गोला वृक्ष से टकराया और टहना टूट गिरा। बहुत ज़ोर का धमाका हुआ। हमने दीनानाथ को बहुत आवाज़ें दी लेकिन उससे कोई उत्तर नहीं मिला।" नायब सूबेदार रामसिंह के चेहरे पर उदासी और भी ज्यादा गहरी हो गयी।

कैप्टन इलावत कुछ क्षणों तक गहरी सोच में डूबा रहा और फिर उसने पूछा, "वृक्ष बन्ध से कितनी दूर है?"

"सर, यहाँ से सीधे बन्ध पर चढ़ें तो ग्यारह बजे की ओर डेढ़ सौ गज़ पर है।"

कैप्टन इलावत लेफ़्टिनेण्ट सिंह की ओर देखता हुआ बोला, "वहाँ पता करने भेजा किसी को?"

"नो सर, शेलिंग बहुत ज़ोर की हो रही है। बन्द हो जाये तो मैं आप जाऊँगा।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने कहा।

"सिंह, तुम दुश्मन की मरसी (दया) का इन्तज़ार करना चाहते हो।" कैप्टन इलावत ने तीखी नज़रों से लेफ़्टिनेण्ट सिंह की ओर देखते हुए कहा, "वह शायद ज़ख़्मी हुआ हो। टाइम पर मेडिकल एड मिलने से उसकी जान बच सकती है।"

"सर, मैं अभी जाता हूँ।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह बोला।

"नहीं, तुम अभी गोलाबारी बन्द होने का इन्तज़ार करो। दुश्मन को शायद तुमपर दया आ जाये।" कैप्टन इलावत ने बहुत तीखे स्वर में कहा और मुड़ता हुआ नायब सूबेदार रामसिंह से बोला "साब, स्ट्रेचर के साथ दो जवान ले लो।"

बन्ध पर वे एक क्षण के लिए रुके। कैप्टन इलावत ने वृक्ष की पोज़ीशन देखी और वे तेज़-तेज़ क़दम उठाते हुए बन्ध से नीचे उतर गये। कैप्टन इलावत सबसे आगे था और वह शेलिंग से बेपरवाह बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। थोड़ी देर में ही वे वृक्ष के नीचे खड़े थे। एक तना टूटकर झूल रहा था। कैप्टन इलावत और नायब सूबेदार रामसिंह बहुत ध्यान से वृक्ष के नीचे ज़मीन की ओर देखने लगे। वृक्ष के तने के पास दो टाँगें पड़ी देखकर कैप्टन इलावत के रोंगटे खड़े हो गये और वह सरगोशी में बोला, "पुअर चैप! दीनानाथ का आधा धड़ शेल से उड़ गया है, सिर्फ़ कमर से नीचे का हिस्सा ज़मीन पर पड़ा है।"

कैप्टन इलावत टूटे हुए तने के बिलकुल निकट जाकर ऊपर की टहनियों की ओर देखने लगा। टहनियों में फँसा हुआ ऊपर का धड़ उसे नज़र आ गया। कैप्टन इलावत के शरीर में सिहरन-सी हो उठी। उसने नायब सूबेदार रामसिंह को दीनानाथ का ऊपरी धड़ दिखाया और बहुत दुख-भरी आवाज़ में बोला, "ह्वाट ए डेथ!"

कैप्टन इलावत निचले धड़ को देखता हुआ बोला, "इसे स्ट्रेचर पर डालो। यहाँ रहने दिया तो गीदड़ खा जायेंगे। ऊपरी धड़ सवेरे उठायेंगे। पुअर चैप!"

दीनानाथ का धड़ एक शेल्टर में रखकर उसे चादर से ढाँप दिया गया। उसके शरीर के दोनों टुकड़े कैप्टन इलावत की आँखों के सामने घूम रहे थे और अफ़सोस के साथ-साथ गुस्सा भी बढ़ रहा था। अपने हेडक्वार्टर में आकर उसने बटालियन-हेडक्वार्टर को टेलिफ़ोन किया, "सी. ओ. साहब हैं?" उसका लहजा बहुत रूखा था।

"बन्धु, क्या बात है? बहुत गुस्से में हो?" कैप्टन मिश्रा ने पूछा।

"मिश्रा, मेरा एक जवान दुश्मन की शेलिंग में मारा गया है। हमें क्या ऑर्डर्स हैं?" क्या इस बन्ध पर बिना गोली चलाये और दुश्मन की शक्ल को बिना देखे ही हमें मरना है या और भी कुछ करना है?"

"बन्धु, ऑर्डर्स बहुत क्लीयर हैं। सी. ओ. साहब कान्फ्रेन्स के लिए ब्रिगेड-हेडक्वार्टर गये हुए हैं। जब आयेंगे, तुम्हारा मेसेज दे दूँगा।"

कैप्टन इलावत ने उत्तर दिये बिना ही रिसीवर रख दिया और ज़मीन पर पाँव पटकता हुआ बोला, "कान्फ्रेन्स....कान्फ्रेन्स....कान्फ्रेन्स ! जब पूछो कान्फ्रेन्स ! मुझे तो इस शब्द से ही चिढ़ हो गयी है। हम यहाँ लड़ने के लिए आये हैं या कान्फ्रेन्स करने।"

लेफ्टिनेण्ट जिल का खयाल आते ही कैप्टन इलावत बहुत ज्यादा उदास हो गया। वह चिन्तित स्वर में बुदबुदाया कि अगर आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर जिल वापस नहीं आया तो इसका मतलब है कि वे....। यह सोचकर कैप्टन इलावत सिहर उठा कि ईश्वर न करे, अगर वे पकड़े गये तो जंग शुरू होने के बाद पहले नौ घण्टों में उसकी कम्पनी का एक जवान डेड और चौदह मिसिंग होंगे और ऐसा होगा एक भी गोली चलाये बिना। टेलिफ़ोन की घण्टी बज रही थी लेकिन कैप्टन इलावत उससे बेपरवा खाली-खाली आँखों से देख रहा था। सूबेदार ओमप्रकाश ने रिसीवर उठा लिया और फिर कैप्टन इलावत की ओर बढ़ाता हुआ बोला, "सर, आपके लिए है।"

"हैलो ! कैप्टन इलावत स्पीकिंग।" उसने बहुत चिड़चिड़ी आवाज़ में कहा।

"इलावत, तुम्हारे जवान की मौत का सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ है।" कर्नल गिल ने सहानुभूति-भरी आवाज़ में कहा और फिर आग्रहपूर्ण स्वर में बोला, "सनी, टेम्पर मत लूज़ करो। अगर तुम टेम्पर लूज़ करोगे तो ज्यादा जवानों की जानें जायेंगी। शान्त रहो ! अच्छा कमाण्डर वही है जो नुक़सान होने पर भी शान्त रहता है। मैं आधे घण्टे तक तुम्हारे पास आ रहा हूँ।"

"सर, आप अभी मत आयें प्लीज़। बन्ध के पार टाउन की ओर ट्रैक के जनरल एरिया में भी दुश्मन बहुत ज़ोरदार गोलाबारी कर रहा है।"

"नेवर माइण्ड, इलावत ! मैं आ रहा हूँ। टेक इट ईज़ी।"

कैप्टन इलावत गहरी सोच में डूबा हुआ बंकर से बाहर आ गया। फीकी चाँदनी में वह अधखुली आँखों से सामने देखने लगा। दूर से आ रही गीदड़ों की धीमी आवाज़ें सुनकर वह दंग रह गया और फिर सब कुछ भूलकर एकाग्र मन से उन आवाज़ों के रहस्य को जानने का यत्न करने लगा। कुछ क्षणों के पश्चात् उसके होंठों पर मुसकान आ गयी और वह सूबेदार ओमप्रकाश की ओर मुड़ता हुआ बोला, "साब, सुन रहे हो गीदड़ों की आवाज़ें ?"

"जी सर !" सूबेदार ओमप्रकाश ने उन आवाज़ों को ध्यान से सुनते हुए कहा।

"इतनी शेलिंग हुई है और फिर भी गीदड़ बोल रहे हैं। मस्ट बी वार-वैटरन-जैकाल्ज़।"

कैप्टन इलावत और सूबेदार ओमप्रकाश ध्यान से उन आवाज़ों को सुनने लगे। थोड़े-थोड़े समय के बाद तीन दिशाओं से आवाज़ें आ रही थीं।

"साब, दुश्मन का अटैक आ रहा है। तीन ओर से—पश्चिम, उत्तर-पश्चिम

और उत्तर से।"

यह सब देख-सुनकर कैप्टन इलावत को विश्वास-सा होने लगा कि लेफ़्टिनेण्ट जिल की पेट्रोल-पार्टी को शायद दुश्मन ने पकड़ लिया है और उनसे हमारी पोजीशनों का सुराग़ पा लिया है। इसी दौरान कैप्टन इलावत के वायरलेस-सेट पर टिक-टिक होने लगी। ऑपरेटर ने स्विच ऑन कर दिया।

"हैलो....हैलो....हैलो....।" और फिर वह रिसीवर कैप्टन इलावत की ओर बढ़ाता हुआ विस्मित स्वर में बोला, "सर, रिवर-फ़िश स्पीकिंग।"

"रिवर-फ़िश।" कैप्टन इलावत इतना उत्तेजित हो गया कि उसके मुँह से हलकी-सी चीख निकल गयी...."हैलो रिवर-फ़िश, ओवर।"

"येस आर यू टाइगर ? ओवर।"

"येस, टाइगर स्पीकिंग, ओवर।"

एक गोले की सीटी बहुत पीछे खत्म हो गयी और वे एकदम ज़मीन पर लेट गये। "सर, आप गीदड़ों की आवाजें सुन रहे हैं ? ओवर।"

"येस, रिवर-फ़िश, ओवर।"

"वे आ रहे हैं, ओवर।"

"कितनी स्ट्रेंथ में, ओवर।"

"सर, मैं दोबारा कॉल करूँगा, ओवर।"

"आर यू सेफ़, ओवर ?"

"येस्सर, ओवर।

"थैंक गॉड।" कैप्टन इलावत ने धीमे स्वर में कहा और लम्बी सांस छोड़ी जैसे मन से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

"साब, तीनों प्लाटूनों को सावधान कर दो कि दुश्मन आ रहा है। फ़ायर सिर्फ़ उस समय खोलना है जब दुश्मन बन्ध को ओर बढ़ेगा।" कैप्टन इलावत बहुत उत्तेजित था।

सूबेदार ओमप्रकाश जाने लगा तो कैप्टन इलावत ने उसे रोक लिया।

"साब, आप ऑप्रेशनल बंकर में रहें, मैं जाता हूँ। पन्द्रह मिनट में वापस आया।"

कैप्टन इलावत पहले लेफ़्टिनेण्ट सिंह के पास गया और उसे पूरी बात समझाकर बोला, "तुम अपनी प्लाटून से एक नायक और दो जवान ऊषा पोस्ट की ओर एक बजे (१०५ डिग्री) पर भेज दो। अगर उधर से दुश्मन बन्ध की ओर एडवान्स करे तो वे हमें अर्ली वार्निंग दे दें।"

कैप्टन इलावत वहाँ से लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की प्लाटून में गया। वह अपने मोरचे में नहीं था। उसकी प्लाटून के जवान उसकी तलाश में दौड़ते हुए उसे धीमे स्वर में आवाज़ें दे रहे थे। दो-तीन मिनटों के बाद लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल आँखें मसलता

हुआ बन्प पर आ गया और भारी स्वर में बोला, "गुड मानिंग सर !"

"गुड मानिंग दर्शन ! तुम कहाँ थे ?"

"सर, मैं कुछ देर के लिए रिलैक्स करने गया था, पीछे शेल्टर में ! वह थोड़ी कम्फ़र्टेबल जगह है।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल पर अभी तक नींद का प्रभाव था।

"लुक दर्शन, रिलैक्स करने के लिए सबसे कम्फ़र्टेबल जगह तो माँ की गोद होती है। गो होम एण्ड रिलैक्स देयर ! दुश्मन का अटैक आ रहा है और तुम रिलैक्स कर रहे हो ?" कैप्टन इलावत ने क्रुद्ध स्वर में कहा।

"आइ एम सॉरी, सर।"

"व्हाट सॉरी ! अपने जवानों के साथ रहो और देखो. ऊपा पोस्ट के एरिया में ग्यारह बजे (७५ डिग्री पर) एक नायक और दो जवान भेज दो। उनका टास्क सिर्फ़ यह है कि अगर दुश्मन ऊपा पर क़ब्ज़ा करने के बाद बन्ध की ओर बढ़े तो हमें अर्ली वार्निंग दे दें। ओके ?"

कैप्टन इलावत तेज़-तेज़ क़दम उठाता हुआ ऑप्रेशनल बंकर में आ गया। उसने टेलिफ़ोन पर बटालियन-हेडक्वार्टर माँगा। दूसरी ओर मेजर यादव था।

"हैलो सर, कैप्टन इलावत बोल रहा हूँ।"

"येस इलावत, एनीथिंग न्यू ?"

"येस्सर, जिल ने मुझे कॉल किया है। सर, उसने बताया है कि दुश्मन का 'अटैक' आ रहा है। उनकी डायरेक्शन से यह अनुमान होता है कि वे ऊपा पोस्ट पर अटैक करेंगे।"

"अच्छा।" स्ट्रेंथ क्या है ?"

"सर, उसने बताया नहीं, दुश्मन गीदड़ की आवाज़ को सिगनल-कॉल के लिए इस्तेमाल कर रहा है। गीदड़ की आवाज़ें हमने भी सुनी हैं, बहुत धीमी सी।"

"ओके। मैं ब्रिगेड-हेडक्वार्टर को बता दूँगा। सी. ओ. साहब तुम्हारी ओर ही आ रहे हैं।"

"ओके सर। दैट्स फ़ाइन। बाई-बाई।" कैप्टन इलावत ने प्रसन्न भाव से कहा। इतनी देर में वायरलेस-सेट पर फिर टिक-टिक होने लगी। ऑपरेटर ने स्विच ऑन करके कोड पूछा और हेडफ़ोन कैप्टन इलावत की ओर बढ़ा दिया।

"येस, टाइगर स्पीकिंग, ओवर !"

"सर, हम लता और ऊपा के बीच बैंक-साइड पर हैं। दुश्मन की स्ट्रेंथ दो प्लाटून से कम नहीं है। कम्पनी स्ट्रेंथ भी हो सकती है, ओवर।"

"आइ सी। तुम दुश्मन से कितनी दूर हो ? ओवर।"

"सर, ठीक बताना मुश्किल है लेकिन सेफ़ डिस्टेन्स है, ओवर।"

"दुश्मन किस प्वाइण्ट पर नदी क्रॉस करेगा ? ओवर।"

"सर, इस बारे में उन्होंने कुछ बताया नहीं।" कह कर लेफ़्टिनेण्ट जिल

हँस पड़ा।

"सॉरी जिल।"

"सर, अगर आप इजाज़त दें तो मैं दुश्मन को नदी क्रॉस करते समय एनगेज करूँ। उस समय वे मेरे लिए सिटिंग डक्स होंगे, ओवर।"

"रिवर-फ़िश, तुम पोज़ीशन ले लेना लेकिन मेरे ऑर्डर के बिना फ़ायर नहीं करना, ओवर।"

"येस्सर। लेकिन अगर दुश्मन सिर पर आ जाये तो? ओवर।"

"तो तुम लोकल कमाण्डर हो। ओके। आल दि वेस्ट। ओवर।" कैप्टन इलावत ने हेडफ़ोन ऑपरेटर की ओर बढ़ा दिया।

वातावरण पर भयानक ख़ामोशी छायी हुई थी। साँय-साँय की आवाज़ से दम घुटने लगा था। न गोले फटने के धमाके, न गीदड़ों की पुकार और न ही किसी इन्सान की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

कुछ समय के बाद ऊपा के पश्चिम-उत्तर और उत्तर से बारी-बारी गीदड़ों के बोलने की आवाज़ें फिर से आने लगीं। कैप्टन इलावत की आँखों के सामने ऊपा में पोस्ट बी. एस. एफ़. के आठ जवानों के चेहरे घूम गये और उसका मन चिन्ता से भर गया। वह ऊपा पोस्ट की ओर देखने लगा जहाँ गहरी खामोशी छायी हुई थी और छप्पर की आग ठण्डी हो चुकी थी।

ऊपा की ओर दुश्मन दो दिशाओं से बहुत नज़दीक आ गया था। सरकण्डों में उनके चलने से होनेवाली सरसराहट सुनाई दे रही थी। सेक्शन-कमाण्डर दुर्लभ-सिंह हर मोरचे में जाकर बोला, "पुत्तरो, होशियार। दुश्मन आ रहा है। उसे दस-पन्द्रह मिनट तक रोकना है। उसके बाद पीछे हटकर कर कमला की ओर जाना है। रास्ता मालूम है न? बन्ध की ओर सन्तरी की पोस्ट से दायीं ओर जो मोरचा है उस में कूद कर बाहर आ जाना और वहाँ से सरकण्डों की ओट में बन्ध की ओर बढ़ना। मोरचे से निकल कर सीधे मत दौड़ना। दुश्मन के तोपखाने ने तीन बड़े गड्ढे बना दिये हैं। उनमें गिरने पर हड्डी-पसली टूट सकती है।"

दुश्मन की एक टुकड़ी पश्चिम से उस स्थान पर पहुँच गयी थी जहाँ सरकण्डे बहुत कम और छोटे थे। उनके साये उस एरिया में एक क्षण के लिए रेंगते हुए नज़र आते और लुप्त हो जाते।

"मामें आ रहे हैं।" सेवासिंह ने उनकी परछाइयों को देखते हुए कहा।

"मामें क्या होता है?" पिल्ले ने अपनी राइफ़ल की सेंध से आँखें उठाये बिना पूछा।

"मदर्स ब्रदर्स—मामें।" सेवासिंह ने उसे समझाया और अपनी राइफ़ल से निशाना लेता हुआ बोला, "कम मुकाईए। ते मुकलावा ल्याईए।"

"यह क्या होता है मुकलावा?"

"तू अभी छोटा है। तेरी शादी होगी तो अपनेआप पता लग जायेगा। अब तू होशियार हो जा। मामें मेन फ़ील्ड की तरफ़ आ रहे हैं। फैर (फ़ायर) मत करना वरना रास्ता बदल लेंगे।" सेवासिंह सामने देखता हुआ बोला, "कम मुकाईए ते मुकलावा लाईए।"

दुश्मन ने अचानक मशीनगन से फ़ायर करना शुरू कर दिया। गोलियाँ सन-सनाती हुई निकल गयी। मशीनगन का एक ब्रस्ट उनके मोरचे के मुँह के ऊपर लगा और उनके सिर, मुँह और आँखें मिट्टी से भर गयीं। दोनों ने बार-बार झपककर आँखों को साफ़ किया। उनके माथे पर पसीने की बूँदें उभर आयीं। मशीनगन का एक और ब्रस्ट आया और गोलियों की सनसनाहट कुछ क्षणों तक उनके कानों में गूँजती रही।

छह-सात परछाइयाँ जमीन पर रेंगती हुई ऊपा के बन्ध की ओर बढ़ रही थीं। फिर एक साथ बहुत ज़ोर से तीन धमाके हुए। उनके मोरचे और छत के कोनों से बहुत-सी मिट्टी उनके ऊपर गिरी और सामने धुएँ और मिट्टी का बादल-सा ऊपर उठने लगा।

"साले हमला करने आये हैं! आगे तो आओ, तुम्हारी बोटी तक नहीं मिलेगी।" सेवासिंह ने घृणा से कहा।

बारूदी सुरंगें फटने से दुश्मन पीछे हट गया और मशीनगन का फ़ायर भी बन्द हो गया।

दुर्लभसिंह उनके मोरचे में घुस आया और प्रसन्न भाव से बोला, "ओ मुण्ड्यो, की हाल है प्याडा ? पिल्ले, तगड़ा हो जा।"

"ठीक है साब ?" पिल्ले ने गम्भीर स्वर में कहा।

"अपना कम्पनी-कमाण्डर है न, इलावत साब, बहुत लायक़ अफ़सर है। यह मेन फ़ील्ड उसी ने बनाया था। हमले का चाव जल्दी ही उतर गया, शायद चले गये। एक....दो....तीन....चार....पाँच लोथें (लाशें) पड़ी हैं।" दुर्लभसिंह ने पिल्ले और सेवासिंह की राइफ़लों के बीच में अपना सिर आगे बढ़ाया और उनके कन्धों पर हाथ रखकर बाहर देखते हुए कहा।

इतनी देर में बन्ध के उत्तरी एरिया में ज़ोर से धमाके हुए और दिल हिला देनेवाली चीखें उभरीं। दुर्लभसिंह उनके मोरचों से निकलकर उस ओर भाग गया।

"सेवासिंह, सावधान, दुश्मन फिर आ रहा है। वह देखो, अपनी बैरल से ग्यारह बजे।" पिल्ले ने कहा।

"हाँ, करूँ फ़ायर ? कम मुकाईए तां मुकलावा ल्याईए।" सेवासिंह ने धीरे-धीरे सिर हिलाते हुए कहा और जल्दी-जल्दी बोल्ट खींचकर फायर करने लगा।

दुश्मन ने मशीनगन से फिर फ़ायर करना शुरू कर दिया। सेवासिंह की बोल्ट राइफ़ल की गोलियों की आवाज मशीनगन के फायर के निरन्तर शोर में डूब गयी। उसके मैगज़ीन की गोलियाँ खत्म हो गयीं तो वह पिल्ले से बोला, "मैं 'रैफल' लोड

करता हूँ, तू फ़ायर खोल दे।"

पिल्ले बहुत फुर्ती से गोली चला रहा था। सेवासिंह मैगज़ीन लोड करके स्लिट से बाहर देखने लगा और फिर पिल्ले से बोला, "दुश्मन काफ़ी नफ़री में आया है। हमारे फ़्लैंक पर भी एडवान्स कर रहा है। तू उन्हें सँभाल, इधर मैं देखता हूँ।" सेवासिंह ने दायें बाज़ू से मुँह का पसीना पोंछते हुए कहा। उसने अपने सूखे होंठों पर जीभ फेरी और फिर गोली चलाने लगा।

दुश्मन उनके मोरचे पर मशीनगन से अन्धाधुन्ध फ़ायर कर रहा था लेकिन उन तक गोलियों की उड़ायी हुई धूल ही पहुँच रही थी। दुश्मन ने बग़ल में आकर उनके मोरचे में कई हैण्डग्रिनेड फेंके लेकिन वे सब मोरचे से कुछ दूरी पर ही फट गये और कड़वे धुएँ से उनकी आँखों और गले में जलन होने लगी। हवलदार दुर्लभसिंह ने उनके मोरचे के द्वार के पास आकर ऊँचे स्वर में कहा, "निकल आओ।"

हवलदार दुर्लभसिंह का ऑर्डर केवल सेवासिंह ने सुना और फ़ायर बन्द करके पिल्ले की ओर देखता हुआ बोला, "पिल्ले, निकलो! हवलदार साब का हुक्म है।"

"मैं नहीं जाऊँगा। मैं कमाण्डेण्ट साब को बताना चाहता हूँ कि मदरासी भी लड़ सकता है।"

सेवासिंह चकित-सा उसकी ओर देखने लगा। मशीनगन की गोलियाँ स्लिट में से उनके सिरों के ऊपर से सनसनाती हुई छत पर टीन की चादर छेदकर मिट्टी में खो गयीं। एक हैण्डग्रिनेड उनके मोरचे की स्लिट के बिलकुल नीचे फटा और कुछ क्षणों के लिए उनके होश उड़ गये। मोरचा धुएँ और धूल से भर गया।

उन्हें स्लिट से बाहर कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था लेकिन वे दोनों अन्धाधुन्ध गोलियाँ चला रहे थे। पिल्ले राइफ़ल में अन्तिम मैगज़ीन लोड करके सेवासिंह से निराशा-भरे स्वर में बोला, "सेवासिंह, मेरे पास एमूनेशन खत्म हो गया।"

"मेरे पास भी।" सेवासिंह ने फ़ायर करते-करते कहा।

बार-बार बोल्ट चढ़ाने से उन दोनों के दायें अँगूठे दर्द करने लगे थे। धूल से पुते उनके चेहरों पर पसीने की कई लकीरें खिंच गयी थीं। गला खुश्क हो गया था और सारे शरीर में ऐंठन होने लगी थी। उनके मोरचे के द्वार के पास दो ग्रिनेड फटे।

"सेवासिंह, दुश्मन हमारे मोरचे के पीछे आ गया है। मैं उधर देखता हूँ।" पिल्ले ने अपनी राइफ़ल उठा ली और मोरचे के द्वार की ओर आ गया। वहाँ फीकी रोशनी पड़ रही थी। पिल्ले ने जल्दी-जल्दी राइफ़ल की बैरल ज़मीन पर टिका दी और बाहर देखने लगा।

सामने बन्ध पर दुश्मन के पाँच-छह जवान उनके मोरचे की ओर बढ़ रहे थे। पिल्ले ने उनपर जल्दी-जल्दी फ़ायर किये। दो हैण्डग्रिनेड उनके मोरचे के द्वार से कुछ गज़ दूर फटे। उनकी रोशनी में पिल्ले की आँखें चुँधियाँ गयीं और उसने सिर नीचे कर लिया। कुछ क्षणों के पश्चात् उसने सिर उठाकर बाहर देखा तो दुश्मन के दो

जवान उसके मोरचे की ओर रेंग रहे थे। पिल्ले थोड़ा ऊपर उठा और फ़ायर करने लगा। तीन गोलियों के बाद उसकी राइफल खामोश हो गयी। पिल्ले ने कई बार जल्दी-जल्दी बोल्ट को आगे-पीछे किया और राइफ़ल उठाता हुआ सेवासिंह से बहुत उदास स्वर में बोला, "सेवासिंह, मेरा एमूनेशन खत्म हो गया।"

"मेरा भी। बस तीन-चार रौंड (गोलियाँ) बाक़ी हैं।"

पिल्ले ने बाहर देखने के लिए सिर उठाया ही था कि तीन ग्रिनेड एक साथ फटे और उसकी आंखों के सामने अँधेरा छा गया। उसने कुछ क्षणों के बाद बाहर देखा और ऊपर उठती हुई धूल और धुएँ में उसे पाँच-छह आदमी अपने मोरचे की ओर बढ़ते दिखाई दिये। उसने सेवासिंह की ओर गरदन घुमा कर देखते हुए कहा, "सेवासिंह, दुश्मन हमारे मोरचे की ओर आ रहा है। मैं भिनट चार्ज करने जा रहा हूँ। अव्वल तो मैं मरूँगा नहीं, अगर मर गया तो असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट साब से जरूर बताना कि पिल्ले कैसे लड़ा था....सत श्री अकाल।" पिल्ले ने टूटी-फूटी पंजाबी में कहा और अपने मोरचे से बाहर निकल कर बहुत ऊँची आवाज़ में जयकार करता हुआ दुश्मन के जवानों पर टूट पड़ा। दो जवान दर्द से चीखते हुए जमीन पर लोट-पोट होने लगे।

अगले ही क्षण पिल्ले को अपनी कनपटी में बहुत सख्त दर्द महसूस हुआ। उस-की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। राइफल हाथ से छूट गयी और वह लड़खड़ाता हुआ जमीन पर औंधे मुँह गिर गया। उसके मन में एक ही हसरत थी कि असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट साहब यहाँ होते तो अपनी आँखों से देखते कि मदरासी कितनी बहादुरी से लड़ सकता है।

दुश्मन के एक जवान ने अपनी ब्योनेट से पिल्ले को रीढ़ की हड्डी में सूराख बना दिया और उसकी पीठ में स्टेनगन का ब्रस्ट मारा।

"हरामी!" दुश्मन के जवान ने घृणा से कहा और उसके मुँह पर ठोकर मार-कर आगे बढ़ गया।

सेवासिंह मोरचे में बैठा सब कुछ देख रहा था। क्रोध से उसका रोयाँ-रोयाँ जल रहा था। एक क्षण के लिए उसकी आँखों के सामने अपने आनन्द कारज (विवाह) की तसवीर घूम गयी। उसे अपनी सिकुड़ी-सिमटी घूँघट में खामोशी से रो रही पत्नी का खयाल आया।

"सब गया।" वह मुँह ही मुँह में बुदबुदाया।

"मोरचे के अन्दर शायद अभी एक जवान और है।"

इस आवाज़ ने सेवासिंह के विचारों का तांता तोड़ दिया।

"बाहर निकलो वरना गोली से उड़ा दिये जाओगे?" किसी ने कड़कती हुई आवाज़ में कहा।

सेवासिंह मोरचे की दीवार के साथ चिपक गया। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"स्मोक, ग्रिनेड फेंको। यह इस तरह नहीं निकलेगा।" किसी ने ऑर्डर दिया।

"सालो! मैं इतनी आसानी से नहीं मरूँगा।" कहकर सेवासिंह ने अपनी पगड़ी खोली और मुँह और नाक पर लपेट ली।

सेवासिंह को मोरचे में ग्रिनेड गिरने की आवाज़ सुनाई दी और फिर शीघ्र ही उसे आँखो में जलन महसूस होने लगी। उसे एकदम गुस्सा आ गया "साले, मेरा दम घोंटकर मारना चाहते हैं।"

सेवासिंह खिसककर मोरचे के मुँह के पास आ गया। दुश्मन के दो जवान मोरचे के मुँह पर झुके उसे ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे थे। सेवासिंह ने अपने पास बाक़ी तीनों गोलियाँ उनपर चला दीं। वे दोनों चीख़ते हुए लुढ़क गये और उनमें से एक की लाश मोरचे के द्वार में टिक गयी।

सेवासिंह फिर पीछे हट गया। उसकी आँखों में जलन से दर्द होने लगी थी और उसका दम घुट रहा था।

"साली बन्ध पर इतनी फ़ौज बैठी क्या तमाशा देख रही है? कैप्टन साब हौसला तो बहुत देते थे कि पहले 'फ़ैर' पर पहुँच जायेंगे लेकिन कोई नहीं आया।" सेवासिंह बुदबुदाया।

सेवासिंह नीम बेहोश था। उसे धमाकों की आवाज़ें बहुत कम सुनाई देने लगी थीं। उसे अपने मोरचे में एक धमाका सुनाई दिया और फिर साथ ही लुढ़क गया। थोड़ी देर के बाद उसकी लाश मोरचे से बाहर निकाली गयी।

"हरामी कुत्ता! मरते-मरते भी हमारे दो जवान ले गया।" किसी ने उसकी लाश को ठोकर मारते हुए घृणा-भरे स्वर में कहा, "इस हरामी का सिर काटकर दरख़्त के साथ बाँध दो।"

एक जवान ने अगले ही क्षण सेवासिंह का सिर काट दिया और ठोकर मारता हुआ पोस्ट के कोने में वृक्ष के पास ले गया और बालों से ही उसे एक टहनी के साथ बाँध दिया।

अठारह

कर्नल गिल जब बन्ध पर पहुँचा तो ऊषा-पोस्ट पर दुश्मन का हमला जारी था। कर्नल गिल, कैप्टन इलावत और सूबेदार ओमप्रकाश एक बंकर में बैठे हमले की शिद्दत का अनुमान लगा रहे थे।

"जिल की इस समय पोज़ीशन क्या है?" कर्नल गिल ने पूछा।

"सर, उसने लवा और ऊपा के बीच में कहीं पर नदी पार कर ली है। अब वह अपने एरिया में है। वह दुश्मन को जो उत्तर से ऊपा पर अटैक करने के लिए आगे बढ़ रहा है, अपनी पसन्द की जगह पर एनगेज करना चाहता है।" कैप्टन इलावत ने कहा।

वे कुछ समय तक चुपचाप ऊपा में मशीनगन और राइफ़ल के फ़ायर और हैण्डग्रिनेडों के विस्फोट के धमाकों को सुनते रहे।

"इलावत, अटैक की डायरेक्शन क्या है?"

"सर, ऐसा लगता है कि अटैक पश्चिम और उत्तर-पश्चिम से हुआ है। पहले पश्चिम से फ़ायरिंग और बारूदी सुरंगें फटने के धमाके सुनाई दिये थे।"

"क्या दुश्मन का यह अटैक सिर्फ़ हमारी पोजीशनों का पता लगाने के लिए है या वह ऊपा पर क़ब्ज़ा करना चाहता है। तुम्हारा क्या अनुमान है?" कर्नल गिल ने पूछा।

"सर, मेरे ख़याल में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता लेकिन अगर मैं दुश्मन की जगह होता तो ऊपा पर क़ब्ज़ा करता क्योंकि इससे मुझे न सिर्फ़ नदी के पार फ़ुटहोल्ड मिलता है बल्कि बन्ध पर हमला करने के लिए ग्राउण्ड मिलती है।" कैप्टन इलावत ने प्रत्येक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

"मैं तुम्हारे साथ सहमत हूँ। जवाबी हमले की तैयारी में कितना समय लोगे?"

"सर, मैं बीस मिनट से ज़्यादा समय नहीं लूँगा।" कैप्टन इलावत ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

"ओके, गो अहेड। मैं इतनी देर में ब्रिगेड-कमाण्डर से बात करता हूँ।" कहकर कर्नल गिल ऑप्रेशनल बंकर में टेलिफ़ोन करने चला गया।

कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल को तुरत अपने पास बुला लिया। "हम काउण्टर अटैक कर रहे हैं। सी. ओ. साहब ब्रिगेड-हेडक्वार्टर से बात करने गये हैं। तुम अपनी-अपनी प्लाटून को एलर्ट कर दो। हम दस-दस के ग्रुप में जायेंगे और तीन ओर से एक ही साथ हमला होगा। सब जवान अपने हथियारों के अतिरिक्त चार-चार हैण्डग्रिनेड अपने साथ रखेंगे और सिगनल मिलने पर एक साथ हमला करेंगे।"

"येस्सर।"

"ऊपा में चार मोरचे हैं। एक सन्तरी-पोस्ट है। दुश्मन उनमें 'कवर' ले सकता है। हैण्डग्रिनेड अटैक के बाद चार-चार जवान उन मोरचों को कवर करेंगे और बाक़ी बन्ध के साथ-साथ पोज़ीशन लेंगे। तुम तुरत जाकर जवानों को तैयार करो।"

इतनी देर में लेफ़्टिनेण्ट जिल ने कॉल किया—"हैलो, रिवर-फ़िश स्पीकिंग, ओवर।"

"हैलो, रिवर-फ़िश! टाइगर स्पीकिंग, ओवर।"

"सर, वे ऊपा की ओर बढ़ रहे हैं लेकिन अभी नदी क्रॉस नहीं किया है। ओवर।"

"ठीक है। उनपर नजर रखो और जहाँ मुनासिब समझो वहाँ उन्हें एनगेज करो, ओवर।"

"सर, ऊपा पर फ़ायर कैसा हो रहा है? ओवर।"

"दुश्मन ने पश्चिम और उत्तर-पश्चिम से हमला कर दिया है। हम काउण्टर अटैक कर रहे हैं। अपना टास्क खत्म करने के बाद तुम मुझे कॉल करना, ओवर।"

कर्नल गिल के आने तक लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की प्लाटूनें सरकण्डों में इकट्ठी हो रही थीं। कैप्टन इलावत कर्नल गिल को फ़ील्ड-मैप पर काउण्टर अटैक का विस्तार बताकर बोला, "सर, इस ऑप्रेशन का नाम 'ऑप्रेशन तत्काल' रखने का विचार है।"

"इलावत, गो अहेड। आल दी बेस्ट। गॉड बी विथ यू, सनी।" कर्नल गिल ने उसके साथ हाथ मिलाते हुए कहा।

"सर, ईश्वर की कृपा! आपके आशीर्वाद और जवानों की वीरता से हमारा ऑप्रेशन ज़रूर कामयाब होगा।" कैप्टन इलावत ने अटेंशन होते हुए कहा।

"मैं तुम्हारा सिगनल आने तक यहीं हूँ।"

"राइट सर, आपकी उपस्थिति से हमारा और भी ज्यादा हौसला बढ़ेगा।" कैप्टन इलावत ने कहा और अपनी स्टेनगन उठाकर बन्ध से उतरकर उस जगह चला गया जहाँ लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

कैप्टन इलावत ने प्रत्येक ग्रुप के पास जाकर उन्हें उनका टास्क समझाया। उसने अपने साथ हवलदार क्वार्टरमास्टर, आसाराम, वायरलेस-ऑपरेटर और तीन जवानों को लिया और कोई पचास गज का फ़ासला छोड़कर वे धीरे-धीरे खामोशी से ऊपा की ओर बढ़ने लगे।

कैप्टन इलावत और उसकी पार्टी ऊपा से कोई डेढ़ सौ गज पीछे रुक गयी। वहाँ अब रुक-रुककर फ़ायरिंग हो रही थी और कभी-कभी हैण्डग्रिनेड का धमाका भी होता था। पहले ग्रुप के साथ लेफ़्टिनेण्ट सिंह था। कैप्टन इलावत ने एक बार फिर उसे संक्षिप्त रूप में टास्क समझाया और वह ग्रुप सावधानी से ऊपा की ओर बढ़ने लगा। दूसरे ग्रुप के साथ नायब सूबेदार रामसिंह था।

"यह आपकी कौन-सी लड़ाई है?"

"साब, तीसरी।"

"इसे आखिरी बनाना है।" कैप्टन इलावत ने उसका कन्धा थपथपाते हुए कहा, "ओ मुन्नुओ, तुसीं भी तैयार हो। शाबाश! आज काम खत्म करना है। कल फ़ैमिली को बधाई का लेटर लिखना है।" कैप्टन इलावत ने जवानों की ओर मुड़ते

हुए कहा। वह ऊपा के निकट निश्चित पोज़ीशन से पीछे ही था जब उसे उत्तर की ओर से लाइट मशीनगन और राइफ़ल के फ़ायर की आवाज़ सुनाई दी। कुछ मिनटों तक बहुत तेज़ फ़ायर होता रहा और फिर धीरे-धीरे बन्द हो गया। वह वहीं रुक गया। लेफ़्टिनेन्ट जिल और पेट्रोल-पार्टी के जवानों की तसवीरें उसकी आँखों के सामने घूम रही थीं। फ़ायर सुनकर उसका दिल उछल रहा था और उत्सुकता से लेफ़्टिनेन्ट जिल के कॉल की प्रतीक्षा कर रहा था।

वायरलेस पर टिक-टिक शुरू हुई तो कैप्टन इलावत का दिल उछलने लगा। अपना कोड बताने और कैप्टन इलावत का कोड पूछने के पश्चात् लेफ़्टिनेन्ट जिल ने कहा, "सर, मैंने कुछ डक्स शूट की हैं, ओवर।"

"कंग्रेचुलेशन्ज माइ ब्वाय! हम जल्दी ही ऊपा पर अटैक कर रहे हैं, ओवर।"

"ऑल दि बेस्ट सर, ओवर।"

कैप्टन इलावत अपने साथियों के संग निश्चित पोज़ीशन पर पहुँच गया। कुछ समय तक वह दुश्मन की गतिविधियों का अनुमान करने की कोशिश करता रहा। ऊपा पर धुएँ की हलकी सी तह बनी हुई थी और फीकी चाँदनी में वह बहुत भयानक दिखाई दे रही थी।

कैप्टन इलावत और उसके साथी सावधानी से आगे बढ़ते हुए ऊपा के बन्ध के निकट पहुँच गये। कैप्टन इलावत ने ज़ोर से 'ज्वाला माता की जय' का नारा लगाया और हैण्डग्रिनेड फेंककर फुर्ती से अपनी पोज़ीशन बदल ली। ऊपा का वातावरण 'ज्वाला माता की जय' की जयकारों और हैण्डग्रिनेडों के धमाकों से गूँज रहा था।

जयकार गूँजते ही ऊपा की सन्तरी-पोस्ट से मशीनगन का फ़ायर निरन्तर आने लगा। उसकी बग़ल में पहुँचे ग्रुप ने मशीनगन को कुछ क्षणों में ही चुप करा दिया। कुछ मिनटों तक ऊपा में हैण्डग्रिनेडों के इतने धमाके हुए जैसे ज़मीन फट गयी हो। वहाँ पर कड़वे धुएँ और धूल के बादल छा गये और उनकी ओट में जवानों ने मोरचे कवर कर लिये और बन्ध के साथ पोज़ीशनें ले लीं।

कैप्टन इलावत ने सन्तरी-पोस्ट में स्वयं दो हैण्डग्रिनेड फेंके। मोरचा धुएँ और धूल से भर गया। अपने साथियों को लेकर फ़ायरिंग-पोज़ीशन लेने का हुक्म देकर उसने वायरलेस पर लेफ़्टिनेन्ट जिल को कॉल किया—"हैलो रिवर-फ़िश, कैसे हो? ओवर।"

"सर, ऐसा लगता है, वे वापस चले गये हैं, ओवर।"

"वेरी गुड! तुम ऊपा की ओर आ जाओ लेकिन सावधानी से। हाँ, रिवर-फ़िश, हमने ऊपा पर क़ब्ज़ा कर लिया है, ओवर।"

"कंग्रेचुलेशन्ज़! वण्डरफ़ुल। ओवर।"

कैप्टन इलावत ने कर्नल गिल से वायरलेस पर सम्पर्क क़ायम किया और आवेग-भरे स्वर में बोला, "सर, वी हैव इन इट। अब क्लीयरिंग ऑप्रेशन शुरू करनेवाले हैं।"

"जौली गुड! कंग्रेचुलेशन्ज़ इलावत! आई एम प्राउड ऑफ़ यू।"

"सर, यह तो आपकी गाइडेंस और जवानों की बहादुरी का नतीजा है।"

"नो-नो इलावत, फ़ुल मार्क्स तुम्हारे हैं। आई एम प्राउड ऑफ़ आल ऑफ़ यू।" कर्नल गिल बहुत अधिक प्रसन्न था।

कैप्टन इलावत उठकर बन्ध की अन्दरूनी ढलान के साथ-साथ पोस्ट में घूम गया। उसने हर जवान की पीठ थपथपाकर शाबाशी दी और कहा, "तुम्हारे बिना इतनी जल्दी इस पोस्ट पर क़ब्ज़ा कोई नहीं कर सकता था।"

लेफ़्टिनेण्ट जिल थोड़े-थोड़े समय के बाद उसे वायरलेस पर कोड-शब्दों में अपनी पोज़ीशन बता रहा था। वे जब बन्ध से कोई डेढ़ सौ गज़ दूर रह गये तो कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट जिल को बताया, "जिल, अभी यहाँ ऊपा में मिक्स-अप है। दुश्मन के कुछ जवान शायद कहीं छिपे बैठे हों। तुम सावधानी से आना। मैं लेफ़्टिनेण्ट सिंह को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। वह तुम्हें गाइड करेगा।"

कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह को पांच जवान देकर उस ओर आने का आदेश दिया जिधर लेफ़्टिनेण्ट जिल ने पोज़ीशन बतायी थी।

थोड़े ही समय के पश्चात् कैप्टन इलावत को सरकण्डों में सरसराहट सुनाई दी। वह सिर ऊपर उठाकर उस ओर देखने लगा जिधर से एक परछाईं दौड़कर बन्ध पर चढ़ रही थी। कैप्टन इलावत ने रोब से पूछा, "कौन है?"

"सर, जिल हूँ।"

"ओह," कैप्टन इलावत अभी कुछ कह भी न पाया था कि स्टेनगन की गोलियों से वातावरण गूँज उठा। कैप्टन इलावत ने सिर झुका लिया और अगले ही क्षण जब सामने देखा तो लेफ़्टिनेण्ट जिल लड़खड़ा रहा था। कैप्टन इलावत का कलेजा मुँह को आ गया।

इसी बीच में स्टेनगन का एक और ब्रस्ट आया और उनसे कुछ दूर एक जवान चीखता हुआ बन्ध से नीचे लुढ़क गया—"हरामी, हमारे साब पर गोली चलाता है!" नायब सूबेदार दयाराम ने बहुत क्रुद्ध स्वर में कहा।

कैप्टन इलावत ने लपककर लेफ़्टिनेण्ट जिल का हाथ थाम लिया और उसे अपनी ओर खींचता हुआ घबराहट-भरे स्वर में बोला, "जिल, आर यू आल राइट?"

"येस्सर!"

"शायद तुमको गोली लगी है। बास्टर्ड ने बहुत नज़दीक से फ़ायर किया है। जिल, तुम्हारी क़िस्मत बहुत अच्छी है। तुम लेट जाओ।"

"फ़िक्र नहीं सर, पहले मुझे मुबारकबाद देने दो।" लेफ़्टिनेण्ट जिल कैप्टन

इलावत से लिपटता हुआ बोला।

इतनी देर में लेफ्टिनेण्ट सिंह, नायब सूबेदार दयाराम और अन्य जवानों ने लेफ्टिनेण्ट जिल को घेर लिया।

"सिंह, क्या कर रहे हो? पोजीशन ले लो, लेट जाओ। अभी दुश्मन के कुछ जवान छिपे बैठे हैं।" कैप्टन इलावत ने उनको ताड़ना करते हुए कहा।

लेफ्टिनेण्ट जिल ने अपनी दायीं टाँग पर घुटने के नीचे हाथ फेरा जहाँ हल्का-हलका दर्द महसूस हो रहा था। उसे अपनी उँगलियों पर गर्म और चिकनाहट भरी नमी का अहसास हुआ तो वह अपने गले से स्कार्फ़ उतारने लगा।

"क्या हुआ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"सर, शायद दायी टाँग पर गोली लगी है।"

"मैन, आइ टोल्ड यू।" कैप्टन इलावत ने कहा और घुटने के नीचे उसकी टाँग को ओर ज़ोर से दबाया तो लेफ्टिनेण्ट जिल की हलकी सी चीख निकल गयी।

"इट इज़ देयर मैन, तुम लेट जाओ।" कैप्टन इलावत ने कहा और अपना स्कार्फ़ उतार कर उसकी टाँग पर कस कर बाँध दिया।

"सर, अगर मैं लेट गया तो मुझे नींद आ जायेगी।"

"सो जाओ मैन, जब तक स्ट्रेचर नहीं आ जाता। कहो तो दो-तीन जवान तुम्हें कन्धों पर उठाकर छोड़ आते हैं।"

"थैंक्यू सर, अभी मेरा वह समय नहीं आया जब मुझे चार आदमी कन्धों पर उठायेंगे।" लेफ्टिनेण्ट जिल ने मुसकराते हुए कहा।

"डक शटर! तुम बहुत बहादुर हो! आइ एम प्राउड ऑफ़ यू।" कैप्टन इलावत ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा।

पौ फटने तक ऊषा पर धुआँ और धूल भी कम हो गये। कैप्टन इलावत स्वयं बन्ध के साथ-साथ चारों ओर घूमने लगा। वह प्रत्येक लाश को ध्यान से देखता और फिर आगे बढ़ जाता। एक लाश पर वह रुक गया। उस लाश का केवल धड़ था।

"माई गुडनेस।" कैप्टन इलावत को मतली सी होने लगी। उसने झुक कर ध्यान से देखा, बी. एस. एफ़. का जवान था। उसकी सारी वर्दी खून से भीगी हुई थी और धूल से कई जगह मटियाले धब्बे बन गये थे। उसे दीनानाथ का आधा धड़ याद आ गया। उसने लाश का सिर तलाश करने के लिए इधर-उधर निगाह दौड़ायी लेकिन कहीं नज़र नहीं आया।

थोड़ी दूर आगे जाकर उसे पिल्ले की लाश दिखाई दी। उसके निकट दुश्मन के दो जवान पड़े थे। ब्योनेट चार्ज से उनके पेट में सूराख हो गये थे और अँतड़ियाँ बाहर आ गयी थीं। वह पिल्ले की लाश पर झुक गया। उसकी पीठ पर ब्योनेट और गोली के दो गहरे घाव थे। उसने पिल्ले की लाश को सीधा लिटा दिया। अपनी जेब से रूमाल निकाल कर उसका मुँह साफ़ किया। ऐसा करते हुए

उसका दिल भर आया और उसकी आँखों में आँसू आ गये।

"ब्रेव व्वाय ! तुमने अपना वचन पूरा किया।" और फिर पिल्ले की लाश के इर्द-गिर्द पड़ी लाशों को देखकर बुदबुदाया, "ये जीवित होते हुए शान्ति और अमन के साथ इकट्ठे नहीं रह सके, एक दूसरे के खून के प्यासे रहे, लेकिन अब मरने के बाद इकट्ठे पड़े हैं। अब इनका आपस में कोई झगड़ा नहीं है।"

जब रोशनी कुछ अधिक हो गयी तो कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह को दुश्मन की लाशें एक क़तार में रखने और उनके हथियार एक स्थान पर एकत्रित करने का हुक्म दिया। बिना सिर की लाश को पिल्ले की लाश के साथ रख दिया गया। उस लाश के सिर की तलाश शुरू हुई। कैप्टन इलावत स्वयं एक-एक मोरचे में गया लेकिन कहीं सिर नहीं मिला।

जब पूर्व में दूर-दूर तक लालिमा छा गयी और हर चीज़ स्पष्ट नज़र आने लगी तो कैप्टन इलावत ने एक बार फिर सब मोरचे देखे लेकिन सिर का कहीं पता नहीं मिला। अचानक लेफ़्टिनेण्ट सिंह की नज़र वृक्ष की झुकी हुई टहनी पर पड़ी।

"सर, वह देखिए।" उसने झुकी हुई टहनी की ओर संकेत करते हुए कहा।

"सेवासिंह ?" कैप्टन इलावत के मुँह से चीख सी निकल गयी। उसने एक जवान को टहनी के साथ बालों से बँधे सिर को उतारने के लिए कहा और बहुत घृणित स्वर में बोला, "बास्टर्ड्ज़ !"

लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने लाशें क़तार में रखवा कर कैप्टन इलावत को रिपोर्ट दी—"सर, ऊपा के अन्दर दुश्मन की नौ और हमारी दो लाशें हैं।"

"बन्ध के बाहर भी देखो, लेकिन सावधानी से। शायद सरकण्डों में भी कुछ लाशें हों।"

कोई पन्द्रह मिनट के बाद लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने रिपोर्ट दी—"सर ऊपा के बन्ध के बाहर दुश्मन की छह और हमारी दो लाशें मिली हैं। बन्ध के उत्तर में माइन-फ़ील्ड में, दुश्मन की सात लाशें हैं और उत्तर-पश्चिम में तीन। कुल केज़्यूलिटीज़ हैं—दुश्मन के अठारह और हमारे चार।"

कैप्टन इलावत ने कोई उत्तर नहीं दिया और बन्ध की ओट में सो रहे लेफ़्टिनेण्ट जिल की दायीं टाँग पर घुटने के नीचे स्कार्फ़ पर गोल सुर्ख़ दायरे और उस के नीचे खून की मोटी लकीर को उदास नज़रों से देखता रहा।

उसने वायरलेस पर कर्नल गिल को कॉल किया। उसने उत्तर में केवल इतना ही कहा कि वह दस मिनट में ब्रिगेडियर स्वामी के साथ वहाँ पहुँच रहा है। कैप्टन इलावत उदास सा ऊपा में चारों ओर फैले हुए ग्रिनेडों के काले और कहीं-कहीं सफ़ेद और लाल टुकड़ों को, तोप के गोलों के बड़े-बड़े टुकड़ों को, धरती पर पड़े गाढ़े खून के लम्बे-चौड़े धब्बों को और छप्पर की राख में जले हुए ट्रंकों को देखता रहा। जब उसकी उदासी बहुत गहरी होने लगी तो वह अपनेआप को समझाता हुआ सिर

झटक कर बुदबुदाया, "इट इज़ ऑल इन दि गेम।"

ब्रिगेडियर स्वामी और कर्नल गिल जीप में थे और उनके पीछे एम्बुलेन्स में बटालियन-डॉक्टर कैप्टन हमीद था। ब्रिगेडियर स्वामी ने कैप्टन इलावत को बहुत ज़ोरोंसे मुबारकबाद दी और लाशों पर नज़र डाल कर वह कन्धे झटकता हुआ बोला, "पुअर चैंप्स ! बहादुर जवानों की मौत मरे हैं।"

इतनी देर में बी. एस. एफ. का असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट बचिन्तसिंह भी आ पहुँचा। कर्नल गिल उसे सम्बोधित करता हुआ बोला, "बचिन्तसिंह, तेरे लड़के बहुत बहादुरी से लड़े हैं।"

"जी साब।"

"बचिन्तसिंह साहब," कैप्टन इलावत ने प्रत्येक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा, "पिल्ले ने अपना वचन पूरा किया है। एमुनेशन खत्म होने के बाद उसने ब्योनेट चार्ज किया और दो दुश्मनों को मारकर वह खुद ढेर हो गया। उसका चेहरा देखो, मरकर भी उसके चेहरे पर 'हीरो' का जलाल है।"

ब्रिगेडियर स्वामी और कर्नल गिल की आवाज़ें सुनकर लेफ़्टिनेण्ट जिल उठ गया था।

"सर, मीट दि डक-शूटर ! ही हैज़ बिन ब्लडेड।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"ओह माइ गुडनेस !" कर्नल गिल ने लेफ़्टिनेण्ट जिल की दायीं टाँग पर खून का बड़ा गोल दायरा देखते हुए कहा।

"सर, स्नाईपर्ज़ ब्युलेट ! यह तो बहुत लकी है ! दुश्मन ने तो स्टेनगन का पूरा ब्रस्ट मारा था।"

"लकी इण्डीड। लेफ्टिनेंण्ट जिल, गोली लगना और फिर भी जिन्दा रहना— यह बहुत अच्छी क़िस्मत की निशानी है।" ब्रिगेडियर स्वामी ने कहा।

"सर, इन लाशों का क्या करें ?" कैप्टन इलावत ने कर्नल गिल से पूछा।

"इन्हें मोरचों में डालकर मिट्टी डाल दो। ये मोरचे अब किसी काम के नहीं रहे, क्यों सर ?" कर्नल गिल ने ब्रिगेडियर स्वामी से पूछा।

"ठीक है; नये मोरचे बनाने होंगे।"

कुछ समय तक ठहरने के बाद ब्रिगेडियर स्वामी, कर्नल गिल और लेफ़्टिनेण्ट जिल चले गये। बी. एस. एफ. के चारों जवानों की लाशें एम्बुलेन्स में डालकर बन्ध पर भिजवा दी गयी। दुश्मन की लाशों को मोरचों में डालने का काम शुरू हो गया।

"सर, जो लाशें माइन-फ़ील्ड में पड़ी है उनका क्या करना है ?"

"उन्हें भी दफ़नाना है।"

"सर, माइन-फ़ील्ड से लाशें निकालना बहुत मुश्किल और खतरनाक है।" नायब सूबेदार रामसिंह ने रुक-रुक कर कहा।

"साब, आप सोल्जर है। ईश्वर न करे अगर हममें से कोई माइन-फ़ील्ड

में मारा जाये और लाश वहीं पड़ी रहे और उसको गीदड़ खा जायें तो आपको कैसा लगेगा। माइन-फ़ील्ड के चारों ओर मार्किंग है, तीन इंच चौड़ी और तीन इंच गहरी पट्टी है। बाहर से लाशों पर मिट्टी डलवा दो।"

"जी साब।"

"अच्छा सिंह, मैं भी जा रहा हूँ। दर्शन मेरे साथ आयेगा। यहाँ पन्द्रह जवान काफ़ी हैं। बाक़ी जवान भी जायेंगे। इनकी जगह लेने के लिए रिप्लेसमेण्ट जल्दी ही पहुँचेगी। मेरा वायरलेस-सेट और ऑपरेटर अपने पास रखो। तुम्हारा कोड ग्रेव-डिगर है। यू कैन कॉल अस चार्ली। जब यह ऑप्रेशन खत्म हो जाये तो इन्फ़ॉर्म कर देना। ओके!"

जवान अपनी-अपनी प्लाटूनों में चले गये। कैप्टन इलावत और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल कम्पनी-हेडक्वार्टर की ओर बढ़ गये।

"दर्शन, तुम ऊपा पर रिप्लेसमेण्ट भेजने का बन्दोबस्त करो, दिन में ऐसा खतरा भी नहीं है। ज्यादा जवान जिल की प्लाटून से लेना और उनकी कमान सूबेदार साहब करेंगे।"

"येस्सर।" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल वहीं से लौट गया।

कैप्टन इलावत अपने हेडक्वार्टर में पहुँचा तो सूबेदार ओमप्रकाश ने उसका बहुत तपाक से स्वागत किया, "सर, बहुत मुबारकबाद हो। मैं चार लड़ाइयाँ देख चुका हूँ लेकिन इतनी कामयाब बैट्ल आज तक न देखी थी, न सुनी थी।"

"साब, सब जवानों की हिम्मत और आपकी ट्रेनिंग का नतीजा है।" कैप्टन इलावत ने नम्रता से कहा।

"सर, आपके लिए तो कम से कम महावीर-चक्र का रिकमेण्डेशन होना चाहिए। ब्रिगेडियर साहब और सी. ओ. साहब आपकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे।"

"साब, उनकी मेहरबानी है। सब ऑफ़िसर्स, जे. सी. ओ. साहबान और जवान बहुत बहादुरी से लड़े है।" कैप्टन इलावत ने विनयपूर्ण स्वर में कहा।

"साब, मेरी तीस साल की सर्विस है। मेरा तो एक ही तजरबा है।" कहकर सूबेदार ओमप्रकाश ने कैप्टन इलावत की ओर देखा, "कमाण्डर अच्छा हो तो ज़वान भी अच्छा।"

कैप्टन इलावत उत्तर में केवल मुसकरा दिया और बात बदलने के लिए बोला, "लेफ़्टिनेण्ट जिल साहब कहाँ हैं?"

"सर, सो रहे हैं। स्टेनगन की गोली टाँग के अन्दर ही रह गयी है। बटालियन-डॉक्टर कह रहे थे कि लेफ़्टिनेण्ट साहब को हॉस्पिटल जाना पड़ेगा, गोली निकलवाने के लिए।"

"कहाँ सो रहे हैं वह?"

"सर, आपके बंकर में।"

"गुड। वहाँ है कोई ड्यूटी पर?"

"सर, एक सन्तरी और एक आॅर्डली हैं।"

"वेरी गुड। हॉस्पिटल कब जाने के लिए कहा है?"

"सर, डॉक्टर साहब तो अभी भेजना चाहते थे लेकिन लेफ़्टिनेण्ट जिल साब ने मना कर दिया कि उन्हें बहुत ज़ोर की नींद आयी हुई है। दिन ढले जायेंगे।"

"अच्छा साब, लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल साहब ऊपा के लिए रिप्लेसमेण्ट का बन्दोबस्त कर रहे हैं। पन्द्रह जवान जायेंगे। आप उनके कमाण्डर होंगे।"

"जी साब।"

"वहाँ आपको नये मोरचे बनाने हैं। आपको टेलिफ़ोन लाइन मिलेगी। जब मोरचे तैयार हो जायें तो वहाँ एक सेक्शन रहेगा, किसी सीनियर एन. सी. ओ. की कमान में। ये सारा बन्दोबस्त सँभाल लें।"

"जी साब।"

"आपने चाय पी? ब्रेकफ़ास्ट किया?"

"जी साब।"

"तो फिर आप जायें। वे जवान बहुत थके हुए हैं। उन्हें जल्दी वापस भेज देना।"

"जी साब।" सूबेदार ओमप्रकाश सैल्यूट देकर तेज़ कदम उठाता हुआ चला गया। कैप्टन इलावत ने ज़ोर से अँगड़ाई ली और एकदम सेमी का ख़याल आनेपर मुसकरा दिया। उसने जेब से उसका पत्र निकाल कर दो-तीन बार पढ़ा और उसे तह करता हुआ बुदबुदाया, "मेरी लड़ाई भी शुरू हो गयी है।"

उसने एक बार फिर जम्हाई ली और हाथ मसलता हुआ अपने बंकर की ओर बढ़ गया।

लेफ़्टिनेण्ट जिल बायी करवट पर गहरी नींद सो रहा था। कैप्टन इलावत कुछ क्षणों तक उसे देखता रहा और उलटे पाँव वापस आ गया। उसने बंकर के पास वृक्ष से एक टहनी तोड़कर दातून बनायी और दाँत साफ़ करने लगा। उसने वहीं खड़े-खड़े चाय पी और फिर वह ऑप्रेशनल बंकर में चला गया।

"साब, आपके लिए ब्रेकफ़ास्ट लगाऊँ।" मेस के बैरे ने आकर पूछा।

"अभी नहीं। लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल साहब को आने दो।"

बैरे के जाने के बाद कैप्टन इलावत ने आँखें बन्द कर लीं। उसे अपने सारे शरीर में ऐंठन सी महसूस होने लगी और शरीर को ढीला छोड़ते ही उसे नींद आ गयी।

कैप्टन इलावत कुरसी में अधलेटा गहरी नींद सोया हुआ था। लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल उसके दोनों ओर कुरसियों पर बैठे-बैठे ऊँघ रहे थे। मामूली सी आहट पर भी उनकी ऊँघ टूट जाती और वे हड़बड़ा कर एक दूसरे की ओर देखने

लगते। लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल अपनी घड़ी में समय देखकर बुदबुदाया—"साढ़े ग्यारह बज गये हैं।"

"माइ गुडनेस।" लेफ़्टिनेंट सिंह ने कुरसी से उठते हुए कहा। लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल भी उठ खड़ा हुआ। तभी कैप्टन इलावत ने एक साथ अँगड़ाई और जम्हाई लेते हुए पूछा, "आप लोगों ने ब्रेकफ़ास्ट किया?"

"अभी नहीं, सर। आपके इन्तजार में थे।"

"ओह, आइ एम सो सॉरी। मेरा इन्तज़ार करने की क्या ज़रूरत थी? आपने ले लिया होता।" फिर उसने बाहर झाँकते हुए पूछा, "जिल उठा या अभी सो रहा है?"

"सर, पता करता हूँ।" कहकर लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल बाहर जाने लगा लेकिन लेफ़्टिनेण्ट जिल को बंकर में प्रवेश करते देखकर रुक गया। उसे देखते ही कैप्टन इलावत ने ऊँची आवाज़ में पूछा, "हैलो डक-शूटर, कैसे हो?"

"ए वन सर।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने मुसकरा कर अपना दायाँ अँगूठा ऊपर उठा दिया।

"बहुत खुश हो?"

"सर, बात ही ऐसी है।"

"क्या हुआ?"

"सर, आइ एम मैरीड।" कहकर लेफ़्टिनेण्ट जिल ने अपनी गरदन कुछ अकड़ा ली।

"यू आर मैरीड? कब? कहाँ?" हैरानी से कैप्टन इलावत की आँखें फैल गयीं।

लेफ़्टिनेण्ट जिल छड़ी के सहारे ज़ख्मी टाँग पर खड़ा मुसकराता रहा।

"कम आउट मैन, बताते क्यों नहीं?" कैप्टन इलावत ने रोब से पूछा।

"सर, क्या यह बताना ज़रूरी है? मेरा निजी मामला है।"

"डैम इट! हम जंग लड़ रहे हैं। जंग में किसी का कोई मामला प्राइवेट नहीं होता।" कैप्टन इलावत ने कहा।

लेफ़्टिनेण्ट जिल ने मुसकराते हुए रुक-रुककर कहना शुरू किया, "सर, डॉक्टर ने कहा है कि मुझे गोली निकलवाने के लिए हॉस्पिटल में दाख़िल होना पड़ेगा। और एक बार मैं दाखिल हुआ तो अकेला वापस नहीं आऊँगा।"

सभी खिलखिला कर हँसने लगे।

"डैम इट! तुमने सस्पेंस तो ऐसे पैदा किया था जैसे मेरे बंकर में तुम्हारे लिए दुल्हन बैठी थी। यह बताओ, तुम्हारी टाँग कैसी है?"

"ठीक है सर, थोड़ी स्टिफ़ है। चलने पर थोड़ा दर्द होता है।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने छड़ी के सहारे थोड़ा लँगड़ा कर चलते हुए कहा।

लेफ़्टिनेण्ट सिंह कैप्टन इलावत के पीछे खड़ा था। उसे देखकर कैप्टन इलावत ने प्रसन्न भाव से पूछा, "हैलो, ब्रेवडिगर, तुम कैसे हो?"

"फाइन सर, थैंक्यू।"

"लाशें ठिकाने लगा दीं?"

"येस्सर! दीनानाथ की लाश बटालियन-हेडक्वार्टर भेज दी है, वहाँ से मेसेज आया था।"

"बहुत अच्छा किया।" कैप्टन इलावत के चेहरे पर एक क्षण के लिए उदासी छा गयी।

"सर, माइन-फ़ील्ड में से जो लाशें निकाली थीं वे हौरीबल थीं।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने आँखें बन्द करके हाथ और सिर हिलाते हुए कहा।

"सिंह, कोई और बात करो। आई एम सिक ऑफ़ डेड बॉडीज़! चाहे वे अपनों की या दुश्मन की, उन्हें ठीक से दफ़ना दिया न?"

"येस्सर।"

"गुड, ठीक किया। यू नो, डेड बॉडीज़ हैव नो नेशनलिटी।" कैप्टन इलावत ने दार्शनिक और दुखद स्वर में कहा।

"सर, आप ब्रेकफ़ास्ट कब करेंगे?" लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल ने पूछा।

"जवानों ने ब्रेकफास्ट किया?"

"सर, बारह बज रहे हैं, उनका तो लंच भी हो गया।"

"वेरी गुड। हम भी ब्रेकफ़ास्ट और लंच इकट्ठा ही कर लेते हैं।" कैप्टन इलावत उठता हुआ बोला, "मैं जल्दी से नहा लूँ। आप उतनी देर में मेस में खाना लगाने के लिए कह दें।"

पन्द्रह मिनट के बाद कैप्टन इलावत वापस आ गया।

"सर, सी. ओ. साहब आ रहे हैं, कोई पन्द्रह मिनट में।"

"आने दो।" कैप्टन इलावत ने कहा और वे लोग मेस की ओर बढ़ गये।

वे ब्रेकफ़ास्ट और लंच करके मेस से बाहर निकले ही थे कि कर्नल गिल और कैप्टन मिश्रा आ गये। उन्हें देखकर कैप्टन इलावत, लेफ़्टिनेण्ट सिंह और लेफ्टिनेण्ट दर्शनलाल ने तेज़-तेज़ क़दम उठाने शुरू कर दिये। लेफ्टिनेण्ट जिल भी छड़ी के सहारे लँगड़ाता हुआ तीव्र गति से चलने का यत्न करने लगा। किन्तु उन लोगों के बराबर न चल सका। लेफ़्टिनेण्ट जिल को उनपर क्रोध आया और अपनेआप पर अफ़सोस, लेकिन ब्रिगेडियर स्वामी के शब्द याद आते ही उसके होंठों पर फीकी-सी मुसकान फैल गयी कि वे लोग भाग्यशाली हैं जो गोली लगने के बावजूद चल-फिर सकते हैं।

"इलावत, मिश्रा तुम्हें मुबारकबाद देने आया है।" कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत के अपने निकट आने पर कहा।

"सर, बहुत मेहरबानी है इनकी। लेकिन बन्धु, मुँह मीठा कराकर मुझे बधाई दो। मिष्ठान्न के बिना बधाई फीकी रहेगी।" कैप्टन इलावत कैप्टन मिश्रा की ओर शरारत-भरी नज़रों से देखता हुआ बोला।

"जंग खत्म होने दो, मैं तुम्हें बरफ़ी से तौल दूँगा।" कैप्टन मिश्रा ने आश्वासन देते हुए कहा।

कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत को सम्बोधित करते हुए कहा, "आई एम सॉरी, मैं तुम्हारे जवानों को सुबह पर्सनली बधाई नहीं दे सका था, इसीलिए अब आया हूँ।"

"थैंक्यू वेरी मच सर! इस टाइम पर सन्तरी-ड्यूटी पर जवानों को छोड़कर सब आराम कर रहे हैं। रात में मेरी कम्पनी में किसी को आँख बन्द करने का भी अवसर नहीं मिला।"

"दैट्स वेरी गुड, उन्हें आराम करने दो।" कर्नल गिल ने कहा।

कैप्टन मिश्रा कैप्टन इलावत के निकट आकर बोला, "बन्धु, तुम कैप्टन सिरोही को जानते हो? गोरखा बटालियन में था।"

"येस। बहुत अच्छी तरह। वह मेरा बैचमेट था।"

"ही इज़ डेड। पुअर चैप! बहुत बड़ी ट्रेजडी हुई है।" कर्नल गिल ने दुखद और अफ़सोस-भरे स्वर में कहना शुरू किया।

"क्या हुआ था सर? उनके एरिया में तो दुश्मन अभी तक खामोश हैं।" हैरानी और अफ़सोस से कैप्टन इलावत की आँखों की पुतलियाँ फैल गयीं।

"कैप्टन सिरोही की ममी ने उसे एक यन्त्र या तावीज़ भेजा था, उसे मौत से बचाये रखने के लिए। सिरोही वह तावीज़ दूसरे ऑफ़िसरों को दिखा रहा था। शायद वे तीन थे।" कर्नल गिल अपनी बात की पुष्टि के लिए कैप्टन मिश्रा की ओर देखने लगा।

"सर, वे चार थे—कम्पनी-कमाण्डर मेजर चतरथ, लेफ़्टिनेण्ट सेनगुप्ता, लेफ़्टिनेण्ट अमजद और कैप्टन सिरोही।" कैप्टन मिश्रा ने कहा।

"हाँ, वे अपनी ओर बन्ध के पीछे अपने हेडक्वार्टर से कोई सौ गज़ दूर खड़े तावीज़ देख रहे थे तभी दुश्मन के तोपखाने का एक गोला वहाँ उनके सिरों पर आकर गिरा।"

"वेरी सैड!" कैप्टन इलावत ने अफ़सोस-भरे लहजे में कहा।

"सर, मेजर चतरथ बच गये हैं, ही इज़ वेरी लकी। वे शेल गिरने से कोई आधा मिनट पहले पिस करने के लिए बन्ध से नीचे उतर गये थे।" कैप्टन मिश्रा ने कहा।

"येस-येस, चतरथ इज़ सेफ़ बट स्टूपीफ़ाइड! वह बिटर-बिटर देखता है और बात नहीं करता। उसे हॉस्पिटल भेज दिया है।" कर्नल गिल ने कहा।

कुछ समय तक वे सब उदास और चिन्तित से अपने-अपने विचारों में खोये

रहे। कर्नल गिल ने घड़ी देखते हुए कहा, "ओके इलावत, रिलैक्स! रिलैक्स!"

उनके जाने के बाद कैप्टन इलावत वृक्ष की ओट में फ़ोल्डचेयर पर गिरता हुआ बोला, "एक जगह पर सब इकट्ठे नहीं रहना। पूरी कम्पनी को ऑर्डर दे दो।"

उन्नीस

नौ बजे प्रातः बटालियन-हेडक्वार्टर में ब्रीफ़िंग के लिए सब कम्पनी-कमाण्डर उपस्थित थे। ब्रिगेडियर स्वामी, कर्नल गिल, कर्नल मेनन, कर्नल दिवाकर, कर्नल राठौर और स्टाफ़-अफ़सर सैण्ड मॉडल पर खड़े दुश्मन के इलाके में पुल पर क़ब्ज़ा करने के प्लान पर विचार-विमर्श कर रहे थे। अन्य अफ़सर ऑप्रेशनल बंकर में उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

सब कम्पनी-कमाण्डरों ने कैप्टन इलावत को उसके सफल ऐक्शन के लिए बधाई दी। मेजर बाबू एक लम्बी छड़ी कैप्टन इलावत के हाथ में देता हुआ बोला, "इलावत, फ़ील्ड-मैप पर पूरा ऐक्शन बताओ! तुमने कहाँ से कैसे मूव किया और अटैक का प्लान क्या था?"

"सर, आप क्यों मेरी टाँग खींच रहे हैं। आप बेहतर जानते हैं।" कैप्टन इलावत ने बात टालने के लिए कहा।

"इलावत, तुमने ऐसा काम किया है जिसपर विश्वास करना मुश्किल है। कम आउट, मैन।" मेजर शर्मा ने आग्रह करते हुए कहा।

"सर, बस हो गया, मैंने कुछ नहीं किया। ईश्वर की कृपा और जवानों की वीरता का फल है।" कैप्टन इलावत ने नम्र स्वर में कहा।

इतनी देर में ब्रिगेडियर स्वामी का बुलावा आ गया। सब अफ़सर ऑप्रेशनल बंकर से सैण्ड-मॉडल के पास चले गये। ब्रिगेडियर स्वामी ने सबका अभिवादन किया और कैप्टन इलावत की ओर देखता हुआ बोला, "इलावत, रात कैसे गुज़री?"

"सर, बहुत आराम से, दुश्मन-साँस तक नहीं ले पाये।"

ब्रिगेडियर स्वामी ने रूमाल से नाक साफ किया और फिर अपनी मूँछों को दुरुस्त करके लम्बी छड़ी उठाता हुआ गम्भीर स्वर में बोला, "आप सबको इस टाउन की स्ट्रेटिजिक इम्पॉरटेंस (सामरिक महत्त्व) मालूम है। यहाँ से दुश्मन को ईस्ट, नार्थ और साउथ की ओर एडवान्स करने के लिए पक्की सड़कें मिल सकती हैं।"

ब्रिगेडियर स्वामी ने उन सबकी ओर देखा और फिर वह सैण्ड-मॉडल में बने पुल की ओर संकेत करता हुआ बोला, "दुश्मन के पास नदी के ऊपर पुल है।

वह इस ब्रिज पर से भारी गाड़ियाँ, टैंक आदि ला सकता है। ब्रिज की डिफ़ेन्स के लिए तीन वन्ध हैं।" ब्रिगेडियर स्वामी ने तीन हरे धागों की ओर इशारा करते हुए बात जारी रखी—"हर वन्ध में दुश्मन के पक्के मोरचे, कंक्रीट के बंकर तथा पिलवॉक्स हैं। उनके लोकेशन और संख्या के वारे में हमारी जानकारी बहुत कम है। बहुत कोशिशों के बावजूद हम अधिक जानकारी हासिल नहीं कर सके क्योंकि ऊँचे सरकण्डों से घिरी इन मोरचेवन्दियों को लोकेट करना असम्भव था।" ब्रिगेडियर स्वामी और भी अधिक गम्भीर हो गया। "इन मोरचेवन्दियोंके सामने हजारों गज लम्बी और सैकड़ों गज चौड़ी माइन-फील्ड्ज़ (बारूदी सुरंगों के क्षेत्र) हैं। टाउन की डिफ़ेन्स के लिए ब्रिज पर क़ब्ज़ा करना लाजमी है और ब्रिज पर क़ब्ज़ा करने के लिए सामने से हमला करना मौत को इन्वीटेशन देना है।"

फिर ब्रिगेडियर स्वामी ने दुश्मन की तैयारियों का ब्योरा देते हुए कहा, "हमें यह एक्शन ताक़त की वजाय अक़्ल से करना है। आप लोगों ने कई वार सैण्ड-मॉडल पर रिहर्सल की है लेकिन अब हमने प्लान कुछ बदल दिया है।"

सब अफ़सरों ने एक-दूसरे की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा। ब्रिगेडियर स्वामी ने कहना शुरू किया, "पहले ब्रिज पर क़ब्ज़ा करने का टास्क 'ए' बटालियन को दिया गया था लेकिन कल उस बटालियन की एक कम्पनी के साथ बहुत बड़ी ट्रेजडी हुई है।" ब्रिगेडियर स्वामी का गला रुँध गया।

वहाँ पर मौजूद सब अफ़सरों पर उदासी छा गयी। ब्रिगेडियर स्वामी कुछ क्षणों तक चुप रहकर बोला, "अब यह टास्क आपकी बटालियन को दिया गया है। ईश्वर ने आपको इस लड़ाई का हीरो बनने का चान्स दिया है।"

बटालियन-अफ़सरों ने प्रसन्न भाव से जल्दी-जल्दी एक-दूसरे की ओर देखा और आँखों ही आँखों में इशारे किये।

"दुश्मन को कन्फ़्यूज़ (भ्रम में डालने) करने के लिए हम कुछ डाइवरशनरी मूव भी करेंगे। हमारी कोशिश यही रहेगी कि ब्रिज को विना नुक़सान पहुँचाये उस पर क़ब्ज़ा किया जाये। दुश्मन की कुमक रोकने के लिए आर्टिलरी सपोर्ट भी दी जायेगी। ब्रिज एरिया पर अटैक शुरू होने के साथ ही बटालियन 'ए' की दो कम्पनियाँ 'पी थ्री' और 'पी फ़ोर' के बीच में, दुश्मन के इलाक़े में, मार्च करेंगी और वन्ध में दुश्मन की मोरचेवन्दियों को क्लीयर करेंगी। 'पी थ्री' पोस्ट पर क़ब्ज़ा करने का टास्क वी. एस. एफ. को दिया गया है।"

ब्रिगेडियर स्वामी ने छड़ी अपने कूल्हे के साथ टेक दी और तीन उँगलियाँ खड़ी करता हुआ बोला, "हमारी कामयाबी तीन बातों पर डिपेण्ड करती है। नम्बर एक, दुश्मन को अटैक के डाइरेक्शन का पता नहीं लगना चाहिए। नम्बर दो, अटैक के मैगनीट्यूड के बारे में उसे कन्फ़्यूज़ करना चाहिए; और नम्बर तीन, एक्शन बहुत स्विफ़्ट होना चाहिए। यह ऑप्रेशन बहुत आसान बन सकता है अगर हम दुश्मन को

"तुम तो यों बातें कर रहे हो जैसे सत्संग में बैठे हो। मेरे खयाल में वे नहीं आयेंगे।"

"शर्त लगा लो, अगर जीत गया तो दो किलो वरफ़ी लूँगा और अगर हार गया तो ह्विस्की की बोतल दूँगा। कहो मंजूर है ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"मंजूर।" कैप्टन डेविड ने उसके साथ हाथ मिलाते हुए कहा।

"बी केयरफ़ुल ! सी. ओ. साहव हमारी ओर आ रहे हैं।" कैप्टन डेविड ने सरगोशी में कहा।

वे तीनों सावधान होकर उनकी ओर देखने लगे।

"हैलो डेविड, इन्द्र के आने का कोई चान्स नहीं।" कर्नल गिल ने कहा।

"येस्सर, लेकिन इलावत कहता है कि वे जरूर आयेंगे।"

"नो, नो। वह क्यों आयेगा ? सब दलीलें उसके आने के खिलाफ़ हैं।"

"सर, मैंने डेविड से शर्त लगायी है। सर, अगर चाहें तो आप भी शर्त लगा लें।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"क्या शर्त है ?"

"सर, अगर मैं जीत गया तो डेविड से दो किलो वरफ़ी लूँगा और हार गया तो उसे ह्विस्की की एक बोतल दूँगा।"

"ओह आई सी, इलावत ! अगर तुम मुझसे कुछ रुपये हारना चाहते हो तो मुझे क्या एतराज़ हो सकता है ?" कर्नल गिल ने हँसते हुए कहा।

"सर, क्या मैं यह समझ लूँ कि आपके साथ भी मेरी शर्त पक्की है ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"येस, येस, व्हाइ शुड आई लूज़ ए बॉट्ल ऑफ़ ह्विस्की ?" कर्नल गिल ने उत्तर दिया।

ब्रिगेडियर स्वामी के जाने के बाद कर्नल गिल सब अफ़सरों को सैण्ड-मॉडल के पास ले गया। उसने संक्षिप्त रूप में पूरे ऑप्रेशन का वर्णन किया और छड़ी को कन्धे के साथ टिकाता हुआ बोला, "अब सवाल डेप्लायमेण्ट का है, हर कम्पनी के टास्क का है। कैप्टन इलावत की कम्पनी टैंकों से उतरकर ब्रिज के पश्चिमी सिरे से परे साउथ में बन्ध के साथ-साथ पोज़ीशनें लेगी। मेजर करमरकर की कम्पनी ब्रिज के पश्चिमी सिरे पर उत्तरी बन्ध पर मोरचा लेगी। मेजर शर्मा की कम्पनी दक्षिण से ब्रिज की ओर बढ़ेगी लेकिन ब्रिज से कोई पाँच सौ गज़ पीछे रहकर फ्लैंक को सँभालेगी। कैप्टन डेविड की कम्पनी रिज़र्व में रहेगी।"

कर्नल गिल ने छड़ी को ज़मीन पर ठोंकते हुए कहा, "आप सब बहुत बहादुर और तजुरबेकार ऑफ़िसर्स हैं। आपको ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं। सिर्फ़ एक बात कहना चाहता हूँ, जवानों का मॉरल ऑफ़िसरों के मॉरल पर डिपेण्ड करता है। अगर ऑफ़िसर्स अपने जवानों को अटैक में लीड करता है तो जवान उसका मुँह देखने की

कोशिश करते हैं। अगर वह पीछे रहता है तो जवान हमेशा उसकी पीठ देखने की कोशिश करते हैं।"

कर्नल गिल ने बात जारी रखते हुए दृढ़ स्वर में कहा, "जंग उस समय तक ही भयानक है जब तक आप उससे दूर हैं। एक बार आप जंग में कूद पड़ें तो उसमें खतरा उतना ही रह जाता है जितना शिकार में होता है।"

कर्नल गिल आकाश की ओर उँगली उठाता हुआ बोला, "जिन लोगों को भगवान् में, फ़ेट पर, डेस्टिनी पर भरोसा है वे जानते हैं कि हर गोली पर नाम लिखा होता है और वह गोली उसे लगती है जिसका उसपर नाम होता है। इसलिए हर गोली से डरने का कोई कारण नहीं है।"

यह सुनकर कैप्टन इलावत को हँसी आ गयी और वह हँसी को दबाने के लिए मुँह पर रुमाल रखकर खाँसने लगा। सब अफ़सर उसकी ओर देखने लगे तो कर्नल गिल ने उससे कुछ सख्त लहजे में पूछा, "इलावत, तुम हँस क्यों रहे हो ?"

"नथिंग सर।" कैप्टन इलावत ने गम्भीर मुद्रा बनाने की कोशिश करते हुए कहा।

"नो इलावत, कुछ न कुछ ज़रूर है।"

"सर, मैं यह सोच रहा था कि जिस गोली पर नाम लिखा है उससे डर नहीं लगना चाहिए क्योंकि वह तो ईश्वर मार्क हो चुकी है। लेकिन उस गोली से ज़रूर डर लगता है जिसपर केवल इतना लिखा होता है—हर किसी के लिए। टू हूम सो एवर इट मे कन्सर्न।" कैप्टन इलावत ने गम्भीर स्वर में कहा।

सब अफ़सर खिलखिलाकर हँस पड़े। कर्नल गिल भी उनकी हँसी में शामिल हो गया और फिर गर्व-भरे स्वर में बोला, "मुझे बहुत खुशी है कि आप लोग जंग से पहले तनावनी के वातावरण में भी हँस सकते हैं।" और फिर उसने गम्भीर स्वर में कहा, "एक और बात भी याद रखना, इस जंग को हमें अन्तिम जंग बनाना है। हमारा यही मोटो होना चाहिए !"

कर्नल गिल कुछ क्षणों के लिए चुप रहकर बोला, "मैं चाहूँगा कि आप डिस्पर्स होने से पहले अपना-अपना टास्क सैण्ड-मॉडल पर अच्छी तरह समझ लें। आपको मूवमेण्ट ऑर्डर टेलिफ़ोन पर दे दिये जायेंगे लेकिन आप लोगों को पाँच बजे तक बिल्कुल तैयार रहना होगा। ओके, जेण्टस्। शाम को फिर मुलाक़ात होगी। बाई-बाई।" कर्नल गिल ने अपनी छड़ी कैप्टन लिया की ओर बढ़ा दी और स्वयं अपने बंकर में चला गया।

एक-एक करके जीपें बटालियन-हेडक्वार्टर से निकल रही थीं। कैप्टन इलावत और कैप्टन डेविड की जीपें एक दूसरी के पीछे आ रही थीं। वे डाउन से बम्ब की ओर जानेवाले कच्चे रास्ते की ओर जा रहे थे कि मोड़ पर कैप्टन इलावत ने मेजर रणजीतसिंह को एक निश्चित ढंग से नीचे उतरते देखा। उसने इलावत आकर और गेड

ली। वह छलांग मारकर नीचे उतर गया और दौड़कर सड़क पार करके मेजर इन्द्रसिंह से लिपट गया।

"सर, आपको देखकर मुझे इतनी खुशी हुई है कि मैं बता नहीं सकता।"

इतनी देर में कैप्टन डेविड भी उनके पास आ गया।

"हैलो डेविड, कैसे हो ?" मेजर इन्द्रसिंह ने बहुत गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए पूछा।

"फ़ाइन सर, थैंक्यू। आपके आ जाने से हमारा हाल बहुत ही अच्छा हो गया।" कैप्टन डेविड की बाँछें खिल गयी थीं।

"सर, सब कहते थे कि आप नहीं आयेंगे लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि आप ज़रूर आयेंगे और एक्शन से पहले आयेंगे, क्यों डेविड ?" कैप्टन इलावत ने अपनी बात की पुष्टि चाही और वह पुनः बोला, "मेरी शर्त दो।"

"ज़रूर, दो किलो बरफ़ी शर्त जीतने की और दो किलो बोनस।" कैप्टन डेविड का चेहरा दमक रहा था।

"शर्त लगायी है ?" मेजर इन्द्रसिंह ने कैप्टन इलावत की ओर मुसकराकर देखते हुए पूछा।

"येस्सर। मैंने दो किलो बरफ़ी कर्नल गिल से भी जीती है।" कैप्टन इलावत ने गर्व से कहा।

"वण्डरफ़ुल, लेकिन क्या करोगे इतनी बरफ़ी ?"

"सर, आज शाम को ऑप्रेशन 'वाइल्ड कैट' शुरू हो रहा है। दि बैट्ल फ़ॉर दि ब्रिज। मैं तो पेट-भर बरफ़ी खाकर ही विक्टरी सेलीब्रेट करूँगा।" कैप्टन इलावत ने कहा।

वे अपनी जीपों के निकट पहुँच गये।

"सर, अब प्रोग्राम क्या है ?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"प्रोग्राम क्या होगा, अपने-अपने हेडक्वार्टर चलते हैं। मैं पहले अपने जवानों से मिलना चाहता हूँ।"

"सर प्लीज़, कुछ मिनटों के लिए बटालियन-हेडक्वार्टर ज़रूर चलिए। मैं सी. ओ. साहब के मुँह से सुनना चाहता हूँ कि वे शर्त हार गये हैं।" कैप्टन इलावत ने आग्रह किया।

मेजर इन्द्रसिंह कुछ क्षणों सोचकर बोला, "अच्छा डेविड, तुम चलो, मैं बटालियन-हेडक्वार्टर होकर आता हूँ। तुम ब्रीफ़िंग की समरी बता देना, हम बाद में डिस्कस करेंगे।"

"डेविड, सिंह को टेलिफ़ोन पर इतना कह देना कि वह पूरी कम्पनी को मूव आउट होने के लिए तैयार रखे।" कैप्टन इलावत ने कहा। फिर वह ड्राइवर की सीट पर बैठता हुआ बोला, "सर, आइए, सी. ओ. साहब कहीं चले न जायें।"

"तुम अपनी बरफी अभी लोगे या वापसी पर ?" मेजर इन्द्रसिंह ने पूछा।

"सर, सचमुच आप लाये हैं ?" कैप्टन इलावत ने हैरानी से पूछा।

"पिस्तेवाली ! तलाश करने में कम से कम दो घण्टे लग गये। गुड़ी गीली बस छोड़नी पड़ी।"

"गुड गोड ! सर, अभी दे दें, कम से कम शक्ल तो देख लूँ।"

मेजर इन्द्रसिंह ने अटैची से बरफी का डिब्बा निकालकर कैप्टन इलावत की ओर बढ़ा दिया। वह डिब्बे को ध्यान से देखता हुआ बोला, "पैकिंग बहुत अच्छी है।"

कैप्टन इलावत ने रिबन खोलकर ढक्कन उठा दिया और दो टुकड़े एक साथ मुँह में रखता हुआ प्रसन्न भाव से बोला, "वण्डरफुल ! बहुत डिलिशस है। ऐ डेविड, तू भी चख, शर्त हारी है। ऐसी ही बरफी मँगवाना।" कैप्टन इलावत ने डिब्बा पहले मेजर इन्द्रसिंह और फिर कैप्टन डेविड की ओर बढ़ाते हुए कहा। उन्होंने एक-एक टुकड़ा उठा लिया तो उसने एक बार फिर दो टुकड़े एक साथ मुँह में रख लिये और डिब्बा बन्द कर दिया।

बटालियन-हेडक्वार्टर को जाते हुए कैप्टन इलावत ने उन्हें पर दुश्मन के हमले और जवाबी हमले का संक्षिप्त वृत्तान्त सुनाया।

"सो ! तुम वार-वैटरन बन चुके हो।"

"सर, वैटरन तो आज बनूँगा। सी. ओ. साहब का ऑर्डर है कि इस लड़ाई को आखिरी लड़ाई बनाना है।" कैप्टन इलावत ने और चलते-चलाते एक हाथ से डिब्बे का ढक्कन खोला और बरफ़ी के टुकड़े मुँह में रख लिये।

"इलावत, मेरा ख़याल है कि तुम अपने हेडक्वार्टर पहुँचने से पहले ही सारी बरफ़ी खा जाओगे।"

"सर, मैं क्या करूँ, बरफ़ी है ही बहुत डिलिशस ! फिर, अब डिब्बी और आ रही है।" कैप्टन इलावत ने आशापूर्ण स्वर में कहा।

बटालियन-हेडक्वार्टर पहुँचकर वे सीधे ऑपरेशन बंकर में चले गये। कर्नल गिल मेजर इन्द्रसिंह को देखकर हैरान रह गया—"इन्द्र, कब आये तुम ?"

"सर, कोई दस मिनट हो गये। सीधा आपके पास आ रहा हूँ।"

"वेरी गुड।" कर्नल गिल ने कहा और फिर कैप्टन इलावत की ओर देखता हुआ बोला, "इलावत, तुम जीते, मैं हारा। तुम्हें जल्दी ही बरफ़ी पहुँच जायेगी।"

"थैंक्यू सर !" कैप्टन इलावत ने बहुत प्रसन्न मुद्रा में कहा।

"इन्द्र, तुम्हारी सिस्टर की शादी हो गयी ?"

"सर, हो नहीं होगी इस समय।" मेजर इन्द्रसिंह ने घड़ी देखते हुए कहा।

"व्हाट नॉनसेंस ! तुम शादी से पहले ही भाग पड़े। यह बहुत बुरी बात है।" कर्नल गिल ने क्रुद्ध स्वर में कहा। और फिर मेजर इन्द्रसिंह की ओर देखता हुआ बोला, "तुम चले कब थे ?"

"सर, मैं कल कोई वारह वजे। सवने रोकने की कोशिश की लेकिन मैंने उनसे एक ही सवाल पूछा।" मेजर इन्द्रसिंह एक क्षण के लिए रुककर बोला, "अगर मैं न रुकूँ तो क्या शादी नहीं होगी ? उनको निरुत्तर पाकर मैंने कहा कि जो शादी सीमा पर शुरू हुई है वह मेरे विना नहीं होगी।"

"इन्द्र, अगर कमाण्डर न हो तो जवानों का मोराल खत्म हो जाता है।" मुझे वहुत खुशी है कि तुम आ गये हो और वह भी इन टाइम। तुम्हारी कम्पनी अव पूरे कान्फ़ीडेंस से वैट्ल में जायेगी।"

"थैंक्यू सर।" कहकर मेजर इन्द्रसिंह और कैप्टन इलावत ने सैल्यूट दिये और वंकर से वाहर आ गये और फिर मेजर इन्द्रसिंह के हेडक्वार्टर की ओर चल पड़े।

कैप्टन इलावत सावधानी से जीप चलाता हुआ थोड़े-थोड़े समय के वाद अपने चारों ओर देख लेता कि कहीं दुश्मन के हवाई जहाज़ उन पर ट्रैफ़िग न कर जाये। साथ-साथ वह मेजर इन्द्रसिंह को वैट्ल का प्लान भी वता रहा था। वैट्ल-प्लान का संक्षिप्त वर्णन करने के वाद वह सशक्त स्वर में वोला, "सर, मेरी कम्पनी के मुँह को खून लग गया है। हम आज अपना कमाल दिखायेंगे।"

"लेट अस होप सो।" मेजर इन्द्रसिंह ने सोच में डूवी आवाज़ में कहा। मेजर इन्द्रसिंह की कम्पनी के हेडक्वार्टर में पहुँचते ही कैप्टन इलावत ऑप्रेशनल वंकर की ओर भाग गया। लेफ़्टिनेण्ट जोशी और लेफ़्टिनेण्ट गुप्ता को देखकर वह प्रसन्न भाव से वोला, "देखो, मैं तुम्हारे सी. ओ. साहव को लेकर आया हूँ।"

"थैंक्यू वेरी मच सर !" दोनों ने एक साथ कहा।

"गुप्ता, जरा मेरी कम्पनी मिलाना।"

दूसरी ओर से उत्तर आने पर लेफ़्टिनेण्ट गुप्ता ने रिसीवर कैप्टन इलावत की ओर वढ़ा दिया।

"हैलो सिंह, मैं इलावत वोल रहा हूँ। कैप्टन डेविड ने ऑर्डर वता दिये होंगे ?"

"येस्सर। मैंने प्लाटून-कमाण्डरों और उनके जे. सी. ओज़ को 'कनवे' कर दिये हैं।"

"गुड। तुम एमूनेशन, फ़ील्ड-राशन और गाड़ियों के लिए पेट्रोल वग़ैरह चेक कर लो।"

"सर, कर लिया है।"

"वेरी गुड। खाना खा लिया ?"

"सर, आपका इन्तजार है।"

"ओके। मैं आ रहा हूँ।" कैप्टन इलावत रिसीवर रखकर मेजर इन्द्रसिंह से वोला, "सर, अव मुझे आज्ञा दीजिए।"

"इलावत, खाना खाकर जाना, तैयार है।"

"नो, थैंक्स सर! मेरे अफसर खाने के लिए मेरा इन्तजार कर रहे हैं।" कैप्टन इलावत ने कहा और हाथ हिलाता हुआ अपनी जीप की ओर बढ़ गया।

कैप्टन इलावत ने अपने हेडक्वार्टर पहुँचते ही लड़ाई की तैयारी के बारे में पूरी चेकिंग की, और फिर इधर-उधर देखकर पूछा, "जिल कहाँ है?"

"सर, सवेरे से लेटर लिख रहा है।"

"उसे कहो कि पहले खाना खा ले, उसके बाद जबतक चाहे लेटर लिखता रहे।" कैप्टन इलावत ने कहा और वे वृक्ष के नीचे खड़े उसकी प्रतीक्षा करने लगे।

लेफ्टिनेण्ट जिल को आता देखकर कैप्टन इलावत ने ऊँची आवाज में पूछा, "हैलो डक-शूटर, कैसे हो अब? सुना है, आज सुबह से लेटर लिख रहे हो।"

"येस्सर, सेयिंग गुडबाई टू फ्रैण्ड्स रिलेशन्ज, किसी से माफी, किसी को प्यार, बैट्ल की तैयारी हो रही थी।" लेफ्टिनेण्ट जिल ने मुसकराते हुए कहा।

कैप्टन इलावत ने उसकी ओर अर्थपूर्ण नजरों से देखा और वे मेस के बंकर में चले गये। बैरे ने जल्दी-जल्दी खाना लगा दिया।

"चावल, आलू-टमाटर, दाल....।" लेफ्टिनेण्ट जिल ने डोंगों के ढक्कन उठाते हुए कहा, "सूरजमल, सुनो, तुम्हारे पास जितना मक्खन और जैम है सब ले आओ! हू नोज, दिल में कोई हसरत नही रहनी चाहिए।" कैप्टन इलावत ने कहा और फिर लेफ्टिनेण्ट जिल की ओर मुड़ता हुआ बोला, "जिल, तुम हॉस्पिटल जा रहे हो?"

"नो सर, मैंने तो बैट्ल की पूरी तैयारी कर ली है।"

"लुक जिल, तुम इन्फैण्टरी-ऑफिसर हो और इन्फैण्टरी-ऑफिसर की टाँगें और बाँहें ही उसके सबसे बड़े हथियार हैं। और अनलकोली, तुम्हारी टाँग ज़ख्मी है। क्या तुम प्लाटून के जवानों की ज़िम्मेदारी ले सकते हो?"

"सर, उनकी जिम्मेदारी ले सकता हूँ, अपनी नहीं।" लेफ़्टिनेण्ट जिल गम्भीर हो गया। वह कुछ क्षणों तक खामोशी से कैप्टन इलावत की ओर देखता रहा। "सो सर, आपका ऑर्डर है कि मैं अपनी प्लाटून का कमाण्ड करूँगा।"

"जिल, यू आर हैण्डीकैप्ड बाई योर इंजुरी!"

"सर, मैं मामूली साइकोलॉजी की बात कर रहा हूँ। सिर-दर्द शुरू हो जाये तो सुई की चुभन की टीस का एहसास खत्म हो जाता है। बड़ा दर्द छोटे दर्द को भुला देता है। मुझे बड़े दर्द की जरूरत है।"

"ओके। लेकिन तुम्हारी प्लाटून रिज़र्व में रहेगी।"

"राइट सर, दोज़ हू वेट आलसो सर्व।" लेफ्टिनेण्ट जिल ने दार्शनिक भाव में कहा।

फिर वह ज़ख्मी टाँग सहलाता हुआ बोला, "आज मैं इसी गोली को इसके मैके ले जाऊँगा। मैं इसे पासपोर्ट और वीजा के बिना उनसे लाया था और इनके बिना ही उधर ले जाऊँगा।"

खाना खाने के बाद वे बाहर आ गये। कैप्टन इलावत ने जल्दी-जल्दी पूरी कम्पनी का चक्कर लगाया। क्वार्टर-मास्टर हवलदार जवानों को एमूनेशन और ड्राई राशन बांट रहा था। जवान अपने मोरचों में बैट्ल-ड्रेस में मौजूद थे। कैप्टन इलावत ने प्रत्येक जवान को उसका नाम लेकर पूछा, "तैयार हो ?"

"जी साब।"

"कोई फ़िक्र ?"

"नहीं साब।"

कैप्टन इलावत जवानों से मिलकर अपने बंकर में आ गया। उसने जेब से सेमी का पत्र निकाल कर कई बार पढ़ा और फिर पैड लेकर उत्तर लिखने बैठ गया।

उसने पत्र अधूरा ही छोड़ दिया और उसे तह कर के जेब में रखता हुआ सोचने लगा कि उसे बैट्ल के बाद पूरा करेगा; दुश्मन के एरिया में बैठकर।

कैप्टन इलावत कुछ समय तक सेमी के बारे में सोचता रहा। उसने फ़ैसला किया कि लड़ाई खत्म होने के बाद वह सेमी से मिलकर सारी बातों को औपचारिक रूप दे देगा। जब वह इस सोच में बहुत आगे बढ़ने लगा तो उसने सिर झटक दिया और बंकर से बाहर आकर आसाराम को बुलाकर कहा, "देखो, बाथरूम में पानी है। कुछ सुस्ती महसूस हो रही है। मैं नहाना चाहता हूँ।"

"जी साब, पानी है।"

कैप्टन इलावत ने अच्छी तरह स्नान किया और तौलिये में ही अपने बंकर में आ गया। उसे इस दशा में देखकर लेफ़्टिनेण्ट जिल उठ गया और माफ़ी माँगता हुआ बाहर जाने लगा।

"जिल, बैठो-बैठो, मेरे पास कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम से छिपाने की जरूरत हो।"

लेफ़्टिनेण्ट जिल खाट पर बैठकर उसकी ओर ध्यान से देखता हुआ बोला, "सर आपकी बॉडी तो बहुत शेपली है।"

"जिल, रोज आसन करता हूँ।" कैप्टन इलावत ने मुसकराते हुए कहा।

"सर, मैं बाहर इन्तजार करता हूँ।" लेफ़्टिनेण्ट जिल ने उठते हुए कहा।

"बैठो-बैठो जिल, बहुत देर के बाद मुझे अपनी बॉडी का एडमायरर मिला है।" कैप्टन इलावत ने आग्रहपूर्वक कहा।

उसने नयी बनियान, नया अण्डरवीयर, नयी वर्दी और नयी जर्सी पहनी। फिर गले पर टेरीकॉट का रंग-बिरंगा स्कार्फ़ बांधा और बहुत तन्मयता से कंघी करने लगा।

लेफ़्टिनेण्ट जिल उसकी ओर बहुत दिलचस्पी से देख रहा था—"सर, आप बैट्ल के लिए तैयार हो रहे हैं या किसी मैरेज-पार्टी के लिए ?"

"जिल, बैट्ल तो स्वयंवर की तरह ही है।" कैप्टन इलावत ने अपनेआप को

शीशे में देखते हुए कहा।

कैप्टन इलावत ने अपने हेवरसेक में ड्राई राशन, एमूनेशन इत्यादि चेक किया। वाटर-बॉटल को पेटी के साथ बाँधा और सिर पर हैलमट जमा कर एक हाथ में स्टेनगन और दूसरे में बरफ़ी का डिब्बा लिये हुए वह लेफ़्टिनेण्ट सिंह के साथ ऑपरेशनल बंकर में आ गया।

कैप्टन इलावत को देखकर लेफ़्टिनेण्ट सिंह, लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल, सूबेदार ओमप्रकाश और अन्य जे. सी. ओज़ उठ खड़े हुए।

"बैठिए-बैठिए।" कैप्टन इलावत ने प्रसन्न भाव से कहा। वह उनकी ओर देखता हुआ बोला, "आप को बैट्ल-प्लान तो मालूम ही है। हमें ब्रिज के परले किनारे, जो बन्ध दक्षिण की ओर जाता है, उस पर क़ब्ज़ा करके उसे होल्ड करना है। आप ने सैण्ड मॉडल पर कई बार रिहर्सल की है लेकिन लड़ाई हमेशा टेक्स्ट बुक में दी गयी, तक़नीक के अनुसार नहीं लड़ी जा सकती। असली बात गट्स और साहस की है। जो अपने गट्स और साहस लूज़ करता है वह बैट्ल भी लूज़ करता है।" कैप्टन इलावत ने उन सबकी ओर देखते हुए कहा।

उन्हें गम्भीर पा कर कैप्टन इलावत ने विषय बदल दिया, "हम बहुत लकी हैं कि हमें इस बैट्ल में सबसे इम्पॉर्टेण्ट रोल दिया गया है। हमें यह सिद्ध करना है कि हम बड़ी से बड़ी ज़िम्मेदारी सफलता से सँभाल सकते हैं।" कैप्टन इलावत ने सशक्त स्वर में कहा।

"सर, कुछ ऑफ़िसरों में बहुत हार्ट-बर्निंग हो रही है। वे कई तरह की बातें कर रहे हैं।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने झिझकते हुए कहा।

"यही कि हमें फ़ेवर किया गया है क्योंकि सी. ओ. साहब अपनी सिस्टर-इन-ला की शादी मेरे साथ करना चाहते हैं।" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"येस्सर, कुछ इसी तरह की बातें हो रही हैं।"

"सिंह, मैंने भी ऐसी बातें सुनी हैं और मैं उन बलाईटर्ज़ को अच्छी तरह जानता हूँ। उनमें से दो तो हॉस्पिटल चले गये हैं। पेट में मरोड़ उठने लगे थे। तुम ने इस गौसिप (गपशप) का दूसरा वर्शन शायद नहीं सुना। यह भी अफ़वाह है कि सी. ओ. साहब ने यह टास्क मुझे इसलिए दिया है क्योंकि इसमें मौत के चान्स ज़्यादा हैं।" कैप्टन इलावत का मूड कुछ ख़राब हो गया और वह एक बार फिर विषय बदलने के लिए बरफ़ी के डिब्बे का ढक्कन उठाता हुआ बोला, "लीजिए बरफ़ी खाइए, मेजर इन्द्रसिंह लाये हैं।" कैप्टन इलावत ने बारी-बारी सबकी ओर डिब्बा बढ़ाया। फिर स्वयं अपने मुँह में दो टुकड़े रखकर बोला, "शाब, जवानों को पाँच बजे खाना दे दें। यह अभी चेक कर लें कि हर जवान के पास एमूनेशन पूरा है। ड्राई राशन लिया है। वाटर-बॉटल में पानी भरा है।"

"जी साब।"

"अटैक में सबसे आगे लेफ़्टिनेण्ट सिंह की प्लाटून होगी, उसके बाद लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की और सबसे पीछे लेफ़्टिनेण्ट जिल की। सूबेदार साहब, दो वायरलेस-ऑपरेटर, क्वार्टर-मास्टर हवलदार, आसाराम और दो जवान और एक नर्सिंग ऑर्डर्ली मेरे साथ होंगे।"

सूर्यास्त के उपरान्त उन्हें मूव करने का ऑर्डर आ गया। कैप्टन इलावत ने सब प्लाटून-कमाण्डरों को उस स्थान का पता बता दिया जहाँ उन्हें टैंकों पर सवार होना था। कैप्टन इलावत ने जीप स्टार्ट की और टंक पर आकर बोला, "साब, आप की यह कौन सी लड़ाई है?"

"सर पाँचवीं। मैंने सेकण्ड वर्ल्ड-वार और उसके बाद होनेवाले सब ऑप्रेशनों में भाग लिया है।"

"साब, मेरी पहली है और मैं इसे आखिरी बनाना चाहता हूँ।" कहकर कैप्टन इलावत ने जीप की रफ़्तार एकदम तेज़ कर दी।

बीस

कैप्टन इलावत जब टैंक रेजिमेण्ट के हार्बर-एरिया में पहुँचा तो मेजर करमरकर की कम्पनी आमों के बाग़ में फैली हुई टैंकों पर सवार होने के ऑर्डर का इन्तज़ार कर रही थी। उसने अपनी जीप एक ओर रोक ली और मेजर करमरकर के पास चला गया।

"गुड इवनिंग सर!"

"वेरी गुड इवनिंग, इलावत कैसे हो?" मेजर करमरकर ने प्रसन्न भाव से पूछा।

"फ़ाइन सर, थैंक्यू! घर से कोई खबर आयी?"

"ओह इलावत," मेजर करमरकर ने भारी आवाज़ में कहा, "परसों बात हुई थी, शी वाज टू गो टू दि हॉस्पिटल। उसके बाद ईश्वर ही जाने क्या हुआ है! मुझे कोई इन्फ़ॉर्मेशन नहीं है।" मेजर करमरकर कुछ उदास हो गया।

"सर, कल दो खुशियाँ इकट्ठी मनायेंगे। ब्रिज पर क़ब्ज़ा और....मास्टर करमरकर का बर्थ।" कैप्टन इलावत ने चहकते हुए कहा।

"ओह, लेट अस होप सो।" मेजर करमरकर ने कुछ भ्रम भरे स्वर में कहा।

"सर, शक है तो शर्त लगा लो। मैं सच कह रहा हूँ।" कैप्टन इलावत जोरदार लहजे में बोला।

"इलावत, यू नेवर नो, मैं निराशावादी नहीं हूँ, भाग्यवादी हूँ। शर्त लगाने की क्या जरूरत है। अगर तुम्हारी दोनों बातें ठीक निकलीं तो शानदार सेलीब्रेशंज होंगी।" मेजर करमरकर ने कैप्टन इलावत का ज़ोर से हाथ दबाते हुए कहा।

"एक्सक्यूज़ मी सर, मेरी कम्पनी आ रही है।" कैप्टन इलावत ने अपनी जीप के निकट एक ट्रक रुकता देखकर कहा।

"गो अहेड मैन! आल दि बेस्ट! गॉड बी विथ यू।" मेजर करमरकर ने कैप्टन इलावत का हाथ छोड़ते हुए कहा।

कैप्टन इलावत दौड़कर अपनी जीप में आ गया। वहाँ से कोई आधा मील दूर वृक्षों के झुण्ड में टैंक-स्क्वैड्रन था। वहाँ पहुँचकर उसने जीप एक ओर खड़ी कर दी। कुछ ही मिनटों के पश्चात् पहला ट्रक आकर रुका। सबसे पहले लेफ़्टिनेण्ट सिंह नीचे उतरा और कैप्टन इलावत को सैल्यूट देकर बोला, "सर, मेरी प्लाटून पहुँच गयी है।"

"फ़ॉल-इन कराओ प्लाटून को।"

लेफ़्टिनेण्ट सिंह की प्लाटून वृक्षों के नीचे फ़ाल-इन हो गयी तो कैप्टन इलावत ने प्रत्येक जवान के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "देखो बेटा, मेरी तरह तुम्हारी भी यह पहली लड़ाई है। आप को धर्म और कर्म के नाम पर लड़ना है। जिन्दगी और मौत भगवान् के हाथ में है। हमारी एकमात्र पूँजी हमारी इज्ज़त और प्रतिष्ठा है और इनकी आज परीक्षा है।"

कैप्टन इलावत हर जवान का कन्धा थपथपाकर पूछता, "सी. ओ. साहब का फ़रमान याद है न?" और स्वयं ही उत्तर देता, "इस लड़ाई को हमें आखिरी लड़ाई बनाना है।"

कैप्टन इलावत, लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल और लेफ्टिनेण्ट जिल की प्लाटूनों के जवानों से मिलने के बाद वह टैंक-स्क्वैड्रन के ऑप्रेशनल बंकर की ओर गया। जहाँ टैंक-स्क्वैड्रन का ऑफ़िसर कमाण्डिंग मेजर बख्शी खड़ा था।

"गुड इवनिंग सर! आइ एम कैप्टन इलावत, ऑफिसर कमाण्डिंग चार्ली-कम्पनी।"

"हैलो इलावत, गुड इवनिंग! सो....आप लोग आ गये हैं?"

"येस्सर।"

"गुड।"

"सर, जवानों को टैंकों पर माउण्ट होने का ऑर्डर दे दें?" कैप्टन इलावत ने पूछा।

"अभी ठहरो। मैं अपने कमाण्डिंग-ऑफिसर कर्नल मेनन से बात करना चाहता हूँ।" मेजर बख्शी ने कहा।

"सर, हमारा रूट कौन सा है?" कैप्टन इलावत ने बातचीत जारी रखने के

लिए कहा ।

"कम्पास में बन्द पड़ा है ।" मेजर बख्शी ने कारोबारी अन्दाज़ में उत्तर दिया ।

मेजर बख्शी को बात करने के मूड में न पाकर कैप्टन इलावत अपनी कम्पनी के अफ़सरों के पास आ गया । वह पश्चिम की ओर क्षितिज को देखने लगा जहाँ लालिमा को कालिमा घेरती जा रही थी । वातावरण पर छायी हुई निस्तब्धता को कभी-कभार दूर फटने वाला गोला भंग कर देता है । कैप्टन इलावत जवानों का दिल बहलाने के लिए उन्हें इधर-उधर की बातें सुनाने लगा । वृक्ष के नीचे बैठे एक जवान को वह कलाई से पकड़ कर उठाता हुआ बोला, "क्या जोरू याद आ रही है ?"

"साब, जोरू के दर्शन किये एक साल दो महीने हो गये हैं । अब तो उसकी शक्ल भी याद नहीं रही ।" जवान ने तीखे स्वर में कहा ।

"आज लड़ाई खत्म कर दो, तुम्हें जल्दी जोरू के पास भेज देंगे ।" कहकर कैप्टन इलावत आगे बढ़ गया ।

एक वृक्ष के पीछे लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की प्लाटून के पाँच जवान खड़े हुए दबी आवाज में हँस रहे थे ।

"ओह बुद्धूराम, भगवान् का नाम लो, क्यों गन्दी बातें बक रहे हो ?" सूबेदार ओमप्रकाश ने दबी आवाज में डाँटते हुए कहा ।

"साब, सारा दिन देवी माँ का नाम जपा है अब जरा कथा-वार्ता कर रहे हैं ।"

"साब, जी खुश कर रहे हैं, करने दो ।" कैप्टन इलावत ने कहा ।

टाउन के उत्तर और दक्षिण में अचानक उन्हें जोर का शोर सुनाई दिया और वे सब चकित होकर उधर देखने लगे । वह शोर यद्यपि उनसे बहुत दूर था लेकिन साफ़ सुनाई दे रहा था ।

"शायद टैंक जा रहे हैं !" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने सरगोशी में कहा ।

"वन स्टार जनरल की हर बात देखने में फ़ुलिश और क्रेज़ी नज़र आती है लेकिन उसके पीछे गहरी स्ट्रेटिजी होती है । बहुत ब्रिलियेण्ट कमाण्डर हैं ।" कैप्टन इलावत ने प्रशंसा भरे लहजे में कहा ।

"ऐसा लगता है कि वह ऑप्रेशन 'वाइल्ड कैट' डाइवरशनरी (भ्रमात्मक) मूव से शुरू कर रहा है ।"

कुछ क्षणों के पश्चात् ही कर्नल गिल, मेजर यादव, कैप्टन मिश्रा आदि आ पहुँचे । कैप्टन इलावत दौड़कर उनकी जीप के पास चला गया ।

"गुड इवनिंग सर !" कैप्टन इलावत ने आवेग भरे स्वर में कहा ।

"वेरी गुड इवनिंग ! इलावत, आल सेट ?"

"येस्सर । हम तो सिगनल का इन्तज़ार कर रहे हैं ।"

"इलावत, मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि ऐसे चान्स जिन्दगी में एक-आध

बार ही मिलते हैं और वह भी लकी लोगों को। हमें हर हालत में ब्रिज पर क़ब्ज़ा करना है।" कर्नल गिल ने दृढ़ स्वर में कहा।

"सर, ईश्वर की कृपा और आपकी कमाण्ड की वदौलत हम अवश्य सफल होंगे ?""सूर्य की पहली किरण फूटने से पहले ही ब्रिज पर हमारा क़ब्ज़ा होगा।" कैप्टन इलावत ने सशक्त स्वर में कहा।

"वेरी गुड, दैट शुड बी दि स्पिरिट ! ब्रिगेडियर साहब ने आप सबको अपनी शुभकामनाएँ भेजी हैं।"

कर्नल गिल और उसके स्टाफ़-अफ़सरों के जाने के बाद कैप्टन इलावत फिर अपने जवानों के पास आ गया और उन्हें सम्बोधित करता हुआ बोला, "ओ मुन्नुओ ! जानते हो राजतिलक क्या होता है ? राजगद्दी पर बैठने की रस्म। जब किसी को राजा बनाते हैं तो पहले राजतिलक होता है। आज हमारी कम्पनी का राजतिलक होगा। हमें पुल पर क़ब्ज़ा करना है। सवेरे चार्ली-कम्पनी की जय-जयकार होनी चाहिए।" कैप्टन इलावत ने आवेग भरे स्वर में कहा।

मेजर बख्शी के सेकण्ड-इन-कमाण्ड कैप्टन चौधरी को अपनी ओर आता पाकर कैप्टन इलावत ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी और उसकी ओर देखने लगा।

"सर, सब जवानों को टैंकों पर माउण्ट होने का आॅर्डर दे दें।" कैप्टन चौधरी ने कहा। कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल और लेफ़्टिनेण्ट जिल को बुला कर आॅर्डर दे दिया।

कैप्टन इलावत सब टैंकों का चक्कर लगा कर मेजर बख्शी के पास आ गया। अँधेरे में उसे उसका चेहरा साफ़ नज़र नहीं आ रहा था लेकिन उसके बार-बार पहलू बदलने और घड़ी देखने से व्यक्त था कि वह बेचैन है। कैप्टन इलावत कुछ क्षणों तक उसे देखता रहा और फिर बात शुरू करने के लिए उसकी ओर झुकता हुआ बोला, "सर, आप बबीना से मूव हुए हैं ?"

"नो-नो ! हम इधर नज़दीक ही थे।"

"सर, आपकी फ़ैमिली कहाँ है इस समय ?"

"घर में।" मेजर बख्शी ने कारोबारी अन्दाज़ में उत्तर दिया।

"सर, वह तो ठीक है। आइ मीन, स्टेशन ?" कैप्टन इलावत जैसे खिसिया गया।

"ओह, आइ एम सॉरी।" मेजर बख्शी अपना उत्तर याद आते ही झेंप गया और धीमी आवाज़ में बोला, "अम्बाला में।" और फिर उदास लहजे में कहने लगा, "आज मेरे इकलौते बेटे का पहला बर्थ-डे है। जाना तो दरकिनार मैं उसके लिए गिफ़्ट तक नहीं भेज सका। आइ एम फ़ीलिंग सो।" मेजर बख्शी की बात अधूरी रह गयी। स्क्वैड्रन को मूव करने का आॅर्डर आ गया।

मेजर बख्शी, कैप्टन चौधरी, कैप्टन इलावत, सूबेदार ओमप्रकाश, क्वार्टर-

मास्टर हवलदार और वायरलेस-ऑपरेटर जल्दी से टैंक पर चढ़ गये। टैंक दहाड़ने लगे और उन्हें अपने नथुनों में जली हुई डीज़ल का धुआँ महसूस होने लगा। मेजर बख्शी ने अपने तमाम ट्रूप-कमाण्डरों को विश्वास भरी आवाज़ में मेसेज दिया—
"रिमेम्बर दि ड्रिल एण्ड हैव फ़ेथ इन गॉड !"

मेजर बख्शी निरन्तर बोल रहा था। कभी वह अपने कमाण्डर से बात करता और कभी अपने टैंक ट्रूप-कमाण्डरों से। कानों में टैंकों की आवाज़ के अतिरिक्त कोई अन्य आवाज़ नहीं पड़ रही थी। उनकी आँखों, नथुनों और गलों में डीज़ल का धुआँ और टैंकों की उड़ायी हुई धूल भर गयी थी।

कैप्टन इलावत अँधेरे में चारों ओर घूर-घूर कर देख रहा था। मेजर बख्शी अपनी वायरलेस के माऊथपीस में बहुत ऊँचा बोल रहा था। कैप्टन इलावत उसके कोडवर्ड्ज़ को समझने की कोशिश कर रहा था लेकिन उसके कुछ भी पल्ले नहीं पड़ रहा था। उसने कैप्टन चौधरी से एक-दो बार बात शुरू करने की कोशिश की लेकिन शोर में बात करना भी असम्भव था।

कैप्टन इलावत ने अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी और फिर अँधेरे में घूरता हुआ अपने बारे में सोचने लगा। मोह का एक तूफ़ान उसके अन्दर जाग उठा। अपने माता-पिता, भाई-बहन, रिश्तेदारों-मित्रों के चित्र उसकी आँखों के सामने घूमने लगे। अपने बीते जीवन की कई घटनाओं पर पहुँच कर उसकी विचारधारा कुछ क्षणों के लिए रुक जाती। सेमी की याद आते ही उसका मन गद्‌गद हो उठा। सेमी के जो भी रूप उसने देखे थे वे उसकी आँखों के सामने कभी एक-दूसरे में गडमड हो जाते और कभी अलग-अलग फ़्रेमों में फ़िट होकर उसकी चेतना के दामन पर उतर आते।

अपने बन्ध के निकट पहुँचकर टैंक रुक गये। उनके इंजनों का शोर सम और धीमा हो गया। कुछ ही क्षणों में ब्रिगेडियर स्वामी, टैंक-कमाण्डर मेनन, आर्टिलरी-कमाण्डर भारद्वाज, कर्नल गिल और सिगनल-कम्पनी के ऑफ़िसर-कमाण्डिंग मेजर साइमन वहाँ पहुँच गये।

ब्रिगेडियर स्वामी ने एक टैंक-ट्रूप को छोड़ कर अन्य टैंकों को बन्ध के साथ-साथ पोज़ीशन लेने का हुक्म दिया। टैंकों के इंजन कुछ मिनटों तक दहाड़ने के पश्चात् चुप हो गये। ब्रिगेडियर स्वामी ने कैप्टन इलावत को अपनी ऑप्रेशनल गाड़ी में बुलाया और नक़्शे पर एक चिह्न की ओर संकेत करता हुआ बोला, "यह मार्क दुश्मन के बन्ध पर है। यहाँ पर टैंक-क्रॉसिंग के लिए बन्ध काट कर रास्ता बनाना है। इस प्वाइण्ट से कोई दो सौ गज आगे नदी है। तुम बन्ध काट कर हमें सिगनल देना। अपने साथ कैप्टन चौधरी को ले लो, वह स्लोप का आइडिया दे सकेगा।"

"येस्सर।" कहकर कैप्टन इलावत उन टैंकों की ओर आ गया जिनपर लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की प्लाटून सवार थी। कुछ क्षणों में ही प्लाटून टैंकों से उतर

कर फ़ॉल-इन हो गयी।

"दर्शन, जमीन खोदने के लिए कुदाल वगैरह ले लो।" उसने प्लाटून को चार टुकड़ियों में बाँट दिया और वे कुछ फ़ासला छोड़कर दुश्मन के एरिया में दाखिल हो गये। वे सावधानी से आगे बढ रहे थे। इस एरिया में ऊँचे सरकण्डे और झाड़ियों के अतिरिक्त कुछ नही था। जमीन सख्त और उबड़-खाबड़ थी।

कोई आधे घण्टे के बाद वे दुश्मन के बन्ध पर थे। कैप्टन इलावत ने आधी प्लाटून को मोरचे सँभालने का हुक्म दिया और आधी प्लाटून बन्ध काटने लगी। वह कभी मोरचे सँभाले हुए जवानों के पास जाता और कभी बन्ध काट रहे जवानों का साहस बढाता।

आधे घण्टे में बन्ध की ऊँचाई तीन फ़ुट कम हो गयी थी और दोनों ओर ढलान भी अधिक तिरछी नही रही थी। कैप्टन चौधरी ने बन्ध के कटे हुए भाग का दो-तीन बार निरीक्षण किया और फिर कैप्टन इलावत से बोला, "इट इज आल राइट। टैंक आसानी से गुजर जायेंगे।"

कैप्टन इलावत ने ब्रिगेडियर स्वामी को तुरत सिगनल दिया—"सर, दुश्मन के इलाके में आप का अभिवादन करने के लिए हम बिलकुल तैयार हैं।"

"डन ? गुड गॉड। हम आ रहे है।" ब्रिगेडियर स्वामी बहुत प्रसन्न था।

कुछ ही क्षणों में टैंकों के इंजन फिर दहाड़ने लगे और तीन टैंक एक-एक कर के अपने बन्ध को क्रॉस करके दुश्मन के इलाके में बढ़ने लगे। टैंको के पहुँचने से पहले ब्रिगेडियर स्वामी और अन्य कमाण्डर वहाँ आ गये। कर्नल मेनन ने कटे हुए बन्ध का निरीक्षण किया।

"वेरी गुड। टैंक बहुत आसानी से क्रॉस कर जायेंगे।"

"वहाँ चलते है। इलावत, तुम हमारे साथ एस्कॉर्ट भेजो।"

कैप्टन इलावत ने अठारह जवानों को तीन टुकडियों में बाँट दिया। उसने एक टुकड़ी की कमाण्ड अपने हाथ में रखी। दूसरी टुकड़ी का कमाण्डर नायब सूबेदार रामसिंह था और तीसरी का हवलदार रक्खाराम। कैप्टन इलावत की कमान में जवानो की टुकड़ी सबसे आगे थी। एक टुकड़ी उत्तर की ओर और दूसरी ब्रिगेडियर स्वामी और अन्य अफ़सरों के दक्षिणी फ्लैंक पर थी।

नदी के किनारे पहुँच कर वे रुक गये।

"यहाँ किनारा कम ऊँचा और पानी की गहराई भी कम है। हम पहले इस एरिया की रैकी कर चुके है।" ब्रिगेडियर स्वामी ने कहा।

"सर, मैं एक बार फिर चेक करना चाहूँगा।" टैंक-कमाण्डर कर्नल मेनन ने कहा।

"किसी जवान को भेज देते हैं। वह नदी पार करके लौट आयेगा।" ब्रिगेडियर स्वामी ने सुझाव दिया।

"नो सर, मैं स्वयं जाता हूँ। मैं रिवर-बेड का ग्राउण्ड भी चेक करना चाहता हूँ कि नरम है या सख्त।"

कर्नल मेनन धीरे-धीरे किनारे से पानी में उतर गया। चार जवानों ने उसका रक्षा के लिए ज़मीन पर लेटकर पोज़ीशनें ले लीं। वह आहिस्ता-आहिस्ता नदी में आगे बढ़ रहा था और पानी की गहराई, ग्राउण्ड की सख्ती और नरमी का अन्दाज़ा कर रहा था। नदी पार करके वह थोड़ी दूर और आगे गया और फिर वापस मुड़ आया।

"येस मेनन, क्या इस प्वाइण्ट से क्रॉसिंग मुमकिन है?" ब्रिगेडियर स्वामी ने बेसब्री से पूछा।

"सर, फ़िफ़्टी-फ़िफ़्टी चांसेज़ हैं। कोशिश ज़रूर करनी चाहिए।" कर्नल मेनन ने पानी छिड़कने के लिए बारी-बारी दोनों टाँगें झटकते हुए कहा।

"गुड। हमें टाइम ख़राब नहीं करना चाहिए।" ब्रिगेडियर स्वामी ने आवेग-भरी आवाज़ में कहा।

कर्नल मेनन ने मेजर बख्शी को लेफ़्टिनेण्ट पठानिया का टैंक-ट्रूप आगे भेजने का ऑर्डर दिया। कुछ ही क्षणों में तीन टैंकों के इंजन दहाड़ने लगे। उनकी दहाड़ क्षण प्रति क्षण तेज़ होती जा रही थी।

लेफ़्टिनेण्ट पठानिया के साथ मेजर बख्शी भी था। नदी के निकट पहुँचकर टैंक रुक गये। कर्नल मेनन ने टैंक क्रॉस करने के बारे में लेफ़्टिनेण्ट पठानिया को निर्देशन दिये और उससे हाथ मिलाता हुआ बोला, "भगवान् का नाम लो और आगे बढ़ो।"

एक टैंक धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा और नदी के किनारे पर पहुँचकर एक क्षण के लिए रुका और फिर आहिस्ता-आहिस्ता किनारे से नीचे उतरने लगा। जब पूरा टैंक नीचे उतर गया तो ब्रिगेडियर स्वामी और अन्य अफ़सरों ने दबी आवाज़ में हर्षध्वनि की, "जौली बेल! इट इज़ इन!"

कैप्टन इलावत का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। लेकिन उसने अपने जोश पर क़ाबू पा लिया और एक टैंक पर चढ़कर अँधेरे में जा रहे टैंक की ओर देखने लगा।

टैंक के इंजन की दहाड़ निरन्तर घट-बढ़ रही थी। कभी वह कम हो जाती और कभी तेज़ हो जाती। टैंक की चेन नरम रेत में ही घूम रही थी और टैंक नीचे धँस रहा था। चेन से उड़नेवाली रेत नदी के पानी में गिरकर छड़प-छड़प की आवाज़ें पैदा कर रही थीं।

"टैंक बोगडाउन (फँस) हो गया है।" पठानिया ने सन्देश दिया।

"बैड लक।" ब्रिगेडियर स्वामी बुदबुदाया। सब अफसरों के चेहरे उतर गये और वे चिन्तित से ज़मीन को घूरने लगे।

"नेवर माइण्ड।" ब्रिगेडियर स्वामी ने कहा और कर्नल मेनन से बोला, "लैट्स नॉट वेस्ट टाइम। आगे चलते हैं। शायद कोई बेहतर जगह मिल जाये। इस टैंक को वापस लाने का इन्तज़ाम करो।"

"येस्सर!" कर्नल मेनन ने लेफ़्टिनेण्ट पठानिया को बुलाकर टैंक को वापस लाने के बारे में हिदायत दी।

ब्रिगेडियर स्वामी और अन्य ऑफ़िसर्स बन्ध पर वापस आ गये। कुछ मिनटों तक वे टैंक की ओट में छोटी सी बत्ती के नीचे नक़्शे पर झुके रहे और एक स्थल के बारे में रिपोर्ट पढ़कर ब्रिगेडियर स्वामी ने कर्नल मेनन से कहा, "वेल, दिल छोटा मत करो। दूसरे स्थल पर कोशिश करते हैं।"

मेजर बख्शी को पश्चिम की ओर बन्ध के साथ-साथ अपना स्क्वैड्रन मूव करने का ऑर्डर मिला। सारा वातावरण एक बार फिर टैंकों की दहाड़ से गूँज उठा। तीन किलोमीटर जाने के बाद टैंकों को रोकने का हुक्म मिला। वातावरण पर एक बार फिर निस्तब्धता छा गयी। आकाश में पूर्व की ओर क्षितिज से कोई पाँच गज ऊपर रोशनी फैलनी शुरू हो गयी।

"चाँद निकल रहा है।" कैप्टन इलावत ने उस ओर देखते हुए कहा।

"*बैड फ़ॉर अस। हम न तो इस समय डिफ़ेन्सिव पोज़ीशन में हैं न ऑफ़ेन्सिव में।*" मेजर बख्शी ने उदास स्वर में कहा।

ब्रिगेडियर स्वामी और अन्य कमाण्डर नदी की ओर चले गये। कुछ ही क्षणों के पश्चात् चाँद थोड़ा ऊपर आ गया और फीकी चाँदनी में सरकण्डों और झाड़ियों से भरा वह इलाक़ा बहुत रोमांचकारी नज़र आने लगा। ज्यों-ज्यों समय गुज़र रहा था, मेजर बख्शी की बेचैनी बढ़ रही थी—"इस समय हमारी पोज़ीशन पानी पर बैठी मुरग़ाबियों जैसी है।"

"सर, लकीली यहाँ कोई शिकारी नहीं है।" कैप्टन इलावत ने कहा और वह मेजर बख्शी से इजाज़त लेकर लेफ़्टिनेण्ट सिंह के जवानों के पास चला गया।

"हैलो सिंह, टैंक की सवारी कैसी रही?"

"बहुत बढ़िया सर, बस इतना है कि कमर कुछ सख़्त हो गयी है।"

कैप्टन इलावत अपनी कम्पनी के सब अफ़सरों और जवानों से मिलकर और उनका हाल पूछ कर वापस आ गया। मेजर बख्शी टैंक पर खड़ा उस दिशा में देख रहा था जिधर से वे आये थे।

"मुझे रेत में फँसे टैंक का फ़िक्र है। आइ एम लूज़िंग ए टैंक विदाउट फ़ाइटिंग।" मेजर बख्शी ने उदास आवाज़ में कहा।

ग्यारह बजे के लगभग ब्रिगेडियर स्वामी और अन्य कमाण्डर वापस आ गये। "उस स्पॉट पर टैंक क्रॉसिंग नहीं हो सकती। ह्वाट डू वी डू नाऊ?" ब्रिगेडियर स्वामी निराश और हताश था।

"सर, हम अटैक करेंगे। यह हमारा एकमात्र चान्स है। अगर लूज़ कर दिया तो दुश्मन हम पर हमला करेगा।" कर्नल गिल ने गम्भीर स्वर में कहा।

"लेकिन टैंकों के बिना हम पुल पर क़ब्ज़ा कैसे करेंगे ?"

"सर, पूरे ब्रिज पर क़ब्ज़ा न सही आधे पुल पर तो कर लेंगे। ब्रिज का ईस्ट एण्ड हमारे क़ब्ज़े में आ जाये तो दुश्मन उसे इस्तेमाल नहीं कर सकेगा।" कर्नल गिल ने कहा।

"यू आर राइट।" ब्रिगेडियर स्वामी सोच में डूबी हुई आवाज़ में बोला।

"सर, आइ हैव ए प्लान। अगर आप उसे देखें तो....।"

"क्या है ?"

"सर, हम इस समय पी. थ्री के समीप हैं। पी. थ्री और पी. फ़ोर पर बी. एस. एफ़. का क़ब्ज़ा हो चुका है। पी. फ़ाइव और पी. सिक्स के सामने हमारे बन्ध पर एक बटालियन मौजूद है। मेरी बटालियन नदी के किनारे के साथ-साथ सिंगल फ़ाइल में ब्रिज की ओर मार्च करेगी और हम ब्रिज-एरिया में दुश्मन की मोरचाबन्दियों के पीछे पहुँच जायेंगे। उस समय बटालियन 'ए', पी. फ़ाइव, पी. सिक्स और हम ब्रिज के एरिया में अटैक करेंगे।" कर्नल गिल ने कहा।

"वेरी गुड प्लान, बट रिस्की....एनी वे।" ब्रिगेडियर स्वामी ने कहना शुरू किया।

"अटैक साथ-साथ होगा। मार्च, बिलकुल साइलेण्ट होगा। टैंक दक्षिण की ओर से ब्रिज के पहले सिरे को हिट करेंगे और आर्टिलरी ब्रिज को आने वाली सड़क पर सख्त गोलाबारी करेगी।"

"सर, हमारे टैकटिक्स बुनियादी तौर पर वही रहेंगे। दुश्मन को कन्फ़्यूज़ करना और उसे अटैक के मैगनीच्यूड और डायरेक्शन के बारे में पूरी तरह बेख़बर रखना है।" कर्नल गिल ने कहा। वे सब मेजर बख्शी के टैंक की ओट में आ गये और कुछ समय तक ब्रिगेडियर स्वामी के आदेश के अनुसार अपने-अपने नक़्शों पर निशान लगाते रहे।

ब्रिगेडियर स्वामी ने कर्नल गिल के प्लान में कुछ संशोधन किये और उसके कन्धे पर हाथ रखता हुआ बोला, "गिल, मैं तुम्हें, तुम्हारे अफ़सरों और जवानों को भगवान् के सुपुर्द करता हूँ। माइ हार्ट गोज़ विथ यू। हमारा अगला मिलाप ब्रिज पर होना चाहिए।"

"श्योर सर, विथ गुडलक और आपके आशीर्वाद से हम अपने मिशन में अवश्य और शीघ्र ही कामयाब होंगे।"

कर्नल गिल ने अपने अफ़सरों को टैंकों से उतरने का हुक्म दिया। कैप्टन इलावत टैंक से नीचे उतर कर मेजर बख्शी से हाथ मिलाता हुआ बोला, "सर, एक्शन में इकट्ठे रहते तो बहुत मज़ा रहता लेकिन भगवान् की मर्ज़ी कुछ और है।"

न हो। यह मार्च बहुत खतरनाक और जोखिम का है। कोई सात सौ गज़ आगे जाकर नदी के किनारे की ऊँचाई कम और पाट अधिक चौड़ा हो जाता है। नदी पश्चिम की ओर मुड़ जाने के कारण वन्ध से भी दूर हो जाती है।"

कर्नल गिल ने एक स्थान पर पेन्सिल रखते हुए कहा, "यहाँ से हम नदी पार करके पश्चिमी किनारे पर आ जायेंगे और कोई एक हज़ार गज़ आगे जाकर एक वार नदी पार करके पूर्वी किनारे पर आ जायेंगे।"

कर्नल गिल ने वात जारी रखते हुए कहा। "हमारा असेम्वलिंग प्वाइण्ट ब्रिज से एक हज़ार गज़ पीछे उत्तर में है। वहाँ से कैप्टन इलावत की कम्पनी ट्राइ-जंक्शन से कोई तीन सौ गज़ पीछे असाल्ट करके दुश्मन की पोजीशनों को क्लीयर करती हुई ब्रिज पर क़ब्ज़ा करेगी। मेजर करमरकर की कम्पनी असेम्वलिंग प्वाइण्ट से दो सौ गज़ पीछे और तीन सौ गज़ आगे तक वन्ध क्लीयर करेगी। वन्ध पर क़ब्ज़ा करने के वाद इन्द्र की कम्पनी 'पैरेलल' और धूसी वन्ध को मिलानेवाले वन्ध को क्लीयर करेगी। मेजर शर्मा की कम्पनी रिज़र्व में रहेगी।"

कर्नल गिल ने नक़्शा कैप्टन मिश्रा की ओर वढ़ा दिया और चेतावनी देता हुआ वोला, "हमारा यह एक्शन मगरमच्छ के मुँह में जाने के वरावर है। हमें दुश्मन को न सिर्फ़ अपने जवड़ों को वन्द करने से रोकना है किन्तु अपने आपको उसके तेज़ और तीखे दाँतों से वचाकर उन्हें तोड़ना भी है। कोई शंका, कोई सुझाव हो तो वताओ।"

किसी से कोई उत्तर न पाकर कर्नल गिल उठ खड़ा हुआ। अन्य अफ़सर भी तुरत उठ गये। उन्होंने धीरे-धीरे हाथ फेरकर कपड़े झाड़ डाले। कर्नल गिल ने उन्हें सावधान करते हुए कहा, "हमारा मार्च वहुत साइलेण्ट होगा। दुश्मन को इस वात का आभास तक नहीं मिलना चाहिए कि हम उसकी पोजीशनों के पीछे जा रहे हैं। वी मस्ट टेक देम वाइ कम्पलीट सरप्राइज़। अगर दुश्मन को हमारी मूवमेण्ट का पता लग गया तो शायद हमें ईश्वर भी नहीं वचा सकेगा।"

कर्नल गिल दायाँ हाथ ऊपर उठाता हुआ वोला, "मेरे वहादुर दोस्तो, इस समय पूरे देश की आँखें हम पर लगी हुई हैं। हमें किसी हालत में भी उन्हें निराश नहीं करना है।"

टैंक काफ़ी दूर जा चुके थे। कर्नल गिल ने घड़ी पर समय देखा। साढ़े ग्यारह वज रहे थे। उसने 'वाकी-टाकी' पर ब्रिगेडियर स्वामी को सन्देश दिया कि उसकी वटालियन मार्च करने के लिए तैयार है। ब्रिगेडियर स्वामी ने मार्च की स्वीकृति दे दी तो कर्नल गिल ने सव अफ़सरों को अपनी-अपनी कम्पनी में पहुँचने का हुक्म दिया।

पूरे साढ़े ग्यारह वजे कैप्टन इलावत की कम्पनी को मार्च का ऑर्डर मिल गया। वह, सूवेदार ओमप्रकाश, क्वार्टर-मास्टर हवलदार, वायरलेस-ऑपरेटर और

लेफ़्टिनेण्ट सिंह की प्लाटून खामोशी से सरकण्डों से निकल आये और फ़ॉल फ़ार्मेशन में बन्ध की ओर बढ़ गये। यद्यपि चाँद काफ़ी ऊपर आ गया था किन्तु टैंकों की उड़ायी हुई धूल और डीज़ल का कड़वा धुआँ अभी तक वातावरण पर छाया हुआ था और दस गज पर भी कुछ दिखाई नहीं देता था। बहुत दूर टैंकों के इंजनों की आवाज़ गुर्रा रहे कुत्तों की तरह कभी ऊँची और कभी धीमी हो जाती थी।

कैप्टन इलावत, उनके साथी और लेफ़्टिनेण्ट सिंह की प्लाटून के जवान बन्ध के पार आगे बढ़ने लगे। लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की प्लाटून बन्ध के किनारे के साथ-साथ मार्च कर रही थी और उनके पीछे लेफ़्टिनेण्ट जिल छड़ी के सहारे सरकण्डों के साथ-साथ अपनी प्लाटून का पथ-प्रदर्शन कर रहा था। वे सब चुपचाप चल रहे थे। इनकी साँस तक की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। हवा में झूमते हुए सरकण्डों की सरसराहट और कहीं-कहीं झींगुरों की आवाज़ के अतिरिक्त कोई ध्वनि नहीं थी।

कैप्टन इलावत ने आकाश की ओर देखा। पीछे आकाश में तारों की झिलमिलाहट और फीकी चाँदनी उसे बहुत भली लगी। उसने लेफ़्टिनेण्ट सिंह के कान में कहा, "वण्डरफुल नाइट! इतनी शान्त, इतनी सुन्दर! जस्ट लाइक ए हैप्पी ड्रीम!"

"येस्सर, लेकिन हम तो लड़ाई के लिए जा रहे हैं।"

"नहीं, अपनी फ़ीएन्सी से मिलने; ब्रिज पर। आज हर हालत में मुलाक़ात करनी है।"

प्वाइण्ट 'एक्स' पर पहुँचकर कैप्टन इलावत और उसके साथी रुक गये। कर्नल गिल का ऑर्डर पाकर वे नदी में उतर गये और एक-एक करके धीरे-धीरे नदी पार कर गये। उनकी पतलूनें घुटनों से ऊपर तक गीली हो गयी थीं और जंगल-शूज़ में पानी भर गया था।

"पानी बहुत ठण्डा है।" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने टाँगों में झुरझुरी-सी महसूस करते हुए कहा।

"लेकिन लड़ाई बहुत गर्म होगी।"

"सर, हवा बहुत ठण्डी और तेज़ है।"

"येस, यह तो गुडलक की निशानी है। इससे सरकण्डों में हमारी मूवमेण्ट का दुश्मन को शक नहीं होगा।"

लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की प्लाटून नदी के किनारे पर पहुँच गयी तो कैप्टन इलावत और उसके साथी कम्पास के सहारे सरकण्डों में आगे बढ़ने लगे। ज़मीन नरम और गीली होने के कारण उनकी गति मन्द हो गयी। उनके बूटों पर कीचड़ बढ़ने लगी।

"सर, ब्रिज अभी कितनी दूर है?" लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने पूछा।

"सिंह, बस उतना ही फ़ासला है जितना दुलहन के घर और उस प्वाइण्ट में

होता है, जहाँ से बारात बैण्ड के साथ जाती है।"

प्वाइण्ट 'वाई' से दो सौ गज आगे जाकर कैप्टन इलावत को रुकने का हुक्म मिला। वे ऊँचे सरकण्डों में बिखर गये। कोई पन्द्रह मिनट के पश्चात् कर्नल गिल अपने स्टाफ़-अफ़सरों के साथ वहाँ आ पहुँचा। "अब बहुत सावधानी से आगे बढ़ना है। सिर्फ़ चार सौ गज परे बन्ध पर दुश्मन मौजूद है। अपनी कम्पनी से पांच जवान लेकर मेरे साथ आओ। जवानों का क़द लम्बा होना चाहिए।" कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत के कान में कहा। उसने पांच जवान कर्नल गिल के सामने पेश कर दिये।

"गुड। आओ मेरे साथ।" उसने आगे बढ़ते हुए कहा, "यहाँ हमारा पासवर्ड 'वाइल्ड कैट' होगा। मिश्रा....सब कम्पनियों को सूचित कर दो और इसी जगह पर मेरा इन्तज़ार करो।"

कर्नल गिल, मेजर यादव और कैप्टन इलावत पांच जवानों के साथ नदी के किनारे पर आ गये। वहाँ से ब्रिज के परले सिरे पर ऊँचा टावर दिखाई दे रहा था। कर्नल गिल कुछ क्षणों के लिए उस टावर की ओर देखता रहा और फिर वे कोई सौ गज आगे चले गये जहाँ से टावर तीन वृक्षों की ओट में आ जाता था। कर्नल गिल रुक गया और वृक्षों की ओर संकेत करता हुआ बोला, "नदी पार करने के लिए वह आइडियल स्पॉट है बशर्ते कि वहाँ दुश्मन का पिकट न हो।"

"सर, वह हम देख लेते हैं।" कैप्टन इलावत ने कहा।

"ठीक है, तुम पांच जवान साथ लेकर नदी के पार वृक्षों के एरिया में रैकी करो।"

कैप्टन इलावत पांच जवानों को साथ लेकर बहुत खामोशी से नदी के पार चला गया। वृक्षों से कुछ दूरी पर ही वे जमीन पर लेट गये और रेंगते हुए आहिस्ता-आहिस्ता उन वृक्षों के बिलकुछ निकट चले गये। कैप्टन इलावत उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ वृक्षों की छाया घनी थी। वह उठ खड़ा हुआ और अपनी स्टेनगन को फ़ायरिंग के पोज़ीशन में थामकर बहुत सावधानी से आगे बढ़ने लगा। वह तीनों वृक्षों के बीच खाली स्थान पर पहुँच गया और फिर बारी-बारी से प्रत्येक वृक्ष के पास गया। पूरी तसल्ली करने के पश्चात् कि वहाँ कोई नहीं है, कैप्टन इलावत ने पांचों जवानों को बुला लिया, "तुम नदी में उतरकर देखो कि किनारा कितना ऊँचा है और पानी कितना गहरा है। पांच जवान भिन्न-भिन्न स्थानों से नदी में उतर गये और कुछ मिनटों में ही वापस आकर उन्होंने रिपोर्ट दी।

कैप्टन इलावत उन्हें वहीं छोड़कर नदी में उतर गया। पानी उसकी जांघों तक था। वह नदी पार करके कर्नल गिल के पास पहुँच गया।

"येस इलावत, क्या खबर है?" कर्नल गिल ने उत्सुकता से पूछा।

"सर, अच्छा स्पॉट है। नदी में पानी तीन फ़ुट तक है, किनारा कोई साढ़े चार से पांच फ़ुट ऊँचा है।"

"गुड। मार्च का ऑर्डर दो।" कर्नल गिल ने कहा।

कैप्टन इलावत ने लेफ्टिनैन्ट सिंह की प्लाटून को नदी पार करने का ऑर्डर दिया और स्वयं कर्नल गिल और उसके स्टॉफ-अफसरों के साथ सबसे आगे आ गया। उन्होंने कैप्टन इलावत के नेतृत्व में नदी पार की और वृक्षों के झुण्ड में आ गये।

कर्नल गिल ने कुछ समय के लिए वृक्षों के नीचे ही अपना हैडक्वार्टर बना लिया। उसने ब्रिगेडियर स्वामी को 'वाकी-टाकी' पर लिया और दबी आवाज़ में बोला, "सर वाइल्ड कैट इज़ इन दि एरिया।"

"गुड! दस मिनट इन्तज़ार करो।" ब्रिगेडियर स्वामी की आवाज़ 'वाकी-टाकी' पर इतनी ऊँची थी कि कर्नल गिल के साथ बैठे अफ़सरों को स्पष्ट सुनाई दी।

"सर, उनसे कहिए, आहिस्ता बोलें, यह साइलेन्ट अटैक है।" मेजर यादव ने दबी आवाज़ में आपत्ति की।

"डैम इट। वह ऑप्रेशनल बंकर से बोल रहा है जो कम से कम छह मील पीछे है।" कर्नल गिल ने कठिनाई से हँसी दबाते हुए कहा।

कैप्टन इलावत की कम्पनी वृक्षों से कोई चार सौ गज़ दूर घने और ऊँचे सरकण्डों में फैल गयी। मेजर करमरकर और मेजर इन्द्रसिंह की कम्पनियाँ भी अपनी-अपनी पोज़ीशन पर पहुँच गयीं। मेजर शर्मा की कम्पनी ने वृक्षों के आस-पास पोज़ीशनें ले लीं।

कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत के साथ बहुत गर्मजोशी से हाथ मिलाया और दूसरा हाथ उसके कन्धे पर रखते हुए भावुक स्वर में कहा, "इलावत, मेरे बहादुर बेटे! मैं तुम्हें, तेरे ऑफ़िसरों और जवानों को ईश्वर के सुपुर्द कर रहा हूँ।"

कैप्टन इलावत ने सैल्यूट दिया और तेज़-तेज़ क़दम उठाता हुआ अपनी कम्पनी की ओर बढ़ गया। ठीक दस मिनट के बाद दुश्मन के 'पी फ़ोर' और 'पी फ़ाइव' एरिया में ज़बरदस्त गोलाबारी होने लगी। बहुत से गीदड़ अपनी जान बचाने के लिए छलाँगें मारते हुए नदी के पार भाग गये। गोलाबारी कुछ समय के बाद एकदम बन्द हो गयी।

दो बजे थे जब ब्रिगेडियर स्वामी ने कर्नल गिल को सन्देश दिया कि 'ए' बटालियन का अटैक शुरू हो रहा है। ब्रिज-एरिया को हिट करने के लिए तीन टैंक पोज़ीशन ले चुके हैं। ब्रिगेडियर स्वामी अभी सन्देश दे ही रहा था कि कोई दो हज़ार गज़ पीछे राइफ़ल, और स्टेनगन के फ़ायर और दस्ती-बमों के धमाके सुनाई देने लगे। दुश्मन ने उस इलाक़े में गोलाबारी शुरू कर दी। गोलों की सीटियाँ उन्हें सुनाई दे रही थीं और उनके विस्फोट से कानों के परदों में झुनझुनाहट होने लगी थी।

कर्नल गिल यह सोचकर सिहर उठा कि उसकी पूरी बटालियन खुली जगह में पड़ी है। अगर दुश्मन को पता लग गया तो प्रलय आ जायेगा। क्षण-प्रतिक्षण

फ़ायरिंग की गति बढ़ती जा रही थी। दुश्मन के एरिया में दूर टैंकों के इंजनों का धीमा शोर कभी-कभी सुनाई दे रहा था। कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत और मेजर करमरकर को अपना-अपना टास्क पूरा करने का हुक्म दिया और स्वयं वह दुश्मन के एरिया में दूर टैंकों के इंजनों के शोर से डायरेक्शन और फ़ासले का अनुमान लगाने लगा।

कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल को उसका टास्क समझाया। लेफ़्टिनेण्ट जिल को दुश्मन के जीते हुए मोरचों का निरीक्षण करने और उनमें दुश्मन के ज़िन्दा और ज़ख्मी जवानों को पकड़ने और बटालियन-हेडक्वार्टर तक पहुँचाने का काम सौंपा।

"फ़ायर करने के बाद तुरत पोज़ीशन बदलना।" वह उनसे अलग होता हुआ भावुक स्वर में बोला, "भगवान् से यही प्रार्थना है कि सुबह हम सब फिर मिलें और वन पीस मिलें।" उसने सबके साथ गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा।

कैप्टन इलावत ने लेफ़्टिनेण्ट सिंह की प्लाटून को दो हिस्सों में बाँट दिया। एक सेक्शन उसकी अपनी कमान में बन्ध के साथ-साथ आगे बढ़ने लगा, दूसरा लेफ़्टिनेण्ट सिंह की कमान में बन्ध के दूसरी ओर आगे बढ़ रहा था।

सबसे आगे कैप्टन इलावत का सेक्शन था। बन्ध की ओट में होने के कारण उन्हें देखना कठिन था। अचानक उन्हें दुश्मन के एक सिपाही ने ललकारा—"कौन आ रहा है?" सुनकर सबने साँस रोक ली और जहाँ थे वहीं बैठ या लेट गये।

"कौन हो?—बोलते क्यों नहीं?" दुश्मन का सन्तरी ऊँचे स्वर में बोला।

"अभी बताते हैं।" कहकर कैप्टन इलावत ने आवाज़ से दुश्मन के जवान की पोज़ीशन का अनुमान लगाया और स्टेनगन का ब्रस्ट मारकर तुरत पोज़ीशन बदल लिया। दुश्मन का जवान एक भयानक चीख के साथ ढेर हो गया।

उसी क्षण कंक्रीट के बने पिलबॉक्स से मशीनगन का तेज़ फ़ायर आने लगा। लेफ़्टिनेण्ट सिंह के दो जवान रेंगकर मोरचे के मुँह के पास पहुँच गये और उन्होंने दो हैण्ड-ग्रिनेड फेंके। अगले ही क्षण पिलबॉक्स के अन्दर ज़ोर का धमाका हुआ। कैप्टन इलावत ने पिलबॉक्स से बाहर निकलने के रास्ते का निशाना लेकर स्टेनगन के दो ब्रस्ट फ़ायर किये और फिर वे उस मोरचे से आगे बढ़ गये।

कैप्टन इलावत ने 'वाकी-टाकी' पर कर्नल गिल को सूचना दी—"सर, हमला शुरू हो गया है। हमने एक पिलबॉक्स क्लीयर कर दिया है।"

"वेरी गुड, कीप इट अप। गॉड ब्लेस यू।"

दुश्मन कुछ मिनटों में ही इस एरिया में भी तोपों से गोलाबारी करने लगा। उनके चारों ओर क्षण-भर में तेज़ रोशनी के साथ ज़ोरदार धमाके होने लगे। कैप्टन इलावत अपने जवानों के साथ बहुत सावधानी से आगे बढ़ रहा था। एक आदमी बन्ध से नमूदार हुआ और बहुत तेज़ रफ़्तार से सरकण्डों की ओर भागा।

"कौन है ?" सूबेदार ओमप्रकाश ने ललकारा और साथ ही एक गोली उसके कानों के पास से सनसनाती हुई निकल गयी। वह वहीं लेट गया। एक और गोली वातावरण को चीरती हुई गयी और दुश्मन का भागता हुआ जवान कुछ क़दम आगे जाकर ढेर हो गया।

"हरामी भागना चाहता था।" उसने घृणापूर्ण स्वर में कहा।

कैप्टन इलावत ने अपने सेक्शन को भी दो हिस्सों में बाँट दिया। वह कुछ जवानों को साथ लेकर बन्ध की ओट में आगे बढ़ने लगा और अन्य जवान सूबेदार ओमप्रकाश की कमान में बन्ध के ऊपरी भाग के साथ-साथ एडवान्स करने लगे।

कैप्टन इलावत अपने सेक्शन के साथ फूँक-फूँककर क़दम रखता हुआ आगे बढ़ रहा था जब दो जवान गुत्थम-गुत्था होकर उसकी आँखों के सामने बन्ध से लुढ़कते हुए नीचे आ गिरे। वह वहीं रुक गया। कम्पनी-क्वार्टर-मास्टर हवलदार लश्करसिंह दुश्मन के जवान से अपनी स्टेनगन छीनने के लिए पूरा ज़ोर लगा रहा था। स्टेनगन की बैरल दुश्मन के जवान की गिरफ़्त में थी और बट को लश्करसिंह मज़बूती से पकड़े हुए था।

लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने उनके सिर के ऊपर आकर धीमी आवाज़ में लश्करसिंह को पुकारा और उसकी पोज़ीशन निश्चित करके दुश्मन के जवान की कमर पर अपनी स्टेनगन का मुँह रखकर घोड़ा दबा दिया। लेकिन स्टेनगन जाम हो चुकी थी। लेफ़्टिनेण्ट सिंह को एकदम बहुत क्रोध आ गया और उसने स्टेनगन का घोड़ा कई बार दबाया।

खींचातानी में स्टेनगन से कई गोलियाँ निकल गयीं। लेफ़्टिनेण्ट सिंह के क़दम पीछे हट गये। कैप्टन इलावत लपककर आगे बढ़ा और उसने दुश्मन के जवान की रान पर स्टेनगन का मुँह रखकर गोली चला दी। गिरफ़्त ढीली होते ही क्वार्टर-मास्टर हवलदार लश्करसिंह उठ खड़ा हुआ।

"शाबाश, दुश्मन के जवान को सँभालो। यह मेरा क़ैदी है।" कहकर कैप्टन इलावत आगे बढ़ गया।

थोड़ी दूर ही आगे जाने पर बन्ध के ऊपर जा रहा एक जवान पाँव फिसलने से नीचे लुढ़क गया। उसके गिरने की आवाज़ आते ही स्टेनगन का फ़ायर शुरू हो गया। कैप्टन इलावत बन्ध की ओट में आगे बढ़ा और जहाँ से स्टेनगन का फ़ायर आ रहा था वहाँ उसने दो हैण्ड-ग्रिनेड फेंके। हैण्ड-ग्रिनेडों के विस्फोट से होनेवाली रोशनी में कंक्रीट के बने हुए बहुत बड़े मोरचे को देखकर वह चकित रह गया। उसने लेफ़्टिनेण्ट सिंह को दूसरी ओर से हमला करने का हुक्म दिया।

बन्ध में मोरचे के दोनों ओर मुँह थे और उनसे हैण्ड-ग्रिनेडों के विस्फोट के कारण धुआँ निकल रहा था। कैप्टन इलावत ने सबको लेटकर मोरचा लेने के लिए कहा और स्वयं कुछ ऊँची आवाज़ में बोला, "जो भी मोरचे के अन्दर हैं, हाथ उठाकर

फ़ौरन बाहर निकलो वरना सबको मोरचे के अन्दर ही जिन्दा जला दूँगा ।"
उत्तर में मोरचे से गोली आयी तो कैप्टन इलावत ने तुरत दो ग्रिनेड फेंके । कुछ क्षणों में ही मोरचे में खामोशी छा गयी और तीन जवान हाथ ऊपर उठाकर बाहर निकले । उनमें से दो घायल थे । उनकी तलाशी लेकर ज़मीन पर लिटा दिया गया । लेफ़्टिनेण्ट जिल ने इन जवानों को अपने चार्ज में ले लिया और मोरचे के अन्दर रोशनी करनेवाला हैण्ड-ग्रिनेड फेंका और झाँककर उसका अन्दरूनी हिस्सा देखता हुआ विस्मित स्वर में बोला, "सर, बहुत बड़ा मोरचा है । अन्दर जीप पर फ़िट आर. सी. एल. गन (टैंक तोड़नेवाली तोप) है ।"

"गुड कैच ।" कैप्टन इलावत ने प्रसन्न भाव से कहा और माथे से पसीना पोंछता हुआ बोला, "दर्शन को कहो कि वह भी अपनी प्लाटून लेकर हमारे साथ आ मिले । ट्राइ जंक्शन पर पहुँचते-पहुँचते हमारे साथ उसे आ मिलना चाहिए ।"

पुल के निकटवर्ती क्षेत्र में टैंकों का फ़ायर शुरू हो गया था ।

"गुड शो ! शाबाश बहादुरो ! मैदान हमारे हाथ है ।" कहकर कैप्टन इलावत बन्ध के साथ-साथ तेज़ी से आगे बढ़ने लगा । उसने सूबेदार ओमप्रकाश की कमान के जवानों को भी अपने साथ ले लिया ।

वह अपने अन्य साथियों से आगे था । उसने दोनों हाथों में दो-दो हैण्ड-ग्रिनेड पकड़े हुए थे । वह दो क़दम ही आगे गया था कि पीछे एकदम मशीनगन का फ़ायर शुरू हो गया ।

"आई एम वेरी लकी ।" कैप्टन इलावत बुदबुदाया । वह बन्ध के साथ सीधा लेट गया और उसी पोजीशन से मोरचे के अन्दर चारों हैण्ड-ग्रिनेड फेंक दिये । हैण्ड-ग्रिनेडों के विस्फोट के साथ ही मशीनगन का फ़ायर बन्द हो गया । इतने में जो जवान पीछे रुक गये थे वे भी आगे आ गये ।

"सूबेदार कहाँ हैं ?" कैप्टन इलावत ने घबराहट-भरी आवाज़ में पूछा ।

"साब, आपके पीछे-पीछे आ रहे थे ।" कम्पनी-हवलदार मेजर ने कहा ।

कैप्टन इलावत घबराया हुआ-सा आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा । पिलबॉक्स के मुँह के सामने किसी के कराहने की आवाज़ सुनकर दो जवान लपके और घायल व्यक्ति को उठाकर मोरचे से थोड़ी दूर ले आये और बन्ध के साथ लिटा दिया । सूबेदार ओमप्रकाश को पहचानकर कैप्टन इलावत का गला भर आया । "पुअर चैप ! सूबेदार साहब को रिटायर हो जाना था अगर लड़ाई शुरू न होती ।"

कैप्टन इलावत ने सूबेदार ओमप्रकाश के मुँह में स्वयं पानी डाला और न
स्वर में उसका नाम पुकारता हुआ बोला, "साब, आप ठीक हो जायेंगे ।"

सूबेदार ओमप्रकाश उत्तर में कराहता हुआ बोला, "साब, छोड़ना नहीं ।"

कैप्टन इलावत अपने गले से मफ़लर उतारकर उसका शरीर टटोलने ल
ताकि जहाँ गोली लगी हो वहाँ मफ़लर बाँध दे । सूबेदार ओमप्रकाश ने नीम बेहो

आधा

की हालत में कहा, 'साब, छोड़ना नही।'

"साहब, किसको नही छोड़ना ?" कैप्टन इलावत ने यह सोचते हुए पूछा कि शायद वह कोई सन्देश देना चाहता है।

"साब, दुश्मन को नही छोड़ना। मेरी मौत का बदला ज़रूर लेना।"

"कैप्टन इलावत यह सुनकर चुप रह गया। वह उसकी ओर एकटक देखता रहा। सूबेदार ओमप्रकाश ने कैप्टन इलावत की गोद में ही प्राण त्याग दिये। कैप्टन इलावत ने धीरे से उसका सिर जमीन पर टिका दिया और उसके खून में भीगे हुए अपने हाथों को घास के ऊपर रगड़कर साफ़ करता हुआ बुदबुदाया—"ज़रूर।"

कैप्टन इलावत अपने जवानों के साथ आगे बढ़ गया। उसके दिमाग में सूबेदार ओमप्रकाश के अन्तिम शब्द निरन्तर गूँज रहे थे। क्रोध और ग्लानि से उसका दिमाग़ जैसे शिथिल हो गया था। कुछ ही समय के बाद वह ट्राइ-जंक्शन के निकट पहुँच गया। सामने पुल नजर आ रहा था। जब लेफ़्टिनेण्ट दर्शनलाल की प्लाटून वहाँ पहुँच गयी तो कैप्टन इलावत ने अपने निकट खड़े जवानों से कहा, "वह सामने हमारी मंज़िल है। सिर्फ़ सौ गज दूर। लेकिन मंज़िल तक पहुँचने के लिए शायद हमें आग में से गुज़रना पड़े। यह आग तुम्हारे पाँव तले आकर बुझनी चाहिए। इससे तुम्हारे पाँव जलने नही चाहिए।"

ट्राइ-जंक्शन एरिया में दोनों ओर से बहुत ज़ोरदार गोलाबारी हो रही थी। कैप्टन इलावत कर्नल गिल को ब्रिज-एरिया में तोपखाने का फ़ायर बन्द करने के लिए कहा, फिर बोला, "सर, वाइल्ड कैट ट्रूप के पतोले के पास पहुँच गयी है।"

"गो अहेड। मैं भी आ रहा हूँ।" कर्नल गिल ने कहा।

अपनी ओर से तोपखाना का फ़ायर बन्द होने के अगले क्षण कैप्टन इलावत ने अपनी जंगी जयकार ऊँची आवाज में लगायी। सारा वातावरण बटालियन के जंगी नारे से गूँज उठा और उसकी प्रतिध्वनि दूर-दूर तक छा गयी। ट्राइ-जंक्शन के तीन ओर से मशीनगन का ज़ोरदार फायर होने लगा। ब्रिज के पास एक छोटे से बन्ध से भी मशीनगन का फ़ायर हो रहा था। वह कुछ क्षणों तक मशीनगन की पोजीशनें देखता रहा।

"इस फ़ायर के होते हुए हम न दायीं ओर से ब्रिज पर धावा बोल सकते हैं और न ही बायीं ओर से। लेकिन असाल्ट रुकना नही चाहिए। अगर हमारे क़दम एक बार रुक गये तो फिर बहुत मुश्किल होगी।" कैप्टन इलावत ने तीन मशीनगनों से निरन्तर फायर से निकल रही आग को देखते हुए कहा।

कैप्टन इलावत बन्ध के दूसरी ओर चला गया। उधर भी दो मशीनगनें पूरे फ्रण्ट पर गोलियाँ बरसा रही थी। उसने लेफ़्टिनेण्ट सिंह को बुलाकर ट्राइ-जंक्शन के मोर्चों पर हैण्ड-ग्रिनेडों से हमला करने के लिए जवानों को बन्ध के ऊपर जाने म हुक्म दिया।

पूछा है, उन्हें कुछ पता नहीं। लेफ़्टिनेण्ट सिंह ने सिर्फ़ इतना बताया कि ट्राइ-जंक्शन पर दुश्मन के बड़े मोरचे को क्लीयर करने के लिए वह स्वयं गया था और ग्रिनेड फेंक-कर उसने बटालियन का 'जंगी जयकारा' लगाया था और हमें ब्रिज पर धावा बोलने के लिए सिगनल दिया था।" कैप्टन मिश्रा ने चिन्तित स्वर में कहा।

"यह कैसे हो सकता है? पन्द्रह मिनट पहले मैंने उससे बात की थी।" कर्नल गिल चकित-सा बोला।

पौ फटने पर कर्नल गिल ने कैप्टन इलावत की तलाश के लिए तीन पार्टियाँ भेजी। वह स्वयं कैप्टन मिश्रा और कुछ जवानों को साथ लेकर लँगड़ाता हुआ ट्राइ-जंक्शन की ओर आया।

ट्राइ-जंक्शन में, मोरचों के कम्पलेक्स में ब्रिज की ओर जो मोरचा था, वहाँ कैप्टन इलावत घुटनों पर झुका हुआ पड़ा था। उसका हेलमेट माथे से कुछ ऊपर उठ गया था और माथा कंक्रीट की दीवार के साथ टिका हुआ था। उसका दायाँ हाथ अभी मशीनगन की बैरल पर था और हाथ की हड्डियाँ तक जलकर काली हो गयी थीं। उसके दाँत भिंचे हुए थे। छाती में गोलियाँ लगने के सात निशान थे और आधी से अधिक पीठ उड़ गयी थी और वहाँ बहुत बड़ा घाव था। खून की धारा बायें घुटने के ऊपर से बहती हुई सुरक मिट्टी में जज्ब हो गयी थी।